Resource: बाइबल कोश (टिंडेल)

Aquifer Open Bible Dictionary

This work is an adaptation of Tyndale Open Bible Dictionary © 2023 Tyndale House Publishers, licensed under the CC BY-SA 4.0 license. The adaptation, Aquifer Open Bible Dictionary, was created by Mission Mutual and is also licensed under CC BY-SA 4.0.

This resource has been adapted into multiple languages, including English, Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文).

बाइबल कोश (टिंडेल)

म

मंगनी, मंगनी, मंगनी, मंत्र, मंदिर का पर्दा, मंदिर सहायक, मंदिर सेवक, मकड़ी, मकनदबाई, मकपेला, मकबन्नै, मकबन्नै, मकबेना, मकबेना, मकिदुनिया, मकेराई, मकोना, मकोना, मक्का, मक्काबी काल, मक्केदा, मक्खी, मक्तेश, मक्नदबै, मखेलोत, मगदन, मगर, मगिद्दो के सोते, मगिद्दो, मगिद्दोन, मग्दीएल, मग्पीआश, मग्बीस, मच्छर, मछली, मछली फाटक, मज़दूरी, मजनूवृक्ष की घाटी, मण्डप, मण्डली, मतपरिवर्तित, मतूशाएल, मतूशाएल, मतूशेलह, मत्तता, मत्तता, मत्तत्ता, मत्तनै, मत्तन्याह, मत्तात, मत्तान, मत्तान, मत्ताना, मत्तित्याह, मत्तित्याह, मत्तियाह, मत्ती (व्यक्ति), मत्ती का सुसमाचार, मत्री, मत्री का कुल, मत्रेद, मथूशाला, मदमन्ना (व्यक्ति), मदमन्ना (स्थान), मदमेन, मदमेना, मदान, मधुमक्खी, मध्यवर्ती अवस्था, मध्यस्थता करना, मध्यस्थता, मध्यस्थता, मध्यस्थ, मन, मन-मन भर के (सौ पाउंड), मनश्शे, मनश्शे (व्यक्ति), मनश्शे का गोत्र, मनश्शे की प्रार्थना, मनश्शेई, मनहेम, मनासोन, मनाहेम, मनुष्य, मनुष्य का पतन, मनुष्य का पुत्र, मनुष्य का पुत्र, मनुष्य की आत्मा, मनुष्य, पुराना और नया, मनुहोतवासी, मने, मने, तकेल, ऊपर्सीन, मन्त्र उच्चारण, मन्दिर, मन्नत, मन्नतें, मन्ना, मपीबोशेत, मबुन्ने, ममूकान, मम्रे (व्यक्ति), मम्रे (स्थान), मम्रे का बांजवृक्ष, मरकुस, मरकुस का सुसमाचार, मरकुस, यूहन्ना, मरला, मरहम, मरात, मरातैम, मरायाह, मरायोत, मरारी, मरारी के वंशज, मरियम, मरियम का गीत, मरियम मगदलीनी, मरियम मगदलीनी, मरीबा, मरीबा-कादेश, मरीबा-कादेश, मरीब्बाल, मरूभूमि में भटकना, मरेमोत, मरैल, मरोदक, मरोदक-बलदान, मर्क्यूरियस, मर्क्यरी, मर्सना, मलकिशूआ, मलकी, मलकीराम, मलखुस, मलत्याह, मलाकी की पुस्तक, मलाकी (व्यक्ति), मलिकिसिदक, मलिकिसिदक, मलेआह, मल्काम, मल्काम, मल्कियाह, मल्किय्याह, मल्किय्याह, मल्किय्याह, मल्कीएल, मल्कीएलियों, मल्कीराम, मल्कीशूअ, मल्कीशूअ, मल्लूक, मल्लूकी, मल्लोती, मवेशी, मश, मशकों, मशिल्लीत, मशिल्लेमोत, मशुल्लाम, मशुल्लेमेत, मशेजबेल, मशेजबेल, मशेलेम्याह, मशोबाब, मश्किल, मसादा, मसीह का आगमन, मसीह का दिन, मसीह का प्रकटीकरण, मसीह का महिमामंडन, मसीह का शारीरिक पुनरुत्थान, मसीह की दुल्हन, मसीह की देह, मसीह की निष्पापता, मसीह की मध्यस्थता, मसीह की मृत्यु, मसीह विरोधी, मसीह संबंधी धर्मविज्ञान, मसीहा, मसीही, मसोबाई, मसोबाई, मसोरा, मसोरियों, मस्तक बंध, मस्रेका, मस्सा, मस्सा और मरीबा, महजीओत, महत, महनेदान, महनैम, महरै, महलत (व्यक्ति), महलत (संगीत), महलतलग्नोत राग, महलब, महललेल, महललेल, महला, महला, महलियों, महली, महली, महलोन, महवीमी, महसेयाह, महान कुस्रू, महापौर, महामारी, महायाजक, महायाजक, महायाजक, महासभा, महासमुद्र, महासमुद्र, महिमा, महिमा करना, महिला, महीदा, महीना, महीर, महूमान, महूयाएल, महेतबेल, महेर्शालाल्हाशबज, महोलाई, महोलवासी, मा'आनेह, मांस, मांस की भेंट, मांसाहारी गिद्ध, माऐ, माओक, माओन (व्यक्ति), माओनी, माओन (स्थान), माकस, माका, अरम्माका (स्थान), माका, माओक (व्यक्ति), माकियों, माकाई, माकावासी, माकी, माकी, माकीर, माकीर, माकीरियों, माकीरियों, मागस, शमौन, मागोग, मागोर्मिस्साबीब, माचेरस, माज्याह, माणभ, माणिक्य, माणिक्य, मात, माता-पिता, मादी, मादै, मादी, मादै, मादै, मादोन, माद्याह, मानव विज्ञान, मानहत (व्यक्ति), मानहत (स्थान), मानहती, माना, मानोह, माप, मारा, मारा, मारा, मारानाथा, मारी, मारेशा (व्यक्ति), मारेशा (स्थान), मारोत, मार्ग, मार्जरम, मार्था, मार्स की पहाड़ी, मार्सियन का सुसमाचार, मालेलील, मालेह-अक्रब्बीम, माल्किएल, माल्किएल के वंशज, माल्टा, माशाल, मास, मासियाई, मासेयाह, मासै, मासोरेटिक पाठ, मास्किल, माहोल, मिकनेयाह, मिकमतात, मिकमाश, मिकमाश, मिकमेथाथ, मिकायाह, मिक्ताम, मिक्ताम, मिक्री, मिक्री, मिक्लोत, मिगदलगाद, मिगदलेल, मिग्दोल, मिग्रोन, मिज़पार, मिज्जा, मिट्टी, मिट्टी की पटिया, मिट्टी के बर्तन, मिट्टी के बर्तन, मितुलेने, मित्का, मिथ्का, मित्र, मिथना, मिथ्रदात, मिद्दीन, मिद्यान, मिद्यान, मिद्यानी, मिद्राश, मिन्नाह, मिन्नाह, मिन्नी, मिन्नीत, मिन्यामीन, मिफ़काद का फाटक, मिबसाम, मिबसार, मिभार, मिय्यामीन, मिय्यामीन, मिर्गी, मिर्गी का रोगी, मिर्मा, मिर्माह, मिर्याम, मिलतै, मिलापवाला तम्बू, मिल्का, मिल्कोम, मिशाम, मिशाल, मिशाल, मिश्राह, मिश्मन्ना, मिश्मा, मिश्राई, मिश्रित विवाह, मिसगाब, मिसगार, मिस्पा, मिस्पार, मिस्पेरेत, मिस्पे, मिस्र, मिस्र का नाला, मिस्र का नाला, मिस्र के महानद, मिस्र पर विपत्तियाँ, मिस्र, मिस्री, मिस्रपोतमैम, मिस्री, मीकल, मीका, मीका (व्यक्ति), मीका की पुस्तक, मीकाएल, मीठा बोल, मीना, मीनार (गुम्मट), मील, मीलेतुस, मीलेतुस, मीशाएल, मुआयना फाटक, मुकुट, मुक्त किये गए गुलाम, मुख्य न्यायाधीश, मुण्डेर, मुद्रा, मुप्पीम, मुर्गा, मुर्गी, मुर्गी, मुहर, मूंगा, मूकता (गूंगापन), मूनीम, मूनी, मूनीम, मूनी, मूरा, मूर्तियाँ, मूर्तिपूजा, मूल पाण्डुलिपि, मूशी, मूशियों, मूसा, मूसा का गीत, मूसा की गद्दी, मूसा की पुस्तकें, मूसा की व्यवस्था, मूसिया, मृग, मृगशिरा, मृत सागर, मृत सागर, मृत सागर कुण्डलपत्र, मृत सागर कुण्डलपत्र, मृतकों का स्थान, मृतकों की पुस्तक, मृतकों के लिए बपतिस्मा, मृत्यु, मृत्यु दंड, मृत्युदण्ड (फांसी), मृदंग, मेंढ़क, मेंहदी, मेंहदी, मेंहदी, मेकेरा, मकेराई, मेगिलोथ, मेघधनुष, मेज़, मेज़ाहाब, मेजुज़ा, मेढ़ा, मेथेग-अम्माह, मेदबा, मेदाद, मेनिलाउस, मेनी, मेनोरा, मेपात, मेम्ना, मेयर्कोन, मेरब, मेरी प्रजा नहीं हो, मेरेद, मेरेस, मेरोज, मेरोदाक, मेरोनोत, मेरोम का ताल, मेरोम नामक ताल, मेल का कवच, मेल-मिलाप, मेलबलि, मेलिकु, मेलिता, मेलेक, मेल्की, मेल्कोन, मेल्ज़ार, मेशक, मेशा (व्यक्ति), मेशा (स्थान), मेशेक, मेशेक, मेसोपोटामिया, मेहराब (आर्च), मेहराबदार छत से युक्त क़ब्र, मैदान के नगर, मैस्टिक, मोअद्याह, मोआब, मोआबियों, मोआबी पत्थर, मोडियस, मोती, मोननीम का बांज वृक्ष, मोननीम का बांज वृक्ष, मोननीम बांज वृक्ष,

मोनोतै, मोर, मोरिय्याह, मोरे का बांज वृक्ष, मोरे की पहाड़ी, मोरेशेत, मोरेशेतवासी, मोर्दकै, मोलादा, मोलीद, मोलेक, मोलेक, मोसा, मोसा, मोसेरा, मोसेरोत, मौखिक परम्परा

मंगनी

विवाह प्रतिज्ञा का पहला चरण सगाई कहलाता है।

*देखें*विवाह और विवाह के प्रथा।

मंगनी

विवाह करने की प्रतिज्ञा द्वारा स्वयं को दूसरे के प्रति समर्पित करने का कार्य। *देखें*विवाह, विवाह प्रथाएँ।

मंगनी

*देखें*विवाह और विवाह की प्रथाएँ।

मंत्र

जादू में प्रयुक्त मंत्र। *देखें*जादू।

मंदिर का पर्दा

पवित्र स्थान को परम पवित्र स्थान से अलग करने वाला पवित्रस्थान का पर्दा (निर्गमन 26:31–33)।

*देखिए*तम्बू।

मंदिर सहायक, मंदिर सेवक

देखें नेथिनिम।

मकड़ी

*देखें*जानवर।

मकनदबाई

मक्नदबै की एक और वर्तनी, बानी का पुत्र (एज्रा 10:40)।

*देखें*मकनदबाई।

मकपेला

हेब्रोन जिले में मम्रे के पास पेड़ों का छोटा सा मैदान और दो कक्षों वाली एक गुफा, जिसे अब्राहम ने सारा के लिए कब्रिस्तान के रूप में खरीदा था। इसके विक्रेता हित्ती थे जिनका नाम एप्रोन है और कीमत 400 शेकेल रूपा (चाँदी) थी (उत्प 23:8–19)। बाद में, अब्राहम (25:9), इसहाक और रिबका (49:30–31), और याकूब (50:13) को यहाँ दफनाया गया था।

अब्राहम द्वारा मकपेला की खरीद का विवरण, अगर हित्ती कानूनों से तुलना की जाए, तो उत्प 23 में कहानी की विश्वसनीयता का समर्थन करता है। ध्यान पेड़ों की संख्या, खरीदार और विक्रेता के वर्तमान मूल्यांकन पर चाँदी के तौलने, और शहर के फाटक पर गवाहों की ओर आकर्षित किया जाता है जहाँ लेन-देन को आधिकारिक रूप से ज्ञात किया गया था। ये सभी विवरण हित्ती कानूनों के अनुरूप हैं, जिन्हें कुलपिताओं के समय के बाद भुला दिया गया होगा।700 ईसा पूर्व से पहले सिक्के प्रचलन का माध्यम नहीं थे। यह निहितार्थ कि सिक्के के बजाय शेकेल अब्राहम के समय में एक वजन था, खरीद की कहानी की प्रारम्भिक तिथि को भी इंगित करता है।

मकबन्नै

मकबन्नै

*देखिए*मकबनै, मकबन्नै

मकबन्नै

मकबन्नै

गाद के गोत्र का योद्धा, जिसने दाऊद का सिकलग में साथ दिया जब वह राजा शाऊल के विरुद्ध संघर्ष कर रहा था (1 इति 12:13)।

मकबेना

मकबेना की एक अन्य वर्तनी, एक स्थान जो कालेब और यहूदा के पारिवारिक अभिलेख में उल्लिखित है (1 इति 2:49)।

*देखें*मकबेना।

मकबेना

स्पष्ट रूप से कालेब और यहूदा की वंशावली में भौगोलिक नामों के बीच एक स्थान-नाम (1 इति 2:49) है। इसके बाद गिबा आता है, जो सम्भवतः वही नगर है जिसका उल्लेख यहोशू 15:57 में किया गया है। इस प्रकार, मकबेना शायद हेब्रोन के दक्षिण में पहाड़ी देश के पूर्वी भाग में स्थित था, एक ऐसा क्षेत्र जहाँ सम्भवतः कालेबियों का निवास था।

मकिदुनिया

नए नियम के समय में रोमी प्रान्त, जो सातवीं सदी ई.पू. में एक राज्य के रूप में शुरू हुआ। इसके इतिहास के पहले कई सदियों के बारे में बहुत कम जानकारी है, लेकिन यूनानी राजा फिलिप्पी द्वितीय (359–336 ई.पू.) के सत्ता में आने के साथ, और विशेष रूप से उनके पुत्र सिकन्दर तृतीय (महान, 336–323 ई.पू.) के साथ, मकिदुनिया एक विश्व शक्ति बन गया। सिकन्दर की मृत्यु के बाद, साम्राज्य को उनके उत्तराधिकारियों के बीच कई क्षेत्रों में विभाजित कर दिया गया, जिनमें से एक मूल मकिदुनिया राज्य था। अगले 150 वर्षों तक अस्थिरता का शासन रहा, और 167 ई.पू. में मकिदुनिया रोमी शासन के अधीन आ गया। प्रारम्भ में रोमियों द्वारा इसे चार जिलों में विभाजित किया गया (प्रेरितों के काम 16:12 इस विभाजन का एक सम्भावित सन्दर्भ है), इस क्षेत्र को 14 ई.पू. में थिस्सलुनीके की राजधानी बनाकर एक रोमी प्रान्त बना दिया गया। संक्षेप में, 15–44 ई. के बीच, मकिदुनिया को अखाया और मोएसिया (यूनान के अन्य भाग) के साथ एक बड़े प्रान्त में मिला दिया गया; हालांकि, 44 ई. में, तीनों को फिर से अलग कर दिया गया। रोमी युग के दौरान मकिदुनिया का महत्व जारी रहा, और यह आधुनिक समय तक एक अलग इकाई बना रहा, हालांकि यह 1945 से 1991 तक युगोस्लाविया का हिस्सा था।

रोमी के प्रान्त मकिदुनिया में यूनान का उत्तरी क्षेत्र और वर्तमान अल्बानिया, बुल्गारिया, और पूर्व यूगोस्लाव गणराज्य मकिदुनिया के दक्षिणी भाग शामिल थे। अपने सोने, चांदी, लकड़ी, और कृषि भूमि के लिए प्रसिद्ध, यह क्षेत्र आसिया और पश्चिम के बीच व्यापार के लिए एक भूमि मार्ग के रूप में भी कार्य करता था। रोमियों द्वारा मकिदुनिया को एक प्रान्त के रूप में शामिल करने के तुरन्त बाद, उन्होंने वाया एग्नाटिया का निर्माण किया, जो एक पक्का मार्ग था, जिसकी लम्बाई 500 मील (804.5 किलोमीटर) थी, और एड्रियाटिक तट से एजियन तक जाती थी, जिसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रेरित पौलुस ने यात्रा की थी जब वे ने नियापुलिस, फिलिप्पी, अम्फिपुलिस, अपुल्लोनिया, और थिस्सलुनीके के मकिदुनिया नगरों से होकर गुजरे थे (प्रेरितों के काम 16:11–12; 17:1)।

मकिदुनिया के माध्यम से यूरोप में सुसमाचार का परिचय तब हुआ जब पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान एक दर्शन का उत्तर दिया (प्रेरितों के काम 16:9–12)। उस कार्य का विवरण, जो फिलिप्पी और थिस्सलुनीके में केन्द्रित था, प्रेरितों के काम 16:11–17:15 में वर्णित है। अपनी तीसरी यात्रा पर, हालांकि प्रारम्भ में विलम्ब हुआ (19:21–22), पौलुस बाद में मकिदुनिया लौटे, और फिरसे कुरिन्थुस में ठहरने के बाद (20:1–3; अन्य मकिदुनिया यात्राओं के सन्दर्भ के लिए देखें 1 कुरि 16:5; 2 कुरि 1:16 और 2:13)।

मकिदुनिया के विश्वासियों ने यरूशलेम में गरीबों के लिए पौलुस द्वारा एकत्रित चन्दे में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (रोम 15:26; 2 कुरि 9:2–4); पौलुस ने उनकी उदारता के लिए उनकी प्रशंसा की (2 कुरि 8:1–2)। उन्होंने विपत्ति के समय में भी उनके विश्वास के उदाहरण के लिए उनकी सराहना की (2 कुरि 7:5; 1 थिस्स 1:7), और दूसरों के प्रति उनके प्रेम के लिए भी (1 थिस्स 4:10)। कुछ मकिदुनिया के लोग पौलुस के साथ सीधे सुसमाचार के कार्य में लगे थे (प्रेरित 19:29; 20:4; 27:2), और उन्होंने मकिदुनिया के दो नगरों, फिलिप्पी और थिस्सलुनीके की कलीसियाओं को पत्र लिखे।

See also यूनान, यूनानी।

मकेराई

मकेराई

1 इतिहास 11:36 में हेपेर के लिए पदनाम। 2 शमूएल 23:34 में समान्तर सन्दर्भ उसे "माका देश के अहसबै का पुत्र" कहता है।

*देखें*माका, माका (स्थान); माकाई, माकाती, मकेराई।

मकोना

सिकलग के पास (नहे 11:28) और संभवतः पश्चिमी नेगेव में बस्ती का उल्लेख किया गया है।

मकोना

नहेम्याह 11:28 में मकोना, एक यहूदी शहर की के.जे.वी. वर्तनी।

मक्का

यह शब्द अक्सर अनाज, खास तौर पर गेहूँ को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। मक्का, जिसे अमेरिका में मकई के नाम से जाना जाता है, बाइबिल के समय में मध्य पूर्व में अज्ञात था। *देखें*पौधे (जौ; गेहूं)।

मक्काबी काल

इस्राएल के इतिहास की वह अवधि जब मक्काबियों ने इस्राएल की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया और देश पर शासन किया। यह अवधि 167 ईसा पूर्व से लगभग 40 ईसा पूर्व तक चली।

मक्काबी कौन थे?

मत्ताथियाह नामक एक याजक और उनके पुत्रों ने मक्काबियों का नेतृत्व किया। मत्ताथियाह का सबसे प्रसिद्ध पुत्र यहूदा था, जिन्हें लोग "मक्काबी" कहते थे। "मक्काबियों" नाम इसी शीर्षक से आया है।

मक्काबियों ने उन लोगों के खिलाफ संघर्ष किया जो यहूदियों के जीवन और धार्मिक प्रथाओं को बदलना चाहते थे। उस समय, कई शासक यहूदियों को यूनानी रीति-रिवाजों का पालन करने और यूनानी देवताओं की आराधना करने के लिए बाध्य करना चाहते थे। मक्काबियों ने इन परिवर्तनों का दृढ़ता से विरोध किया क्योंकि वे चाहते थे:

- पारम्परिक यहूदियों के जीवन के तरीकों की रक्षा करें
- अपनी धार्मिक प्रथाओं को शुद्ध रखें
- विदेशी शासकों को अपने धर्म का नियंत्रण करने से रोकें
- अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखें

मक्काबियों से पहले यहूदियों पर किसका शासन था?

332 ईसा पूर्व में, सिकंदर महान नामक एक यूनानी शासक ने यहूदिया पर विजय प्राप्त की। उनके मृत्यु के बाद, इस देश पर शासन करने के लिए तीन अलग-अलग समूह; मिस्रवासी (टॉलेमी के परिवार के नेतृत्व में), सीरियाई और बाद में रोमियो में लड़ाई हुई।

यूनानी नियंत्रण और सांस्कृतिक संघर्ष

मिस्र के शासक वास्तव में स्वयं यूनानी थे, ठीक वैसे ही जैसे सीरियाई राजा थे। दोनों समूह उन जनरलों से संबंधित थे जिन्होंने सिकन्दर महान के अधीन काम किया था। मिस्र के शासक, हालांकि वे यूनान के बजाय मिस्र से शासन करते थे, लेकिन उनका दृढ़ विश्वास था कि यूनानी संस्कृति सबसे अच्छी थी। वे यूनानी शिक्षा और विचारों का प्रसार करना चाहते थे। ऐसा करने के लिए, उन्होंने सिकंदरिया शहर में एक विशाल पुस्तकालय बनवाया, जिससे उन्हें उम्मीद थी कि यह एथेंस की तरह यूनानी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन जायेगा।

जो लोग यूनानी संस्कृति का समर्थन करते थे (जिन्हें यूनानवादी कहा जाता है), वे अपनी संस्कृति को पूर्वी भूमध्यसागर और मध्य पूर्व के अन्य क्षेत्रों में फैलाना चाहते थे। उनके तीन मुख्य उद्देश्य थे:

1. इन क्षेत्रों में यूनानी जीवन के तरीकों को परिचित कराना
2. नए शहरों का निर्माण करना जो यूनानी शहरों के समान दिखे और कार्य करे
3. यूनानी लोगों को स्थानीय लोगों से विवाह करने के लिए प्रोत्साहित करना

वे आशा करते थे कि इन कार्यों से स्थानीय लोग अपनी परम्पराओं को भूल जाएंगे और इसके बजाय यूनानी तरीकों को अपनाएंगे। वे चाहते थे कि लोग अपनी स्थानीय धार्मिक मान्यताओं का मनना बंद कर दें और यूनानी देवताओं की आराधना करना शुरू कर दें, जिनके पास कई रोचक कहानियाँ और प्रतीक थे।

यहूदा (यहूदियों की मातृभूमि) एक छोटा देश था जो इस यूनानी अधिग्रहण का सामना कर रहा था। यह संभावना नहीं लग रही थी कि यहूदी अपने धर्म, संस्कृति, और स्वतंत्रता को बनाए रख पायेगे। हालांकि, यहूदियों का दृढ़ विश्वास था कि परमेश्वर उनकी रक्षा करेंगे। उनका मानना था कि यदि वे परमेश्वर के नियमों का पालन करेंगे, तो वे एक समुदाय के रूप में जीवित रहेंगे। भले ही उन्हें कष्ट सहना पड़े और अपनी मातृभूमि छोड़नी पड़े, वे विश्वास करते थे कि परमेश्वर उनके कुछ लोगों को अवश्य संरक्षित करेंगा। उन्हें इस विश्वास में आशा मिली कि परमेश्वर जल्द ही मसीह (प्रतिज्ञा किया गया उद्धारकर्ता और अगुवा) को भेजेंगे।

सीरिया ने यहूदिया पर कब्ज़ा कर लिया

200 ईसा पूर्व से पहले, न तो मिस्र और न ही सीरिया यहूदिया पर दीर्घकालिक नियंत्रण प्राप्त कर सके। अंततः, एक समझौता हुआ जिसने सीरिया को नियंत्रण दिया। यहूदिया ने इसका समर्थन किया। इस समर्थन के लिए आभारी होकर, सीरिया के आन्तिओखस महान ने यहूदियों के कर तीन वर्षों के लिए माफ कर दिए। उन्होंने पिछले युद्धों में नष्ट हुए शहरों को पुनर्निर्माण के लिए धन देने का वादा किया। याजकों, लेखकों, और मंदिर के गायकों को कुछ करों का भुगतान नहीं करना पड़ा। यहूदियों को यरूशलेम का पुनर्निर्माण करने में सहायता के लिए भवन सामग्री की बिक्री पर शुल्क को थोड़े समय के लिए हटा दिया गया। बलिदानों के लिए धन उपलब्ध कराया गया। कई यहूदी कैदियों को रिहा किया गया।

175 ईसा पूर्व तक स्थिति बदल गई। आन्तिओखस IV एपिफानेस, अपने भाई और अगले राजा बनने वाले व्यक्ति, दोनों को मारकर सीरिया का राजा बन गया। इससे पहले, आन्तिओखस IV एथेंस में रहता था। उसे रोम में भी 14 साल तक बंधक बनाकर रखा गया था।

आन्तिओखस ने रोम की राजनीतिक शक्ति को समझा और उसका सम्मान किया। पश्चिमी एशिया पर कब्जा होने से रोकने के लिए, उसने मिस्र को जीतकर अपनी स्थिति का विस्तार करने और पूरे क्षेत्र को सीरियाई नियंत्रण में लाने का निर्णय लिया। यूनानी दर्शन और परंपराओं से प्रभावित होकर, उसने अपने नियंत्रण में विविध लोगों को एकजुट करने के लिए यूनानी संस्कृति के प्रसार का उपयोग करने की कोशिश की। वह एक खतरनाक व्यक्ति था। वह अपने राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किसी भी हद तक चला जाता था।

राजनीति और धर्म में महायाजक की शक्ति

उस समय यरूशलेम में सबसे शक्तिशाली व्यक्ति महायाजक थे। यह एक राजनीतिक और धार्मिक दोनों तरह का काम था। परम्परागत रूप से महायाजक हारून का वंशज होता था। युद्ध के इस दौर में, महायाजक को एक मजबूत और प्रेरक अगुवा होना ज़रूरी था। महायाजक को अपने विश्वास में दृढ़ रहने की ज़रूरत थी। उसे एक उदाहरण बनने और दूसरों को यूनानी संस्कृति के प्रसार के खिलाफ़ लड़ने के लिए प्रेरित करने में सक्षम होने की भी ज़रूरत थी।

क्षेत्र पर सैन्य नियंत्रण रखने वाले को महायाजक चुनने का अधिकार प्राप्त था। जब सीरियाई शक्ति मजबूत थी, तो राजा ने अपने चुने हुए व्यक्ति को महायाजक के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। जब सीरिया आंतरिक राजनीतिक संघर्षों में उलझा हुआ था; अर्थात अन्य राष्ट्रों के खिलाफ युद्धों में, और यहूदा मक्काबी के अनुयायियों द्वारा पराजित हो रहा था, तब यहूदियों को अस्थायी रूप से अपना महायाजक चुनने की अनुमति दी गई। इन समयों में, उन्हें कुछ राजनीतिक स्वतंत्रता और करों से राहत प्राप्त हुई।

यह स्पष्ट है कि यहूदी क्यों नाराज थे, क्योंकि जब आन्तिओखस ने पहली बार अपने उम्मीदवार, मेनेलाउस, को महायाजक के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया जोकि हारून के वंशज का नहीं था, इसलिए उनके पास इस पद का कोई दावा भी नहीं था। पुराना नियम कहता है कि महायाजक हारून के वंशज का होना चाहिए। मेनेलाउस महायाजक बन गए क्योंकि उन्होंने आन्तिओखस को बड़ी मात्रा में धन दिए, और इससे आन्तिओखस को राजी कर लिया, जिसे धन की जरूरत थी।

जब राजा आन्तिओखस मिस्र से युद्ध में व्यस्त थे, तब यरूशलेम के लोगों ने कार्रवाई की। उन्होंने मेनेलाउस को महायाजक पद छोड़ने के लिए बाध्य किया और वह पद उस व्यक्ति को वापस दे दिया जो उससे पहले महायाजक थे। इसके बदले में, आन्तिओखस ने आदेश दिया कि शहर को नष्ट कर दिया जाए। यरूशलेम में रहने वाले कई लोग मारे गए। मंदिर को अपवित्र किया गया और उसका खजाना लुट लिया गया।

राजा आन्तिओखस ने यहूदी परम्पराओं पर हमला किया

इसके बाद, शहर को एक सीरियाई सेनाध्यक्ष के अधिकार में दे दिया गया (1 मक्काबियों 1:20–29; 2 मक्काबियों 5:14–22; जोसेफस की *पुरावशेष* 12.5.3)। आन्तिओखस अभी भी मिस्र पर कब्ज़ा करना चाहता था, इसलिए उसने फिर से उस पर हमला किया। लेकिन जब रोमी अगुवो (मंत्रिसभा) ने उन्हें छोड़ने का आदेश दिया, तो उसने जल्दी से अपनी सेना को वापस बुलाने का आदेश दिया। वह रोम की महान शक्ति से डरता था। रोम से खुद को बचाने के लिए, उसने एक नई योजना बनाई। वह यहूदियों को यूनानी जीवन के तरीके अपनाने के लिए मजबूर करने लगा। उन्हें लगा कि इससे वे उनके प्रति वफादार हो जाएंगे और उनके राज्य और रोम के बीच एक सुरक्षात्मक क्षेत्र बन जाएगा।

आन्तिओखस ने सब्त, धार्मिक त्योहारों, बलिदानों, और पुरुष बच्चों के खतना के नियमो का पालन करने पर रोक लगा दिया। ये यहूदियों की प्रथाएं हैं जो बाइबल की पहली पांच पुस्तकों में सिखाई गई हैं। उसने तोरह की प्रतियों को नष्ट करवा दिया। उसने यूनानी देवताओं को समर्पित वेदियाँ बनवाईं। उन्होंने यहूदियों को सूअर का माँस खाने का आदेश दिया। बाइबल ने यहूदियों के लिए इस प्रथा को अवैध बताया है (2 मक्काबियों 6:18; देखें लैव्य 11:7)। यरूशलेम का मंदिर ज्यूस को समर्पित एक तीर्थस्थल बन गया। वेदी पर एक सुअर की बलि चढ़ाई गयी (1 मक्काबियों 1:41–64; 2 मक्काबियों 6:1–11; देखें दानि 11:31–32)।

सीरियाई शासकों ने प्रत्येक यहूदी गाँव को अपने देवताओं की पूजा के लिए एक वेदी बनाने के लिए मजबूर किया। उन्होंने प्रत्येक गाँव में सीरियाई अधिकारियों को नियुक्त किया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि लोग इस नए नियम का पालन करें।

मक्काबी विद्रोह

मत्ताथियाह ने विद्रोह आरंभ किया

166 ईसा पूर्व में, मत्ताथियाह नामक एक बुज़ुर्ग यहूदी याजक को एक मुश्किल विकल्प का सामना करना पड़ा। उसे और उसके पाँच बेटों को एक धार्मिक भेंट चढ़ाने का आदेश दिया गया जो यहूदी व्यवस्था के विरुद्ध था। उन्हें मांस का वलिदान एक विदेशी देवता को चढ़ाने के लिए कहा गया जिसे यहूदी लोगों को खाने की अनुमति नहीं थी। मत्ताथियाह ने ऐसा करने से इनकार कर दिया।

क्रोध में आकर मत्ताथियाह ने दो लोगों की हत्या कर दी: एक सीरियाई अधिकारी जो लोगों को नए कानून का पालन करने के लिए मजबूर कर रहा था, तथा एक यहूदी व्यक्ति जिसने अपनी मान्यताओं को त्याग दिया था तथा निषिद्ध बलि चढ़ा दी थी।

इससे पहले कि यह हुआ, कुछ यहूदियों ने इन नए नियमों का पालन करने से इनकार कर दिया था, लेकिन उनका प्रतिरोध संगठित नहीं था। जबकि कुछ लोगों ने सीरियाई कानूनों को स्वीकार कर लिया, कई अन्यों ने इनकार कर दिया। ये लोग अपने धार्मिक विश्वासों के खिलाफ जाने के बजाय मरने के लिए तैयार थे (1 मक्काबियों 1:60; 2:29–37; 2 मक्काबियों 6:18–31)।

मत्ताथियाह ने उन सभी लोगों को बुलाया जो यहूदियों के धार्मिक कानूनों के प्रति वफादार थे कि वे उनके साथ शामिल हों (1 मक्काबियों 2:15–27)। फिर, वह और उनके पुत्र छिपने के लिए पहाड़ियों में चले गए। हसीदीम नामक एक दल मत्ताथियाह के साथ जुड़ गया। ये लोग यहूदियों के धार्मिक कानूनों का पालन करने में अत्यंत सख्त थे। अन्य समर्थकों के साथ मिलकर, वे यहूदिया की पहाड़ियों में छिप गए। वहां से, उन्होंने अपने शत्रुओं पर अचानक हमले किए और कई लड़ाइयाँ जीतीं।

यहूदी योद्धाओं ने उन छोटे गांवों पर हमला किया जो उनके दुश्मनों के नियंत्रण में थे। उन्होंने उन वेदियों को नष्ट कर दिया जिनका उपयोग देवताओं की पूजा के लिए किया जाता था। उन्होंने यहूदी लड़कों का खतना (जो एक महत्वपूर्ण यहूदी धार्मिक नियम है) भी किया, जिनका यह नहीं हुआ था।

यहूदा मक्काबी ने मक्काबी विद्रोह का नेतृत्व किया

166 ईसा पूर्व में मत्ताथियाह की मृत्यु हो गई। उनके पुत्र यहूदा मक्काबी नए अगुवा बने, और उनके नेतृत्व में लड़ाई और अधिक तीव्र हो गई। यहूदा इस बात का एक महत्वपूर्ण प्रतीक बन गया कि यहूदी लोग अपने दुश्मनों के खिलाफ कैसे खड़े हुए।

यहूदा एक मजबूत नेता था जो मानता था कि वह सही के लिए लड़ रहा था। उसने अपने लोगों को एक साथ लाने में मदद की, और उसने कई लड़ाइयाँ जीतीं, भले ही उसकी सेना उसके दुश्मनों की तुलना में बहुत छोटी थी। उसकी चतुर युद्ध योजनाओं और कई विजयों ने राजा आन्तिओखस के लिए गंभीर समस्याएँ खड़ी कर दीं। यहूदा के समर्थक उसकी प्रशंसा करते थे, और उसके दुश्मन उससे डरते थे।

यहूदा की सफलता ने उसे देश के अधिकांश हिस्से पर नियंत्रण दिलाया। उसने तुरंत मंदिर को पुनः स्थापित किया। ज़्यूस को बलि देने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली वेदी को नष्ट कर दिया गया। आज्ञाकारी याजको ने मंदिर को फिर से समर्पित किया, ताकि दैनिक आराधना फिर से शुरू हो सके (1 मक्काबियों 4:36–59; 2 मक्काबियों 10:1–8; जोसेफस की *पुरावशेष* 12.7.6–7)।

यहूदी लोग अब फिर से खुलेआम अपने धर्म का पालन कर सकते थे। इस जीत का जश्न मनाने के लिए, उन्होंने एक नया त्यौहार बनाया जिसे समर्पण या रोशनी का पर्व कहा जाता है (जिसे अब हनुक्का के नाम से जाना जाता है)।

मंदिर और धार्मिक प्रथाओं को बहाल करने के बाद, यहूदा ने एक और महत्वपूर्ण परियोजना शुरू की: यरूशलेम की दीवारों का पुनर्निर्माण। मजबूत दीवारें शहर की रक्षा करने में मदद करेंगी जब सीरियाई फिर से हमला करेंगे।

फिर यहूदा और उसके भाइयों ने अपने लक्ष्यों का विस्तार करने का निर्णय लिया। वे केवल यहूदिया को ही नहीं, बल्कि पूरे फिलिस्तीन को भी मुक्त करना चाहते थे। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों पर आक्रमण करना शुरू किया:

- इदूमियाई, जो यरदन के पूर्व में रहते थे (1 मक्काबियों 5:1–8)
- फिलिस्तिया का क्षेत्र (5:9–68; जोसेफस की *पुरावशेष* 12.8.1–6)।

फिर यहूदा ने यहूदिया के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता हासिल करने के लिए काम किया। उसने एक नए महायाजक का विरोध किया जिसे चुना गया था। यह याजक हारून के उचित वंश से आया था, लेकिन उसने पारम्परिक यहूदी रीति-रिवाजों के बजाय यूनानी तरीकों का पालन किया (1 मक्काबियों 7:14; 2 मक्काबियों 14:3–7; जोसेफस की *पुरावशेष* 12.9.7)।

हसीदिम यहूदा से असहमत थे और उन्होंने नए महायाजक को स्वीकार कर लिया। हालाँकि, उनसे किए गए वादे तोड़ दिए गए और उनके 60 सदस्यों को मार दिया गया। इसके बाद, बचे हुए हसीदिम ने अपनी गलती को महसूस किया और यहूदा का समर्थन करने के लिए लौट आए (1 मक्काबियों 7:15–20; जोसेफस की *पुरावशेष* 12.10.2)।

सीरियाई लोगों ने नए महायाजक के पद की रक्षा के लिए यरूशलेम में एक सेना भेजी। हालाँकि, यहूदा की सेना ने इस सेना को हरा दिया। सीरियाई सैनिक और उनके चुने हुए याजक दोनों पराजय में भाग खड़े हुए।

इस दौरान, रोम इस क्षेत्र में बहुत शक्तिशाली होता जा रहा था। यहूदा ने सोचा कि वह सीरिया के खिलाफ चल रही अपनी लड़ाई में रोम की शक्ति का उपयोग कर सकता है। उसने सुरक्षा के लिए रोम के साथ एक समझौता किया।

रोम ने सीरिया के राजा दिमेत्रियुस को एक चेतावनी संदेश भेजा, जिसमें बताया गया कि यहूदा अब रोमी संरक्षण में है। हालाँकि, संदेश बहुत देर से पहुँचा। एक बड़ी सीरियाई सेना

मक्काबी काल

पहले ही यहूदा और उसकी सेना पर हमला करने के लिए निकल चुकी थी।

जब यहूदा के सैनिकों ने सीरियाई सेना का आकार देखा, तो उनमें से कुछ भाग गए। इसके बाद हुई लड़ाई में यहूदा मारा गया।

योनातान मक्काबियों का नेतृत्व करते हैं

यहूदा की मृत्यु के बाद, उसका छोटा भाई योनातान मक्काबी योद्धाओं का नया अगुवा बन गया। इस दौरान, सीरियाई और उनके समर्थकों (यूनानी संस्कृति का पालन करने वाले यहूदी) ने यरूशलेम को नियंत्रित किया। उन्होंने शहर की दीवारों का पुनर्निर्माण किया और योनातान की सेनाओं के संभावित हमलों से बचाने के लिए अन्य शहरों को मजबूत बनाया।

अगले कुछ वर्षों में, सीरियाई कुछ लड़ाइयाँ हार गए और कमज़ोर हो गए। इसका मतलब यह था कि वे यहूदिया में अपने यहूदी अनुयायियों को उतना समर्थन नहीं दे सकते थे। इस दौरान सीरियाई लोगों ने कोई नया महायाजक नहीं चुना। इससे योनातान खुश हुआ क्योंकि वह नहीं चाहता था कि धार्मिक मामलों पर किसी और का अधिकार हो।

जब मक्काबी पुनः शक्तिशाली हो गये, तो उन्होंने उन यहूदियों को दण्डित किया जिन्होंने सीरियाई संस्कृति का समर्थन किया था (1 मकाबियों 9:23–73; जोसेफस की *पुरावशेष* 13.1.1–6)। अगले पांच वर्षों तक शांति बनी रही।

152 ईसा पूर्व में सीरिया को अपने ही देश में समस्याएँ थीं। सीरिया के दो अलग-अलग समूह सत्ता के लिए एक-दूसरे से लड़ रहे थे। दोनों समूह चाहते थे कि योनातान उनका समर्थन करे, और उन्होंने उससे कई वादे किए:

- उन्होंने उसे महायाजक बनाने का प्रस्ताव दिया
- उन्होंने कहा कि वे उससे कर नहीं वसूलेंगे
- उन्होंने उसे अधिक भूमि पर नियंत्रण देने की पेशकश की

अंत में, योनातान महायाजक बन गए। वे मक्काबी परिवार के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इस महत्वपूर्ण पद को प्राप्त किया।

सालों पहले, उसका भाई यहूदा अपनी जीत के इनाम के तौर पर महायाजक बनना चाहता था। हालाँकि, यहूदा का परिवार हारून के वंश से नहीं था। उस समय, लोग किसी को महायाजक के तौर पर स्वीकार नहीं करते थे जब तक कि वह हारून के परिवार से न हो।

शमौन और हसमोनी परिवार की वंशावली

इस दौरान सीरिया का नेतृत्व बदलता रहा। कुछ सीरियाई राजा युद्ध में मारे गए, जबकि अन्य अपने दुश्मनों द्वारा मारे गए। योनातान ने अलग-अलग समय पर अलग-अलग सीरियाई समूहों का समर्थन करके सत्ता में बने रहने की कोशिश की।

योनातान ने रोम में अपने प्रतिनिधि भी भेजे ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि रोम उसकी मदद करना जारी रखेगा। हालाँकि, सीरियाई लोगों ने अंततः योनातान को पकड़ लिया और उसे मार डाला। 143 ईसा पूर्व में, मत्ताथियाह के अंतिम जीवित पुत्र शमौन यहूदी लोगों के लिए नया अगुवा बने।

शमौन ने यहूदिया को और अधिक स्वतंत्र बनाने और एक बड़ा क्षेत्र हासिल करने के लिए युवा सीरियाई राजा दिमेत्रियुस द्वितीय के साथ एक संधि की। शमौन को अपना पैसा बनाने का अधिकार भी दिया गया (1 मक्काबियों 15:6)। यह स्वतंत्रता का एक स्पष्ट संकेत था। जैसे ही 139 ईसा पूर्व में आन्तिओखस सत्ता में आया, पैसा बनाने का अधिकार छीन लिया गया।

उसके बाद के शांतिपूर्ण समय के दौरान, कई यहूदी लोगों ने सोचा कि उनके इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण जल्द ही आने वाला है। उनका विश्वास था कि मसीह (परमेश्वर का चुना हुआ अगुवा जो अपने लोगों को बचाएगा) जल्द ही प्रकट होगा। कुछ लोगों को लगा कि मसीहा शायद शमौन के परिवार से आएगा। वे ऐसा मानते थे, हालाँकि शमौन के भाइयों समेत कुछ मक्काबी अगुवो ने ऐसे काम किए थे जिन्हें बहुत से लोग गलत मानते थे।

शमौन ने महायाजक (सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक अगुवा) के रूप में सेवा करना जारी रखा। उन्होंने इस महत्वपूर्ण पद को अपने बच्चों और पोते-पोतियों को सौंपने की योजना बनाई।

हर कोई इस बात से सहमत नहीं था कि शमौन महायाजक होना चाहिए। यहां तक कि कुछ समूह जिन्होंने पहले मक्काबियों का समर्थन किया था, अब इस विकल्प से असहमत थे:

- हसीदीम
- जो लोग यूनानी रीति-रिवाजों का विरोध करते थे
- यहूदी मानते थे कि केवल हारून के परिवार को ही महायाजक के रूप में सेवा करनी चाहिए

इन असहमतियों के बावजूद, यहूदियों ने शांति और सफलता का समय अनुभव किया। यह लगभग 135 ईसा पूर्व तक चला जब शमौन के दामाद ने उन्हें मार डाला।

यूहन्ना हिरकानस महायाजक बने

शमौन हसमोनी वंश का पहला शासक था। उसके बाद उसका बेटा युहन्ना हिरकानस आया। वह एक मजबूत शासक

मक्काबी काल

था, लेकिन उसके शासनकाल की शुरुआत में एक मुश्किल दौर आया। आन्तिओखस VII, जिसने कुछ वर्ष पहले सीरिया पर शासन किया था, ने यरूशलेम पर हमला किया। शहरवासियों ने एक साल तक प्रतिरोध किया और आखिरकार हार मान ली। सीरिया ने एक बार फिर यहूदिया पर शासन किया। लगभग 128 ईसा पूर्व में आन्तिओखस की मृत्यु तक यहूदिया को अपनी स्वतंत्रता नहीं मिली।

इस समय के दौरान, यूहन्ना हिरकानस ने फरीसियों के साथ शत्रुता कर ली (जिन्हें पहले हसीदीम कहा जाता था)। यह आश्चर्यजनक था क्योंकि वह एक बार उनका शिष्य था। फरीसी शायद इसलिए नाराज हो गए क्योंकि यूहन्ना हिरकानस राजा बनना चाहता था। उनका मानना था कि राजा दाऊद के वंश से ही किसी को राजा बनने का अधिकार है। फरीसी इस विश्वास पर कायम थे, भले ही उस समय दाऊद के परिवार से कोई भी व्यक्ति सिंहासन लेने के लिए तैयार नहीं था।

महायाजक के रूप में, यूहन्ना हिरकानस ने सदूकियों नामक एक समूह के साथ मिलकर काम किया। सदूकियों में धार्मिक और राजनीतिक दोनों तरह के लोग शामिल थे। उनके ज़्यादातर समर्थक धनी और शक्तिशाली लोग थे। बाद में, यीशु के समय में, इन समर्थकों के बच्चे यहूदी परिषद में अगुवा बन गए, जिसे यहूदी महासभा कहा जाता था।

फरीसी यहूदी धार्मिक कानूनों (जिसे तोराह कहा जाता है) का बहुत सख्ती से पालन करते थे। इससे किसी भी अगुवे के लिए शासन करना मुश्किल हो गया क्योंकि फरीसी के पास कई सख्त नियम थे जिनका वे सभी से पालन करवाना चाहते थे।

यहूदिया में पहले के संघर्षों के दौरान, हसीदीम, या "धार्मिक लोग," कभी-कभी मक्काबियों का समर्थन करते थे। अन्य समय में, उन्होंने सीरियाई नियंत्रण को तब तक स्वीकार किया जब तक उन्हें अपने धर्म का स्वतंत्र रूप से पालन करने की अनुमति थी।

चीजें बदल गईं जब यूहन्ना हिरकानस अगुवा बने। उनके शासन के तहत, हसीदीम ने अपने देश के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सहायता करना शुरू किया। उन्हें यह नई शक्ति प्राप्त करने में आनंद आया और वे इसे छोड़ना नहीं चाहते थे। हम समझ सकते हैं कि वे बहुत नाराज़ क्यों हो गए जब उनके विरोधी, सदूकियों ने, राजनीतिक नियंत्रण प्राप्त कर लिया।

फरीसी अपने नेताओं से और अधिक नाखुश होते गए। इस दौरान, यहूदिया में एक महत्वपूर्ण धार्मिक शिक्षक प्रकट हुए। हम उन्हें कुमरान में पाए गए प्राचीन लेखों से "धार्मिकता के शिक्षक" के रूप में जानते हैं। इस शिक्षक के दो मुख्य संदेश थे:

1. लोगों को परमेश्वर के नियमों का बहुत ध्यानपूर्वक पालन करना चाहिए।
2. वर्तमान समय इतिहास का अंतिम काल है और सभी को तैयार हो जाना चाहिए क्योंकि परमेश्वर का चुना हुआ अगुवा (मसीहा) बहुत जल्द आने वाला है।

सिकंदर यन्नेयुस के कठोर नियम

बाद में, जब सिकंदर यन्नेयुस शासक बना, तो उसने धार्मिक कानूनों का सख्ती से पालन करने वाले लोगों के साथ कठोर व्यवहार किया। इस उत्पीड़न के कारण, धार्मिकता के शिक्षक और उनके अनुयायियों ने यरूशलेम छोड़ दिया। वे कुमरान में रहने चले गए, जो यहूदिया के रेगिस्तानी जंगल में था।

इन लोगों का मानना था कि सिकंदर यन्नेयुस एक दुष्ट शासक था। उनका सोचना था कि परमेश्वर ने मुख्य यहूदियों के दल को छोड़ दिया था और अब वे कुमरान में केवल अपने वफादार अनुयायियों के छोटे समूह के साथ रहेंगे।

कुमरान समूह ने दो महत्वपूर्ण तरीकों से खुद को यरूशलेम में यहूदी नेताओं से पूरी तरह से अलग कर लिया:

1. उन्होंने यरूशलेम के मंदिर में बलि चढ़ाना बंद कर दिया।
2. उन्होंने सामरिया में इस्तेमाल किए जाने वाले कैलेंडर की तरह एक अलग, पुराने कैलेंडर का इस्तेमाल किया।

क्योंकि उन्होंने एक अलग कैलेंडर का इस्तेमाल किया, इसलिए उन्होंने अन्य यहूदी लोगों की तुलना में अलग-अलग दिनों में महत्वपूर्ण धार्मिक त्यौहार मनाए। जैसे-जैसे ज़्यादा लोग इस समूह में शामिल होते गए, इसने यरूशलेम के मंदिर और दूसरे फरीसियों दोनों की शक्ति को कमज़ोर कर दिया।

यूहन्ना हिरकानस की मृत्यु के बाद, उनके छोटे बेटे अरिस्तुबुलुस महायाजक और राजा बने। अरिस्तुबुलुस ने केवल एक वर्ष तक शासन किया। फिर 103 ईसा पूर्व में, सबसे बड़े बेटे सिकन्दर यन्नेयुस राजा बने। इस समय, यहूदी लोग अपने भविष्य के बारे में बहुत आशान्वित थे। सीरियाई अपनी समस्याओं से निपटने में बहुत व्यस्त थे, इसलिए वे यहूदियों पर हमला नहीं कर सके। सिकंदर यन्नेयुस ने युद्ध जीतना शुरू कर दिया और नए क्षेत्रों पर कब्जा करना आरंभ कर दिया।

सिकंदर यन्नेयुस तब सबसे ज़्यादा खुश नज़र आते थे जब वे युद्ध लड़ रहे होते थे और दूसरों को दर्द और मौत दे रहे होते थे। हम उनके व्यक्तित्व के बारे में जो जानते हैं, उससे हम समझ सकते हैं कि उनके छोटे भाई को उनसे पहले राजा क्यों चुना गया था।

सिकंदर यन्नेयुस यहूदी राष्ट्र की सीमाओं को भूमध्यसागरीय तट से लेकर मिस्र की सीमाओं तक फैलाने में बहुत सफल

मक्काबी काल

रहे। उनकी सफलता की कीमत उन्हें बहुत चुकानी पड़ी। उन्होंने अक्सर अपने दुश्मनों के बराबर ही सैनिकों को खोया। उनकी सेना का ज़्यादातर हिस्सा किराए के योद्धाओं से बना था। यहूदी लोगों पर उन्हें भुगतान करने के लिए भारी कर लगाया गया।

छह साल तक, सिकंदर यन्नेयुस ने अपने ही लोगों के खिलाफ़ हिंसक युद्ध लड़ा। लोग उससे डरते थे और उसे पसंद नहीं करते थे। उसने धर्म में बहुत कम दिलचस्पी दिखाई, और बहुत से लोग इस बात से नाराज़ थे कि हिंसा से इतना प्यार करने वाला व्यक्ति महायाजक के पद पर सेवा कर रहा था।

एक और समस्या उनकी शादी थी। अपने भाई की मृत्यु के बाद, सिकन्दर ने अपने भाई की विधवा स्त्री, एलेक्जेंड्रा (जिसे सलोमी भी कहा जाता है) से विवाह किया। यहूदियों के कानून ने कुछ मामलों में एक पुरुष को अपने मृत भाई की पत्नी से शादी करने की अनुमति दी (व्य.वि. 25:5–10)। लेकिन यह महा याजकों के लिए अनुमति नहीं थी (लैव्य 21:13–14; तुलना करें यहेज 44:22)।

90 ईसा पूर्व में सिकंदर के प्रति लोगों का गुस्सा बहुत स्पष्ट हो गया। एक महत्वपूर्ण धार्मिक पर्व जिसे झोपड़ियों का पर्व कहा जाता है, के दौरान वे महायाजक के रूप में अपने कर्तव्यों का पालन करने की कोशिश कर रहे थे। पर्व के लिए आए लोगों ने उन पर नींबू फेंके। सिकंदर ने हिंसा के साथ प्रतिक्रिया दी: उन्होंने अपने पहरुओं को भीड़ पर हमला करने का आदेश दिया, और उन्होंने 6,000 लोगों को मार डाला (जोसेफस की *पुरावशेष* 13.13.5)।

चूंकि राजा को सदूकियों का समर्थन प्राप्त था, लोगों ने फरीसियों का समर्थन करना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे अधिक से अधिक लोग सिकंदर यन्नेयुस का विरोध करने लगे, फरीसियों ने सीरिया के राजा दिमेत्रियुस III से सहायता मांगी। इससे भयंकर लड़ाई हुई। इन लड़ाइयों में लगभग 50,000 यहूदियों की मृत्यु हुई।

सिकन्दर यन्नेयुस शेकेम में एक युद्ध हार गए। हालांकि, दिमेत्रियुस और उनकी सेना फिर उस क्षेत्र को छोड़कर चली गई। इसका मतलब था कि फरीसी अपने क्रोधित राजा से दंड का सामना करने के लिए अकेले रह गए थे। सिकन्दर यन्नेयुस ने उनमें से कई को मार डाला, और लगभग 8,000 फरीसियों को उससे बचने के लिए अपनी मातृभूमि छोड़नी पड़ी (जोसेफस की *पुरावशेष* 14.14.2)।

फरीसियों का मानना था कि सिकंदर यन्नेयुस ने यहूदियों के राज्य को कम धार्मिक और अधिक राजनीतिक बना दिया था। उन्हें यह नापसंद था कि वह गलील में यूनानी तौर-तरीके और रीति-रिवाज सीखते हुए बड़ा हुआ था।

फरीसियों को दो बातों की चिंता थी:

1. नए क्षेत्रों पर कब्ज़ा करने के उनके प्रयास
2. अन्य लोगों को यहूदी धर्म का पालन करने के लिए मजबूर करने के उनके प्रयास

रानी एलेक्जेंड्रा और उनके दो पुत्र

जब सिकंदर जन्नेयस का निधन हो रहा था, उन्होंने सिंहासन अपनी पत्नी, एलेक्जेंड्रा सलोमी को सौंप दिया। उन्होंने उनसे कहा कि फरीसियों के साथ शक्ति साझा करके शांति स्थापित करें। एलेक्जेंड्रा संभवतः एक महत्वपूर्ण फरीसी अगुवा की पुत्री थीं। उन्होंने अपने पति की सलाह मानी और फरीसियों को राज्य पर लगभग पूरा नियंत्रण दे दिया (जोसेफस की *पुरावशेष* 13.16.2)।

फरीसी अंततः शक्ति प्राप्त करके प्रसन्न थे, और उन्होंने सदूकीयों द्वारा बनाए गए कई पुराने नियमों को हटा दिया। रानी के दो पुत्र थे, जिससे परिस्थितियाँ और जटिल हो गईं। बड़े पुत्र, हिरकानस, फरीसियों का समर्थन करता था। वह महायाजक था और उसे अगला राजा बनना था। हालांकि, वह शांत स्वभाव का था और शासन में कोई रुचि नहीं दिखाता था। छोटे पुत्र, अरिस्तुबुलुस, सदूकीयों का समर्थन करता था। वह अपने पिता सिकन्दर यन्नेयुस की तरह व्यक्तित्व में अधिक था, इसलिए उनकी माँ ने उन्हें सेना का प्रभारी बना दिया।

सदूकियों ने रानी एलेक्जेंड्रा से कहा कि देश खतरे में है। इस वजह से, उसने उन्हें पूरे देश में कई किलेबंद इमारतों पर नियंत्रण करने की अनुमति दी। रानी एलेक्जेंड्रा ने नौ साल तक शासन किया। इस दौरान, फरीसियों ने धार्मिक कानूनों को अच्छी तरह से प्रबंधित किया। लेकिन जब 67 ईसा पूर्व में उनकी मृत्यु हो गई, तो उनके दो बेटे सत्ता के लिए एक-दूसरे से लड़ने लगे।

जब अरिस्तुबुलुस ने एक सेना इकट्ठी की और अपने भाई पर हमला किया, तो कई सैनिक हिरकानस को छोड़कर चले गए। उन्होंने अपने राजा और महायाजक के पद अरिस्तुबुलुस को दे दिए। चुपचाप अपने देश की संपत्ति में सेवानिवृत्त होने की उम्मीद के बजाय, फरीसियों ने अभी भी हिरकानस को अपना अगुवा माना।

इदूमिया से एक पुरुष जिसका नाम आन्तिपाटर था, ने हिरकानस को फिर से राजा बनाने की योजना बनाई, हालांकि हिरकानस शासन नहीं करना चाहते थे। आन्तिपाटर हेरोदेस महान के पिता थे, जो बाद में राजा बना। आन्तिपाटर का असली लक्ष्य खुद राज्य को नियंत्रित करना था, जबकि ऐसा लग रहा था कि हिरकानस ही प्रभारी है।

आन्तिपाटर और हिरकानस को अन्य शासकों से सहायता मिली और उन्होंने अरिस्तुबुलुस को पराजित कर दिया। फिर उन्होंने यरूशलेम को घेर लिया, जहां अरिस्तुबुलुस छिपे हुए थे। इस समय के दौरान, कई धार्मिक यहूदी सभी लड़ाई और नफरत से थक चुके थे। उन्होंने अपनी मातृभूमि छोड़ने और मिस्र में एक नया जीवन शुरू करने का निर्णय लिया।

मक्काबी काल

रोम ने अधिकार कर लिया

पोम्पे ने यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लिया

यरूशलेम में लड़ाई ने पास की रोमी सेना का ध्यान आकर्षित किया। दोनों पक्षों ने रोमियों को सहायता के लिए उन्हें बड़ी मात्रा में धन भेंट करने की कोशिश की। पहले, रोमी सेनाध्यक्ष ने अरिस्तुबुलुस की सहायता करने का निर्णय लिया। लेकिन दो साल बाद, 63 ईसा पूर्व में, एक शक्तिशाली रोमी अगुवा जिसका नाम पोम्पे था, ने स्वयं को शामिल करने का निर्णय लिया।

रोमियों ने अरिस्तुबुलुस पर अविश्वास करना शुरू कर दिया था, लेकिन वह फिर भी उनकी आने वाली सेना के खिलाफ लड़ने का प्रयास कर रहा था। हिरकानस का समर्थन करने वाले लोगों ने शहर के द्वार खोलकर रोमियों की सहायता की।

अरिस्तुबुलुस के समर्थकों ने तीन महीने तक मंदिर का बचाव किया। उन्होंने सब्त (यहूदियों का पवित्र विश्राम दिवस) पर भी युद्ध किया। अंततः रोमियों ने मंदिर पर कब्जा कर लिया। पोम्पे अपनी तलवार लेकर मंदिर के सबसे पवित्र कक्ष में गए, जिसे परम-पवित्र कहा जाता है। यह यहूदियों के लिए अत्यंत चौंकाने वाला था क्योंकि यह कक्ष इतना पवित्र था कि केवल महायाजक को ही इसमें प्रवेश करने की अनुमति थी। हालांकि, पोम्पे ने मंदिर के खजाने में से कुछ भी नहीं लिया।

पोम्पे ने अरिस्तुबुलुस को जीवित रहने दिया, लेकिन उन्होंने अरिस्तुबुलुस के कई मुख्य समर्थकों को मारने का आदेश दिया। इसके बाद, यहूदिया ने कई आस-पास के क्षेत्रों पर नियंत्रण खो दिया, जिन्हें उसने पहले शासित किया था। यहूदियों को अब रोम को धन देने पड़े और रोमी आदेशों का पालन करना पड़ा।

रोमी साम्राज्य के अधीन नए कानून

यहूदियों को अब रोम को भारी करों का भुगतान करना पड़ता था। हालांकि, ये कर पहले की तुलना में कम प्रतीत हो रहे थे। पिछले सौ वर्षों में, उन्हें लगातार लड़ाई और युद्धों के लिए भुगतान करना पड़ा था। तब यहूदिया ने अपेक्षाकृत शांति के दौर का अनुभव किया।

रोमियों ने यहूदिया को अब बहुत महत्वपूर्ण नहीं समझा क्योंकि:

1. मुख्य व्यापार मार्ग अब रोम से होकर गुजरते थे।
2. विभिन्न देशों के बीच समस्याओं के कारण व्यापारी अब पूर्वी देशों के मार्गों का उपयोग नहीं कर पा रहे थे।
3. कुछ व्यापारी मिस्र और उत्तरी देशों के बीच व्यापार मार्ग का उपयोग कर रहे थे।

इसका अर्थ यह था कि यहूदिया, जिसने कभी अपने क्षेत्रों से गुजरने वाले व्यापारियों से धन अर्जित किया था, व्यापार के लिए कम महत्वपूर्ण हो गया।

57 ईसा पूर्व में, अरिस्तुबुलुस ने रोम के खिलाफ एक छोटा विद्रोह शुरू किया। इसका एकमात्र परिणाम यह हुआ कि उनके भाई हिरकानस ने अपनी शेष शक्ति का और भी अधिक हिस्सा खो दिया। अगले कई वर्षों में, अरिस्तुबुलुस और उनके समर्थकों ने रोमी शासन के खिलाफ कई बार लड़ने की कोशिश की, लेकिन वे कभी सफल नहीं हुए।

आन्तिपाटर को शक्ति प्राप्त होती है

आन्तिपाटर ने हिरकानस और रोम का समर्थन जारी रखा। 49 ईसा पूर्व में, रोम में एक गृहयुद्ध शुरू हुआ। पहले, आन्तिपाटर ने रोमी अगुवा पोम्पे का समर्थन किया। फिर उसने अपना समर्थन एक अन्य रोमी अगुवा कैसर को दे दिया। उन्होंने यह परिवर्तन हिरकानस का प्रतिनिधित्व करने का दावा करते हुए किया। जब कैसर ने युद्ध जीता, तो उन्होंने यहूदियों को रोम को चुकाने वाले कर को कम करके पुरस्कृत किया।

रोम ने आधिकारिक रूप से यहूदियों को उनके धर्म का स्वतंत्र रूप से पालन करने की अनुमति दी। यहूदियों के मामलों में, उन्हें अपने स्वयं के न्यायालयों में परीक्षण की अनुमति थी। वे रोमी सैन्य सेवा से भी मुक्त थे। रोम ने यहूदिया के क्षेत्र को बढ़ाया और यहूदियों को अपने स्वयं के कर लगाने की अनुमति दी। आन्तिपाटर को रोमियों द्वारा व्यक्तिगत रूप से पुरस्कृत किया गया। जैसे-जैसे उनके अधिकार बढ़े, सदूकीयों द्वारा उनके प्रति घृणा और अविश्वास भी बढ़ा। आन्तिपाटर ने अपने पुत्र हेरोदेस को गलील का राज्यपाल नियुक्त किया।

हेरोदेस राजा बनते हैं

हेरोदेस ने सीरिया की सीमा के पास योद्धाओं के एक दल पर हमला करने का निर्णय लिया। इन योद्धाओं का नेतृत्व हिजकिय्याह नामक एक व्यक्ति कर रहे थे। कुछ लोग उन्हें अपराधी कहते थे, जबकि अन्य उन्हें यहूदियों की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले अगुवा मानते थे। कई स्थानीय लोग इस दल का समर्थन करते थे।

हेरोदेस की सेनाओं ने कई योद्धाओं को पकड़ लिया, जिनमें हिजकिय्याह भी शामिल थे, और उन्हें मार डाला। इससे एक समस्या उत्पन्न हुई क्योंकि यहूदियों के कानून के अनुसार किसी को भी मृत्यु दंड नहीं दिया जा सकता था बिना यहूदी महासभा (यहूदियों की सर्वोच्च कचहरी और परिषद) की अनुमति के। चूंकि हेरोदेस ने इस कानून का उल्लंघन किया था, यहूदी महासभा के अगुवो ने उन्हें बुलाकर अपने कार्यों की व्याख्या करने का आदेश दिया।

ये अशांत समय थे जिनमें बहुत सी लड़ाइयाँ हो रही थीं। इस अवधि के दौरान, एंटिगोनस ने हिरकानस को मार डाला। हेरोदेस फिर रोम की यात्रा पर गए, जहाँ रोमी मंत्री मण्डल ने उन्हें यहूदियों के राजा के रूप में नियुक्त किया। एंटिगोनस हस्मोनी परिवार की वंश के अंतिम शासक थे। रोमियों ने उन्हें पकड़ लिया और अन्ताकिया शहर में उन्हें मार डाला।

इससे यहूदी लोगों के लिए एक नए, शक्तिशाली अगुवा के आगमन का रास्ता तैयार हो गया—लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा।

मक्केदा

यहोशू के नेतृत्व में दक्षिणी अभियान के दौरान विजित शेफेला क्षेत्र के उन नगरों में से एक (यहो 10:10–29; 12:16)। यह लाकीश के क्षेत्र का ही हिस्सा था (15:41)। यूसिबियस ने इसे एल्युथेरोपोलिस (बेथ-गुव्रिन) के पूर्व में आठ रोमी मील की दूरी पर बताया, जो बेइत-मक्दूम की ओर जाता था, जो एल्युथेरोपोलिस से हेब्रोन जाने वाले रोमी मार्ग के बगल में एक रोमी-बाइजेंटाइन खण्डहर था। बाइबल स्थल सम्भवतः खिरबेत एल-कॉम में था, जो दक्षिण-पश्चिम में लगभग आधा कोस (.8 किलोमीटर) दूर है।

मक्खी

दो पंखों वाला कीड़ा। शास्त्र में, कई प्रकार की मक्खियाँ दर्शाई गई हैं, जिनमें सामान्य घरेलू मक्खी (सभो 10:1) और घोड़ा मक्खी (यशा 7:18) शामिल हैं। *देखें*पशु।

मक्तेश

मक्तेश

यरूशलेम की स्थलाकृति के भीतर का एक स्थान (सप 1:11)। चूंकि यह शब्द "ओखली" का अर्थ देता है, इसलिए यह अभिव्यक्ति किसी जलाशय के समान गहरे स्थान को दर्शाती है। यह संभवतः मंदिर पर्वत के विपरीत टायरोपियन तराई है, हालांकि तारगम इसे किद्रोन के समकक्ष मानता है।

मक्नदबै

मक्नदबै

बानी का एक पुत्र (जिसे बिन्नूई भी कहा जाता है)। मक्नदबै ने एज्रा के निर्देशों का पालन किया और बाबेल की बँधुआई के बाद के समय में अपनी विदेशी पत्नी को त्याग दिया (एज्रा 10:40)।

मखेलोत

मखेलोत

वह स्थान जहाँ इस्राएलियों ने मिस्र से कनान की यात्रा के दौरान डेरा डाला था। वे हरादा छोड़ने के बाद और तहत जाने से पहले यहाँ रुके थे (गिन 33:25–26)।

*देखें*जंगल की यात्राएँ।

मगदन

मगदन

एक स्थान जहाँ यीशु ने गलील की झील पार करने के बाद दौरा किया (मत्ती 15:39)। सही वर्तनी संभवतः मगदला थी। नए नियम में इस नगर का एकमात्र उल्लेख मरियम *मगदलीनी*के नाम में है। मगदन के कई नाम थे:

- यूनानी स्रोत इसे टैरीकेई कहते हैं, जिसका अर्थ है “मछली को नमकीन बनाने की कारखाने” (स्ट्रैबो 16.2.45; प्लिनी 5.71)
- रब्बिनिक स्रोत इसे मिग्दाल नुन्नायाह या मिग्दाल सब'अयाह कहते हैं, जिसका अर्थ है "मछलियों/रंगरेजों का मीनार।"
- इसे एल-मेज़डेल भी कहा जाता था।

यह तिबिरियास के उत्तर-पश्चिम में लगभग 4.8 किलोमीटर (तीन मील) की दूरी पर, गन्नेसरत के महान मैदान के दक्षिणी छोर पर स्थित था। यह अपनी उपजाऊ मिट्टी और सदैव सुखद जलवायु के लिए प्रसिद्ध था।

*यह भी देखें*दलमनूता।

मगर

बड़ा जलीय, रेंगने वाला मांसाहारी जीव जिसका शरीर छिपकली जैसा होता है; लंबा, नुकीला सिर; लंबी, शक्तिशाली पूंछ और छोटे पैर होते हैं। हालांकि कुछ संस्करणों में विशेष रूप से एक बार (लैव्य 11:30) इसका उल्लेख किया गया है, इसे अक्सर अय्यूब 41 के लिव्यातान के साथ पहचाना जाता है। *देखें*पशु।

मगिद्दो के सोते

मगिद्दो के सोते

सीसरा और बाराक के बीच की लड़ाई का दृश्य, जो दबोरा के विजय गीत में उल्लेखित है (न्या 5:19, एनएलटी में "मगिद्दो के झरने" का अनुवाद)। यह मगिद्दो के पास एक सदाबहार धारा का उल्लेख करता है, सम्भवतः वादी एल-लेज्जुन, जो मगिद्दो के पीछे के जलाशय को निकालती थी।

*यह भी देखें*मगिद्दो, मगिद्दोन; हर-मगिदोन।

मगिद्दो, मगिद्दोन

मगिद्दो, मगिद्दोन

यह नगर एस्द्रेलोन के मैदान के दक्षिण-पश्चिम किनारे पर स्थित है, जो मेसोपोटामिया और मिस्र के बीच मुख्य मार्ग पर है। कर्मेल पर्वत की पर्वतमाला के एक प्रमुख दर्रे के पास, जो शारोन के मैदान से यिज्रेल के मैदान में प्रवेश प्रदान करता है। इस रणनीतिक स्थिति ने मगिद्दो को दूसरी सहस्राब्दी और पहली सहस्राब्दी ई.पू. में फिलिस्तीन के सबसे महत्वपूर्ण वाणिज्यिक और सैन्य केन्द्रों में से एक बना दिया। प्रारम्भिक समय से ही, इस क्षेत्र में प्रमुख युद्ध हुए हैं। महान सैन्य पुरुष, जैसे 15वीं शताब्दी ई.पू. के मिस्र का थुतमोस तृतीय, 1799 में नेपोलियन और प्रथम विश्व युद्ध के दौरान सेनापति एलेनबी ने वहाँ प्रभुत्व के लिए लड़ाई लड़ी है।

विजय के समय, यहोशू ने मगिद्दो के राजा को हराया, लेकिन नगर पर कब्जा नहीं किया (यहो 12:21)। इस्राएल के गोत्रों को बाद में किए गए आवंटनों में, मगिद्दो को मनश्शे को सौंपा गया, लेकिन वे इसे कनानियों से जीत नहीं सके (यहो 17:11–12; न्या 1:27)। न्यायियों के दिनों में, दबोरा और बाराक ने सीसरा के नेतृत्व में हासोर की सेनाओं को मगिद्दो के पास हराया (न्या 4:15; 5:19), लेकिन नगर पर कब्जा नहीं किया। सम्भवतः दाऊद ने इसे अपने राज्य की स्थापना के कार्यक्रम के हिस्से के रूप में जीता। किसी भी स्थिति में, सुलैमान के समय तक, मगिद्दो उसके 12 प्रशासनिक क्षेत्रों में से एक का मुख्यालय बन गया था (1 रा 4:12)। सुलैमान ने इसे अपने रथ और छावनी नगरों में से एक के रूप में पुनर्निर्मित किया (9:15–19)।

यहूदा के राजा अहज्याह की मृत्यु वहाँ (841 ई.पू.) हुई जब उन्हें येहू द्वारा उत्तरी राज्य की यात्रा के दौरान घायल कर दिया गया था (2 रा 9:27)। यहूदा के राजा योशियाह ने मिस्र के फ़िरौन नको को मगिद्दो में रोका (609 ई.पू.) ताकि वह उत्तर की ओर जाकर अश्शुरियों की मदद न कर सकें; वह युद्ध में घातक रूप से घायल हो गया (23:29–30)। मगिद्दो का मैदान ("मगिद्दोन की तराई") जकर्याह की इस्राएल और यरूशलेम के पुनःस्थापन की भविष्यवाणियों में उल्लेखित है (जक 12:11)। प्रकाशितवाक्य एक महान भविष्य के युद्ध की भविष्यवाणी करता है जो हर-मगिदोन (हर मगिद्दो, "मगिद्दो का पर्वत," प्रका 16:16) पर होगा।

मग्दीएल

एदोम के अधिपति में से एक (उत्प 36:43; 1 इति 1:54)।

मग्पीआश

मग्पीआश

निर्वासन उपरांत अवधि के दौरान एज्रा की वाचा पर हस्ताक्षर करने वाले राजनीतिक अगुवा (नहे 10:20).

मग्बीस

मग्बीस

निर्वासन के बाद शहर पर उसके पूर्व निवासियों के 156 सन्तानो ने पुनः कब्ज़ा किया (एज्रा 2:30)।

मच्छर

बहुत छोटा उड़ने वाला कीड़ा। यह शब्द, मत्ती 23:24 में उपयोग किया गया है और छोटे मच्छर या मक्खी के लिए सामान्य शब्द है।

मिस्र में निर्गमन से पहले की तीसरी विपत्ति में मच्छर भी शामिल थे (निर्ग 8:16–18; भज 105:31)। किंग जेम्स संस्करण इब्रानी शब्द का अनुवाद "जूं" के रूप में करता है। निर्गमन 8 में इन कीड़ों की प्रजनन प्रक्रिया को धूल से उठने वाले कीड़ों के रूप में वर्णित किया गया है। यह अधिक संभावना है कि यह मच्छरों का वर्णन करता है न कि जूं का।

चूँकि "मछर" सामान्य शब्द है, इसमें कई छोटी प्रजातियाँ शामिल हो सकती हैं जैसे मच्छर, हार्वेस्टर ग्नैट्स, मिड्जेस, या रेत मक्खियाँ।

रेत मक्खी का काटना मच्छर की तुलना में अधिक दर्दनाक होता है। इसके अलावा, यह उड़ान के दौरान कोई भनभनाहट नहीं करती है और इतनी छोटी होती है कि अधिकांश मच्छरदानी के माध्यम से गुजर सकती है।

जब दाखरस का किण्वन हो रहा था, तो मच्छर उसकी ओर आकर्षित हो गए। विशेष रूप से, फरीसी अपने दाखरस को छानते थे ताकि वे अनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध कीड़ों का सेवन न करें (मत्ती 23:24)।

मछली

नदियों, झीलों और समुद्रों में रहने वाले पंख और गलफड़े वाले जलीय जीव।

बाइबल अक्सर मछलियों का उल्लेख करती है बिना उनका नाम लिए या विवरण दिए। मछलियाँ प्राचीन काल से मनुष्यों के लिए एक प्रमुख भोजन रही हैं। आज भी, वे कई क्षेत्रों में मुख्य प्रोटीन स्रोत बनी हुई हैं। बाइबल के समय में, मछली व्यापार उन्नत था। विशेष रूप से, यरूशलेम के एक द्वार का नाम मछली फाटक था। (नहे 3:3; सप 1:10)। लैव्यव्यवस्था 11:9–12 में व्यवस्था ने इस्राएलियों को मछली खाने की अनुमति दी, लेकिन केवल उन्हीं को जिनके पास पंख और छिलके दोनों थे। बिना छिलके वाली मछलियाँ जैसे कैटफिश की अनुमति नहीं थी, भले ही उनके पास पंख थे।

प्राचीन संसार में मछली पकड़ना

मिस्र के चित्रों में मछली पकड़ने के विभिन्न तरीके दर्शाए गए हैं। पलिश्ती भूमध्य सागर में मछली पकड़ते थे। हालांकि, इस्राएल एक समुद्री देश नहीं था। इसलिए, उन्होंने संभवतः अधिकांश मछलियाँ मीठे पानी के स्रोतों से पकड़ीं, विशेष रूप से गलील झील से। इस झील में 36 मछली प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जैसे कि:

- पर्च
- कार्प
- बारबेल
- सार्डीन
- कैटफ़िश

नए नियम के समय में, जाल के साथ मछली पकड़ना आम बात था। नावें गहरे पानी में जातीं, एक बड़ा जाल पानी में फेंकतीं, और उसे किनारे की ओर खींचतीं (लूका 5:4)। मछुए और कभी-कभी दूसरी नाव में सवार लोगों को नाव वापस खींचने में मदद करनी पड़ती थी। पकड़ को किनारे पर बांटा जाता था (मत्ती 13:47–48)। मछली पकड़ना आमतौर पर रात में किया जाता था। ठंडा पानी मछलियों को सतह के करीब लाता था। वे निकट आते जालों को नहीं देख पाती थीं।

यहूदी भी मछली पकड़ते थे:

- बंसी और डोरी (मत्ती 17:27)
- भाले (अय्यू 41:7)
- जाल फैलाना (यहेज 47:10)

हबक्कूक की पुस्तक बंसी और डोरी मछली पकड़ने, जाल डालने, और महाजाल का उल्लेख करती है (हब 1:15)। महाजाल एक जाल को पानी में खींचकर मछली पकड़ने की एक विधि है।

प्रारंभिक मसीही कलीसिया में, मछली को मसीह और विश्वास का प्रतीक माना जाता था। इसे रोमी कब्रगृहों में खरोंचा गया था और अब यह दीवारों, वेदियों, बेंचों और वस्त्रों को सजाता है। यह प्रतीक इसलिए उभरा क्योंकि यूनानी शब्द "मछली" (*इख्थूस*) वाक्यांश "यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, उद्धारकर्ता" का प्रतिनिधित्व करता है।

*देखें*व्हेल।

मछली फाटक

फाटक सम्भवतः यरूशलेम नगर की उत्तरी शहरपनाह में स्थित था। मछली फाटक दाऊद के समय में बनाया गया था और बाद में मनश्शे के गढ़वाले नगर का भाग बना (2 इति 33:14)। बाबेल की बँधुआई के बाद, इसे नहेम्याह के अगुआई में पुनःस्थापित किया गया (नहे 3:3; 12:39); इसका उल्लेख नये टोले मिश्नाह या नये मोहल्ला के साथ किया गया है (सप 1:10)। इस फाटक का नाम सम्भवतः इसलिए रखा गया था क्योंकि मछलियाँ उत्तर से नगर में लाई जाती थीं, या यह नगर के मछली बाजार के पास स्थित था।

*यह भी देखें*यरूशलेम।

मज़दूरी

मज़दूर को उसके काम के बदले में मिलने वाला भुगतान। मज़दूरी आमतौर पर मुद्रा के आदान प्रदान के माध्यम में होती है। लेकिन, इसका भुगतान किसी भी सामान या सेवा के लिए किया जा सकता है।

याकूब ने लाबान की छोटी बेटी, राहेल के लिए सात वर्ष सेवा किया (उत्पत्ति 29:18–20)। फिर उसे और सात वर्ष सेवा करना पड़ा जब लाबान ने उनके समझौते का सम्मान नहीं किया। बाद में, याकूब की मज़दूरी भेड़ और बकरियाँ थीं (उत्पत्ति 30:31–32; 31:8)। नबूकदनेस्सर को सोर शहर पर कब्ज़ा करने के लिए मजदूरी के रूप में मिस्र देश दिया गया था। (यहेजकेल 29:18–20)।

मज़दूरी आमतौर पर मालिक और कर्मचारी के बीच तय की जाती थीं (उत्पत्ति 29:15–19; मत्ती 20:2)। कभी-कभी, मालिक वेतन तय करते थे (मत्ती 20:4)। ईमानदारी से किये कार्य की उचित मजदूरी बाइबिल का एक सिद्धांत है (लूका 10:7; 1 तीमुथियुस 5:18)। प्रभु ने इस सिद्धांत को लागू करने के लिए नियम बनाए और इसका उल्लंघन करने वालों का न्याय किया। मज़दूरी का भुगतान तुरंत किया जाना था

(लैव्यव्यवस्था 19:13)। मजदुर की मज़दूरी को रोकना पवित्रशास्त्र में निंदा की बात कही गई है (मलाकी 3:5; याकूब 5:1–6)।

अक्सर मज़दूरी, मालिक और कर्मचारी के बीच असंतोष और विवाद का स्रोत होता था। जब सैनिक बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के पास आए, तो उन्होंने अपने भविष्य के आचरण के बारे में पूछा। उसने उनसे आग्रह किया कि वे अपने वेतन से संतुष्ट रहें (लूका 3:14)। याकूब और लाबान के बीच मज़दूरी को लेकर मतभेद था। दो बार याकूब ने शिकायत की, "तुम्हारे पिता ने मुझसे छल करके मेरी मज़दूरी को दस बार बदल दिया" (उत्पत्ति 31:7, 41)।

बाइबल में गलत तरीके से कमाए गई मज़दूरी (धन) के बारे में भी बताया गया है। वेश्या की मज़दूरी परमेश्वर यहोवा के घर नहीं लाई जा सकती थी (व्यवस्थाविवरण 23:18)। लोगों को बिलाम की गलती के खिलाफ चेतावनी दी गई है। उन्होंने इस्राएल को भ्रष्ट किया क्योंकि उसने "दुष्टता की मज़दूरी को प्रिय जाना" (2 पतरस 2:15)।

*यह भी देखें*रुपये-पैसे; साहूकार, लेन-देन; दरिद्र, धन; काम।

मजनूवृक्ष की घाटी

मजनू वृक्ष की घाटी

वह घाटी जिसके द्वारा मोआब की प्रचुरता ले जाई जाएगी (यशा 15:7, एन.आई.वी "पॉपलर्स की घाटी")। यशायाह की भाषा यह सुझाव देती है कि यह मोआब की दक्षिणी सीमा को चिह्नित करती थी।

मण्डप

इब्रानी शब्द सुक्का और सोकोह का अनुवाद। शब्द सुक्का का अनुवाद "झोपड़ी" (उत 33:17), "मण्डप" (लैव्य 23:34), और "तम्बू " (2 शमू 11:11) के रूप में भी किया गया है। सोकोह के अन्य अनुवाद "गुफा" (भज 10:9), "मण्डप" (76:2), और "आड़" (यिर्म 25:38) हैं। शब्द सुक्का और सोकोह एक आश्रय या आवरण का संकेत देते हैं, जो तम्बू (झोपड़ी या मण्डप), झोंपड़ी, या गुफा के रूप में हो सकता है।

शब्द "पविलियन" का उपयोग बेन्हदद के शाही दल और सहयोगियों के तम्बूओं के लिए किया गया है जब वे नशे में थे और अहाब ने उन पर हमला किया (1 रा 20:16)। अन्य संस्करणों में इसे "झोपड़ी", "अस्थायी आश्रय"; "रिहाइश", और "तम्बू" के रूप में अनुवादित किया गया है।

रूपकात्मक उपयोग भजन संहिता की पुस्तक में पाया जाता है। भजन संहिता 27:5 और 31:20 में भजनकार प्रभु की विशेष सुरक्षा के बारे में बात करते हैं, जो एक ऐसा स्थान है जहाँ कोई दुष्टों से आश्रय पा सकता है। यह शब्द उन बादलों को भी संदर्भित कर सकता है जो भजनकार की चित्रात्मक भाषा में प्रभु की उपस्थिति को ढकते हैं, "उसने अंधियारे को अपने छिपने का स्थान और अपने चारों ओर आकाश की काली घटाओं का मण्डप बनाया" (भज 18:11)।

मण्डली

धार्मिक उद्देश्यों के लिए लोगों की सभा। बाइबल, इस्राएल को प्रभु की मण्डली के रूप में वर्णित करती है क्योंकि यह वाचा का देश था। पूरा देश परमेश्वर के लोग माना जाता था (निर्ग 3:6–8, 15–16; 12:6; यशा 1:2–4; 14:1)।

चुने हुए देश के रूप में, इस्राएल को अन्य राष्ट्रों के बीच परमेश्वर की महानता को प्रदर्शित करना था (व्यव 4:6–14; यशा 42:1; 45:4; 65:9, 22)। इस कारण से, पूरे देश को "इस्राएल के लोगों की मण्डली की सभा" कहा गया (गिन 14:5, देखें लैव्य 4:13; गिन 16:3)।

नए नियम की कलीसिया को परमेश्वर के पुराने नियम की मण्डली द्वारा प्रेषित आत्मिक विरासत से बहुत कुछ मिला है। कलीसिया और पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों का यह सम्बन्ध कई स्थानों पर उजागर किया गया है (इब्रा 2:10–13; 1 पत 2:9–10; यह भी देखें रोम 9:1–8; गला 6:16)।

*यह भी देखें*कलीसिया।

मतपरिवर्तित

एक गैर-यहूदी जो यहूदी मत में इनके द्वारा परिवर्तित हुआ :

1. खतना किया जाना
2. बपतिस्मा लेना
3. मन्दिर में बलिदान चढ़ाना

पुराने नियम के समय में, फ़िलिस्तीन में विदेशी लोगों को इस्राएल के मत में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। उन्हें खतना करवाना पड़ता था (निर्गमन 12:48)।

हालांकि, "मतपरिवर्तित," या इच्छुक गैर-यहूदियों का मत परिवर्तन, फ़िलिस्तीन के बाहर यहूदी समुदायों में अधिक सामान्य था। यहूदी लोग दुनिया के कई हिस्सों में रहते थे क्योंकि वे बँधुआई में गए थे या व्यापार या सैन्य सेवा के कारण बाहर थे। वे स्वाभाविक रूप से अपने धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं को अपने साथ ले आए। यहूदी जीवन शैली ने कई गैर-यहूदियों को आकर्षित किया। वे कई देवताओं की पूजा (बहुदेववाद) करने के आदी थे। वे यहूदी मत के एक परमेश्वर (एकेश्वरवाद) और उनकी उच्च नैतिकता की प्रशंसा करते थे।

कई गैर-यहूदी, यहूदी विश्वास के साथ आराधनालय जीवन के माध्यम से जुड़े (देखें यशायाह 56:1–8; मलाकी 1:11)। मसीह से पहले और नए नियम के प्रारंभिक युग में यहूदी गैर-यहूदियों का मत-परिवर्तन करने का प्रयास करते थे। गैर-बाइबल यहूदी स्रोत, जैसे फिलो और जोसेफस और रोमी लेखक, जैसे होरेस, सेनेका, और टैकिटस इस बात की पुष्टि करते हैं। यह मसीह के जीवन तक जारी रहा (देखें मत्ती 23:15)।

यहूदी मत के सबसे समर्पित साधक तीन चरणों की एक विधि के माध्यम से पूर्ण यहूदी बनते थे:

1. **खतना** (पुरुषों के लिए)
2. उनके गैर-यहूदी अतीत से अलग होने के लिए **बपतिस्मा**
3. यरूशलेम के मन्दिर में **बलिदान**

इन मतपरिवर्तित लोगों को "यहूदी मत अपनानेवाले" कहा जाता था। वे सच्चे यहूदी थे, जिन्हें पुराने नियम की सभी व्यवस्था का पालन करना पूरी तरह से अनिवार्य था।

कुछ गैर-यहूदी यहूदी मत एकेश्वरवाद और नैतिकता की प्रशंसा करते थे। वे आराधनालय के जीवन की ओर आकर्षित होते थे लेकिन खतना नहीं करवाना चाहते थे। इन लोगों को "परमेश्वर से डरनेवाला" (देखें प्रेरि 10:22; 13:16, 26) या "भक्त" कहा जाता था (प्रेरि 10:2; 17:4, 17)। कुछ यहूदी उन्हें अनुकूल दृष्टि से देखते थे, लेकिन अन्य उन्हें अन्य गैर-यहूदियों से बेहतर नहीं मानते थे।

यह भी देखें यहूदियों के प्रवासी; परमेश्वर से डरनेवाला; यहूदी।

मतूशाएल

मतूशाएल*

उत्प 4:18 में मतूशाएल महूयाएल के पुत्र हैं। *देखें*मतूशाएल।

मतूशाएल

मतूशाएल

महूयाएल के पुत्र और कैन की वंशावली में लेमेक के पिता (उत्प 4:18)।

मतूशेलह

मतूशेलह

हनोक के पुत्र, लेमेक के पिता, और शेत की वंशावली से नूह के दादा (उत्प 5:21–27; 1 इति 1:3)। मतूशेलह 969 वर्ष तक जीवित रहे। वे बाइबल में दर्ज सबसे वृद्ध व्यक्ति हैं। उनका वंश लूका के यीशु की वंशावली के विवरण में शामिल है (लूका 3:37)।

*यह भी देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

मत्तता

मत्तता

एज्रा 10:33 में हाशूम के पुत्र मत्तत्ता की के.जे.वी. वर्तनी। *देखें* मत्तत्ता।

मत्तता

मत्तता

Luke 3:31 के अनुसार यीशु का एक पूर्वज।

*देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

मत्तत्ता

मत्तत्ता

हाशूम का पुत्र, जिसने एज्रा की इस सलाह का पालन किया कि वे अपनी अन्यजाति पत्नी को बँधुआई के बाद तलाक दें (एज्रा 10:33)।

मत्तनै

मत्तनै

1. हाशूम का पुत्र, जिसने एज्रा के उस उपदेश का पालन किया कि बँधुआई के बाद अपनी अन्यजाति पत्नी को तलाक दें (एज्रा 10:33)।

2. बानी का बेटा, जिसने निर्वासन के बाद अपनी मूर्तिपूजक पत्नी को तलाक देने के लिए एज्रा के उपदेश का पालन किया (एज्रा 10:37)।

3. निर्वासन के बाद यरूशलेम में महायाजक योयाकीम के दिनों में योयारीब के याजकीय घराने का प्रमुख (नहे 12:19)।

मत्तन्याह

1. यहूदा का अन्तिम राजा, जिसे बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने मत्तन्याह के भतीजे यहोयाकीन के स्थान पर सिंहासन पर बैठाया; उसका नाम बाद में सिदकिय्याह में बदल दिया गया (2 रा 24:17) और इसी नाम से वह 2 राजाओं, 2 इतिहास और यिर्मयाह में अन्य सन्दर्भों में जाना गया है। *देखें*सिदकिय्याह।

2. आसाप का वंशज, जिसे निर्वासन के बाद यरूशलेम में रहने वाले लेवियों में नामित किया गया था (1 इति 9:15; नहे 11:17, 22; 12:8, 35)।

3. हेमान का पुत्र, जिसने दाऊद के शासनकाल के दौरान निवासस्थान में संगीत का नेतृत्व करने में सहायता की (1 इति 25:4, 16)।

4. आसाफ के वंशजों में से एक लेवी, जो राजा यहोशापात के दिनों में परमेश्वर के संदेशवाहक, यहजीएल का पूर्वज था (2 इति 20:14)।

5. आसाफ के वंशजों में से एक अन्य लेवी, जिसने राजा हिजकिय्याह के शासनकाल में मन्दिर के शुद्धिकरण में सहायता की (2 इति 29:13)।

6–9. इस्राएल के चार पुरुष, जिन्हें बँधुआई के पश्चात के युग में एज्रा द्वारा अपनी विदेशी पत्नियों को त्यागने के लिए कहा गया (एज्रा 10:26–27, 30, 37)।

10. नहेम्याह के समय में यरूशलेम की पुनर्निर्मित शहरपनाह के समर्पण के अवसर पर एक द्वारपाल (नहे 12:25)।

11. हानान का दादा, जो नहेम्याह के समय में मन्दिर का खजांची था (नहे 13:13)।

मत्तात

मत्तात

1. यीशु के एक पूर्वज (लूका 3:24), संभवतः वही जो मत्तान (मत्ती 1:15) के रूप में जाने जाते हैं।
2. यीशु के एक पूर्वज (लूका 3:29)।

*यह भी देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

मत्तान

1. बाल का याजक, जिसे यहोयादा याजक द्वारा उस समय मारा गया, जब रानी अतल्याह को मारा और योआश को यहूदा के सिंहासन पर बैठाया गया (2 रा 11:18; 2 इति 23:17)।

2. शपत्याह का पिता, जो राजा सिदकिय्याह के अधीन एक हाकिम था और उन लोगों में से एक था जिन्होंने यिर्मयाह को सताया था (यिर्म 38:1–6)।

मत्तान

मत्तान

यीशु के एक पूर्वज (मत्ती 1:15)। वह लूका 3:24 में मत्तात भी हो सकते हैं।

*देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

मत्ताना

मत्ताना

एक जगह जहाँ इस्राएलियों ने डेरा डाला था जब परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से बाहर निकाला था। वे यहाँ तब आए जब वे मृत सागर के पूर्वी किनारे से उत्तर की ओर यात्रा कर रहे थे, अर्नोन नदी से एमोरियों के राजा सीहोन द्वारा शासित भूमि की ओर बढ़ रहे थे (गिन 21:18–19)। आज, हम ठीक से नहीं जानते कि मत्ताना कहाँ था, लेकिन यह संभवतः एक स्थान पर है जिसे अब खिरबेट एल-मेदेयिनेह कहा जाता है, जो वादी एथ-थेमेद नामक तराई के पास है।

मत्तित्याह

मत्तित्याह

1. योआरीब के परिवार से एक यहूदी याजक (उनके परिवार का इतिहास 1 मक्काबियों 2:1 और जोसेफस की *पुरावशेष* 12.6.3 में देखा जा सकता है)। यद्यपि उनका जन्म यरूशलेम में हुआ था, लेकिन बाद में वे मोडिन नामक शहर में चले गए। वे मक्काबियों के पिता के रूप में जाने गए, जो अगुवों का एक दल था जिसने 167 ईसा पूर्व में सीरियाई शासन के खिलाफ यहूदियों की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी।
इस समय, सीरियाई राजा आन्तिओकस एपिफानेस ने यहूदी धर्म को नष्ट करने और यहूदी लोगों को यूनानी तरीकों का पालन करने के लिए मजबूर करने की कोशिश की। उन्होंने यहूदियों की धार्मिक प्रथाओं को गैरकानूनी घोषित कर दिया, जिसमें परमेश्वर को दी जाने वाली बलिदान भी शामिल थी। उन्होंने गैर-यहूदियों के देवताओं के लिए वेदियाँ बनाईं, जिसमें यहूदियों के मन्दिर में यूनानी देवता ज्यूस के लिए एक वेदी भी शामिल थी। उन्होंने तोराह रखने वाले किसी भी व्यक्ति की मृत्यु का आदेश दिया (1 मक्क 2:1–49)।
संघर्ष तब शुरू हुआ जब यूनानी अधिकारियों ने मोडिन में अपने देवताओं के लिए एक वेदी बनाई। उन्होंने लोगों को इन देवताओं के लिए बलिदान चढ़ाने का आदेश दिया, लेकिन मत्तित्याह ने इनकार कर दिया। जब एक अन्य यहूदी व्यक्ति बलिदान करने के लिए आगे आया, तो मत्तित्याह ने उस व्यक्ति और यूनानी अधिकारी दोनों को मार डाला। फिर उन्होंने वेदी को नष्ट कर दिया और अपने समर्थकों के साथ पहाड़ियों की ओर भाग गए।
वहाँ से, मत्तित्याह ने सीरियाई लोगों के खिलाफ अचानक हमलों का नेतृत्व किया। उन्होंने यहूदियों के धार्मिक अनुष्ठानों को जारी रखा, जिसमें खतना (शिशु लड़कों की त्वचा हटाने का धार्मिक अनुष्ठान) शामिल था। उन्होंने यहूदियों के धार्मिक व्यवस्था और परंपराओं की रक्षा के लिए कड़ी मेहनत की। उन्होंने अपने अनुयायियों से कहा, "जो कोई भी व्यवस्था के प्रति उत्सुक है, वह मेरे पीछे आए।"

मत्तित्याह ने अपनी मृत्यु से पहले, संभवतः 167 ई.पू. में, लगभग एक वर्ष तक सीरियाई लोगों के विरुद्ध लड़ाई का नेतृत्व किया। उनके अंतिम शब्द उनके पुत्रों के लिए यह थे, "व्यवस्था की आज्ञा का पालन करो।" उनकी मृत्यु के बाद, उनके पुत्र यहूदा नए सैन्य अगुवा बने। मत्तित्याह के परिवार की वंशावली, जिसे हस्मोनी परिवार के रूप में जाना जाता है, कई पीढ़ियों तक यहूदियों के याजकों के रूप में सेवा करते रहे। आज, यहूदी लोग हनुक्का के दौरान मत्तित्याह को याद करते हैं (यहूदियों का आठ दिवसीय पर्व जो मक्काबी विजय के बाद यरूशलेम में मन्दिर के पुनः समर्पण के जश्न में मनाया जाता है)। यहूदी धार्मिक प्रथाओं की रक्षा के प्रति उनके दृढ़ समर्पण के कारण वे विशेष प्रार्थनाओं के माध्यम से उनका सम्मान करते हैं।

2. लूका 3:25 के अनुसार, आमोस के पुत्र और यीशु के पूर्वज हैं।
*देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

3. लूका 3:26 के अनुसार, शिमी के पुत्र और यीशु के एक पूर्वज हैं।
*देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

मत्तित्याह

1. लेवी और शल्लूम का पहिलौठा पुत्र, जो मन्दिर में भेंट के साथ आने वाली तवों पर बनाई हुई वस्तुओं का अधिकारी था (1 इति 9:31)।

2. संगीतकार, जिसे अन्य पाँच लोगों के साथ वीणा बजाने के लिए लेवियों द्वारा नियुक्त किया गया था, जब दाऊद के समय वाचा का सन्दूक यरूशलेम लाया गया (1 इति 15:18, 21; 16:5)।

3. यदूतून के छः पुत्रों में से एक, जो दाऊद के समय में एक संगीतकार था (1 इति 25:3, 21); सम्भवतः ऊपर #2 के सामान हो सकता है।

4. नबो का बेटा, जिसने एज्रा के आदेश पर अपनी विदेशी पत्नी को तलाक दे दिया था (एज्रा 10:43)।

5. एक व्यक्ति जो एज्रा के दाहिने ओर खड़ा था, जब बँधुआई के बाद एज्रा ने लोगों को व्यवस्था पढ़कर सुनाई (नहे 8:4)।

मत्तियाह

मत्तियाह

यीशु के चेले, जिनका नाम केवल प्रेरि 1:23–26 में उल्लेखित है, जिन्हें यहूदा इस्करियोती की जगह लेने के लिए चुना गया।

यीशु के स्वर्गारोहण के तुरंत बाद, पतरस ने एक और प्रेरित चुनने की आवश्यकता को व्यक्त किया, और इसके लिए यह शर्त रखी कि उम्मीदवार यीशु के बपतिस्मा से लेकर उनके स्वर्गारोहण तक का अनुयायी होना चाहिए और उनके पुनरुत्थान का साक्षी होना चाहिए। सभा ने दो व्यक्तियों को आगे रखा जो इन मापदंडों को पूरा करते थे: यूसुफ जिसे बरसब्बास कहा जाता था, उपनाम यूस्तुस, और मत्तियाह। फिर उन्होंने चिट्ठियाँ डालीं (कुछ विद्वानों का मानना है कि उन्होंने मतपत्रों का उपयोग किया)। चाहे जो भी विधि हो, मत्तियाह को चुना गया। बाद में प्रेरितों की सूची में पौलुस, अन्द्रुनीकुस, और यूनियास जैसे अन्य लोगों को भी शामिल किया गया। पवित्रशास्त्रों में मत्तियाह का फिर कभी उल्लेख नहीं किया गया, हालांकि परम्परा कहती है कि उन्होंने यहूदिया में प्रचार किया और अन्ततः यहूदियों द्वारा पत्थरवाह कर मार डाले गए।

*यह भी देखें*प्रेरित, प्रेरिताई।

मत्ती (व्यक्ति)

हलफईस का पुत्र; पेशे से एक कर वसूलने वाला; यीशु द्वारा 12 प्रेरितों में से एक के रूप में चुना गया; मत्ती के सुसमाचार के लेखक के रूप में माना जाता है।

मत्ती को 12 शिष्यों की चारों सूचियों में सूचीबद्ध किया गया है (मत्ती 10:3; मर 3:18; लूका 6:15; प्रेरि 1:13)। इन सूचियों के अलावा, मत्ती का उल्लेख केवल उसके बुलावे के विवरण में किया गया है (मत्ती 9:9; मर 2:13–14; लूका 5:27)। अपने प्रेरितिक बुलावे से पहले, सुसमाचारों में मत्ती को लेवी के रूप में संदर्भित किया गया है (मर 2:14; लूका 5:27; तुलना करें मत्ती 9:9)। मत्ती के रूप में लेवी की पहचान पर कोई संदेह नहीं है। यह संभावना नहीं है कि मत्ती छोटे याकूब का भाई था जिसके पिता का नाम भी हलफईस था (मत्ती 10:3), क्योंकि यह तथ्य शास्त्र के विवरण में उल्लेखित होता, जैसा कि पतरस और अन्द्रियास और जब्दी के पुत्रों के मामलों में है।

मत्ती ने गलील के कफरनहूम में राजा हेरोदेस अन्तिपास की सेवा करता था, दमिश्क से भूमध्य समुद्र तक जाने वाले मार्ग पर सामान पर शुल्क वसूलता था। इस क्षमता में कार्य करने के लिए मत्ती एक शिक्षित व्यक्ति होना आवश्यक था, जो यूनानी भाषा के साथ-साथ स्थानीय अरामी भाषा से परिचित था, अतः वह मत्ती के सुसमाचार को लिखने के लिए योग्य था।

एक कर वसूलने वाले के रूप में, मत्ती शायद एक धनी व्यक्ति था, लेकिन इस पेशे के कारण उसे यहूदियों द्वारा तिरस्कृत किया जाता था और सबसे निम्न लोगों में गिना जाता था। फरीसी लगातार कर वसूलने वालों को पापियों के साथ गिनते थे (मत्ती 11:19; मर 2:16; लूका 7:34; 15:1)।

मत्ती को तब बुलाया गया जब वह अपने कर लेनेवाले केन्द्र पर काम कर रहा था। यीशु मार्ग पर से गुजरे और उससे कहा, "मेरे पीछे हो ले" (मर 2:14)। मत्ती ने सब कुछ छोड़ दिया और ऐसा ही किया (लूका 5:28)। तुरंत उसने यीशु को अपने घर पर एक बड़ा भोज दिया, और उसके साथी कर वसूलने वालों और अन्य लोगों की एक बड़ी भीड़ वहां उस भोज का आनंद ले रही थी। इसी भोज में फरीसियों और उनके शास्त्रियों ने यह प्रसिद्ध शिकायत की "“तुम चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?" (लूका 5:30)।

यह निश्चित नहीं है कि मत्ती को कब बुलाया गया था, लेकिन यह संभव है कि उस दिन पहले छह शिष्य उपस्थित थे, क्योंकि फरीसियों ने मत्ती के भोज के दौरान मसीह के शिष्यों से शिकायत की थी। यीशु के द्वारा बुलाए गए पहले शिष्यों के विपरीत, मत्ती मूल रूप से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का अनुयायी नहीं था।

मत्ती का सुसमाचार

पहला सुसमाचार और एन.टी की पहली पुस्तक।

पूर्वावलोकन

- लेखक
- तिथि और स्थान
- उद्देश्य
- विषयवस्तु

लेखक

कहीं भी मत्ती के लेख में लेखक को स्पष्ट रूप से पहचाना नहीं गया है। फिर भी, प्राचीन कलीसिया की तरह, हम प्रेरित मत्ती को लेखन का श्रेय दे सकते हैं। वह अन्यथा लेवी के रूप में जाना जाता था (देखें मर 2:14; लूका 5:27, 29)। यीशु ने उसे बुलाने से पहले, वह एक चुंगी लेनेवाला था (देखें मत्ती 9:9 के आगे)। यह ध्यान देने योग्य है कि मत्ती ने खुद को एक चुंगी लेनेवाला कहा, जबकि अन्य किसी भी सुसमाचार लेखक ने ऐसा नहीं किया। शायद उसने यह दिखाने के लिए ऐसा किया कि प्रभु ने उसे बुलाए जाने पर उसे कितनी महान स्थिति प्रदान की थी, क्योंकि चुंगी लेने वाले तिरस्कृत और समाज के सबसे निम्न वर्ग के माने जाते थे। सुसमाचार स्वयं मुद्रा की समझ रखने वाले व्यक्ति की छाप को धारण करता है, क्योंकि सुसमाचार लेखक दो-द्राख्मा कर (मत्ती 17:24), चार-द्राख्मा सिक्का (पद 27), और विभिन्न तोड़ो (18:24; देखें 25:15 के आगे) के बारे में बहुत विशिष्ट रूप से बात करता है।

तिथि और उत्पत्ति

बहुत से विद्वान इस बारे में विभाजित हैं कि मत्ती कब लिखा गया था, मुख्यतः क्योंकि अभी भी इस पर बहस है कि कौन सा सुसमाचार पहले लिखा गया था: मत्ती या मरकुस। यदि मरकुस मत्ती से पहले लिखा गया था, तो मत्ती बहुत सारे विषयवस्तु के लिए मरकुस के प्रति बहुत आभारी था, या फिर इसके विपरीत। जो लोग मत्ती की प्राथमिकता के पक्ष में तर्क देते हैं, वे ऐसा इस आधार पर करते हैं कि मत्ती का सुसमाचार (1) प्रारंभिक कलीसिया में पहले सुसमाचार के रूप में मान्यता प्राप्त था, (2) उन लोगों के लिए लिखा गया था जिन्हें पहले लिखित विवरण की आवश्यकता थी—यहूदी, और (3) एन.टी सिद्धान्त में पहले स्थान पर रखा गया था। चाहे यह मरकुस से पहले लिखा गया हो या बाद में, अधिकांश विद्वान इस बात पर निश्चित हैं कि यह यरूशलेम के विनाश (ईस्वी 70) से पहले लिखा गया था क्योंकि मंदिर को अभी भी खड़ा बताया गया है (मत्ती 24:15)। आइरेनियस ने संकेत दिया कि मत्ती ने यह सुसमाचार लिखा जब पतरस और पौलुस रोम में थे। यह लेखन का समय 60 के दशक का बनाता है।

उद्देश्य

अपोलोजेटिक्स

मत्ती ने यूनानी-भाषी यहूदी मसीहीयों के एक समुदाय को लिखा, जो सीरिया के अन्ताकिया जैसे केंद्र में स्थित था। उस मसीही समुदाय को यहूदियों से घेर लिया गया था, जो यीशु के दावों और मसीही समुदाय के प्रति शत्रु भाव रखते थे।

मत्ती ने यहूदी के रूप में यहूदियों के लिए लिखा। नासरत के यीशु में, मत्ती का तर्क है, कि पुराना नियम अपने निर्धारित लक्ष्य तक पहुंच गया। यीशु इस्राएल की उम्मीदों के मसीहा हैं। प्रारंभिक अध्याय में मत्ती उसे "दाऊद का पुत्र, अब्राहम का पुत्र" (1:1) के रूप में परिचय देता है, वास्तव में "परमेश्वर हमारे साथ" (पद 23) के रूप में। बाद के अध्यायों में यीशु को दानिय्येल 7 का मनुष्य का पुत्र और यशायाह 53 का दुःखी सेवक के रूप में प्रकट किया गया है। पूरी किताब में (मत्ती 1:22–27:10) यीशु के जीवन की घटनाओं को भविष्यवाणियों की "पूर्ति" के रूप में दर्शाया गया है। वह इस्राएल को पाप से मुक्ति देने आता है (1:21)। फिर भी, यहूदियों ने उन्हें अपना मसीहा के रूप में अस्वीकार कर दिया है, और इस प्रकार खुद को सबसे खतरनाक स्थिति में डाल दिया है (11:20–24; 21:33–46)। इस्राएल द्वारा यीशु को अस्वीकार किए जाने का एक कारण यह है कि यहूदी धार्मिक नेतृत्व ने लोगों को उनके आगमन के लिए उचित रूप से तैयार नहीं किया। सबसे कड़े शब्दों में, मत्ती व्यवस्था के शिक्षकों और फरीसियों की निंदा करते हैं। उन्होंने अपने ही

परंपराओं को प्राथमिकता देकर परमेश्वर के वचन को त्याग दिया है। (अध्याय 15)।

कलीसिया को शिक्षा देना

मत्ती ने भी मसीहीयों के लिए एक मसीह के रूप में लिखा। वह यीशु को एक नए मूसा के रूप में प्रस्तुत करता है, वास्तव में यहोवा के देहधारण के रूप में, जो अपने लोगों के लिए अपने स्वयं की व्यवस्था व्याख्या कर रहा है (अध्याय 5), जो अब प्रेरितों के नेतृत्व में उसके व्यक्तित्व के चारों ओर नवगठित है (10:2–4; 16:18–19; 23:8–10)। यदि मसीह कलीसिया को सही ढंग से कार्य करना है, तो नैतिक और आत्मिक मुद्दों की एक श्रृंखला पर मसीहा की शिक्षा को अत्यधिक गंभीरता से लिया जाना चाहिए (अध्याय 5–7, 18)। इस उद्देश्य में सहायता करने के लिए, मत्ती एक धार्मिक पाठ्यपुस्तक या कलीसिया के लिए एक पुस्तिका का रूप लेता है, ताकि परमेश्वर के लोगों को यीशु के व्यक्तित्व और कार्य के बारे में निर्देशित किया जा सके। इन शिक्षाओं को अधिक आसानी से और दृढ़ता से समझने के लिए, मत्ती उन्हें एक अत्यधिक संगठित और यादगार तरीके से प्रस्तुत करता है। विषयवस्तु के अध्ययन को सुगम बनाने के लिए, वह यीशु की शिक्षाओं को पाँच प्रमुख प्रवचनों में व्यवस्थित करता है (जो कथात्मक अंशों के साथ जुड़े होते हैं) जिसमें एक ही प्रकार की शिक्षाओं को एक साथ समूहित किया जाता है (जैसे, अध्याय 10 में प्रेरितों को निर्देश दिया गया है, और अध्याय 13 में राज्य के सात दृष्टांत शामिल हैं)। मत्ती के प्रमुख धर्मशास्त्र विषयों को परमेश्वर के *पुत्र* (यीशु यहोवा के देहधारी रूप हैं, "परमेश्वर हमारे साथ"), परमेश्वर का *राज्य* (यीशु में, परमेश्वर अपने अंतिम शासन को प्रारंभ करने के लिए इतिहास में प्रवेश कर रहे हैं), परमेश्वर का *उद्धार* (सेवक-राजा के रूप में, यीशु "अपने लोगों को उनके पापों से बचाने" के लिए आए हैं, 1:21), और परमेश्वर के *लोग* (यीशु अपनी कलीसिया बनाने के लिए आए हैं, जो यहूदियों और अन्यजातियों से मिलकर बनी हुई एक छुड़ाई गई मण्डली है) के रूप में पहचाना जा सकता है।

विषयवस्तु

उद्धारकर्ता का आगमन (1:1–2:23)

उनका नाम उनके लक्ष्य को प्रकट करता है: "यीशु" (1:1) का अर्थ है "यहोवा बचाता है।" वह "अब्राहम का पुत्र" है, जो यहूदियों और अन्यजातियों के लिए परमेश्वर की प्राचीन प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए आते हैं (उत 12:1–3)। वह "ख्रिस्त [अथवा मसीह]," दाऊद का पुत्र (मत्ती 1:1), जो परमेश्वर के राज्य की स्थापना करने आता है (4:17)। उससे भी अधिक, जैसा कि भविष्यवाणी (1:22–23) और उसकी गर्भधारण की प्रकृति (पद 18–20) दोनों से प्रमाणित होता है, वह "परमेश्वर हमारे साथ" है—अब "अपने लोगों को उनके पापों से बचाने" के लिए आया है (पद 21)। दाऊद के पुत्र के रूप में, और भविष्यवाणी के अनुसार, वह बैतलहम में पैदा हुआ (2:1–6)। इस्राएल के मसीहा के तारे से आकर्षित (तुलना करें गिन 24:17), गैर-यहूदी उसकी पूजा करने आते हैं (Mt 2:1–12)। जब हेरोदेस उसे नष्ट करने की कोशिश करता है, यीशु एक अन्यजाती भूमि में शरण पाते हैं; मिस्र से अपने पुत्र को बुलाने पर परमेश्वर का कार्य एक महान उद्धार कार्य की शुरुआत करता है—यीशु, नए मूसा के तहत एक नए निर्गमन से कम कुछ नहीं (पद13–20)। सबसे विनम्र परिस्थितियों में जन्म लेने के बाद, यीशु अब नासरत में रहने आते हैं (पद 21–23)।

सेवा की शुरुआत (3:1–4:25)

उस न्याय का सामना करते हुए जिसे यीशु करने वाले हैं (राज्य के आगमन के प्रमाण के रूप में), यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला इस्राएल को मन फिराव करने के लिए बुलाता है (3:1–12)। यीशु का यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रति समर्पण, और स्वर्ग से आई वाणी, उसे एक ऐसे राजा के रूप में दिखाते हैं जो अपने प्रजा की सेवा उनके पापों को अपने ऊपर लेकर करता है (पद 13–17)। इस्राएल के निर्गमन के समय जैसे, यीशु को परीक्षा के लिए जंगल में ले जाया गया (4:1)। जब शैतान उसे परमेश्वर और उसके नियुक्त लक्ष्य दोनों से दूर करने की कोशिश करता है, यीशु परमेश्वर और उसके वचन पर निर्भर होकर विजय प्राप्त करते हैं (पद 1–11)। गलील लौटकर, यीशु जानबूझकर उस क्षेत्र में बसते हैं जहां यहूदी और अन्यजाती दोनों निवासी हैं (पद 12–16) और प्रचार की सेवा (यूहन्ना की तरह, वे उभरते राज्य के सामने मन फिराव का आह्वान देते हैं), शिक्षा (वे अपने पहले शिष्यों को बुलाते हैं), और चंगाई (पद 17–25) को शुरू करते हैं।

पहाड़ी उपदेश (5:1–7:29)

जैसे मूसा इस्राएल के लिए परमेश्वर की व्यवस्था प्राप्त करने के लिए सीनै पहाड़ पर चढ़े थे, वैसे ही यीशु—नए मूसा और परमेश्वर के देहधारण दोनों के रूप में—परमेश्वर के राज्य के नागरिकों के लिए अपनी शिक्षा देने के लिए पहाड़ पर चढ़ते हैं (पद 5:1–2)। वह *सुसमाचार* (न कि व्यवस्था) से शुरू करता है, यह घोषणा करते हुए कि परमेश्वर निश्चित रूप से उन लोगों को बचाएगा जो—पाप से घिरे हुए—परमेश्वर की दया पर विश्वास करते हैं, उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, और पृथ्वी पर उसकी धार्मिकता की स्थापना की लालसा रखते हैं (पद3–12)। उस उद्देश्य की ओर, शिष्य एक पापी समाज में एक संरक्षक (नमक) और एक गवाह (प्रकाश) होते हैं (पद13–16)। जिसने व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं को समाप्त करने के लिए नहीं बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए (अर्थात, उस नए युग को लाने के लिए जिसकी ओर पुराना नियम संकेत करता है— पद 17), यीशु अपने शिष्यों को अब स्वयं व्यवस्था दाता द्वारा विस्तारित परमेश्वर के व्यवस्था के प्रति दृढ़ आज्ञाकारिता के लिए बुलाते हैं (पद 18–20)। परमेश्वर की आज्ञाएँ आंतरिक इच्छाओं के साथ-साथ बाहरी

कार्यों को भी समाहित करती हैं, उन्हें कम नहीं किया जाना चाहिए या तर्क संगत नहीं बनाया जाना चाहिए, और अब जब अंत आ गया है, तो पहले से कहीं अधिक कट्टर आज्ञाकारिता की मांग करती हैं (पद 21–48)। उनके देने, प्रार्थना करने और उपवास करने में, शिष्यों को परमेश्वर-केंद्रितता और आत्म-भूलने के द्वारा कपटता का सामना करना चाहिए (6:1–18)। प्रभु की प्रार्थना (पद 9–13) परमेश्वर से आग्रह करती है कि वह अपने नाम का सम्मान पृथ्वी पर अपना शासन स्थापित करके, और अपने संतानों को क्षमा, सुरक्षा और प्रबंध प्रदान करके करें। इस प्रार्थना को देखते हुए, और शिष्यों की परमेश्वर-केंद्रित वास्तविकता की दृष्टि को देखते हुए (पद 19–24), चिंता का कोई कारण नहीं है (पद 25–34)। शिष्यों को बिना आलोचना किये विवेकशील होना चाहिए (7:1–6), और दूसरों से प्रेम करने के लिए आवश्यक शक्ति के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहना चाहिए (6:7–12)। व्यवस्था की अपनी व्याख्या पूरी करने के बाद (5:21–7:12), यीशु अब संभावित शिष्यों को अपने पीछे चलने के लिए बुलाते हैं (7:13–14), झूठे शिक्षकों के खिलाफ उन्हें चेतावनी देते हैं (पद 15–20), और जोर देते हैं कि सच्चे शिष्य परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं (पद 21–23)।

यीशु का अधिकार (8:1–9:38)

अपनी शिक्षा में अपने अधिकार को *मौखिक* रूप से व्यक्त करने के बाद (7:28–29), यीशु अब इसे एक श्रृंखला में चंगा करने वाले चमत्कारों के द्वारा स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं, और फिर से यशायाह के सेवक के रूप में स्वयं को प्रकट करते हैं (8:17)। वह अपने वचन से एक कोढ़ी, एक सूबेदार के नौकर, और एक लहू बहने वाली महिला को चंगा करते हैं (8:1–13; 9:20–22)। उनका स्पर्श बुखार को दूर करता है और एक मृत व्यक्ति को जीवित करता है (8:14–15; 9:23–25)। वचन और स्पर्श का संयोजन एक अंधे को चंगा करता है (9:27–31)। जैसे "परमेश्वर हमारे साथ," उसी प्रकार यीशु बिना शर्त निष्ठा की मांग करते हैं (8:18–22)। हालांकि जानवरों द्वारा प्राप्त प्राकृतिक सुरक्षा की भी कमी है (पद 20), वह तूफान को शांत करके प्राकृतिक दुनिया पर अपनी संप्रभुता—और इस प्रकार अपनी इश्वरत्व—का प्रदर्शन करते हैं (पद 23–27)। दुष्टात्माओं के साथ सीधे टकराव में, वह उन पर अपनी श्रेष्ठता दिखाता है (8:28–34; 9:32–33)। परमेश्वर के अपने अधिकार का उपयोग करते हुए, वह पापों को क्षमा करने की घोषणा करते हैं (9:1–8) और पापियों को मन फिराव और शिष्यत्व के लिए बुलाते हैं (पद 9–13)। राज्य की उद्घाटन पर आनंद उसकी पूर्णता के लिए लालसा के साथ मिल जाता है (पद 14–17)। 9:35–38 का सारांश 4:23–25 को प्रतिध्वनित करता है, अध्याय 5–7 को याद दिलाता है, और अगले प्रमुख प्रवचन के लिए तैयार करता है।

यीशु का प्रेरितों को आदेश (10:1–42)

उन प्रार्थनाओं के प्रतिउत्तर में जो उन्होंने आज्ञाएँ दिए हैं, मसीह अब 12 शिष्यों को प्रेरितीय अधिकार से सुसज्जित करते हैं और उन्हें अपने फसल का खेत में भेजते हैं (9:37–10:4)। विवेचना दोनों प्रेरितों के तत्काल लक्ष्य (10:5–15) और कलीसिया के व्यापक प्रेरित (पद 16–42) के बारे में बात करती है। इस समय, प्रेरितों को यहूदियों के बीच सुसमाचार प्रचार पर ध्यान केंद्रित करना है (पद 6), ताकि अन्यजातियों के लिए मिशन की तैयारी की जा सके (28:19)। "योग्य" वे हैं जो प्रेरितों और उनके संदेश का स्वागत करते हैं; "अयोग्य" वे हैं जो उन्हें अस्वीकार करते हैं (10:11–15)। बड़े लक्ष्य में, निश्चित रूप से उत्पीड़न होगा (पद 16–19, 24–25), परन्तु यह वास्तव में गवाही में सहायता करेगा (पद 17–23)। परमेश्वर अपने वफादार प्रेरितों को बचाएंगे (पद 19–23) परन्तु उन लोगों का न्याय करेंगे जो उन्हें उत्पीड़ित करते हैं और जो मसीह को अस्वीकार करते हैं (पद 26–39)। एक निश्चित प्रतिफल संदेश के अग्रदूत और प्राप्तकर्ता दोनों की प्रतीक्षा कर रहा है (पद 37–42).

मसीह प्रभु (11:1–12:50)

यूहन्ना द्वारा भविष्यवाणी किया गया कि न्याय पहले से ही चल रहा है; अंतिम न्याय में किसी का स्थान यीशु के वचनों और कार्यों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया से निर्धारित होगा (11:2–6)। उनके अग्रदूत की तरह, यीशु को व्यापक शत्रुता और उदासीनता का सामना करना पड़ता है (पद 7–19)। उनकी सेवकाई में उपस्थित अनुग्रह की अंतिमता को देखते हुए, जो लोग उन्हें अस्वीकार करते हैं, वे सबसे कठोर न्याय का सामना करेंगे (पद 20–24)। फिर भी अन्य लोग हैं—दीन, बोझिल, सिखने योग्य—जो (परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र से प्रकाशन द्वारा) सीखते हैं कि "स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु" भी "कोमल और विनम्र" परमेश्वर हैं जो उन लोगों को विश्राम देने आते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं (पद 25–30)। नए युग की शुरुआत करने वाले के रूप में (12:6), यीशु दावा करते हैं कि वह सब्त के प्रभु हैं (पद 1–8)। सच्चा विश्राम (11:29) उन लोगों को मिलता है जो यीशु के पास आते हैं।

यीशु को सब्त का नाश करने वाला मानते हुए, फरीसी उसकी चमत्कारी शक्तियों को शैतान से जोड़ते हैं (12:22–24)। इसके विपरीत, यीशु कहते हैं, वह नियम जो वह शुरू कर रहा है, शैतान के साम्राज्य को कुचल रहा है (पद 25–29)। इस सच्चाई को पूरी जागरूकता के साथ अस्वीकार करना कि कोई क्या कर रहा है, पवित्र आत्मा के विरुद्ध क्षमा न करने योग्य पाप है (पद 30–32); यीशु के आरोप लगाने वालों के शब्द उन्हें ऐसी व्यक्तियों के रूप में प्रकट करते हैं जो दोषी ठहराए जाने के लिए निश्चित हैं (पद 33–37)। स्वर्ग से मांगा गया चिन्ह नहीं दिया जाएगा। यीशु का पुनरुत्थान ही एकमात्र चिन्ह है जिसकी उन्हें आवश्यकता है।

राज्य की दृष्टांत (13:1–58)

यह, मत्ती के पाँच महान प्रवचनों में से तीसरा, सात दृष्टांतों को समाहित करता है। बोने वाले की दृष्टांत में, चार प्रकार की मिट्टी—कठोर, उथली, अव्यवस्थित, और फलदायी—यीशु के उपदेशों के प्रति विभिन्न प्रतिक्रियाओं को दर्शाती हैं (13:3–9, 18–23)। जिन्होंने यीशु के राज्य के उद्घोषणा को स्वीकार किया है (4:17), शिष्यों को अधिक प्रकाश दिया गया है, परन्तु भीड़ को पहले उस प्रारंभिक उद्घोषणा को स्वीकार करना होगा, उसके बाद ही और प्रकाश दिया जाएगा (13:10–17, 34–35)। दोनों ही जंगली बीज की दृष्टांत (पद 24–30, 36–43) और जाल की दृष्टांत (पद 47–50) में, यीशु अपने शिष्यों को आश्वासन देते हैं कि अंतिम न्याय सच्चे विश्वासियों को झूठ से अलग करेगा, और जल्दबाजी, अपरिपक्व निर्णयों के खिलाफ चेतावनी देते हैं (तुलना करें 7:1–5)। सरसों और खमीर की दृष्टांत (13:31–33) राज्य के उद्घाटन की छोटी शुरुआत की तुलना उसकी पूर्णता के साथ करते हैं। छिपे हुए धन और मोती की दृष्टांत (पद 44–46) राज्य को अन्य सभी से कहीं अधिक मूल्यवान के रूप में चित्रित करते हैं (तुलना करें 6:33)। इस प्रकार यीशु द्वारा प्रकाशित, शिष्यों के पास अपने पुराने खजानों में जोड़ने के लिए नए खजाने हैं (13:51–52)। नासरत के लोग, इसके विपरीत, भीड़ की समझ की कमी और फरीसियों की शत्रुता को प्रतिध्वनित करते हैं (पद 53–58)।

आत्मिक संघर्ष (14:1–16:12)

14:1–12 में यूहन्ना का प्रचार हेरोदेस की कमजोरी को उजागर करता है, और यूहन्ना का सिर काटना यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की पूर्वानुमान करता है (तुलना करें 17:12)। सच्चा राजा हेरोदेस नहीं बल्कि यीशु है। वह स्वयं प्रकृति पर सर्वोच्च है (14:13–36)—मनुष्य देहधारी परमेश्वर, "परमेश्वर हमारे साथ है" जो जंगल में भूखी भीड़ को खिलाता है (जैसे परमेश्वर ने एक बार मन्ना प्रदान की थी) और वह समुद्र पर चलता है और उसे शांत करता है (देखें भजन 89:9)। पतरस मसीहियों के विश्वास, डर और यीशु पर पूर्ण निर्भरता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं (मत्ती 14:28–31)। फरीसी और शास्त्री परमेश्वर की आराधना करते हुए दिखाई देते हैं, लेकिन वास्तव में वे अपनी परंपराओं के प्रति समर्पित होते हैं, जिन्हें वे पूरक के रूप में नहीं बल्कि परमेश्वर के वचन के *विरोधी* के रूप में प्रस्तुत करते हैं (15:1–9)। पद 10–20 में यीशु यह सिखाते हैं कि नैतिक कानून से अलग अनुष्ठानिक कानून एक निरर्थक रीतिपूर्वक बन जाता है, और यह कि शुद्ध और अशुद्ध खाद्य पदार्थों के बीच पुराना भेद (लैव्य 11) अब यहूदियों और अन्यजातियों के बीच भेद के समान अप्रचलित हो गया है। इस बात को रेखांकित करने के लिए, यीशु अन्यजाती क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, एक कनानी का इलाज करते हैं (15:21–28) और एक अन्यजाती भीड़ को भोजन कराते हैं (पद 29–39)। फरीसी और सदूक़ी, अपनी सभी भिन्नताओं के बावजूद, यीशु का विरोध करने में एक साथ हैं (16:1–12)।

आगामी उद्धार (16:13–17:27)

भीड़ के सम्मानजनक लेकिन अपर्याप्त अनुमानों से परे जाकर, पतरस यीशु को "मसीह, जीवित परमेश्वर का पुत्र" के रूप में स्वीकार करता है—यह यीशु की इश्वरत्व की पहचान है जो ईश्वरीय प्रकाशन द्वारा दी गई है (16:13–17; तुलना करें 11:25–26)। चूंकि यह परमेश्वर का पुत्र है जो कलीसिया का स्वामी है और उसे बनाता है, शैतान और मृत्यु पीड़ित हैं न कि विजेता। यीशु पतरस के इस अंगीकार पर अपनी कलीसिया बनाएंगे कि यीशु मसीह, जीवित परमेश्वर के पुत्र हैं। शिष्यों द्वारा कलीसिया में प्रवेश को रोकना और अनुमति देना ("बांधना" और "छोड़ना," क्रमशः) स्वर्ग के पूर्व निर्णय पर निर्भर करता है (अर्थात, प्रेरितीय शिक्षा का ईश्वरीय प्रकाशन)। पतरस की अंगीकार में और मसीह की लगातार झूठी धारणाओं के मध्य में (16:20, 23), यीशु अब (पहली बार) अपनी पीड़ाओं और आने वाली महिमा की भविष्यवाणी करते हैं (पद 21–28)। उस महिमा की प्रतीक्षा में, यीशु कुछ शिष्यों के सामने रूपांतरित होते हैं; मूसा और एलिय्याह परमेश्वर पिता के साथ मिलकर परमेश्वर पुत्र की अद्वितीय महिमा की गवाही देते हैं (17:1–8)। इसके बाद यीशु ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन दुष्ट आत्माओं से मुकाबला करके किया (पद 14–18) और अपने अधिकार का प्रदर्शन मंदिर के कर को चमत्कारी तरीकों से चुकाने का चयन करके किया (पद 24–27)।

राज्य में महानता (18:1–35)

इसमें, मत्ती के पाँच महान प्रवचनों में से चौथे में, यीशु कलीसिया के सदस्यों के चरित्र और दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वह अपने अनुयायियों से निम्नतम *बनने* और उनका *स्वागत* करने दोनों का आह्वान करता है (18:1–5)।अगुवों को विशेष रूप से अपने साथ कठोरता से परन्तु अपने देखभाल में रहने वालों के साथ कोमलता से व्यवहार करने के लिए कहा गया है (पद 6–9)। बहिष्कार को अंतिम उपाय के रूप में साथ रखते हुए, पापियों के प्रति पिता के प्रेम को याद करते हुए, मसीहीयों को (प्रार्थना और व्यक्तिगत पहल दोनों द्वारा) अपने अपराधी भाइयों को बहाल करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए (पद 10–20)। जो कलीसिया सदस्य वास्तव में पिता की अद्भुत कृपा को समझते हैं, वे कभी भी उन्हें गलत करने वालों को क्षमा और करुणा प्रदान करना बंद नहीं करेंगे (पद 21–35)।

यरूशलेम के रास्ते पर निर्देश (19:1–20:34)

परमेश्वर की सृष्टि के आदेशों को देखते हुए, यीशु कहते हैं, तलाक का *आदेश* कभी नहीं दिया गया है; यह केवल पाप के मामले में *अनुमति* है—अर्थात, जहां विवाह बंधन पहले ही अविश्वास के माध्यम से टूट चुका है (19:1–9)। जैसा कि 5:17–48 में, यीशु अपने अनुयायियों को चरम आज्ञाकारिता के लिए बुलाते हैं (19:10–12)। इसके अलावा, शिष्यों को

बच्चों जैसा बनने का निर्देश देने के साथ (18:1–4), यीशु स्वयं बच्चों को अपने प्रेम से गले लगाते हैं (19:13–15)। वह अमीर युवा व्यक्ति से भी अपील करते हैं (पद 16–22); लेकिन वह व्यक्ति, जो पड़ोसी के प्रति प्रेम के आदेशों के प्रति वफादार है, अपनी संपत्ति से इतना बंधा हुआ है कि वह खुद को पूरी तरह से परमेश्वर से प्रेम करने के लिए समर्पित नहीं कर सकता है। फिर भी जो लोग यीशु का अनुसरण करने के लिए सब कुछ त्याग देते हैं, उन्हें आने वाले राज्य में अकथनीय धन प्राप्त होगा (पद 27–30)। ऐसी आशीषों का आधार मानव योग्यता में नहीं बल्कि कृपालु परमेश्वर की आश्चर्यजनक उदारता में निहित है (20:1–16)। कोई भी—यहां तक कि अमीर भी नहीं—उसकी कृपा की शक्ति से परे नहीं हैं। लेकिन परमेश्वर स्वयं को बड़ी कीमत चुकाकर निःशुल्क मुक्ति प्रदान करता है (पद 17–19)। प्रतिस्पर्धा और महत्वाकांक्षा का सामना करते हुए, यीशु अपने अनुयायियों को सिखाते हैं कि सच्ची महानता दूसरों पर प्रभुत्व जमाने में नहीं बल्कि उनकी सेवा करने में है (पद 20–34), जैसा कि उनकी मृत्यु में "कई लोगों के लिए फिरौती" के रूप में सर्वोच्च रूप से प्रदर्शित होगा (पद 28).

यरूशलेम में टकराव (21:1–22:46)

सेवक-राजा के रूप में (तुलना करें 3:17), और मसीहा के रूप में जो पीड़ा के लिए नियत है (तुलना करें 16:16–21; 20:28), यीशु यरूशलेम में युद्ध के घोड़े पर नहीं बल्कि गधे के बच्चे पर बैठ कर प्रवेश करते हैं, क्योंकि उनका उद्देश्य अपने शत्रुओं पर युद्ध की घोषणा करना नहीं है बल्कि खुद को उनके हवाले करना है—और इस प्रकार अपनी हार के माध्यम से अपनी विजय प्राप्त करना है (21:1–11)। मंदिर के स्वामी के रूप में, वह मांग करता है कि मन्दिर का व्यापार बंद हो जाए और यह (जैसा कि परमेश्वर ने आदेश दिया है) सभी के लिए आराधना का स्थान बने, जिसमें बीमार, युवा और विदेशी शामिल हैं (21:12–17; तुलना करें मर 11:17)। वह उन लोगों को मात देता है जो उसके और यूहन्ना के अधिकार के स्वर्गीय स्रोत को स्वीकार करने से इनकार करते हैं (मत्ती 21:23–27)। नाटकीय और विनाशकारी तरीके से, पहले दृश्य रूप से (अंजीर के पेड़ को शाप देकर—पद 18–22) और फिर मौखिक रूप से (तीन दृष्टांतों में 21:28–22:14), यीशु उन यहूदियों पर न्याय सुनाते हैं जिन्होंने उन्हें मसीहा और परमेश्वर का पुत्र मानने से इनकार कर दिया है। अतः, सच्चे परमेश्वर के लोग वे हैं जो यीशु में विश्वास करते हैं, चाहे वे यहूदी हों या अन्यजाती। वह अपने लोगों से परमेश्वर के प्रति अपनी सर्वोच्च निष्ठा की प्रतिज्ञा करने का आह्वान करता है। पुनरुत्थान में सबसे महत्वपूर्ण बात किसी का परमेश्वर के साथ संबंध होगा (22:23–33)। वास्तव में, जो व्यक्ति अपने पूरे अस्तित्व के साथ परमेश्वर से प्रेम करता है और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करता है, उसने दो मौलिक आदेशों का पालन किया है (पद 34–40)। अतः, परमेश्वर के प्रति समर्पण का अर्थ है यीशु को सही ढंग से पहचानना; वह वास्तव में दाऊद का पुत्र है (मत्ती 1:1), लेकिन वह सर्वोच्च रूप से दाऊद का प्रभु है—उत्थित परमेश्वर का पुत्र (22:41–46; तुलना करें 16:16)।

शास्त्रियों और फरीसियों पर विपत्तियाँ (23:1–39)

यीशु द्वारा यहूदी धार्मिक अगुवों की निंदा के पांच कारण बताए गए हैं। पहला उनका पाखंड है: उनका अभ्यास उनके शिक्षण का विरोधाभासी है (23:1–4), उनकी बाहरी शुद्धता अंदरूनी सड़न को छुपाती है (पद 25–28), और वे परमेश्वर के लिए योद्धा प्रतीत होते हैं लेकिन वास्तव में परमेश्वर के सेवकों के दुश्मन हैं (पद 29–36)। दूसरा उनका अहंकार है जो उनकी पाखंडता को प्रेरित करता है (23:5–12)। तीसरा जो उनके अधीन हैं उनका शोषण और उन पर उनका बुरा प्रभाव है (पद 13–15)। चौथा, कानून की छोटी-छोटी बातों से लेकर उसके महत्वपूर्ण मामलों की उपेक्षा तक में उनकी व्यस्तता है (पद 16–24)। पांचवां, उस भयानक फैसले के लिए उनकी ज़िम्मेदारी है जिसे पूरा देश भुगतने वाला है (पद 33–39)।

अंत का आगमन (24:1–25:46)

इसका परिचय, मत्ती के महान प्रवचनों में से पांचवां और अंतिम, यह स्पष्ट करता है कि यरूशलेम के आने वाले विनाश और युग के अंत के बीच (यीशु और उनके शिष्यों दोनों के लिए) सबसे करीबी संबंध है (24:1–3)। यीशु अपने पहले आगमन और अपनी वापसी के बीच के समय को इस प्रकार वर्णित करते हैं: प्राकृतिक आपदाएँ होंगी, अंतरराष्ट्रीय युद्ध होंगे, झूठे मसीहाओं का उदय होगा, परमेश्वर के लोगों का उत्पीड़न होगा, और राज्य के सुसमाचार की सार्वभौमिक घोषणा होगी (पद 4–14)। फिर यीशु उस विपत्ति के बारे में बात करते हैं जो जल्द ही विशेष रूप से यहूदी राष्ट्र पर आने वाली है (जैसा कि पहले से ही 22:7; 23:38 में भविष्यवाणी की गई है), जो 70 ईस्वी में यरूशलेम और उसके मंदिर के विनाश में परिणत होगी (24:15–25)। कुछ समय बाद (लेकिन केवल परमेश्वर पिता को ज्ञात अंतराल के बाद—पद 36), मनुष्य का पुत्र महान महिमा में लौटेगा, प्रलय के संकेतों के बीच, अपने लोगों को इकट्ठा करने के लिए (पद 26–31)। वर्तमान पीढ़ी तब तक नहीं गुजरेगी जब तक न्याय इस्राएल पर नहीं आ जाता (पद 15–25), इसलिए श्रोता सावधान रहें (पद 32–35)। वही चेतावनी मनुष्य के पुत्र के दूर के आगमन पर भी लागू होती है (पद 36–51): घटना की निश्चितता और इसके समय की अनिश्चितता दोनों ही अंतराल में सतर्कता और निष्ठा की मांग करते हैं, क्योंकि वह घटना दोनों ही उद्धार और न्याय लाएगी। एक सबक को समझाने के लिए, यीशु बुद्धिमान और मूर्ख कुंवारियों (25:1–13) और प्रतिभाओं (पद 14–30) की दृष्टांत सुनाते हैं। अंतिम दृष्टांत भेड़ों और बकरियों का (पद 31–46) मसीह के "भाइयों"—अर्थात, मसीह के संदेशवाहकों—के प्रति सही प्रतिक्रिया देने की तत्काल आवश्यकता के बारे में बात करता है; जो लोग मसीह

के संदेशवाहकों को भोजन, वस्त्र, और अन्य देखभाल प्रदान करते हैं, वे इस प्रकार प्रेरितों के संदेश और उनके प्रभु को स्वीकार करने की गवाही देते हैं (तुलना करें 10:40–42)।

गुलगुता का रास्ता (26:1–27:26)

जैसे कि यीशु की अपनी भविष्यवाणी के जवाब में, प्रधान याजकों और प्राचीन उनकी हत्या की साजिश रचते हैं (26:1–5), जल्द ही यहूदा द्वारा सहायता प्राप्त होगी (पद14–16)। बैतनिय्याह में अभिषेक (पद 6–13) प्रेम की भव्यता और मृत्यु की निकटता की गवाही देता है। फसह के भोजन पर (पद 17–30), यह संकेत करते हुए कि किस बलिदान से नया निर्गमन होता है (तुलना करें 2:15), यीशु अपनी आगामी मृत्यु को पापों की क्षमा के लिए एक प्रायश्चित बलिदान के रूप में व्याख्या करते हैं (26:26–28; तुलना 1:21) और पाप और मृत्यु पर अंतिम विजय के दिन की प्रतीक्षा पूर्ण राज्य में करते हैं (26:29)। गतसमनी में यीशु की पीड़ा (पद 36–46) उनके लोगों के पापों को अपने ऊपर लेने के उनके भय को व्यक्त करती है। एक महान पुत्रीय आज्ञाकारिता के कार्य द्वारा, वह अपनी इच्छा को पिता के प्रति समर्पित करता है, ताकि शास्त्र पूरे हो सकें (26:54; तुलना करें यशा 53)। परमेश्वर के सेवक के रूप में पीड़ित होने के लिए नियत, यीशु अपनी गिरफ्तारी को विफल करने के प्रयासों का विरोध करते हैं (26:47–56)। यहूदियों की सर्वोच्च न्यायालय (यहूदी महासभा) और उनके उच्चतम धार्मिक अधिकारी (महायाजक) यीशु को निंदा करने वाला घोषित करते हैं क्योंकि वह स्वयं को "मसीह, परमेश्वर का पुत्र" के रूप में पहचानने का साहस करता है (26:57–68; तुलना करें 16:16)। जैसे कि न्यायालय के अस्वीकरण में शामिल हो रहे हों, पतरस—यीशु की भविष्यवाणी को पूरा करते हुए (26:31–35)—यीशु के ज्ञान से इनकार करते हैं (पद 69–75)। यहूदा का मोहभंग आत्महत्या में व्यक्त होता है (27:3–10)। यहूदी यीशु को रोमी राज्यपाल पिलातुस के हवाले कर देते हैं (पद 1–2), केवल उसी के पास मृत्युदंड सुनाने का अधिकार है। यह जानते हुए कि ईशनिंदा का आरोप पिलातुस के साथ कोई वजन नहीं रखेगा, यहूदी अब यीशु को कैसर के लिए खतरे के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अंत में, पिलातुस भीड़ के दबाव और खिलाफत की धमकी (पद11–25) के कारण प्रतिक्रिया करता है, न कि विशिष्ट आरोपों और सबूतों पर। वह बरअब्बा को रिहा करता है और यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप देता है (पद 26).

यीशु की मृत्यु (27:27–66)

रोमी सैनिकों के हाथों अपमानजनक व्यवहार के बाद, यीशु को सजा की जगह ले जाया जाता है; शारीर पर पिटाई से कमजोर हो जाने के कारण, उसे सहायता की आवश्यकता होती है (27:27–32). वह पेश की गई नशीली दवा को ठुकरा देते है ताकि वह अपनी समझ को साफ़ रख सके (पद 34)। उनका अपराधियों के साथ फांसी पर चढ़ाया जाना (पद 38) उनकी मृत्यु के उद्देश्य की गवाही देता है (तुलना करें 1:21)। "यह यहूदियों का राजा यीशु है" शीर्षक की सच्चाई की निन्दा करते हुए, उस पर निरंतर दुर्व्यवहार की धारा फेंकी जाती है (27:37–44)। अंततः, अंधकार से यीशु परित्याग की पुकार लगाते हैं; अब अंतिम आतंक प्रकट होता है (जिससे उसकी आत्मा गतसमनी में संकुचित हुई थी), पापों के बोझ उठाने वाले की परम पीड़ा—प्रिय पुत्र का पिता द्वारा त्याग (पद 45–49)। जोर से आवाज़ लगाते हुए (तुलना करें यूह19:30), यीशु की मृत्यु होती है (27:50)। तुरंत, उनकी मृत्यु के बचाने वाले प्रभाव स्पष्ट हो जाते हैं (पद 51–53): पापियों को, अब क्षमा मिल चुकी है, पवित्र परमेश्वर तक पहुंच प्राप्त होती है (मंदिर का परदा फट जाता है), और जो मर चुके हैं उनके लिए पुनरुत्थान की आशा है। शुरुआत में (2:1–12), यहूदियों के बजाय अन्यजाती यीशु को स्वीकार करते हैं (27:54; तुलना करें 26:63–65)। यीशु के दफ़नाने के प्रति यूसुफ की सावधानी, मुख्य याजकों और फरीसियों द्वारा यीशु की शक्ति का विरोध करने के चल रहे प्रयासों के विपरीत है (27:57–66)।

उद्धारकर्ता की विजय (28:1–20)

महान महिमा, शक्ति और आनंद के बीच, मृत्यु पर उद्धारकर्ता की विजय की घोषणा और पुष्टि की जाती है (28:1–7)। जी उठे यीशु सबसे पहले उन महिलाओं को दिखाई देते हैं जो उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने के दौरान उनके साथ रहीं (28:8–10; तुलना 27:61; 28:1)। यहूदियों की पहरेदारों के विवरण पर प्रतिक्रिया उनके अपरिहार्य वास्तविकता के सामने बढ़ती निराशा को दर्शाती है (28:11–15)। गलील में पहाड़ पर 11 शिष्यों के साथ बैठक (पद 16–20), यीशु, नए मूसा के रूप में, अपनी निर्देश जारी रखते हैं। वह अब उस प्रचारक उद्देश्य को प्रकट करता है जिसके लिए मत्ती अपने सुसमाचार की शुरुआत से ही पाठकों को तैयार कर रहा था। प्रेरितों को सभी लोगों को त्रिएक परमेश्वर के नाम पर बपतिस्मा देकर और यीशु द्वारा दी गई सभी आज्ञाओं का पालन करना सिखाकर शिष्य बनाना है। प्रेरित इस आश्वासन में आगे बढ़ते हैं कि यीशु—प्रभु के रूप में—उनके ऊपर खड़े हैं, और यीशु—इम्मानुएल के रूप में—युग के अंत तक उनके साथ खड़े हैं।

यह भी देखें यीशु मसीह, जीवन और शिक्षाएँ; लूका, सुसमाचार; मरकुस, सुसमाचार; मत्ती (व्यक्ति); सहदर्शी सुसमाचार.

मत्री, मत्री का कुल

मत्री, मत्री का कुल

बिन्यामीन के गोत्र का एक परिवार। शाऊल, जो इस्राएल के पहले राजा थे, इसी परिवार से आए थे (1 शमू 10:21)।

मत्रेद

मत्रेद

महेतबेल की माता, एदोम के राजा हदद (हदर) की पत्नी (उत्प 36:39; 1 इति1:50)।

मथूशाला

मथूशाला

लूका 3:37 में हनोक के पुत्र मथूशिलह की किंग जेम्स संस्करण में वर्तनी।

*देखिए*मथूशिलह।

मदमन्ना (व्यक्ति)

शाप का पुत्र और कालेब का पोता (1 इति 2:49)।

मदमन्ना (स्थान)

बेत्मर्काबोत के लिए वैकल्पिक नाम, यहोशू 15:31 में उल्लेखित दक्षिणी यहूदा का एक नगर। *देखें*बेत्मर्काबोत।

मदमेन

मदमेन

यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी के अनुसार मोआब में एक नगर (यिर्म 48:2)। यह मूल दीमोन के नकलनवीस द्वारा भूल से निर्मित एक रूप हो सकता है, जैसा कि यशायाह द्वारा मोआब के खिलाफ भविष्यद्वाणी में है (यश 15:9)। यदि ऐसा है, तो खिरबेत दिमनेह, केराक के उत्तर-पश्चिम में साढ़ेसात मील (12.1 किलोमीटर) वादी बेनी हम्माद की शुरुआत में, एक संभावित स्थल होगा। किसी भी मामले में, यिर्मयाह के भाग में स्थान-नाम और इब्रानी शब्द “चुप रहो” के बीच शब्दों का खेल है।

मदमेना

मदमेना

यहूदा में सन्हेरीब के सैन्य आक्रमण के दौरान अश्शूरी सेना द्वारा अपनाए गए मार्ग पर यरूशलेम के उत्तर में स्थित बिन्यामीनी नगर है (लगभग 701 ईसा पूर्व)। यह राजा हिजकिय्याह (715–686 ईसा पूर्व) और पवित्र नगर के खिलाफ था (यशा 10:31)।

मदान

मदान

अब्राहम की दूसरी पत्नी कतूरा से उत्पन्न तीसरे पुत्र (उत्प 25:2; 1 इति 1:32)।

मधुमक्खी

उड़ने वाले कीड़े जो मधु और मोम बनाते हैं। बाइबल में मधुमक्खियों का उल्लेख उनकी उत्पादनशीलता और भोजन के स्रोत के रूप में किया गया है।

मधुमक्खियाँ *(एपिस मेलिफ़िका)* उन दो कीड़ों में से एक हैं जिन्हें मनुष्यों द्वारा पाला और प्रजनन किया जाता है। दूसरा रेशम का कीड़ा है। मधुमक्खियाँ पराग फैलाते हुए फूलों से रस इकट्ठा करती हैं। वे एक "नृत्य" के माध्यम से अन्य मधुमक्खियों को दूरी और दिशा बताकर उन्हें रस का स्थान दिखा सकते हैं। मधुमक्खियाँ चार रंग देख सकती हैं:

- नीला और हरा
- पीला और हरा
- नीला और बैंगनी
- परा बैंगनी (जो मनुष्य की आँखों के लिये अदृश्य होता है)

इस्राएल और फिलिस्तीन की जंगली मधुमक्खियाँ आक्रामक होती हैं। केवल मादा "कामकाजी" मधुमक्खियाँ डंक मारती हैं। उनका विष गर्म मौसम में अधिक तीव्र हो जाता है। कई बाइबल के वचनों में मधुमक्खियों के चिड़चिड़े स्वभाव और उनके दर्दनाक डंक का उल्लेख है (व्य.वि. 1:44; भज 118:12; यशा 7:18)।

एक सन्दर्भ में बताया गया है कि जंगली मधुमक्खियाँ किसी मरे हुए जानवर के शव में भी अपना छत्ता बना सकती हैं (न्या 14:5–9)। उस शव को गीदड़ों या गिद्ध हड्डियों तक साफ कर देते हैं, और वे हड्डियाँ सूरज में सूख जाती हैं।

मिस्रवासियों के लिये मधुमक्खी पवित्र मानी जाती थी। प्राचीन यूनान में मधुमक्खी के मोम से मोमबत्तियाँ बनाई जाती थीं। इस्राएल और फिलिस्तीन में मधुमक्खी पालन सम्भवतः दूसरी शताब्दी ईसा-पूर्व तक आरम्भ नहीं हुआ था। यहेजकेल 27:17 से संकेत मिलता है कि यह इससे पहले भी किया जा सकता है। यदि इब्री लोग घरेलू मधु नहीं पाते है, तो वे जंगली मधु ढूँढ़ते थे। यात्री चट्टानों की दरारों और अन्य सम्भावित स्थानों में मधु के भण्डार ढूँढ़ते थे। पलिश्तियों और हित्ती लोग अपने नगरों में मधुमक्खी पालन करते थे।

बाइबल में मधुमक्खियों और उनके उत्पादों का कई बार उल्लेख हुआ है। एक मधुमक्खियों का झुण्ड मूल्यवान होता था, यद्यपि मधु का दाम कम था। कभी-कभी मधु समेत छत्ताखा खाया जाता था (श्रे.गी. 5:1)। मधु केवल भोजन के लिये नहीं था, बल्कि उसे औषधि के रूप में और वस्तुएँ सुरक्षित रखने के लिये भी उपयोग किया जाता था। जब लोग किसी शव को सड़ने से बचाना चाहते थे, तो कभी-कभी वे उसे मधु में लपेटकर रखते थे (सुगन्ध-द्रव्य भरना)।

इस्राएल के देश को ऐसा देश बताया गया था जिसमें दूध और मधु की धारा बहती है। बाइबल के समय में मधु लोगों के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि यह कुछ गिनी-चुनी वस्तुओं में से एक था जिससे वे भोजन को मीठा बना सकते थे (तुलना करें न्या 14:8–9)। इब्रानी शब्द में "मधु" का अर्थ मधुमक्खी के मधु के साथ-साथ अंजीर, खजूर और अंगूर से बने मीठे रस से भी हो सकता है। इसलिए, "बड़े देश में जिसमें दूध और मधु की धारा बहती है" का अर्थ मधुमक्खियों का देश नहीं है (निर्ग 3:8)। इसका अर्थ ऐसा देश जो मिठास से भरपूर है।

यह भी देखें भोजन और भोजन की तैयारी; मधु।

मध्यवर्ती अवस्था

मृत्यु के बाद और अंतिम पुनरुत्थान से पहले मानव व्यक्ति की स्थिति। ऐसा शिक्षण पुराने नियम की तुलना में नए नियम में अधिक विकसित है, हालांकि यह सोचना गलत है कि इसका उल्लेख पुराने नियम में पूरी तरह से अनुपस्थित है (अय्यू 19:25)। मसीह के अनुसार, मध्यवर्ती अवस्था का अनुमान निर्गमन 3:6 (मत्ती 22:32) जैसे ग्रंथों से लगाया जा सकता है। यहां तक कि नए नियम में भी, मध्यवर्ती अवस्था का विवरण स्पष्ट रूप से नहीं दिया गया है, लेकिन सभी लोगों की शारीरिक मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में शिक्षण से इसे अनुमानित किया जा सकता है, विशेष रूप से विश्वासियों के लिए। यह स्वयं मसीह द्वारा सिखाया गया है (मत्ती 22:30–32) और प्रेरितों के द्वारा, विशेष रूप से पौलुस द्वारा (1 कुरि 15) भी सिखाया गया है। इसके अलावा, बाइबल का यह शिक्षण कि मानव एकता आत्मा और शरीर की है और केवल एक आत्मा नहीं है जो शरीर में है (उत 2:7), व्यक्ति की मृत्यु के बाद की स्थिति पर प्रभाव डालता है। ऐसे विवरण से मध्यवर्ती अवस्था के बारे में दो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। पहला यह है कि शारीरिक मृत्यु व्यक्ति के जीवन की पूर्ण समाप्ति नहीं है बल्कि व्यक्ति जीवित रहता है, न केवल उन लोगों की स्मृतियों में जो जीवित रहते हैं, बल्कि एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में, और विश्वासियों के मामले में परमेश्वर की प्रेममयी उपस्थिति की जागरूकता के साथ (फिल 1:23)। दूसरा निष्कर्ष यह है कि ऐसा अस्तित्व पूरी तरह से मानव अस्तित्व नहीं है बल्कि अधूरा या असामान्य है, क्योंकि शरीर में होना किसी व्यक्ति के परमेश्वर की छवि में होने के लिए आवश्यक है। व्यक्ति, मृत्यु के बाद जीवित रहते हुए, शरीर के पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करता है जब, एक मसीही के मामले में, वह मसीह की उपस्थिति में पाप से पूर्ण मुक्ति की स्थिति का अनुभव करेगा (1 कुरि 15:50–58)। मसीह के बाहर के लोगों की मध्यवर्ती अवस्था के चरित्र के बारे में बाइबल का विवरण कम स्पष्ट है, जिसमें "कैद" आत्माओं को मसीह के उपदेश का कठिन संदर्भ भी शामिल है (1 पत 3:19–20)।

पवित्र शास्त्र इस बात का वर्णन करने में संयमित है कि मध्यवर्ती अवस्था में जीवन कैसा होता है। पौलुस अपने बारे में कहते हैं कि अपनी मृत्यु के बाद वे "मसीह के साथ होंगे, जो कहीं अधिक अच्छा है" (फिल 1:23), लेकिन वे कोई विवरण नहीं देते। न ही यह बुद्धिमानी है कि शाऊल और एनदोर की भूत-सिद्धि करनेवाली जैसी बाइबल घटनाओं में ऐसे विवरण खोजें (1 शमू 28:7), जो कई अलग-अलग व्याख्याओं के अधीन है। यहां तक कि मसीह का धनी व्यक्ति और लाज़र का दृष्टांत (लूका 16:19–31), जो स्पष्ट रूप से प्रतीकात्मक है और वर्तमान जीवन के महत्व के बारे में सिखाने के घोषित उद्देश्य के कारण, सावधानी से देखा जाना चाहिए। शायद सबसे अधिक जो कहा जा सकता है वह यह है कि मसीह में मृतक "तुरंत परमेश्वर के साथ" हैं और वे उनके प्रेमपूर्ण उपस्थिति में विश्राम करते हैं जब तक कि पुनरुत्थान नहीं होता, जबकि नहीं बचाए गए लोग न्याय के लिए अपने पुनरुत्थान की प्रतीक्षा में एक असुविधाजनक स्थिति में हैं (यूह 5:29)।

मसीही विचारधारा के इतिहास में मध्यवर्ती अवस्था की चर्चा तीन अलग-अलग पहलुओं पर केंद्रित रही है, जो बाइबल के विवरण को और स्पष्ट करने में मदद कर सकते हैं। पहले, यूनानी दार्शनिक विचारों के प्रभाव के तहत, मसीही धर्मशास्त्र में एक बार-बार होने वाला प्लेटोनिक प्रभाव रहा है जिसमें शारीर और आत्मा के बीच पौलुस का विरोधाभास गलत तरीके से समझा गया है और आत्मा को शरीर की कीमत पर महत्व दिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप मृतकों के संभावित पुनरुत्थान और इसके युगान्तशास्त्रीय संदर्भ को या तो कम महत्व दिया गया है या पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है क्योंकि इसके कथित रूप से भौतिक (और इसलिए आत्मिक नहीं) पहलू के कारण। देह रहित आत्मा की अमरता के सिद्धांत को कभी-कभी पुनरुत्थान से पहले की मध्यवर्ती अवस्था के विचार के स्थान पर प्रतिस्थापित कर दिया जाता

है, लेकिन इसके लिए धर्मग्रंथों से कोई प्रमाण नहीं लिया जाता। आधुनिक धर्मशास्त्र ज्ञान में ऐतिहासिक सन्दर्भ को नकारने की प्रवृत्ति ने भौतिक को नकारने की पूर्ववर्ती प्रवृत्ति को विस्थापित कर दिया है, लेकिन इसका प्रभाव लगभग वही है, सर्वोत्तम रूप में तो मृत्यु के बाद के अस्तित्व को आत्मिक बनाना, और सबसे खराब रूप में तो ऐसे किसी भी अस्तित्व को नकारना। लेकिन पवित्रशास्त्र से यह स्पष्ट है कि मध्यवर्ती अवस्था देहधारण के दो चरणों के बीच की अवस्था है, भौतिक देहधारण की वर्तमान अवस्था और "आत्मिक देहधारण" (1 कुरि 15:44), जो यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर घटित होनी है (पद 23).

दूसरा, सुधार आंदोलन के दौरान, जॉन कैल्विन और कुछ एनाबैपटिस्टों के बीच "आत्मा की नींद" को लेकर विवाद हुआ। कैल्विन ने दृढ़ता से कहा कि मध्यवर्ती अवस्था परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति सचेत जागरूकता की अवस्था है—जिसे उनके विरोधियों ने नकार दिया। कैल्विन के लिए ऐसा इनकार इस बात को मानने के बराबर था कि मृत्यु के समय आत्मा नष्ट हो जाती है और इस बात को नकारना कि मसीह मृतकों के पुनरुत्थान से पहले उन पर शासन करता है। कैल्विन के दृष्टिकोण का समर्थन पौलुस के इस कथन से होता है कि कुछ भी विश्वासी को परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता—यहां तक कि मृत्यु भी नहीं (रोम 8:35–39)। बाइबल की यह शिक्षा कि मृत्यु के समय विश्वासी "सोता" है (1 थिस 4:14), इसका अर्थ यह है कि मृतक अब पृथ्वी पर जीवितों के साथ संवाद नहीं करते और न ही श्रम में संलग्न होते हैं, बल्कि विश्राम में होते हैं। "यीशु में सो जाने" का अर्थ है यीशु की उपस्थिति का आनंद लेना, एक निर्गुण अवस्था में, जिसका वर्तमान अनुभव में निकटतम उदाहरण स्वप्न में पाया जा सकता है जब स्वप्न देखने वाले की जागरूकता किसी भी शारीरिक इंद्रियों के कार्य पर निर्भर नहीं करती।

मसीही विचार के लिए एक तीसरा केंद्र बिंदु यह रहा है कि क्या किसी व्यक्ति की अनंत स्थिति मृत्यु के समय स्थिर होती है, या क्या पश्चाताप और आत्मिक विकास और शुद्धिकरण मृत्यु के बाद संभव या अनिवार्य हैं। यह रोमन कैथोलिक कलीसिया की शिक्षा है कि मृत्यु के बाद सभी अपूर्ण लोगों के लिए शुद्धिकरण होता है। शुद्धिकरण में आत्मा को पाप के अवशेषों से मुक्त किया जाता है, और शुद्धिकरण की अवधि को जीवित बचे लोगों के उपहारों, प्रार्थनाओं और पवित्र भोज द्वारा कम किया जा सकता है। अधिकांश प्रोटेस्टेंट इस दृष्टिकोण को खारिज करते हैं क्योंकि यह मसीह के पूर्ण और समाप्त कार्य पर बाइबल की शिक्षा के साथ असंगत है (इब्रा 9:28), एक मानव के लिए दूसरे के लिए अनुग्रह प्राप्त करने की असंभवता पर (लूका 17:10), और इस बाइबल की शिक्षा पर कि आत्मा की अनंत स्थिति मृत्यु के समय उसकी स्थिति द्वारा निर्धारित होती है (इब्रा 9:27)।

यह भी देखें का स्थान, मृतकों; अधोलोक; स्वर्ग; नरक; स्वर्गलोक; शिओल।

मध्यस्थता करना, मध्यस्थता

दूसरों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने या निवेदन करने का कार्य।

*देखें*प्रार्थना।

मध्यस्थता, मध्यस्थ

एक मध्यस्थ, बिचवई, या ईश्वरीय चीजों में विशेषज्ञ का कार्य, समझौते या समझौता करने के लिए नहीं बल्कि दूसरों की ओर से परमेश्वर के पास जाने के लिए, और इस प्रकार ईश्वरीय अधिकार के साथ वांछित ज्ञान और आश्वासन देना है।

पुराने नियम में

अय्यूब ऐसे मध्यस्थ की लालसा व्यक्त करते है (यहाँ सेप्टुआजिंट से अनुवादित किया गया है): "परमेश्वर मेरे तुल्य मनुष्य नहीं है, इसलिए मैं उनके साथ वाद-विवाद नहीं कर सकता या उन्हें मुकदमे में नहीं ले जा सकता। काश कोई बिचवई होता जो हमें एक साथ ला सकता, लेकिन कोई नहीं है। बिचवई परमेश्वर को मुझे मारने से रोक सकता है, और मैं अब उनके न्याय के डर में नहीं जीऊंगा। तब मैं उनसे निडर होकर कुछ कह सकूँगा, लेकिन मैं अपनी दृष्टि में ऐसा नहीं हूँ" (अय्यू 9:32–35)।

ईश्वरीय चरित्र और इच्छा से सम्बन्धित निर्देश की मध्यस्थता अधिक परिचित है। मूसा की वाचा स्वर्गदूतों और मूसा की मध्यस्थता के माध्यम से दी गई थी (निर्ग 20:18–21; व्य.वि. 33:2; प्रेरितों 7:53; गला 3:19; इसके विपरीत इब्रा 6:13–17, जहाँ परमेश्वर ने अकेले कार्य करते हुए एक शपथ में "मध्यस्थता" की)। वाचा की व्यवस्था की शर्तों को भविष्यद्वक्ताओं द्वारा समझाया गया था जो "परमेश्वर के सम्मुख खड़े थे," और याजकों द्वारा जिन्होंने परमेश्वर के मन को भविष्यद्वाणी, पवित्र भाग और उच्चारित आशीर्वाद के माध्यम से संप्रेषित किया था। (व्य.वि.10:8; 33:8–10; 2 इति 15:3; यिर्म 23:10–11, 18–22, 31–34; मीक 3:11; मला 2:7)।

सबसे परिचित है याजक की धार्मिक मध्यस्थता, चाहे वह मूसा द्वारा हो (निर्ग 24:4–8) या किसी नियुक्त व्यक्ति द्वारा जो उपासना के अनुष्ठानों में प्रशिक्षित हो (28:1)। इस्राएल के परमेश्वर की पवित्रता पर जोर देने के कारण, पापबलि प्रायश्चित, या "ढकना," याजक मध्यस्थता में प्रमुख रूप से शामिल था। याजक ने परमेश्वर के सामने लोगों के पश्चाताप, पाप-स्वीकार और क्षमा के लिए प्रार्थनाओं का प्रतिनिधित्व किया, कंधों और कवच पर गोत्रों के नाम अंकित किए, और बदले में, उनके पक्ष, क्षमा और सुरक्षा का आश्वासन देते हुए

परमेश्वर का प्रतिनिधित्व किया (देखें इब्रा 5:1–4; 7:27–10:11)।

नए नियम में

यह स्वाभाविक था कि यीशु की सेवा को मध्यस्थ के रूप में वर्णित किया जाना चाहिए, और पहले एक भविष्यवक्ता के रूप में जो परमेश्वर की ओर से मनुष्यों से बात करता है, परमेश्वर को ज्ञात कराता है (मर 6:15; 8:28)। जहाँ यीशु पर लागू होता है, वास्तविक शीर्षक "मध्यस्थ" मुख्य रूप से एक नई वाचा की स्थापना को संदर्भित करता है, जो लोगों के साथ परमेश्वर के नए सम्बन्ध स्थापित करता है (इब्रा 8:6; 9:15; 12:24)। एक और उदाहरण 1 तीमु 2:5 है, जहां परमेश्वर की एकता के लिए एकमात्र, बेजोड़ मध्यस्थ की आवश्यकता होती है, अर्थात्, मसीह।

इस अन्तिम वचन में मसीह का उल्लेख है जिन्होंने स्वयं को "सभी के लिए छुटकारे" के रूप में दिया। यह मुख्यतः याजक कार्य है जो इब्रानियों का विषय है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में मसीह, ईश्वरीय रूप से नियुक्त, पापरहित, पीड़ित, परीक्षित, सहानुभूतिपूर्ण और आज्ञाकारी, अपने लोगों का महायाजक बनने के लिए विशिष्ट रूप से योग्य है। एक याजक के रूप में, वह एक पूर्ण बलिदान अर्पित करता है और उन लोगों के लिए सदा मध्यस्थता करता है जो उसके माध्यम से परमेश्वर के निकट आते हैं। यह मध्यस्थता सेवा यीशु को "परमेश्वर की दाहिनी ओर" पर रखता है। लोगों के लिए उसकी मध्यस्थता का उल्लेख रोमियों 8:34 में भी किया गया है और संभवतः 1 यूहन्ना 2:1 में भी, जहां प्राचीन यूनानी टिप्पणीकार, नेब, और अन्य प्रामाणिक स्रोत "सहायक" को इसी तरह समझते हैं, जो यहां यीशु पर लागू होता है। उनके मध्यस्थ बलिदान का उल्लेख मत्ती (मत्ती 26:28), यूहन्ना (यूह 1:29), रोमियों (रोम 3:25), और 1 यूहन्ना (1 यूह 1:7; 2:2; 4:10) में किया गया है।

और भी महत्वपूर्ण यह है कि नए नियम में हर जगह इस बात पर जोर दिया गया है कि मनुष्य का परमेश्वर, उद्धार, और आशा के बारे में ज्ञान केवल मसीह के माध्यम से ही आता हैं।हमारे लिए दरिद्र बने, वह मरे और “हमारे लिए” जी उठे; हमारी शांति, परमेश्वर तक पहुंच, मेल-मिलाप, पाप का प्रायश्चित, अनुग्रह, सत्य, प्रार्थना, और “सभी आत्मिक आशीष” “उनके माध्यम से,” “उनमें,” “उनके लहू के माध्यम से,” और “उनके नाम में” हैं। परमेश्वर का उद्देश्य उनमें केंद्रित है; उन्होंने सृष्टि और छुटकारे में मध्यस्थता की (कुलु 1:15, 22); उनमें परमेश्वर की सारी परिपूर्णता निवास करती है, और मसीह का चेहरा परमेश्वर की महिमा को प्रकट करता है। पुत्र और जिन पर पुत्र उसे प्रकट करता है, उनके अलावा कोई भी पिता को नहीं जानता; कोई भी पिता के पास नहीं आता सिवाय उनके; किसी और में उद्धार नहीं है।

मसीह की मध्यस्थता परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच सभी मध्यस्थता की पूर्ति और अन्त है। इब्रानियों की पुस्तक इस दावे के साथ खुलती है कि मसीह सभी अन्य मध्यस्थों—स्वर्गदूतों, मूसा, हारून याजकों से श्रेष्ठ हैं। मलिकिसिदक की तरह वह भी एक अनन्त याजक है। उनका बलिदान अपरिवर्तनीय है, "हमेशा के लिए एक बार," और इसके द्वारा हम "हमेशा के लिए" परमेश्वर के प्रति समर्पित हो गए हैं। परमेश्वर और मनुष्यों के बीच उन्होंने जो वाचा स्थापित की, वह उत्तम प्रतिज्ञा, बलिदान, पवित्रस्थान और उत्तम आशा प्रदान करती है (इब्रा 7:19; 8:6; 9:1, 11–15)। मसीह की मध्यस्थता इतनी श्रेष्ठ है कि इसे कभी भी प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता; वह बिना प्रतिद्वंद्वी और हमेशा के लिए याजक है (विचार विमर्श 1 तीमु 2:5)।

याजकीय सादृश्य का उपयोग किए बिना, यूहन्ना उसी सत्य पर जोर देते हैं। ईश्वरीय और मनुष्य के बीच की खाड़ी को देहधारी होने के द्वारा निर्णायक और अंतिम रूप से पार कर लिया गया है। परमेश्वर और मनुष्य के बीच खड़े होने के बजाय, मसीह मनुष्य बनकर दोनों को अपने भीतर एकजुट करते हैं। सृष्टि की शुरुआत में मध्यस्थता करते हुए, मसीह स्वयं वचन है, जो परमेश्वर की ओर से परमेश्वर की बुद्धि की मध्यस्थता करते है, परमेश्वर के संदेश को देहधारी रूप देते है, और परमेश्वर की शक्ति को संप्रेषित करते है। किसी ने भी कभी परमेश्वर को नहीं देखा है, लेकिन अद्वितीय पुत्र और ईश्वरीय, यीशु "परमेश्वर को प्रकट करते हैं" (यूह1:18)। मनुष्य पक्ष से, यीशु चेलों के लिए प्रार्थना करते हैं (अध्याय 17), पूर्ण आज्ञाकारिता प्रदान करते हैं, अपने झुंड के लिए अपना जीवन अर्पित करते हैं, और निष्कलंक बलिदान प्रस्तुत करते हैं जो संसार के पाप को दूर करता है।

यह भी देखें मेल मिलाप।

मन

एक संकीर्ण अर्थ में किसी की बौद्धिक प्रक्रियाएँ या अधिक व्यापक रूप से, किसी व्यक्ति की मानसिक और नैतिक स्थिति का कुल योग। इब्रानी सोचने के तरीके में, मन की अवधारणा के लिए कोई विशिष्ट शब्दावली नहीं है। यूनानी दुनिया के लिए, मनुष्य को समझने में मन बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चूंकि पुराने नियम में मनुष्य के मन के लिए कोई अलग शब्द नहीं था, अंग्रेजी संस्करणों के अनुवादकों ने सन्दर्भ के अनुसार अन्य शब्दों ("प्राण," "आत्मा," या "हृदय") का उपयोग किया है। इस प्रकार, इन शब्दों के बीच सटीक भेद करना कठिन है। एक व्यक्ति एक आत्मा है, जिसमें एक आत्मा और एक हृदय है। इनमें से कोई भी शब्द मन का प्रतिनिधित्व कर सकता है। इसका मतलब यह है कि सोच के केंद्र के रूप में मन और भावना के केंद्र के रूप में हृदय के बीच व्यापक रूप से माना जाने वाला अंतर पुराने नियम में इन शब्दों के अर्थों से अलग है।

जबकि "मन" किसी व्यक्ति के विचारों को दर्शाता है, पुराने नियम में "मन" का प्रमुख विचार यह है कि यह हृदय को दर्शाता है (1 शमू 2:35; यहेज 11:5; 20:32)। हृदय अक्सर पूरे आंतरिक व्यक्ति को शामिल करने का इरादा रखता है और इस प्रकार अक्सर विशेष रूप से मन से सम्बन्धित होता है। इन मामलों में यह मुख्य रूप से इच्छा और स्मृति के कार्यों से सम्बन्धित है (यशा 46:8; 65:17; यिर्म 3:16)।

इब्रानी तर्क के मूल रूप सुसमाचार वृत्तान्तों में जारी हैं। मन की अवधारणा बहुत कम दिखाई देती है। जब उपयोग किया जाता है, तो यह ज्यादातर हृदय के साथ सम्बन्ध में होता है—उदाहरण के लिए, मन में घमण्ड (लूका 1:51)। "मन" शब्द की एकमात्र अन्य घटनाएँ महान आज्ञा के कथन में आती हैं: "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख" (पुष्टि करें मत्ती 22:37; मर 12:30; लूका 10:27)। सुसमाचार लेखक इस बात पर एकमत हैं कि यीशु ने "अपने सारे मन से" को व्यवस्थाविवरण 6:5 में जोड़ा। हालांकि, मरकुस में, प्रश्नकर्ता यीशु की आज्ञा को दोहराता है लेकिन "मन" शब्द के स्थान पर "बुद्धि" शब्द का उपयोग करता है (मर 12:33)।

पौलुस के लेखन के साथ, कोई यूनानी जगत में प्रवेश करता है। पौलुस ने मन को मनुष्य की आत्मा से अलग समझा। इसमें समझने और तर्क करने की क्षमता होती है (1 कुरि 14:14–19); यह बुद्धि का केंद्र है। अन्य स्थानों पर, "मन" का उपयोग व्यापक अर्थ में किया जाता है जिसमें मनुष्य की पूरी मानसिक और नैतिक प्रक्रिया या स्थिति शामिल होती है (रोम 12:2; इफि 4:23)। मनुष्य के कार्य उसके मन की प्रवृत्तियों से प्रवाहित होते हैं। चाहे कोई व्यक्ति अच्छा हो या बुरा, यह मन की स्थिति पर निर्भर करता है।

किसी व्यक्ति की स्थिति इस पर निर्भर करती है कि उसके मन को क्या या कौन नियंत्रित करता है। रोमियों 8:6–7 में किसी व्यक्ति के मन को या तो शरीर या आत्मा द्वारा नियंत्रित किए जाने की बात की गई है। जिस व्यक्ति का मन शरीर द्वारा नियंत्रित होता है, वह दुष्ट होता है। आत्मा द्वारा नियंत्रित मन अच्छे की ओर ले जाता है। अन्य वचन में किसी व्यक्ति के मन की प्रवृत्ति को इस संसार के ईश्वर द्वारा नियंत्रित किए जाने का उल्लेख है (2 कुरि 4:4)। जिन लोगों के मन इस "संसार के ईश्वर" द्वारा नियंत्रित होते हैं, उनके मन अंधकारमय हो जाएंगे और वे जगत को वास्तव में जैसा है वैसा समझ नहीं पाएंगे (3:14)। यह किसी की समझ पर एक परदे के समान है। लेकिन यीशु लोगों के मन खोल सकते हैं। उदाहरण के लिए, यीशु ने उन चेलों के मन खोले जो उनके साथ इम्माऊस मार्ग पर चले ताकि वे पवित्रशास्त्र को समझ सकें (लूका 24:45)।

पौलुस के लिए, परिवर्तन की क्रिया को "बुद्धि के नये हो जाने से" माना जाता है (रोम 12:2; इफि 4:23)। दोनों मामलों में, यह प्रक्रिया एक है जिसमें परमेश्वर पवित्र आत्मा के माध्यम से किसी व्यक्ति के मन को नियंत्रित करता है और उस व्यक्ति के विचारों को उचित माध्यम में ले जाता है। इस प्रकार, नवीनीकृत व्यक्ति को उचित मूल्य निर्णय लेने की शक्ति दी जाती है। ऐसे लोगों के पास नये मन होते हैं जिनसे आत्मिक समझ मिलती हैं (1 कुरि 2:15–16)।

*यह भी देखें*मनुष्य; हृदय; प्राण।

मन-मन भर के (सौ पाउंड)

मन-मन भर के (सौ पाउंड)

लगभग 1 किक्कार या 75 पाउंड (34 किलोग्राम) के बराबर माप, जिसका उल्लेख केवल प्रकाशितवाक्य 16:21 में किया गया है। *देखें*वजन और माप।

मनश्शे

1. यहूदा के राजा मनश्शे का उल्लेख किंग जेम्स संस्करण में मत्ती 1:10 में किया गया है। *देखें*मनश्शे (व्यक्ति) #3।
2. इस्राएल के 12 गोत्रों में से एक मनश्शे का किंग जेम्स संस्करण उल्लेख जो प्रकाशितवाक्य 7:6 में है। *देखें*मनश्शे (व्यक्ति) #1; मनश्शे का गोत्र।

मनश्शे (व्यक्ति)

1. यूसुफ और उनकी मिस्री पत्नी, आसनत के पहलौठे पुत्र मनश्शे (उत्पत्ति 41:50–51)। मनश्शे और उनके भाई एप्रैम अपने दादा याकूब से मिलने गए जब वे मृत्युशय्या पर थे। याकूब ने कहा कि मनश्शे और एप्रैम को उनके अपने पुत्रों के रूप में माना जाएगा, न कि यूसुफ के पुत्रों के रूप में (उत्पत्ति 48:5–6)। उन्होंने कहा कि पहलौठे मनश्शे के वंशज एप्रैम के वंशजों जितने महान नहीं होंगे (उत्पत्ति 48:13–20)। यह बताता है कि एप्रैम और मनश्शे को इस्राएल के 12 गोत्रों में से दो के रूप में सूचीबद्ध किया गया है और न कि यूसुफ को, कम से कम अधिकांश मामलों में (देखें प्रकाशितवाक्य 7:6)। मनश्शे ने मनश्शेइयों के परिवार की भी स्थापना की (व्यवस्थाविवरण 4:43; 2 राजा 10:33)। *यह भी देखें*मनश्शे का गोत्र का।

2. न्यायियों 18:30 में मूसा के लिए केजेवी अनुवाद। इब्रानी में, इन दो नामों में केवल एक अक्षर का अन्तर है। एक प्रारम्भिक शास्त्री शायद इस बात से आहत हुआ कि इस पद ने मूसा के पोते को मूर्तिपूजा से जोड़ा, इसलिए उन्होंने मूसा की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए नाम को मनश्शे में बदल दिया। *देखें*मूसा।
3. यहूदा के तेरहवें राजा, जिन्होंने 697 से 642 ई.पू. तक शासन किया और जो यीशु के पूर्वज थे (मत्ती 1:10)। वह अपने लम्बे और दुष्ट शासन के लिए प्रसिद्ध हैं, जैसा कि 2 राजाओं 21:1–26 और 2 इतिहास 33:1–20 में वर्णित है। उनके पिता धर्मी राजा हिजकिय्याह थे, और उनकी माता हेप्सीबा थीं (2 राजाओं 21:1)।
   12 वर्ष की आयु में वे अपने पिता के साथ सह-शासक बने। 686 ई.पू. में, उनके पिता का निधन हो गया और वे केवल 23 वर्ष की आयु में एकमात्र राजा बने। उनका 55-वर्षीय शासनकाल (2 राजा 21:1) उनके पिता के साथ शासन करने के समय से शुरू होता है, इसलिए उन्होंने 11 वर्ष सह-शासक के रूप में और 44 वर्ष एकमात्र राजा के रूप में शासन किया—यहूदा या इस्राएल में किसी भी अन्य राजा से अधिक समय तक। दुर्भाग्यवश, वे सबसे दुष्ट यहूदी राजा थे। यहां तक कि उन्होंने सत्ता में बने रहने के लिए कई हत्याएं भी की (2 राजा 21:16; 24:4)। उनके पापों की सूची 2 राजा 21:2–9 में दी गई है और इसमें शामिल हैं:
   - अन्यजाति आराधना के लिए ऊँचे स्थानों का पुनर्निर्माण
   - बाल, सूर्य, चंद्रमा, और तारा आराधना को प्रोत्साहित करना
   - अपने पुत्र को बाल बलि के रूप में जलाना (2 राजा 21:6; तुलना करें 23:10; यिर्मयाह 7:31)

दूसरा इतिहास 33:11–16 यह दर्शाता है कि जब उन्हें युद्ध बन्दी के रूप में बाबेल ले जाया गया, तो उन्होंने वहां सच्चे मन से पश्चाताप किया, और परमेश्वर ने उन्हें फिर से राजा बना दिया। इसके बाद उन्होंने पूर्व के गैर-यहूदी प्रथाओं को समाप्त करने और केवल परमेश्वर की उचित आराधना को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। यद्यपि यह कहानी दूसरे राजाओं में नहीं बताई गई है, इसकी सच्चाई पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है। अश्शूरी अभिलेखों में मनश्शे का दो बार उल्लेख है, जिसमें यह बताया गया है कि उन्होंने निष्ठापूर्वक लबानोन से नीनवे तक लकड़ी ले जाने के लिए पुरुषों को प्रदान किया था अश्शूरी राजा एसर्हद्दोन के लिए। अभिलेख यह भी कहते हैं कि मनश्शे ने राजा ओस्नप्पर को भेंट अर्पित की थी जब अश्शूर ने मिस्र में 667 ई.पू. में एक सैन्य अभियान चलाया। हालाँकि फ़िरौन नको की इसी तरह बन्दीगृह और रिहाई दर्ज है, मनश्शे की बन्दीगृह और रिहाई का उन अभिलेखों में उल्लेख नहीं है।

जब मनश्शे का 642 ई.पू. में 67 वर्ष की आयु में निधन हुआ, तो उन्हें उनके अपने बारी में दफनाया गया (2 राजा 21:18), बजाय इसके कि उन्हें अत्यधिक सम्मानित राजाओं जैसे यहोयादा और हिजकिय्याह के साथ राजकीय दफन स्थलों में दफनाया जाता (2 इतिहास 24:16; 32:33)। मनश्शे के पुत्र, आमोन, अपने पिता की दुष्ट प्रथाओं पर लौट आए लेकिन उनकी हत्या से पहले 642 से 640 ईसा पूर्व तक केवल दो वर्षों तक शासन किया। यह मनश्शे के धर्मी पोते, योशियाह, थे जिन्होंने 640 से 609 ईसा पूर्व तक शासन किया और लोगों को यहोवा की सच्ची आराधना की ओर लौटाया (2 राजा 23:4–14)। हालांकि, योशियाह के सुधार भी उस न्याय को रोक नहीं सके जो मनश्शे के पापों के कारण पहले से ही भविष्यद्वाणी की गई थी (2 राजा 23:26–27)।

*यह भी देखें*मनश्शे की प्रार्थना।

1. पहत्मोआब का पुत्र, जिन्होंने एज्रा के उस आदेश का पालन किया जिसमें उन्होंने बाबेल में बँधुआई के बाद अपनी गैर-यहूदी पत्नी को तलाक देने का निर्देश दिया था (एज्रा 10:30)।
2. हाशूम के पुत्र, जिन्होंने एज्रा की आज्ञा का पालन किया और बाबेल में बँधुआई के बाद अपनी गैर-यहूदी पत्नी को तलाक दिया (एज्रा 10:33)।

मनश्शे का गोत्र

भौगोलिक रूप से, इस्राएल के 12 गोत्रों में सबसे बड़ा गोत्र, और दो क्षेत्रों के साथ अद्वितीय, प्रत्येक में एक आधा-गोत्र है। यरदन नदी की घाटी द्वारा एक-दूसरे से अलग, वे अलग-अलग विकसित हुए। यरदन के पश्चिम में आधा-गोत्र पुराने नियम और नए नियम दोनों में अधिक महत्वपूर्ण था, क्योंकि यह इस्राएल के उत्तरी राज्य (931–722 ईसा पूर्व) का मुख्य गोत्र था और सामरी लोगों के मुख्य पूर्वजों में से एक था।

मनश्शे का गोत्र

प्रारम्भिक इतिहास

इसकी जड़ें

इनके परिवारों की उत्पत्ति यूसुफ के बड़े पुत्र मनश्शे, मनश्शे के पुत्र माकीर या पोते गिलाद, या बाद के वंशज जैसे सलोफाद और याईर से जुड़ी हुई है। उत्प 48:5–6; गिन 26:28–34; यहो 17:1–3; 1 इति 2:21–23; और 7:14–19 में बाइबल की वंशावली विवरण से एक उचित सामंजस्य बनाया जा सकता है, जो कई प्रतिलिपिकारों की त्रुटियों से दूषित हो गया है। 1 इति 7:14 में अस्रीएल का उल्लेख एक प्रतिलिपिकार की गलती प्रतीत होती है; अन्यथा, विवरणों को मिलान किया जा सकता है, भले ही प्रत्येक सूची ने अलग-अलग विवरण संरक्षित किया हो और कोई भी अपने आप में पूर्ण न हो।

इसका आकार

निर्गमन के एक वर्ष बाद, मूसा की पहली जनगणना के अनुसार, मनश्शे के पास सबसे छोटी सेना थी (गिन 1:34–35)। कनान की विजय के पूर्व संध्या पर, 38 वर्षों तक सीनै के जंगल में भटकने और फिर यरदन पार के भूमि को जीतने के बाद, दूसरी जनगणना के अनुसार इसकी छठी सबसे बड़ी लड़ाकू सेना थी (गिन 26:28–34)—52,700 पुरुष।

इसके पहले निवास

मनश्शे के पूर्वी आधे गोत्र के सैनिकों ने अपने परिवारों को गिलाद में बसाया, जिसे उन्होंने मूसा के अगुआई में एमोरी राजा ओग से जीता था (गिन 21:32–35; 32:39–42; व्य.वि 3:1–15)। फिर, यहोशू के अधीन, उन्होंने यरदन को पार किया ताकि कनान को जीतने में अन्य गोत्रों की सहायता कर सकें (गिन 32:1–32; यहो 1:12–18)। इसके बाद, पश्चिमी आधे-गोत्र को उनका हिस्सा मिला और उन्होंने मध्य पहाड़ी देश में बसना शुरू किया (यहो 16:1–9; अध्याय 17)। जब शेष गोत्रों को उनकी भूमि के हिस्से मिले, तो पूर्वी आधे-गोत्र की सेना अपने घर लौट गई (22:1–9)। गिलाद में अपने परिवारों के पास जाते समय, उन्होंने यरदन नदी के किनारे एक वेदी बनाने में मदद की। इस कार्य का उद्देश्य जातीय एकता को बनाए रखना था, लेकिन इसने लगभग गृहयुद्ध शुरू कर दिया था (पद 10–34)।

पूर्वी आधा-गोत्र

इसका क्षेत्र

मूसा ने पूर्वी आधे गोत्र को तीन भौगोलिक क्षेत्रों (उत्तरी गिलाद, बाशान, और हेर्मोन पर्वत) में लगभग 3,000 वर्ग मील (7,770 वर्ग किलोमीटर) क्षेत्र आवंटित किया, लेकिन यह केवल 800 वर्ग मील (2,072 वर्ग किलोमीटर) को नियंत्रित करने में सफल रहा—यब्बोक नदी के उत्तर में गिलाद का आधा हिस्सा (और यरमुक नदी के दक्षिण में) - सफल प्रारम्भिक विजय के बावजूद (गिन 32:39–42; व्य.वि 3:12–15; यहो 13:8–13) और बाद में धीरे-धीरे उत्तरी विस्तार हुआ (1 इति 5:23)।

कब्जे वाला क्षेत्र मुख्यतः पहाड़ी केन्द्र वाला एक ऊंचा पठार था। सर्दियों में बारिश और गर्मियों में भारी ओस से इसे अच्छी तरह से पानी मिलता था। जैतून के पेड़, अंगूर और गेहूं की खेती होती थी और बकरियों और भेड़ों को पूर्वी ढलानों पर पर्याप्त चारा मिल जाता था, जो धीरे-धीरे पूर्व की ओर रेगिस्तान में विलीन हो जाती थी।

लोग और स्थान

पूर्वी आधे-गोत्र के प्रमुख नागरिकों में "न्यायियों" याईर और यिप्तह (न्या10:3–5; 11:6–12) और दाऊद के संरक्षक बर्जिल्लै (2 शमू 19:31–39) शामिल थे। प्रमुख शहर याबेत-गिलाद और रामोत-गिलाद थे, जो क्रमशः शरण का शहर और एक लेवीय शहर थे (मूल रूप से गाद में—यहो 20:8; 21:38)।

पूर्वी क्षेत्र को आमतौर पर केवल "मनश्शे का आधा गोत्र" कहा जाता था, जब तक कि दाऊद (लगभग 1000–961 ईसा पूर्व) ने इसे एक प्रशासनिक जिला नहीं बना दिया (1 इति 27:21)। सुलैमान (970–930 ईसा पूर्व) ने इसे विभाजित करके दो नए जिलों में शामिल कर लिया (1 रा 4:13–14)। यारोबाम प्रथम (930–909 ईसा पूर्व) के अधीन, यह आठ अन्य गोत्रों और पश्चिमी आधे-गोत्र के साथ समान शर्तों पर जुड़ गया, और 930 ईसा पूर्व में दस गोत्रों के संघ—उत्तरी राज्य इस्राएल—का गठन किया। नौवीं और आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में सीरिया और अश्शूर दोनों ने अस्थायी रूप से पूर्वी मनश्शे पर कब्जा किया था (2 रा 10:32–33; 13:7 को 14:25 के साथ; और 2 रा 15:29 को 2 इति 34:6–7 के साथ पुष्टि करें)। 722 ईसा पूर्व में उत्तरी राज्य के बाकी हिस्सों के अश्शूरियों के हाथों में जाने से लगभग दस साल पहले, अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर तृतीय (745–727 ईसा पूर्व) ने इस क्षेत्र पर आक्रमण किया, इसे जीत लिया, इसके लोगों को निर्वासित किया और उन्हें अपने पूरे साम्राज्य में बिखेर दिया (1 इति 5:26; पुष्टि करें 2 रा 15:29)। पश्चिमी मनश्शे के अधिकांश लोग जो पीछे रह गए थे, उन्होंने विदेशियों के साथ विवाह कर लिया, अन्यजाति देवताओं की आराधना शुरू की, और सामरी लोगों के पूर्वज बन गए (2 रा 17:24–41)। इसके बाद, इस क्षेत्र को गिलाद के रूप में जाना गया। नए नियम के समय तक यह क्षेत्र आंशिक रूप से दिकापुलिस में और आंशिक रूप से पेरिया में था।

मनश्शे की प्रार्थना

मनश्शे की प्रार्थना

यह छोटी सी प्रार्थना, जो यहूदा के राजा मनश्शे को समर्पित है, अक्सर पूरे अंग्रेजी अप्रमाणिक ग्रन्थ (प्राचीन ग्रंथों का समूह जो इब्रानी बाइबल में शामिल नहीं है लेकिन कुछ मसीही समूहों द्वारा स्वीकार किया गया है) के सबसे उत्कृष्ट कार्यों में से एक मानी जाती है। सुधार के दौरान, प्रोटेस्टेंट ने इसकी भक्ति की अभिव्यक्ति की गहराई से सराहना की। हालाँकि, इसे प्रोटेस्टेंट, रोमन कैथोलिक या पूर्वी रूढ़िवादी कलीसिया द्वारा पवित्रशास्त्र नहीं माना जाता है।

पुराना शीर्षक, *बाबेल में बन्दी बनाये जाने के दौरान यहूदा के राजा मनश्शे की प्रार्थना,* आधुनिक शीर्षक और लैटिन शीर्षक, *ओरेशियो मनश्शे* से बेहतर है। पुराने शीर्षक में कहा गया है कि यह प्रार्थना राजा मनश्शे से जुड़ी है, जिन्होंने 696 से 642 ईसा पूर्व तक शासन किया। मनश्शे को बाबेल में बन्दी बनाकर ले जाया गया, जहाँ "संकट में पड़कर वह अपने परमेश्वर यहोवा को मानने लगा, और बहुत दीन हुआ, और उससे प्रार्थना की। तब प्रभु ने प्रसन्न होकर उसकी विनती सुनी, और उसको यरूशलेम में पहुँचाकर उसका राज्य लौटा दिया।!" (2 इतिहास 33:12–13; इस विवरण की ऐतिहासिकता के लिए, देखें मनश्शे #3)।

2 इतिहास के लेखक ने कहा कि यह प्रार्थना राष्ट्रीय अभिलेखागार और अन्य स्रोत (2 इतिहास 33:18–19) से आई। अज्ञात लेखक ने प्रार्थना की रचना की, परन्तु रचना की तिथि अनिश्चित है। आंतरिक साक्ष्य के आधार पर, विद्वानों ने इसे 250 ईसा पूर्व और 50 ईस्वी के बीच का माना है। इस प्रार्थना के साथ सबसे पुरानी जीवित यूनानी बाइबल पाण्डुलिपि कोडेक्स अलेक्सैन्ड्रियस है। यह पांचवीं सदी ईस्वी का है। इसके अस्तित्व का सबसे पहला प्रमाण, तीसरी सदी ईस्वी के सीरियाई कलीसिया प्रक्रियाओं के नियमावली में है जिसे *डिडास्कालिया* कहा जाता है। इस नियमावली को बाद में 380 ईस्वी में *अपोस्टोलिक कोंस्टीट्यूशन* में संशोधित किया गया था।

अधिकांश विद्वानों का मानना है कि यह प्रार्थना मूल रूप से ग्रीक में लिखी गई थी। हालाँकि, इतने छोटे लेख की मूल भाषा को खोजना मुश्किल है—अंग्रेजी में लगभग 400 शब्द। मनश्शे की प्रार्थना मौजूद है निम्न में:

- यूनानी
- सीरियाई
- दो लतीनी संस्करण
- इथियोपियाई
- आर्मेनियाई
- पुरानी स्लावोनिक

मसीह युग की पहली तीन शताब्दियों में यहूदियों और मसीहियों के बीच इसकी लोकप्रियता स्पष्ट है।

मनश्शे की प्रार्थना पापी की प्रार्थना है जो अपनी गलतियों को स्वीकार करते है और दयालु परमेश्वर से विनती करते है।

संशोधित मानक संस्करण और नई अंग्रेजी बाइबल प्रार्थना को 15 वचनों में विभाजित करते हैं। किंग जेम्स संस्करण और इंग्लिश रिवाइज्ड वर्शन वचन संख्या नहीं दर्शाते हैं, और कम सामान्य प्रणाली प्रार्थना को 19 वचनों में विभाजित करती है।

यह प्रार्थना पुराने नियम में पाए जाने वाले परमेश्वर के वर्णनों पर आधारित है। यह परमेश्वर को इस प्रकार पहचानती है:

- "सर्वशक्तिमान प्रभु" (मनश्शे की प्रार्थना 1:1; पुष्टी करें 2 कुरिन्थियों 6:18)
- "हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा" (मनश्शे की प्रार्थना 1:1; देखें 2 इतिहास 20:6; 33:12)
- सृष्टिकर्ता—महिमावान, शक्तिशाली, क्रोधित, फिर भी दयालु (मनश्शे की प्रार्थना 1:2–7a)
- "यहोवा ने आकाश और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उनमें है, सब को बनाया" (मनश्शे की प्रार्थना 1:2; देखें निर्गमन 20:11; नहेमायाह 9:6; भजन संहिता 146:6)
- "उनकी विविधता में" (मनश्शे की प्रार्थना 1:2)
- उन्होंने "समुद्र को जंजीरों में बाँध दिया" और "गहरे को सीमित कर दिया" (मनश्शे की प्रार्थना 1:3; देखें अय्यूब 38:8–11)
- कोई भी उनकी प्रतापमय महिमा को सहन नहीं कर सकता (मनश्शे की प्रार्थना 1:5a; पुष्टी करें 2 पतरस 1:16–17)
- उनकी शक्ति हर प्राणी को "कांपने और थरथराने" पर मजबूर कर देती है (मनश्शे की प्रार्थना 1:4)
- उनकी भलाई दया और उद्धार में दिखाई देती है (मनश्शे की प्रार्थना 1:7, 14; यशायाह 63:7 और रोमियों 2:4 भी देखें)
- वह दयालु, धैर्यवान (सहनशील), और अति करुणामय हैं (मनश्शे की प्रार्थना 1:7; भजन संहिता 86:5, 15 भी देखें)
- वह "परमप्रधान यहोवा" हैं (मनश्शे की प्रार्थना 1:7; भजन संहिता 7:17; 47:2 भी देखें)

मनश्शे ने यह भी कहा कि:

- "पापियों के विरुद्ध तेरे [परमेश्वर के] भयंकर क्रोध का कोई सामना नहीं कर सकता" (मनश्शे की प्रार्थना 1:5b)
- उनकी मूर्तिपूजा हमेशा से परमेश्वर की दृष्टि में बुरी रही है, हालाँकि उन्हें हाल ही में ही यह महसूस हुआ है कि वे "पाप पर पाप जोड़ रहे हैं" (मनश्शे की प्रार्थना 1:10)
- वह बेड़ियों में है और परमेश्वर द्वारा अस्वीकार कर दिया गया है क्योंकि उनकी मूर्तिपूजा ने परमेश्वर को क्रोधित कर दिया है (मनश्शे की प्रार्थना 1:10; 2 इतिहास 33:6 और भजन संहिता 107:10 भी देखें)

मनश्शेह कहते है कि परमेश्वर की दया ही उनकी एकमात्र आशा है। परमेश्वर की दया है:

- असीम और समझ से परे (मनश्शे की प्रार्थना 1:6)
- अनगिनत (मनश्शे की प्रार्थना 1:7)
- महान (मनश्शे की प्रार्थना 1:14)

परमेश्वर की दया उपलब्ध है क्योंकि प्रभु ने स्वयं "इस्राएलियों को मन फिराव और पापों की क्षमा प्रदान की" (मनश्शे की प्रार्थना 1:7; प्रेरि 5:31 भी देखें), जिसमें मनश्शे स्वयं भी शामिल हैं (मनश्शे की प्रार्थना 1:8)।

प्रार्थना का हृदय (मनश्शे की प्रार्थना 1:9–13a) में मनश्शे द्वारा पाप का अंगीकार और क्षमा के लिए उनकी अपील शामिल है। इसमें तीन यादगार पंक्तियाँ हैं:

1. "मेरे अपराध बहुत हैं, हे प्रभु, मेरे अपराध बहुत हैं।" ... मुझे क्षमा करें, हे प्रभु, मुझे क्षमा करें!"
2. "और अब मैं अपने हृदय के घुटने टेककर तेरी दया के लिए विनती करता हूँ।" अपनी अयोग्यता के बावजूद (मनश्शे की प्रार्थना 1:9, 14), वह परमेश्वर से विनती करते है कि उन्हें नष्ट न करें, न ही उनसे सदा के लिए क्रोधित रहें, न ही उन्हें कब्र में दण्डित करें, क्योंकि प्रभु "पश्चाताप करने वालों के परमेश्वर" हैं (मनश्शे की प्रार्थना 1:13)।

3. मनश्शे को भरोसा हो जाता है कि परमेश्वर अपनी भलाई और दया से उन्हें बचाएँगे (मनश्शे की प्रार्थना 1:14)। फिर वह एक क्षमा किए गए पापी की उचित प्रतिक्रिया दिखाते है जब वह कहते है,, "मैं अपने जीवन के सभी दिनों में निरंतर तेरी स्तुति करूंगा" (मनश्शे की प्रार्थना 1:15)।

प्रार्थना परमेश्वर की अनन्त महिमा की प्रशंसा करते हुए एक संक्षिप्त स्तुतिगान के साथ समाप्त होती है।

हालाँकि इस प्रार्थना में कई सराहनीय गुण हैं, फिर भी यह मसीही शिक्षा से एक महत्वपूर्ण तरीके से अलग है। लेखक गलती से मान लेते है कि दो प्रकार के लोग होते हैं। वे धर्मी हैं, जो अच्छे हैं, और पापी हैं, जो बुरे हैं। प्रार्थना में अब्राहम, इसहाक, और याकूब को धर्मी पुरुषों के रूप में चित्रित किया गया है जिन्होंने पाप नहीं किया और जिन्हें पश्चाताप की आवश्यकता नहीं थी। यह सटीक नहीं है। परन्तु, यह मसीही मत से पहले के यहूदी विचार को दर्शाता है (देखें मत्ती 9:13)। प्रेरित पौलुस ने कहा कि कोई भी अपने आप में धर्मी नहीं है। सभी ने पाप किया है (रोमियों 3:10–12, 21–26)। अब्राहम की धार्मिकता पैतृक नहीं थी। यह विश्वास के माध्यम से आई थी (रोमियों 4:3; पुष्टी करें फिलिप्पियों 3:8–9)।

अप्रमाणिक ग्रन्थ *भी देखें*।

मनश्शेई

मनश्शेई

मनश्शे का वंशज, यूसुफ का पहलौठा पुत्र (व्य.वि. 4:43; 2 रा 10:33)। *देखें*मनश्शे (व्यक्ति) #1; मनश्शे का गोत्र।

मनहेम

इस्राएल का राजा, जिसने 752–742 ई.पू. तक शासन किया। वह गादी का पुत्र था, एक नाम जो पुराने नियम में केवल 2 राजाओं 15:14–22 में ही प्रमाणित है।

मनहेम के जीवन और शासन के बारे में पुराना नियम जो कुछ भी बताता है, वह मुख्य रूप से 2 राजाओं 15 के कुछ संक्षिप्त पदों में ही संकलित है। इन पदों से तीन महत्वपूर्ण बिन्दु चिन्हित किए जा सकते हैं।

पहला, 2 राजाओं 15:14 में शल्लूम की हत्या का उल्लेख है, जिसने मनहेम को सिंहासन पर कब्जा करने में सक्षम बनाया। फिर 16 पद में तप्पूह (तिप्सह) नगर के खिलाफ मनहेम के कार्यों का वर्णन किया गया है। पूरा पद विवादास्पद है लेकिन इसे इस प्रकार अनुवादित किया जा सकता है: "उस समय मनहेम ने तप्पूह नगर और आसपास के सभी ग्रामीण इलाकों को तिर्सा तक नष्ट कर दिया, क्योंकि उसके नागरिकों ने नगर को आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया। उसने पूरी आबादी को मार डाला और गर्भवती महिलाओं को चीर डाला।" दो बातें असामान्य हैं। पहले, मनहेम के कार्य इस्राएली इतिहास में बिल्कुल अभूतपूर्व हैं। दूसरा, मनहेम द्वारा हमला किए गए नगर का स्थान और पहचान अनिश्चित है। इब्रानी पाठ "तिप्सह" पढ़ता है, एक नगर की वर्तनी का उपयोग करते हुए जिसे सामान्यतः फरात पर थाप्साकस के रूप में पहचाना जाता है। मनहेम के अपने क्षेत्र और हितों से इतनी दूर एक नगर पर हमला करने के कारणों को निर्धारित करना कठिन होगा। तदनुसार, कुछ विद्वानों ने यूनानी बाइबल के लूसियनिक संस्करण का अनुसरण किया है जो इब्रानी अक्षरों को "तप्पूह" के रूप में पढ़ता है, जो मनहेम के गृहनगर तिर्सा से 14 मील (22.5 किलोमीटर) दक्षिण-पश्चिम में एक नगर है। यदि यह पढ़ना सही है और इसके लिए पाठ्य साक्ष्य केवल एक संस्करण तक सीमित है, तो 2 राजाओं 15:16 का अर्थ यह है कि मनहेम ने अपने गृहनगर (तिर्सा) की सीमाओं के बाहर निर्दोष लोगों पर हमला किया और तलवार से एक पड़ोसी नगर की पूरी आबादी (जिसमें उसके नागरिक शामिल थे जो नगर के बाहर रहते थे) को समाप्त कर दिया, क्योंकि वहाँ के लोग उसकी सत्ता को स्वीकार नहीं कर रहे थे।

दूसरा, 2 राजाओं 15:19–20, बाइबल का दृष्टिकोण प्रदान करता है कि मनहेम ने तिग्लत्पिलेसेर तृतीय के अश्शुर-फिलिस्तीनी क्षेत्र में अभियान द्वारा उत्पन्न अश्शूरी संकट का सामना कैसे किया (लगभग 744 ई.पू.)। ऐसा प्रतीत होता है कि इस्राएल में सिंहासन पर अपने दावों का समर्थन करने के लिए अश्शूरियों को मनाने की उम्मीद में, मनहेम ने अपने देश के धनी नागरिकों पर एक कठोर कर लगाया ताकि तिग्लत्पिलेसेर को कर देने के लिए इसका उपयोग किया जा सके (जिसे पद 19 में उसके बाबेली नाम "पूल" द्वारा बुलाया गया है)। मनहेम को उम्मीद थी कि यह भुगतान अश्शूरी राजा को "राजकीय शक्ति पर अपनी पकड़ मजबूत करने में समर्थन प्राप्त करने" के लिए मनाएगा (पद 19)। कम से कम राजनीतिक रूप से, मनहेम ने सही अनुमान लगाया है, क्योंकि अश्शूरी पीछे हट गए (पद 20) और मनहेम सत्ता में बना रहा।

अन्ततः मनहेम का शासनकाल प्रस्तुत किया गया है (2 रा 15:17) और राजाओं की पुस्तकों में प्रयुक्त मानक साहित्यिक रूपों द्वारा समाप्त किया गया है। इस तथ्य के बावजूद कि मनहेम को मूल धर्मत्यागी (यारोबाम प्रथम) के समान पापी माना गया था, 2 राजाओं 15:22 उसकी मृत्यु के बारे में एक असामान्य तथ्य की पुष्टि करता है। इस्राएल के अन्तिम छः राजाओं में से, केवल वही शांतिपूर्ण मृत्यु को प्राप्त हुआ।

यह भी देखें बाइबल का कालक्रम (पुराना नियम); इस्राएल का इतिहास।

मनासोन

यरूशलेम में मनासोन नामक मसीही था (प्रेरि 21:16)। उन्हें साइप्रस द्वीप का निवासी और पुराने चेले के रूप में पहचाना जाता है। जब पौलुस और उनके साथी यरूशलेम पहुँचे, तो मनासोन ने उन्हें अपने घर में मेहमान के रूप में ठहराया।

मनाहेम

अन्ताकिया की कलीसिया में एक भविष्यद्वक्ता और उपदेशक (प्रेरितों के काम 13:1), जिन्हें हेरोदेस चौथाई शासक के निकट साथी के रूप में पहचाना गया है। यह नाम इब्रानी नाम मनहेम का यूनानी रूप है।

मनुष्य

मनुष्य, चाहे पुरुष हो या स्त्री।

मनुष्य पर बाइबल की शिक्षा परमेश्वर के बारे में सही धारणा से शुरू होती है। मानवविज्ञान (अर्थात, मनुष्य का अध्ययन) का बाइबल दृष्टिकोण मुख्य रूप से एक उच्च धर्मशास्त्र (अर्थात, परमेश्वर का अध्ययन) के सन्दर्भ में प्रदर्शित होता है। परमेश्वर का उच्च और प्रतिष्ठित दृष्टिकोण मनुष्य के प्रति एक कुलीन और गरिमामय दृष्टिकोण की ओर ले जाता है, जबकि परमेश्वर के विषय एक खराब विकसित अवधारणा अक्सर मनुष्य के विषय एक विकृत दृष्टिकोण उत्पन्न करती है। इसलिए, मनुष्य को उससे अधिक महत्वपूर्ण रूप से देखा जा सकता है जितना उसे देखा जाना चाहिए, या मनुष्य को बाइबल की तुलना में कम महत्वपूर्ण माना जा सकता है। दोनों दृष्टिकोण बाइबल के अनुरूप नहीं हैं। मनुष्य का अध्ययन शुरू करने का स्थान (जिसे इस लेख में पुरुष और स्त्री दोनों मनुष्यों के लिए एक सामान्य शब्द के रूप में उपयोग किया जाता है) परमेश्वर और उनके सृष्टिकर्ता के दृष्टिकोण से है।

मनुष्य की उत्पत्ति

उत्पत्ति के प्राकृतिक, भौतिकवादी सिद्धांतों के विपरीत, बाइबल का दृष्टिकोण इस दावे से शुरू होता है कि अनन्त परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है, जो उनकी सभी सृजित कार्यों में सबसे महत्वपूर्ण है। यह आवश्यक नहीं है कि कोई परमेश्वर के मनुष्य की सृष्टि के कार्य के लिए किसी विशेष कालक्रम पर विश्वास करे। कुछ मसीही विश्वास करते हैं कि बाइबल उत्पत्ति 1 में छह शाब्दिक 24-घंटे के दिनों से बना एक बन्द कालक्रम सिखाता है (पुष्टि करें उत्प 1:5, 8, 13, आदि), जिसमें मनुष्य का आश्चर्यजनक, अचानक प्रकट होना शायद लगभग 6,000 साल पहले हुआ था (पुष्टि करें वह कालक्रम जो आर्कबिशप जेम्स उशर से सम्बन्धित है लेकिन केवल उन्हीं तक सीमित नहीं है, एनालेस, 1650–58)। कुछ लोग जो इस सामान्य दृष्टिकोण (जिसे कभी-कभी सृजन विज्ञान कहा जाता है) को मानते हैं, वे उत्पत्ति 5 और 11 के कालक्रम में कुछ लचीलेपन के दृष्टिकोण के आधार पर मनुष्य के निर्माण को लगभग 10,000 साल पहले तक विस्तारित करते हैं।

कुछ लोग विश्वास करते हैं कि उत्पत्ति 1 और 2 के पाठों की व्याख्या बहुत व्यापक रूप से की जा सकती है, जो सृष्टि के लिए अत्यंत प्राचीन काल की बात करते हैं (जो लाखों वर्षों तक फैली हुई है)। वे तर्क करते हैं कि प्रक्रिया (परमेश्वर के नियंत्रण और निर्देशन के तहत) ने परमेश्वर के रचनात्मक कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होगी। इस दृष्टिकोण को प्रगतिशील सृजनवाद कहा जाता है, और इसे ईश्वरवादी विकासवाद के साथ तुलना की जानी चाहिए, जिसमें ईश्वर को आमतौर पर प्रक्रिया शुरू करने वाला माना जाता है, लेकिन एक बार प्रक्रिया शुरू होने के बाद उनका थोड़ा ही हस्तक्षेप होता है। पहले दृष्टिकोण में, इब्रानी शब्द "दिन" *(योम)* उत्पत्ति 1 समय की एक विस्तारित अवधि है (उदाहरण के लिए, "दिन-युग" सिद्धांत); को सन्दर्भित कर सकता है; इस प्रकार, वाक्यांश "तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ, इस प्रकार अगला दिन हो गया" परमेश्वर के सृजनात्मक कार्यों के क्रमिक दृश्यों को समय की प्रक्रियाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए एक साहित्यिक उपकरण हो सकता है।

बहुत से मसीही खुद को मनुष्य की उत्पत्ति के लिए रूढ़िवादी और व्यापक कालक्रम के बीच कहीं पाते हैं। फिर भी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के बावजूद, मनुष्य के बारे में बाइबल के अनुसार सोचने के लिए मनुष्य को बनाने में परमेश्वर के रचनात्मक कार्य को स्वीकार करना चाहिए। विश्वास का सार इन शब्दों से शुरू होता है "मैं सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर में, जो स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता हैं, उन पर विश्वास करता हूँ।"

मनुष्य केवल परमेश्वर की रचना नहीं, बल्कि उनके सृजनात्मक प्रयास का शिखर भी हैं। प्राचीन लोग पशु साम्राज्य के सदस्यों के साथ मनुष्य की शारीरिक समानताओं से अवगत थे। फिर भी इन समानताओं के बावजूद, बाइबल का दृष्टिकोण कभी भी मनुष्य को जानवरों के समान स्तर पर नहीं रखता—मनुष्य विशिष्ट हैं, परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य का उच्च बिन्दु, उनके हस्तकला का शिखर है। उत्पत्ति 1 में सृजित वस्तुओं की प्रगति चरमोत्कर्ष है; परमेश्वर के सभी सृजनात्मक कार्य उनके द्वारा मनुष्य के निर्माण में समाप्त हुए।

मनुष्य की विशिष्ट व्यवहारिक विशेषताओं में भाषा, उपकरण निर्माण, और संस्कृति शामिल हैं। विशिष्ट अनुभवात्मक

विशेषताओं में चिंतनशील जागरूकता, नैतिक चिंता, सौंदर्यात्मक इच्छाएं, ऐतिहासिक जागरूकता, और दार्शनिक चिंता शामिल हैं। यह तत्व व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से मनुष्य को अन्य प्रकार के पशु जीवन से अलग करते हैं। मनुष्य कुछ आधुनिक विकासवादी सिद्धांतों के "नग्न वानर" से कहीं अधिक है। लेकिन मनुष्य की संपूर्ण प्रकृति को समझाने के लिए अकेले समाजशास्त्र पर्याप्त नहीं है। यह दिव्य प्रकाशन का विषय है।

जबकि मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि के साथ निरंतरता रखता है (जैसा कि उत्प 2:7 के शब्दों में पृथ्वी की मिट्टी से बनाये जाने का अनुमान लगाया गया है), मनुष्य उन सभी से भिन्न भी है जो उनसे पहले हैं क्योंकि परमेश्वर ने उनमे जीवन का श्वास फूँका ताकि वह एक जीवित प्राणी बन जाए (2:7)। मनुष्य को परमेश्वर ने नर और नारी के रूप में बनाया (1:27), जिसका अर्थ है कि जो कुछ सामान्य रूप से मनुष्य के बारे में कहा गया है, वह नर और नारी दोनों के लिए कहा जाना चाहिए, और मनुष्य होने का सबसे सच्चा चित्र पुरुष और स्त्री के साथ होने के सन्दर्भ में पाया जाएगा। पृथ्वी पर प्रभुत्व स्थापित करने और बढ़ने के आदेश दोनों लिंगों को साझा जिम्मेदारी के रूप में दिए गए थे। इसी तरह, यह मनुष्य के रूप में नर और नारी हैं जिन्होंने परमेश्वर के खिलाफ बलवा किया और पतन के बाद की दुनिया में उस आदिम पाप के परिणामों को भुगतना पड़ा, और यह मनुष्य के रूप में नर और नारी हैं जिन्हें मसीह छुड़ाने आए (पुष्टि करें गला 3:28)। साथ ही, "नर" और "नारी" शब्द सच्चे भेदों को दर्शाते हैं। कई माने गए लिंग भेद सांस्कृतिक रूप से निर्धारित हो सकते हैं, फिर भी नर (इब्रानी, जकर, "छेदने वाला") और नारी (इब्रानी, नेकेबा, "छेदी गई") बीच मुख्य यौन भेद दिव्य उद्देश्य से हैं। परमेश्वर के पूर्ण स्वरूप को प्रदर्शित करने के लिए नर और नारी दोनों की आवश्यकता होती है (देखें उत्प 1:27)।

वास्तव में, बाइबल में मनुष्य के सम्बन्ध में सबसे अद्भुत दावा यह है कि परमेश्वर ने मनुष्य को *अपने स्वरूप में* बनाया है। किसी अन्य प्राणी के बारे में, यहाँ तक कि स्वर्गदूतों के बारे में भी, ऐसा कथन नहीं मिलता है। उत्प 1:26–28 में "परमेश्वर ने अपने स्वरूप में" वचन भजनकार के भज 8:5 में व्याख्या का आधार हैं, "क्योंकि तूने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है" (शाब्दिक अनुवाद; "स्वर्गदूतों से कम," सेप्टुआजिंट अनुवाद)। "परमेश्वर के स्वरूप"(लैटिन, *इमेजो डेई*) वाक्यांश का अर्थ बहुत वाद विवाद का विषय रहा है। कुछ लोगों ने सोचा है कि यह वाक्यांश परमेश्वर के भौतिक प्रतिनिधित्व को सन्दर्भित करता है, लेकिन यह संदेहास्पद है क्योंकि परमेश्वर आत्मा हैं (पुष्टि करें यूह 4:24)। अन्य लोग सोचते हैं कि यह वाक्यांश मनुष्य की व्यक्तित्वता को सन्दर्भित करता है, जो परमेश्वर के व्यक्तित्व के अनुरूप है (बुद्धि, संवेदनशीलता, और इच्छा रखने वाला)। मनुष्य की ऐसी विशेषताएँ परमेश्वर के स्वरूप में पाई जा सकती हैं; हालाँकि, व्यक्तित्व के यह विविध पहलू पशु राज्य के अन्य सदस्यों द्वारा भी साझा किए जाते हैं और यह केवल मानव प्रजाति तक ही सीमित नहीं हैं।

शब्द "स्वरूप" (इब्रानी, त्सेलेम) शब्द का मूल अर्थ "छाया", "प्रतिनिधित्व" या "समानता" है। मनुष्य में परमेश्वर के स्वरूप सृजित संसार में स्वयं के प्रतिनिधित्व या छाया के रूप में मनुष्य के मूल्य और गरिमा के बारे में परमेश्वर के दृष्टिकोण को प्रकट करती है। अश्शूर के प्राचीन राजाओं के बारे में ज्ञात था कि वे अपने भौतिक चित्रों को दूरस्थ क्षेत्रों में रखते थे ताकि उन लोगों को याद दिलाया जा सके जो भूल सकते थे कि यह क्षेत्र साम्राज्य का हिस्सा हैं। इसी प्रकार परमेश्वर ने मनुष्य में अपनी छाया, अपनी उपस्थिति का प्रतिनिधित्व, उस संसार में रखा है जिसे उन्होंने बनाया है।

मनुष्य में परमेश्वर के स्वरूप का यह दृष्टिकोण उत्प 1 में तत्काल सन्दर्भ द्वारा पुष्टि होता प्रतीत होता है। परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए मनुष्य को परमेश्वर के अन्य सभी कार्यों पर प्रभुत्व रखना है (उत्प 1:26; भज 8:5 भी देखें)। इसके अलावा, सृष्टिकर्ता के प्रतिनिधि के रूप में, मनुष्य को उसकी प्रतिक्रिया देना अनिवार्य है। परमेश्वर की आत्मिकता के बारे में यीशु के दावे का परिणाम आत्मा और सच्चाई से आराधना की प्रतिक्रिया में होता है (यूह 4:21–24)।

मनुष्य का स्वभाव

हम मनुष्य के बारे में टुकड़ों में सोचते हैं, लेकिन बाइबल का जोर मनुष्य के संपूर्णता पर है। मनुष्य की त्रैतीय (तीन भागों वाली) प्रकृति (पुष्टि करें 1 थिस्स 5:23) - आत्मा, प्राण और शरीर - के विरुद्ध मनुष्य की द्विपक्षीय (दो गुना) प्रकृति, भौतिक और अभौतिक पर वादविवाद जारी है। हालाँकि बाइबल दोनों स्थितियों का समर्थन करती प्रतीत होती है, लेकिन मनुष्य की प्रकृति के सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा उनके भागों की संख्या के बजाय उसकी एकता है। इसलिए, मनुष्य के बारे में बाइबल का दृष्टिकोण इस दावे से शुरू होता है कि वह भौतिक और गैर-भौतिक गुणों से बना एक व्यक्ति है। कार्ल बार्थ के शब्दों में, मानव व्यक्ति "शारीरिक आत्मा है, क्योंकि वह आत्मायुक्त शरीर भी है।" केवल शरीर में कोई व्यक्ति नहीं होता, और न ही कोई आसानी से एक बिना शरीर के आत्मा को व्यक्ति के रूप में सोच सकता है, सिवाय एक अस्थायी, संक्रमणकालीन अवस्था में। इब्रानी शब्द नेफेश, जिसे अक्सर "प्राण" के रूप में अनुवादित किया जाता है, अधिकांश सन्दर्भो में "व्यक्ति" के रूप में बेहतर अनुवादित होता है। इब्रानी शब्द रुआख ("साँस," "हवा," "आत्मा") और यूनानी शब्द न्यूमा ("आत्मा") और प्सयूके ("प्राण") अक्सर मनुष्य के अभौतिक भाग की बात करते हैं। यह भौतिक से कम वास्तविक नहीं है। मनुष्य का मात्र भौतिक, शारीरिक दृष्टिकोण भयानक रूप से अपर्याप्त है। साथ ही, आत्मा पर अत्यधिक जोर और भौतिक पर कम जोर न तो यथार्थवादी है और न ही संतुलित है। कोई कह सकता है, "मैं एक व्यक्ति हूँ जिसका अस्तित्व वर्तमान में मेरे भौतिक शरीर पर बहुत

निर्भर है। लेकिन मैं शरीर से अधिक हूँ, माँस से अधिक हूँ। जब मेरा शरीर मरता है, मैं फिर भी जीवित रहता हूँ। जब मेरा माँस सड़ता है, मैं अस्तित्व में रहता हूँ। लेकिन एक दिन मैं फिर से शरीर में जीवित रहूँगा। क्योंकि एक देह रहित आत्मा की धारणा मेरी मानवता का पूरा माप नहीं है। परमेश्वर का मेरे लिए आदर्श यह है कि मैं अपने [नए] शरीर में अपना जीवन जीऊँ। इसलिए अनन्त अवस्था की आशा में, मैं शरीर के पुनरुत्थान और अनन्त जीवन में विश्वास करता हूँ।"

बाइबल के दृष्टिकोण से मनुष्य के स्वभाव के बारे में सोचते समय पतन की समस्या का सामना किए बिना आगे नहीं बढ़ा जा सकता हैं। उत्पत्ति 3 यह सुझाव देता है कि पतन से पहले का मनुष्य अविनाशी था, कि उनकी यौन प्रजनन की शक्तियाँ मूल रूप से बच्चे पैदा करने के दर्द से बंधी नहीं थीं, और उनका काम प्रकृति में उलटफेर से परेशान नहीं था। हालाँकि, पतन के बाद, मनुष्य के भीतर, नर और नारी के बीच, प्रकृति के साथ उनकी बातचीत में, और सृष्टिकर्ता के साथ उनके सम्बन्ध में सब कुछ बदल गया।

पतन के परिणामस्वरूप, मनुष्य गहराई से पतित हो गए हैं, और यह पतन उनके व्यक्तित्व के हर हिस्से तक फैला हुआ है। वाक्यांश "पूर्ण पतन" वाक्यांश का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति जितना बुरा हो सकता है, उतना ही बुरा है, बल्कि यह है कि पाप के परिणाम व्यक्ति के पूरे अस्तित्व को प्रभावित करते हैं। उस समय, मनुष्य में परमेश्वर का स्वरूप पतन के बाद भी किसी न किसी रूप में बना रहता है, जो उद्धार के लिए ईश्वरीय तर्क प्रदान करता है (पुष्टि करें रोम 5)। यह अनिवार्य रूप से मनुष्य के आंतरिक मूल्य के परमेश्वर के आकलन के कारण है कि उद्धार का ईश्वरीय औचित्य बनाए रखा जा सकता है।

मनुष्य की आवश्यक अच्छाई और बुराई के स्वभाव के बीच पुरानी बहस उत्पत्ति के विवरण में अपनी दुविधा और समाधान पाती है: परमेश्वर ने मनुष्य को सृष्टिकर्ता की गरिमा और महानता को सचेत रूप से प्रतिबिंबित करने के लिए बनाया, फिर भी मनुष्य अपने स्वयं के जानबूझकर विद्रोह से, अपने सृष्टिकर्ता के विरुद्ध हो गया और परमेश्वर की कृपा के बिना, अपने जीवन को चिह्नित करने वाले आगामी पाप में जारी रहा। यह परिणामी पाप पतित व्यक्ति में होने का गुण है, साथ ही साथ अभिमान और स्वार्थ के कई, निरंतर कार्य भी हैं। हालाँकि मनुष्य में परमेश्वर का स्वरूप पतन के कारण ख़राब हो गया था, लेकिन मसीह में जीवन की नवीनता में आने पर परमेश्वर की आत्मा के प्रभावी कार्य द्वारा इसे फिर से उत्तेजित किया जा सकता है। परमेश्वर का यह अनुग्रहपूर्ण कार्य व्यक्तिगत नवीनीकरण, दूसरों के साथ सम्बन्धों की पुनःस्थापन और परमेश्वर के साथ संगति लाता है।

मनुष्य, जिसे परमेश्वर ने अच्छा बनाया था, अपनी ही युक्तियों से बुरा बन गया है, फिर भी परमेश्वर की शक्ति से वह फिर से अच्छाई प्राप्त कर सकता है। पूर्ण रूप से मनुष्य होने का क्या अर्थ है, इसकी पुनः खोज यीशु के जीवन में पाई जाती है, जिनका मानव जीवन मनुष्य के लिए नई शुरुआत है। इसलिए, यीशु नया आदम हैं; उनके आदर्श में एक नई शुरुआत है जो पिछले नमूने की जगह लेती है।

मनुष्य की नियति

मनुष्य के बारे में बाइबल दृष्टिकोण में उनकी ईश्वरीय उत्पत्ति का सम्मानजनक विवरण, परमेश्वर के अनुग्रह के खिलाफ उनका बलवा, उनका न्याय, और उद्धारकर्ता यीशु के माध्यम से छुटकारा पाने की सम्भावना और अनन्त जीवन का वादा शामिल होना चाहिए। मनुष्य की एक शुरुआत है और वह हमेशा जीवित रहेगा। यह कथन उत्पत्ति और नियति के प्राकृतिक सिद्धांतों के बिल्कुल विपरीत है। आधुनिक विचारों की सबसे भ्रामक प्रवृत्तियों में से एक "मृत्यु के साथ समझौता करना" है। परमेश्वर के बारे में कोई विचार न रखने वाले और अनन्त काल की कोई आशा न रखने वाले लोग एक-दूसरे को अपने शरीर के अपरिहार्य पतन और विनाश को मानव जीवन के स्वाभाविक अन्त के रूप में स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। बाइबल की धारणा यह है कि मनुष्य में मृत्यु बिल्कुल भी स्वाभाविक नहीं है।

मृत्यु एक अर्जित गुण है, मनुष्य की स्वाभाविक नियति नहीं। मृत्यु शरीर की कही जा सकती है परन्तु आत्मा की नहीं। बाइबल की शिक्षा यह है कि जबकि शरीर मरता है और नष्ट होता है, तब व्यक्ति एक नए शरीर की आशा में जीवित रहता है। जो लोग मसीह को जान गए हैं वे अपने शरीर के मरने पर उनके साथ होते हैं (फिलि 1:23) और आने वाले अनन्त जीवन के लिए शरीर के पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करते हैं (1 कुरि 15:35–49)। जो मसीह को ग्रहण किए बिना मरते हैं, वे अस्तित्व में रहना बन्द नहीं करते, बल्कि उन्हें एक अनन्त अस्तित्व सौंपा जाता है जिसमें वे सचेत ज्ञान में होते हैं कि वे परमेश्वर से अलग हो गए हैं और हमेशा के लिए उनकी उपस्थिति का आनन्द लेने के अपने भाग्य से चूक गए हैं। खोए हुए लोगों के नियति पर बाइबल की शिक्षा आधुनिक मनुष्य के लिए बिल्कुल अरुचिकर है। यहाँ तक कि वे मसीही जो बाइबल की प्रेरणा के प्रति आमतौर पर उच्च दृष्टिकोण रखते हैं, वे दुष्टों के अनन्त दण्ड के विचार पर घबरा सकते हैं। फिर भी दुष्टों के अन्तिम न्याय का बाइबल सिद्धांत बाइबल की अधिकांश शिक्षाओं के समान ही स्थापित है।

पवित्रशास्त्र में मनुष्य के स्वभाव के सम्बन्ध में सबसे नाटकीय सत्य यह है कि परमेश्वर ने यह मनुष्य के लिए ही उद्धार कार्य की शुरुआत की, जो परमेश्वर के अनन्त पुत्र का देहधारण हुआ। उनके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद, प्रभु यीशु मसीह अपने अनन्त महिमा और गौरव के स्थान पर स्वर्ग में लौट गए, जहाँ वे हमेशा के लिए परमेश्वर-मनुष्य बने रहते हैं। परमेश्वर के रूप में, वे पिता और पवित्र आत्मा के सभी गुणों को साझा करते हैं, और मनुष्य के रूप में, मनुष्य के साथ अपनी पहचान रखते हैं। वे अपने आप को एक भौतिक शरीर

मनुष्य का पतन

में प्रकट करते हैं, यद्यपि वह पुनरुत्थान शरीर जो उनके सभी लोगों के पुनरुत्थान का पहला फल है। इस प्रकार, देहधारण ईश्वरत्व में एक शाश्वत परिवर्तन लाया। मनुष्य के मूल्य के बारे में केवल एक बहुत ही उच्च दृष्टिकोण ही परमेश्वर को अपने आप में इस तरह के मौलिक परिवर्तन के लिए ला सकता था। जैसा कि इब्रानियों के लेखक कहते हैं, "इसलिए जबकि बच्चे माँस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उन्हें (यीशु) जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे" (इब्रा 2:14)।

हमारी मानवता का अन्तिम मापदंड यह है कि मनुष्य परमेश्वर की आराधना करने और उन्हें सदा के लिए आनन्दित करने के लिए बनाए गए थे। ऐसे विचार किसी अन्य सृजित प्राणी को नहीं दिए गए हैं। यहाँ तक कि स्वर्गदूत, जिन्होंने अपनी पूर्ण अवस्था को बनाए रखा है और जो सचेत आनन्द में पिता की आराधना करते हैं, उनका परमेश्वर के साथ वैसा रिश्ता नहीं है जैसा कि उद्धार प्राप्त मनुष्यों का है (इब्रा 2:16)।

मनुष्य क्या है? मसीह में, महिमा और गरिमा में, और हमेशा के लिए उनके सिंहासन के सामने आनन्द में, मनुष्य वह सब है जो परमेश्वर चाहते हैं।

यह भी देखें परमेश्वर का स्वरूप; प्राकृतिक मनुष्य; पुराना और नया मनुष्य।

मनुष्य का पतन

एक नैतिक निर्दोषता और परमेश्वर के साथ अनुग्रह की स्थिति से मृत्यु के दण्ड की स्थिति में परिवर्तन, जो मानवता के इतिहास में आदम के प्रतिबंधित फल खाने से हुआ।

बाइबिल प्रमाण

उत्पत्ति 1 और 2 सृष्टि का वर्णन मनुष्य के स्वभाव और कार्य के अन्तर की पुष्टि करती है। मनुष्य (इस लेख में पुरुष और स्त्री मानव के लिए एक सामान्य शब्द के रूप में उपयोग किया गया है) को परमेश्वर के साथ संगति और सहभागिता के उद्देश्य से परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था। परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में, उसे पृथ्वी पर अधिकार दिया गया था ताकि वह इस पर खेती करे और इसके संसाधनों का उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए करे।

सांस्कृतिक आदेश के अतिरिक्त, मनुष्य को एक विशेष आज्ञा भी प्राप्त हुई। उसे अदन की वाटिका के वृक्ष और पौधें का भोजन के लिए उपयोग करने का अधिकार दिया गया था, लेकिन भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने से स्पष्ट रूप से मना किया गया था। इस आज्ञा का उद्देश्य मानव विवेक में भले और बुरे के बीच गहरा विरोधाभास उत्पन्न करना और सृष्टिकर्ता की सेवा में मनुष्य को स्थापित करना था। एक विश्वासयोग्य और निष्ठावान सेवक के रूप में, मनुष्य को स्वर्ग में अपने पिता द्वारा दी गई सभी आशीषों का आनन्द लेना था और अन्ततः परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन की परिपूर्णता में प्रवेश करना था

मनुष्य को एक जीवित प्राणी बनाया गया, जैसे जानवर भी बनाए गए थे, लेकिन उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर के साथ एकता और सहभागिता में रहना था। परमेश्वर के साथ संगति आदम की विवेक सम्पति बनने वाली थी, इसके विपरीत जानवर न तो पाप की सम्भावना जानते हैं और न ही परमेश्वर के साथ विवेक की संगति। विकल्प के बुराई को पूरी तरह समझते हुए, मनुष्य को अपनी इच्छा और प्रेमपूर्वक परमेश्वर की सेवा करनी थी। इसलिए परमेश्वर के सामने उसका जीवन न कि केवल स्वाभाविक प्रवृत्तियों से संचालित होना पर धार्मिक भी होना था।

भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाने की आज्ञा देने में परमेश्वर का उद्देश्य यह था कि मनुष्य को धार्मिकता और विश्वास के मार्गों में स्थापित किया जाए, लेकिन शैतान ने इस आज्ञा का उपयोग मनुष्य की परीक्षा लेने के लिए किया ताकि वह परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करे। मनुष्य के लिए परीक्षा में होना बुराई नहीं थी, लेकिन शैतान के लिए मनुष्य को पाप करने के लिए परीक्षा करना बुराई था। इसका अर्थ है कि मनुष्य के पतन से पहले संसार में बुराई थी। शैतान का स्पष्ट उद्देश्य मनुष्य को अपने अधीन करना था और मनुष्य के द्वारा अपने अन्धकार के राज्य को पृथ्वी पर फैलाना था। मनुष्य का पतन और इसके बाद होने वाले उद्धार के कार्य को परमेश्वर और शैतान के बीच के विश्व संघर्ष के सन्दर्भ में समझा जाना चाहिए, जिसमें परमेश्वर की अन्तिम विजय सुनिश्चित है। शैतान आदम तक हव्वा के द्वारा पहुँचा और सर्प का उपयोग करते हुए उन्हें भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने के लिए परखा।

पतन से पहले मनुष्य से भले और बुरे का अन्तर गुप्त नहीं था, हालाँकि मनुष्य का अनुभव केवल भले तक सीमित था। आदम को इस अन्तर की प्रकृति और फल खाने या न खाने के परिणामों के बारे में निर्देश केवल परमेश्वर से प्राप्त करना था। जैसे उसे आरंभ में अपने सृजनहार से जीवन मिला था, वैसे ही अब उसे परमेश्वर के मुख से निकलने वाले हर शब्द का पालन करते हुए जीना था। इस परीक्षा का उद्देश्य परमेश्वर से स्वतंत्रता का आग्रह करना था। शैतान ने परमेश्वर की सच्चाई पर प्रश्न उठाया और उसके अधिकार को चुनौती दी। उसने मनुष्य को यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि वह स्वयं अच्छे और बुरे के बीच अन्तर निर्धारित कर सकता है और वह अपने लाभ के लिए परिणामों को नियंत्रित कर सकता है। यह मनुष्य के लिए स्वयं परमेश्वर बनने की परीक्षा थी।

जब आदम अपनी पत्नी के साथ मिलकर प्रतिबंधित फल खा लिया उसने शैतान के परीक्षा के सामने झुकते हुए पाप किया। यह विद्रोह का कार्य परमेश्वर के प्रति अनाज्ञकारी,

अविश्वसयोग्यता, विश्वासघात और अविश्वास का कार्य था। जिस प्रकार न खाने की आज्ञा ने परमेश्वर के समक्ष धर्म के सभी पहलुओं को संक्षेपित किया और उन पर केन्द्रित किया, उसी प्रकार यह उल्लंघन परमेश्वर से पूर्ण धर्मत्याग का प्रतीक था। परमेश्वर के प्रति अविभाजित आज्ञाकारिता पूरे मन से बलवा और पूर्ण विरोध में बदल गई: परमेश्वर के अधिकार को अस्वीकार किया गया; परमेश्वर की भलाई पर संदेह किया गया; परमेश्वर की बुद्धि को चुनौती दी गई; और परमेश्वर के सत्य का खण्डन किया गया। मनुष्य के दिल और मन पर भावनाओं और संवेदनाओं का एक नया जटिल स्वरूप अधिकार कर बैठा।

पतन के प्रभाव

पतन के तात्कालिक परिणाम परमेश्वर की उपस्थिति में साहस और आनन्द की हानि और डर एवं लज्जा के प्रकट होने में दिखाई देते हैं। यह आदम और हव्वा के परमेश्वर से अलग होने में भी स्पष्ट है। यह श्राप में देखा जाता है, जो मनुष्य से सम्बन्धित है, लेकिन विशेष रूप से आदम और हव्वा के वाटिका से निष्कासन में प्रकट होता है। वह वाटिका धार्मिकता का निवास स्थान था, जहाँ मनुष्य और परमेश्वर के बीच एकता और सहभागिता का स्थान था। जब अधार्मिकता के कारण यह सहभागिता टूट गई, तो निष्कासन अपरिहार्य हो गया। जैसा कि परमेश्वर ने चेतावनी दी थी, पाप का परिणाम मृत्यु था। क्योंकि जीवन जहाँ-जहाँ है, वहाँ-वहाँ मृत्यु बाधा डालती है, यह स्वयं को कब्र में शरीर के विघटन के रूप में भी प्रकट करती है।

पतन के परिणाम केवल आदम और हव्वा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि प्राकृतिक जन्म द्वारा उनकी सन्तानों तक भी फैलते हैं, क्योंकि आदम और मानव जाति के बाकी लोगों के बीच एक विशेष एकता का सम्बन्ध है। कुछ धर्मशास्त्री आदम और उसकी सन्तानों के बीच सामान्य सम्बन्ध पर जोर देते हैं, जबकि अन्य आदम के वाचा सम्बन्ध पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, जिसमें वह अपनी सन्तानों का प्रधान और प्रतिनिधि है। मानव जाति के लिए आदम के अपराध के परिणाम उसके सभी वंशजों पर उसके पाप का आरोप, उनके परिणामस्वरूप मृत्यु का दायित्व, और एक भ्रष्ट स्वभाव को विरासत में प्राप्त किया।

पतन के परिणाम जगत में भी प्रकट होते हैं, जहाँ श्राप परमेश्वर के दिए गए सांस्कृतिक आदेश को पूरा करने में बाधाएँ उत्पन्न करता है। संसार में जनसंख्या वृद्धि केवल प्रसव की पीड़ा और खतरे के साथ होती है, और जीवन के निर्वाह के लिए आवश्यक भोजन, वस्त्र और शरण (छत) कठिन परिश्रम और संघर्ष के बिना सम्भव नहीं है।

हालाँकि, यह तथ्य हैं कि पतन के बाद मनुष्य पर *तुरन्त* मृत्यु का *अन्तिम* न्याय नहीं होता, यह दर्शाता है कि परमेश्वर की मनुष्य के लिए उद्धार की योजना है। आदम को मृत्यु के श्राप की घोषणा तब तक नहीं सुनाई देती जब तक वह उद्धारकर्ता के वचन को नहीं सुन लेता (उत्पत्ति 3:15)।

उत्पत्ति 3 के बाद, बाइबल में मनुष्य के पतन का उल्लेख बहुत कम किया गया है, लेकिन यह ऐतिहासिक घटना इसके बाद आने वाली सभी घटनाओं के लिए अपरिहार्य पूर्वधारणा है। बाइबल का मुख्य उद्देश्य भविष्य की ओर है—पाप के बढ़ते प्रभाव और परमेश्वर के समाधान के प्रकट होने की ओर।

यह भी देखें आदम (व्यक्ति); मृत्यु; पाप।

मनुष्य का पुत्र

देखें मनुष्य का पुत्र।

मनुष्य का पुत्र

मसीही शीर्षक जिसका उपयोग यीशु ने अपनी स्वर्गीय उत्पत्ति, सांसारिक उद्देश्य, और महिमामय भविष्य के आगमन को व्यक्त करने के लिए किया। यह केवल उनके मानव स्वभाव या मानवता को संदर्भित नहीं करता है, जैसा कि कुछ कलीसिया पिताओं या समकालीन विद्वानों का मानना है। बल्कि, यह यीशु की स्वर्गीय उत्पत्ति और ईश्वरीय गरिमा को दर्शाता है; मानव रूप में उनके प्रकट होने का रहस्य; उनके पृथ्वी मे आने के उद्देश्य को दर्शाता है जो उन्हे क्रूस और महिमा के अनुभव मे ले गया।

“मनुष्य का पुत्र” शब्द की पृष्ठभूमि पुराने नियम में पाई जाती है। यह ज्यादातर यहेजकेल की पुस्तक में पाया जाता है, क्योंकि इस भविष्यवक्ता को 90 बार "मनुष्य का पुत्र" कहा गया था। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने उसे संबोधित किया, "हे मनुष्य के सन्तान, अपने पाँवों के बल खड़ा हो, और मैं तुझ से बातें करूँगा" (यहे 2:1)। यीशु द्वारा "मनुष्य का पुत्र" शब्द का उपयोग और यहेजकेल से कई विषयों का उल्लेख यह संकेत देता है कि वह स्वयं को अंत समय के भविष्यवक्ता के रूप में पहचानना चाहता था, जो यहेजकेल (अध्याय 4, 7, 10, 22, 40–48) की तरह, यरूशलेम के विनाश और इस्राएल में परमेश्वर के राज्य की पुनःस्थापना के बारे में अंतिम वचन था (मत्ती 23–24; प्रेरि 1:6–8)।

इस शब्द का विशेष स्रोत दानि 7:13–14 है, जहाँ दानिय्येल को एक दर्शन मिलता है जिसमें एक "मनुष्य के पुत्र के समान" व्यक्ति "बादलों के साथ" आता है और "प्राचीन काल" की उपस्थिति में आता है, जो उन्हे परमेश्वर का विश्वव्यापी और अनंत राज्य देता है। यीशु ने अपने दूसरे आगमन के बारे में शिक्षा देते समय बार-बार इन वचनों के अंशों का उल्लेख किया (मत्ती 16:27; 19:28; 24:30; 25:31; 26:64)। स्पष्ट रूप से, यीशु ने इस अंश को अपने बारे में भविष्यवाणी के

रूप में और अपने देहधारण, स्वर्गारोहण, और परमेश्वर के राज्य की विरासत को दर्शाने के रूप में समझा।

सुसमाचारों में, "मनुष्य का पुत्र" शब्द का उपयोग यीशु द्वारा गुप्त रूप में लगभग 80 बार अपने बारे में, अप्रत्यक्ष तरीके से किया गया है (मत्ती, 32 बार; मर, 14 बार; लूका, 26 बार; यूह, 10 बार)। इन सभी सुसमाचार में, यीशु हमेशा उपदेशक थे, और किसी ने भी उन्हें कभी "मनुष्य का पुत्र" कहकर संबोधित नहीं किया। कुछ किताबों में संदर्भ इतना रहस्यमय है कि कुछ व्याख्याकार जोर देते हैं कि यीशु किसी और व्यक्ति के बारे में बात कर रहे थे। इस बारे में ऐसा संदेह केवल एक सुसमाचार यूहन्ना में दर्ज है, जहाँ भीड़ यीशु से पूछती है, "यह 'मनुष्य का पुत्र' कौन है?" (यूह 12:34)। अधिकांश सुसमाचार में, यीशु के साथ पहचान स्पष्ट है।कुछ में यह स्पष्ट है: "लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?"—इसके बाद, "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?"(मत्ती 16:13, 15)। आम तौर पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि यीशु ने इस शब्द का उपयोग अपने लिए एक मसीही शीर्षक के रूप में किया, ताकि वह अपने व्यक्तित्व और उद्देश्य के बारे में विनम्रता से बता सकें और महत्वपूर्ण तथ्य को संप्रेषित कर सकें जिसे वे अपने बारे में प्रकट करना चाहते थे। वह इसे मौलिकता के साथ कर सके क्योंकि यह शब्द मसीहा के बारे में प्रचलित गलत धारणाओं से नहीं भरा था ।

यह शब्द नए नियम में केवल चार अन्य बार आता है। प्रेरि 7:56 में, स्तिफनुस कहते हैं, "देखों, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ!" इब्रा 2:6 भज 8:4 यीशु के बारे मे बात करता है। अंत में, प्रका 1:13 और 14:14 में "मनुष्य के पुत्र के समान" किसी के दर्शन को दर्शाते हैं, जो निस्संदेह महिमावान यीशु हैं।

समदर्शी सुसमाचारों में, यीशु द्वारा "मनुष्य का पुत्र" शीर्षक के उपयोग से संबंधित पहला विषय उनके मसीही उद्देश्य को पूरा करने के लिए पृथ्वी पर आने का है। यीशु ने अपनी सांसारिक स्थिति की तुलना अपने पूर्व स्वर्गीय महिमा से करते हुए कहा, "लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है" (मत्ती 8:20; देखें लूका 9:58)। यह दर्शाता है कि मनुष्य के पुत्र ने अपने स्वर्गीय निवास को छोड़कर अपनी पृथ्वी की सेवकाई के सभी अपमानों को सहन किया (फिल 2:5–11)।

यीशु ने इस शीर्षक का उपयोग करके ईश्वरीय अधिकारों का यह कहते हुए दावा किया, "मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है" (मत्ती 12:8; मर 2:28; लूका 6:5)। सब्त, ईश्वरीय संस्था, साधारण मनुष्यों द्वारा संशोधित नहीं की जा सकती। चूँकि यीशु स्वर्ग से मनुष्य के पुत्र हैं, वह सब्त के भी प्रभु के रूप में शासन करने के लिए स्वतंत्र हैं, क्योंकि वही प्रभु हैं जिन्होंने सब्त की स्थापना की (उत्प 2:2; निर्ग 20:8–11)।

कफरनहूम में लकवे से पीड़ित को ठीक करने के बाद, यीशु ने दावा किया कि "मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है" (मत्ती 9:6; मर 2:10; लूका 5:24)। पहले, पापों की क्षमा स्वर्ग और परमेश्वर से आती थी, लेकिन अब यीशु द्वारा पृथ्वी पर क्षमा दी जाती है।

यीशु के "मनुष्य के पुत्र" शीर्षक के उपयोग का दूसरा पहलू उनके कष्ट, मृत्यु, और महिमामय पुनरुत्थान से संबंधित है, जो मनुष्य के पुत्र के रूप में उनके पृथ्वी के उद्देश्य को पूरा करने का रहस्यमय तरीका है। यीशु ने अपने कष्टों के विषय के बारे मे बताया जब पतरस ने उन्हें मसीहा और परमेश्वर का पुत्र स्वीकार किया (मत्ती 16:16)। मनुष्य के पुत्र के रूप में यीशु की पीड़ा की भविष्यवाणी मर 8:31–32 में दर्ज है और कई अन्य वचनों में भी दोहराया गया है। सुसमाचार इस विषय को विस्तारित करते हैं जिसमे यीशु को ठट्ठों मे उड़ाना, कोड़े लगना (मत्ती 17:12; 20:18; मर 8:31; लूका 9:22), यहूदा द्वारा विश्वासघात (मत्ती 17:22; 26:24–25; मर 14:21, 41), यहूदी अगुवों द्वारा अस्वीकृति (मत्ती 20:18), क्रूस पर मृत्यु (मत्ती 20:19; मर 9:12, 31; 10:33), तीन दिनों के लिए दफनाया जाना (मत्ती 12:40; लूका 11:30), और पुनरुत्थान (मत्ती 17:22–23; मर 8:31)।

प्रसिद्ध अध्याय में "मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि अपनी सेवा करवाए, परन्तु इसलिए आया कि सेवा करे और बहुतों के छुटकारे के लिये अपने प्राण दे" (मत्ती 20:28; मर 10:45), यीशु सिखाते हैं कि उनकी मृत्यु उनके लोगों के उद्धार के लिए प्रतिस्थापन बलिदान थी। यह विचार यीशु के स्वयं को प्रभु के पीड़ित सेवक के रूप में समझने से आता है (यश 53)।

यीशु ने अपने दूसरे आगमन के बारे में सिखाने के लिए "मनुष्य का पुत्र" शीर्षक का भी उपयोग किया। मनुष्य के पुत्र के रूप में, यीशु स्वर्ग से अपने पिता की महिमा में स्वर्गदूतों के साथ पृथ्वी पर लौटेंगे (मत्ती 16:27; मर 8:38; लूका 9:26)। पहले, वह सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे है और अब बादलों के साथ फिर से आएंगे। (मत्ती 26:64; मर 14:62; लूका 22:69) (मत्ती 24:30; मर 13:26; लूका 21:27)। यह आगमन अप्रत्याशित होगा (मत्ती 24:27; लूका 12:40), जैसे बिजली की चमक या नूह का जल-प्रलय (मत्ती 24:37; लूका 17:24)। उनका आगमन चुने हुए लोगों को इकट्ठा करने; पृथ्वी की सभी जातियों का न्याय (मत्ती 19:28; 25:32); और संसार में अंतिम धार्मिकता की i (19:28; 25:46) के लिए होगा।

इन अध्यायों में, यीशु अपने कष्ट और पुनरुत्थान में अस्थायी विजय से ध्यान हटाकर मनुष्य के पुत्र के दूसरे आगमन पर अंतिम विजय की ओर ले जाते हैं। फिर से, मनुष्य के पुत्र की स्वर्गीय उत्पत्ति और ईश्वरीय अधिकारों पर जोर दिया गया है। यह मनुष्य का पुत्र, यीशु अंतिम न्यायाधीश होगा (पुष्टी करें प्रेरि 17:31)।

यूहन्ना रचित सुसमाचार, मनुष्य के पुत्र के विषय में विशेष रूप से प्रस्तुत करता है। कहा जाता है कि स्वर्गदूत मनुष्य के पुत्र पर चढ़ते और उतरते हैं (यूह 1:51), इस प्रकार यह दर्शाया जाता हैं कि वह ऐसे व्यक्ति हैं जो समय से पहले अस्तित्व में थे और स्वर्ग से पृथ्वी पर आये है (3:13; 6:62)। उनका ऊपर उठाया जाना (क्रूस पर चढ़ाए जाने से) उन सभी के लिए अनंत जीवन लाएगा जो उन पर विश्वास करते हैं (3:14)। मनुष्य का पुत्र (3:14) परमेश्वर का भी पुत्र है (3:16), परमेश्वर का एकलौता पुत्र (1:18; 3:18)। सरल शब्दों में, यूहन्ना रचित सुसमाचार में, "मनुष्य का पुत्र" शीर्षक "परमेश्वर का पुत्र" शीर्षक के बराबर है। यह उनके समय से पहले का ईश्वरीय अस्तित्व, स्वर्गीय उत्पत्ति, और ईश्वरीय अधिकारों को प्रकट करता है। यह उनके वर्तमान पृथ्वी पर प्रकटीकरण और दुख की स्थिति की पुष्टि करता है, और इनके भविष्य और अंत समय की महिमा को भी दर्शाता हैं। पिता ने मनुष्य के पुत्र को मृतकों से जिलाने और संसार का न्याय करने का अधिकार दिया है (5:25–27)।

मसीहत्व; यीशु मसीह, की शिक्षाएँ; मसीहा; परमेश्वर का पुत्र भी देखें।

मनुष्य की आत्मा

मनुष्य का अंतरतम अस्तित्व, जो परमेश्वर के स्वभाव के अनुरूप है, जो आत्मा है। कुछ विद्वान सोचते हैं कि आत्मा और प्राण समान हैं; अन्य इसमें भिन्नता देखते हैं। इस प्रकार, कुछ लोग मनुष्य की त्रिपक्षीय (तीन भागों में विभाजित) स्वभाव में विश्वास करते हैं (देखें 1 थिस्स 5:23), आत्मा, प्राण, और शरीर, इसके विपरीत अन्य द्विपक्षी (दो भागों में विभाजित) स्वभाव में विश्वास करते हैं, भौतिक और अभौतिक।

1 थिस्सलुनीकियों 5:23 स्पष्ट रूप से मानव जाति के त्रिपक्षीय स्वरूप की बात करता है। अन्य शास्त्र प्राण और आत्मा को एक ही मानते हैं। प्राण और आत्मा (जैसे कि अय्यू 7:11; यशा 26:9, etc.) के समानांतर (समानार्थक) उपयोग का एक स्पष्ट उदाहरण मरियम के "भजन" में है। वह कहती हैं, "मेरा प्राण प्रभु की महिमा करता है, और मेरी आत्मा परमेश्वर मेरे उद्धारकर्ता में आनंदित होती है" (लूका 1:47, एन.के.जे.वी.)। दो को "भागों" के रूप में विभाजित करने के बजाय, कुछ ने सुझाव दिया है कि एक मनुष्य के पास एक आत्मा होती है और वह एक प्राण होता है। आमतौर पर आत्मा उस जीवनदायिनी, ऊर्जा देने वाली, सशक्त बनाने वाली शक्ति को इंगित करती है; यह मनुष्य के अस्तित्व का वह सार है जो परमेश्वर की प्रकृति के साथ मेल खाता है और परमेश्वर के साथ संवाद कर सकता है, जो आत्मा हैं।

जो लोग मसीह से जुड़े होते हैं, वे उनके साथ आत्मिक एकता का अनुभव करते हैं—उनकी आत्मा उनके आत्मा के साथ। यही पौलुस का मतलब था जब उन्होंने कहा, "जो प्रभु से जुड़ता है वह एक आत्मा है" (1 कुरि 6:17)। ध्यान दें कि पौलुस यह नहीं कहते, "जो आत्मा से जुड़ता है वह एक आत्मा है"; वे "प्रभु" शब्द का प्रयोग "आत्मा" के पर्याय के रूप में करते हैं। प्रभु के साथ एकता मनुष्य आत्मा की उनकी आत्मा के साथ एकता है। नए जन्म के दिन से, एक विश्वासी की मानवीय आत्मा मसीह के आत्मा से जुड़ी होती है। देखें यूहन्ना 3:6 ("जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है") और रोमियों 8:16 ("उनकी आत्मा हमारी आत्मा के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर के सन्तान हैं")। ये पद दिखाते हैं कि मसीह के साथ एक की एकता उनकी आत्मा के देवीय आत्मा द्वारा नए जन्म पर आधारित है।

मनुष्य, पुराना और नया

मनुष्य, पुराना और नया

यह बाइबल में मसीह के सम्बन्ध में मनुष्य की स्थिति का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द हैं। मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में उनके साथ संगति करने के लिए बनाए गए हैं (उत्प 1:26–27)। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को एक विशिष्ट स्थिति में अपनी इच्छा बताई (उत्प 2:15–17), फिर भी उन्होंने अपनी इच्छा की स्वतंत्रता का उपयोग परमेश्वर के आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए किया (उत्प 3:1–7)। इसलिए मानवजाति पाप में मरे हुए हैं (रोम 5:12–21; इफि 2:1–3)। आदम और हव्वा का पाप (मूल पाप) पूरी मानवता पर लागू हो गया है। पाप की प्रवृत्ति के साथ पैदा हुए मनुष्य (भज 51:5), जैसे ही नैतिक जिम्मेदारी की उम्र पूरी होती है, वह पाप करना शुरू कर देते हैं। पौलुस इस स्थिति को "पुराना मनुष्य" कहते हैं। पुराना मनुष्य व्यवस्था के कुछ हिस्सों का पालन करने में और विभिन्न अच्छे काम करने में सक्षम था। लेकिन कोई भी पुराना मनुष्य कभी भी अपने उद्धार के लिए पर्याप्त अच्छे काम नहीं कर सकता था। पुराने मनुष्य को नए मनुष्य में बदलना होगा अन्यथा उन्हें अपने पाप के परिणामों को भुगतना होगा। केवल परमेश्वर ही उस मौलिक परिवर्तन को ला सकते हैं। मनुष्य केवल विश्वास द्वारा परमेश्वर के अनुग्रहकारी वरदान को स्वीकार कर सकते हैं।

दाऊद, भजन संहिता 51 में, परमेश्वर से अपने पापों के दोष को दूर करने के लिए विनती करते हैं। पद 10 में वे कुछ इस प्रकार विनती करते हैं, "मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर"। परमेश्वर यहेजकेल 11:19, 18:31, और 36:26 में पश्चाताप करने वाले पापियों को एक नया हृदय और एक नई आत्मा देने का वादा करते हैं। रोमियों 6:5–11 में पौलुस दिखाते हैं कि पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है, इसलिए वे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं की, "ऐसे ही तुम भी अपने आपको पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह

यीशु में जीवित समझो" (6:11)। इफि 4:22–24 और कुलु 3:9–10 में वे विश्वासियों को दिखाते हैं कि उन्होंने पुराने मनुष्यत्व को उतार दिया है और नए मनुष्यत्व को पहन लिया है। यीशु इस मौलिक परिवर्तन को नया जन्म लेना कहते हैं - दूसरा शारीरिक जन्म नहीं, जैसा कि नीकुदेमुस ने सोचा था, बल्कि एक आत्मिक जन्म है (यूह 3:6)। केवल परमेश्वर का अनुग्रह ही पुराने मनुष्यत्व को नए मनुष्यत्व में बदल सकता है। पुराना मनुष्यत्व परमेश्वर के अनुग्रहकारी वरदान को विश्वास के द्वारा स्वीकार करता है, लेकिन वह विश्वास भी परमेश्वर का दान है (इफि 2:8)। नया मनुष्य परमेश्वर की सन्तान बन जाता है। वह तुरन्त सिद्ध नहीं हो जाता। उसे इस पूरे जीवन में पाप के विरुद्ध लड़ना होगा क्योंकि वह परिपूर्ण पवित्रता के आदर्श के और भी करीब आने का प्रयास करता है। वह उस सिद्धता को केवल आने वाले पुनरुत्थान में प्राप्त करेगा (1 कुरि 15:42–45), जब सभी चीजें नई हो जाएँगी (प्रका 21:5)।

यह भी देखें आदम (व्यक्ति); मनुष्य; मनुष्यत्व, स्वाभाविक; नया जीवन।

मनुहोतवासी

मनुहोतवासी

शोबाल के माध्यम से यहूदा के वंशज, जिनका उल्लेख केवल 1 इतिहास 2:52 में किया गया है।

यह भी देखें मानहत (स्थान), मानहती।

मने, मने, तकेल, ऊपर्सीन

मने, मने, तकेल, ऊपर्सीन

ये रहस्यमय शब्द हैं जो प्राचीन बाबेल में एक भोज के दौरान एक दीवार पर लिखे हुए दिखाई दिए। इन शब्दों ने बाबेल और उसके राजा के खिलाफ परमेश्वर का न्याय घोषित किया (दानि 5:25)।

राजा बेलशस्सर की दावत

562 ईसा पूर्व में बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर की मृत्यु के लगभग दस साल बाद, बेलशस्सर साम्राज्य का शासक बन गया। दानिय्येल के पांचवें अध्याय में उस बड़े भोज का वर्णन है जो बेलशस्सर ने आयोजित किया था। उन्होंने इस भोज में 1,000 महत्वपूर्ण अधिकारियों और उनकी पत्नियों को आमंत्रित किया।

भोज के दौरान, बेलशस्सर नशे में धुत हो गए और एक गंभीर गलती कर बैठे। उन्होंने अपने नौकरों को आदेश दिया कि वे विशेष सोने और चाँदी के बर्तन लाएँ जो यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर के थे। ये पवित्र वस्तुएं थीं जिन्हें नबूकदनेस्सर ने वर्षों पहले यरूशलेम से लिया था। तब से इन बर्तनों का उपयोग किसी ने नहीं किया था क्योंकि वे केवल परमेश्वर के मन्दिर में आराधना के लिए थे। लेकिन बेलशस्सर ने इन पवित्र बर्तनों को अपने मेहमानों को दे दिया, जिन्होंने उनका उपयोग सच्चे परमेश्वर के बजाय अपने झूठे देवताओं की स्तुति करने के लिए किया (दानि 5:4)।

दीवार पर लिखे शब्द

जब वे पवित्र वस्तुओं का अनादर कर रहे थे, एक पुरुष के हाथ की उंगलियाँ प्रकट हुईं और भोज कक्ष की दीवार पर लिखने लगीं। राजा इससे भयभीत हो गए, और उन्होंने किसी को लेखन का अर्थ बताने के लिए बुलाया। उनके किसी भी ज्ञानी पुरुष को इन शब्दों का अर्थ नहीं पता था। अंत में, रानी ने समस्या का समाधान प्रस्तावित किया। भविष्यद्वक्ता दानिय्येल ऐसे मामलों में एक प्रतिभाशाली पुरुष थे। उन्हें लेखन का अर्थ बताने के लिए बुलाया जा सकता था।

दानिय्येल को राजा के सामने लाया गया। उन्होंने तुरंत राजा को उनके अभिमान और परमेश्वर के प्रति अनादर के लिए फटकार लगाई। दानिय्येल ने एक शक्तिशाली भाषण दिया कि कैसे परमेश्वर उन लोगों का न्याय करते हैं जो अत्यधिक अभिमानी होते हैं (दानि 5:17–23)। यह एक महत्वपूर्ण संदेश था जो परमेश्वर ने रहस्यमय शब्दों के माध्यम से प्रकट किया, जिसे दानिय्येल ने फिर समझाया।

शब्द मूल रूप से अरामी अक्षरों में लिखे गए थे। इन्हें अंग्रेजी अक्षरों में "मने, मने, तकेल, ऊपर्सीन" के रूप में लिखा जा सकता है। (बाइबल के के.जे.वी संस्करण में, अंतिम शब्द "*उफारसिन*" के रूप में दिखाई देता है।) शब्दों का रहस्य केवल भाषा को समझने में नहीं था, बल्कि प्रत्येक शब्द से जुड़े महत्व में भी था। इन शब्दों का मूल अर्थ वजन या मौद्रिक मूल्यों की एक श्रृंखला है। लेकिन उनका सच्चा गहरा अर्थ बाबेल और उसके राजा के खिलाफ परमेश्वर का तत्काल न्याय था।

दानिय्येल संदेश की व्याख्या करते हैं

दीवार पर लिखावट की दानिय्येल द्वारा की गई व्याख्या दानिय्येल 5:26–27 में दर्ज है:

- *मेने*का अर्थ है "दिन गिनकर" यह दो बार आता है, जो यह संकेत देता है कि परमेश्वर ने बेलशस्सर के राज्य के दिनों को गिन लिया है और उसके अंत की भी योजना बनाई है।
- *तेकेल*का अर्थ है "तौला गया।" बेलशस्सर पर लागू होने पर, यह उसके नैतिक और आत्मिक अपर्याप्तता को दर्शाता हैं। वह परमेश्वर की धार्मिकता के मानक के तराजू पर संतुलन बनाने के लिए अपर्याप्त थे।
- अंतिम शब्द, ऊपर्सीन, का अर्थ "टूटा हुआ" या "विभाजित" होता है। दानिय्येल अपनी व्याख्या में इसका एकवचन रूप (*पेरेस*) प्रस्तुत करते हैं। इस विभाजन का मतलब था कि बेलशस्सर का राज्य मादियों और फारसियों के बीच विभाजित होने वाला था। यहाँ शब्दों के खेल का एक संकेत है क्योंकि फारसियों के लिए संज्ञा (*पारस*) लगभग उसी मूल शब्द के समान है जो यहाँ उपयोग किया गया है। दानिय्येल 5:30–31 यह उल्लेख करते हैं कि यह भविष्यद्वाणी के शब्द उसी शाम को पूरे हुए।

*यह भी देखें*दानिय्येल की पुस्तक।

मन्त्र उच्चारण

गीत के रूप में या एक ही लय में पाठ (भजन 8:1; यहेज 32:16)।

देखें संगीत।

मन्दिर

मन्दिर

पूर्वावलोकन

- पृष्ठभूमि
- सुलैमान का मन्दिर
- जरुब्बाबेल का मन्दिर
- हेरोदेस का मन्दिर
- पुराने नियम में मन्दिर का महत्व
- नए नियम में मन्दिर का महत्व

पृष्ठभूमि

दाऊद द्वारा यरूशलेम पर कब्जा (2 शमू 5:6–9) और उसे राष्ट्र की राजधानी घोषित करना इतिहास की सबसे बड़ी सफलताओं में से एक है। यबूसियों द्वारा कब्जा किया गया, यह दाऊद के संयुक्त राज्य के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों के बीच एक तटस्थ क्षेत्र था और राजनीतिक रूप से दोनों के लिए स्वीकार्य था। यरूशलेम को तब सन्दूक की वापसी द्वारा राष्ट्रीय धार्मिक केंद्र के रूप में स्थापित किया गया, जिसे पलिश्तियों द्वारा कब्जा किए जाने के बाद से काफी हद तक उपेक्षित किया गया था (2 शमू 6:1–17)। इसके बाद, दाऊद और यरूशलेम ("सिय्योन पर्वत") दोनों के लिए परमेश्वर की पसंद अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई थी (भजन 78:67–72)।

दाऊद की महान इच्छा इस्राएल के परमेश्वर के लिए एक उपयुक्त निवास स्थान बनाना था। इस विचार को प्रारंभ में भविष्यद्वक्ता नातान द्वारा स्वीकृति मिली (2 शमू 7:1–3), लेकिन परमेश्वर ने उन्हें अन्यथा प्रकट किया, और उन्होंने दाऊद को ईश्वरीय उद्देश्य बताया (वचन 4–17)। एक महत्वपूर्ण शब्दों के खेल में, दाऊद को सूचित किया गया कि, उस अवधि में वह परमेश्वर के लिए एक घर (मन्दिर) नहीं बनाएंगे, परमेश्वर उनके लिए एक घर (राजवंश) बनाएंगे। दाऊद मन्दिर नहीं बना सकते थे क्योंकि उनके शासनकाल के दौरान कई युद्ध हुए थे; मन्दिर उनके पुत्र द्वारा बनाया जाएगा (1 रा 5:3; 1 इति 22:7–8; 28:3)। फिर भी, दाऊद ने उत्साहपूर्वक आवश्यक वित्त और सामग्री का अधिकांश हिस्सा इकट्ठा किया और मन्दिर के लिए नक्शे बनाए (1 इति 22:3–5, 14; 28:2, 11–19)। उन्होंने मन्दिर की भूमि भी खरीदी (21:25)।

सुलैमान का मन्दिर

तारीख

निर्माण सुलैमान के चौथे वर्ष, लगभग 966 ई.पू. में शुरू हुआ, और इसे पूरा होने में सात वर्ष लगे (1 रा 6:1, 38)। मन्दिर के लिए आवश्यक सभी चीजें, जिसमें मजदूर भी शामिल थे, दाऊद द्वारा तैयार की गई थीं (1 इति 28:21)। मन्दिर सुलैमान की निर्माण योजनाओं में सबसे पहले प्राथमिकता पर था, क्योंकि उन्होंने अपना महल बाद में बनाया (1 रा 7:1)।

प्रबंधक और कार्यबल

पीतल साज-सज्जा के लिए मुख्य वास्तुकार हूराम (इब्रानी "हीराम") थे, जिनके पिता सोर के एक धातु कारीगर थे और जिनकी माता एक इस्राएली थीं (1 रा 7:13–14)। मन्दिर के लिए देवदार लबानोन से आया था और इसे सोर के राजा, सुलैमान के सहयोगी, एक अन्य हीराम के कुशल लकड़हारे द्वारा काटा और परिवहन किया गया था (5:5–9)। तीस हजार इस्राएली, जिन्हें तीन समूहों में विभाजित किया गया था, लबानोन में सहायता के लिए नियुक्त किए गए थे। प्रत्येक

समूह तीन में से एक महीने के लिए काम पर थे। पत्थर के काम के लिए, सुलैमान ने इस्राएल में निवास करने वाले 153,600 अन्यजातियों को वाहक, पत्थर काटने वाले और पर्यवेक्षकों का एक आत्मनिर्भर समूह प्रदान करने के लिए नियुक्त किया (वचन 15–17; 2 इति 2:17–18)। संभवतः "गबाली," अपनी विशेष कौशल के साथ, एक और समूह का गठन करते थे (1 रा 5:18)। मन्दिर का निर्माण स्पष्ट रूप से विशाल आकार और प्रयास की एक राष्ट्रीय परियोजना थी। स्थल की पवित्रता को बनाए रखने और शोर को समाप्त करने के लिए, मन्दिर स्थल पर चिनाई और बढ़ईगीरी का काम नहीं किया गया था (6:7)।

विवरण

बाइबल में दिए गए विवरण हमारे लिए मन्दिर का एक उचित रूप से सटीक वर्णन करने के लिए पर्याप्त रूप से स्पष्ट हैं। राजाओं और इतिहास की पुस्तकों में दिए गए विवरणों को यहेजकेल द्वारा मन्दिर के चित्रण से पूरक किया गया है (नीचे देखें), जो बड़े पैमाने पर यरूशलेम मंदिर के बारे में उनके ज्ञान पर आधारित था (यहेज 40–48)।

संभवतः बगल की कोठरियाँ एक नींव या आधार पर स्थित थी जो मन्दिर से अलग थी (1 रा 6:5, 10; पुष्टि करें यहेज 41:8–9) और तीन मंजिलों में व्यवस्थित थे, प्रत्येक साढ़े सात फीट (2.3 मीटर) ऊँचा, जो पूरे भवन के चारों ओर फैला हुआ था, केवल बरामदे को छोड़कर। प्रत्येक अगली मंजिल नीचे की मंजिल से डेढ़ फीट (.5 मीटर) चौड़ी थी, ये आयाम पवित्र स्थान की बगल की दीवार की मोटाई के साथ मेल खाते थे। निचली मंजिल की कोठरियाँ साढ़े सात फीट (2.3 मीटर) चौड़ी थी; पहली मंजिल नौ फीट (2.7 मीटर) थी, और दूसरी साढ़े दस फीट (3.2 मीटर) थी। ऊपरी मंजिलों तक पहुंच संभवतः चक्करदार सीढ़ियों द्वारा थी (1 रा 6:8)। प्रवेश द्वारों के स्थान के बारे में कुछ अनिश्चितता है; हो सकता है कि दोनों तरफ एक हो, लेकिन केवल एक का उल्लेख किया गया है (वचन 8)। यहेजकेल के मन्दिर की तरह (यहेज 40:17, 28), दो सन्निकट आँगन थे, एक भीतरवाले और एक बाहरी (1 रा 6:36; 7:12), लेकिन इनके लिए कोई आयाम नहीं दिए गए हैं। भीतरवाले आँगन, या "याजकों का आँगन," जो स्वयं मन्दिर के पास था, उसे "ऊपरी आँगन" भी कहा जाता था (2 इति 4:9; यिर्म 36:10)। भीतरवाले आँगन की दीवार तीन परतों से तराशे हुए पत्थरों से बनी थी जो देवदार की लट्ठे की एक परत द्वारा एक साथ रखी गई थी (1 रा 6:36), और दोनों आँगनों के किवाड़ पीतल से मढ़े हुए थे (2 इति 4:9)। महल की इमारतें बाहरी आँगन क्षेत्र के भीतर थीं, संभवतः महल और मन्दिर के बीच एक निजी मार्ग था जो बाद में आहाज के शासनकाल के दौरान बंद कर दिया गया था (2 इति 4:9, 12; 2 रा 16:18)।

मन्दिर स्वयं 90 फीट (27.4 मीटर) लंबा, 30 फीट (9.1 मीटर) चौड़ा, और 45 फीट (13.7 मीटर) ऊँचा था (1 रा 6:2), जिसमें एक बरामदा या प्रवेश द्वार 15 फीट (4.6 मीटर) गहरा था जो चौड़ाई में फैला हुआ था। संभवतः प्रवेश द्वार मन्दिर के पूर्वी छोर पर था, इस प्रकार यह यहेजकेल के मन्दिर के अभिविन्यास के साथ मेल खाता था (यहेज 43:1; 44:1)। मुख्य अभयारण्य का बड़ा हिस्सा, बरामदे के बगल में, पवित्र स्थान का निर्माण करता था, जो 60 फीट (18.3 मीटर) लम्बा था (1 रा 6:17)। इसके आगे सबसे भीतरी पवित्रस्थान था, पवित्र पवित्र स्थान (या "परमपवित्र स्थान"), जो 30 फीट (9.1 मीटर) का एक पूर्ण घन था। सभी भीतरी दीवारें देवदार की लकड़ी से बनी थीं, जिन पर फूलों के नमूने, करूब और ताड़ के पेड़ लगे हुए थे, ताकि कोई चिनाई दिखाई न दे। भीतरी और बाहरी दोनों पवित्रस्थानों की दीवारें शुद्ध सोने से "मढ़ी हुई" थीं (वचन 22)। वास्तव में सोने की सजावट को जड़ा गया हो सकता है, इस आधार पर कि सोने की ठोस परत लकड़ी की नक्काशी की प्राकृतिक सुंदरता को खराब कर देगी। फर्श सनोवर की तख्तियों से बनाया था (वचन 15)। तीन-मंजिला बाहरी कक्षों के स्तर से ऊपर दीवारों में ऊँचाई पर सेट संकीर्ण खिड़कियाँ पवित्र स्थान में प्रकाश प्रदान करती थीं (वचन 4)। छत को देवदार की लट्ठे और तख्तियों से सजाया गया था। बाहरी छत के बारे में कोई विवरण नहीं दिया गया है, लेकिन शायद समकालीन तकनीक का उपयोग किया गया था, जिसमें एक लकड़ी का, जालीदार ढांचा था जिसमें एक जलरोधी, चूना पत्थर का प्लास्टर भरा और रोल किया गया था।

बाहरी बरामदा जाहिर तौर पर एक खुली जगह थी, क्योंकि कोई दरवाजे का उल्लेख नहीं है। पवित्र स्थान में प्रवेश दोहरे दरवाजों से होता था, दोनों दरवाजे खुद पर मुड़ने के लिए काज पर लगे होते थे, जो सनोवर के बने होते थे और ठीक उसी तरह सजाए गए थे जैसे भीतरी दीवारें (वचन 34–35)। दरवाजों के चौखट जैतून की लकड़ी के बने थे। पवित्रस्थान के भीतर सोने से मढ़ी हुई देवदार की धूप की वेदी थी; इसे पवित्र स्थान के सामने केंद्रीय रूप से रखा गया था।पवित्र स्थान में परमेश्वर की उपस्थिति की रोटी के लिए एक मेज, दोनों तरफ पाँच -पाँच के दो समूहों में व्यवस्थित दस दीवटें, और याजक कर्तव्यों को बनाए रखने के लिए आवश्यक विभिन्न बर्तन थे (1 रा 7:48–50)। ये सभी सोने से बने या मढ़े हुए थे। दस मेजें, प्रत्येक तरफ पाँच-पाँच व्यवस्थित, संभवतः बर्तनों और सहायक उपकरणों के लिए थीं (2 इति 4:8)।

पवित्र स्थान और परम पवित्र स्थान के बीच जैतून की लकड़ी से बना एक दोहरा दरवाज़ा था, जिन पर करूब, खजूर के पेड़, और फूलों के नमूने उकेरे गए थे और सोने से मढ़ा गया था। इन दरवाजों के अंदर, परम पवित्र स्थान को और भी अधिक ढकते हुए, एक नीला, बैंगनी, और लाल पर्दा था, जो सबसे अच्छे कपड़ों से बना था और करूबों से सजाया गया था (2 इति 3:14)।

परमपवित्र स्थान में दो करूब थे, प्रत्येक 15 फीट (4.6 मीटर) ऊँचे और जैतून की लकड़ी से मढ़ा था, जिन पर सोने की परत

चढ़ी थी (1 रा 6:23–28)। प्रत्येक पंख साढ़े सात फीट (2.3 मीटर) मापा गया। प्रत्येक का एक पंख बगल की दीवारों को छूता था; दूसरे पंख कमरे के केंद्र में मिलते थे। तम्बू में ईश्वरीय सिंहासन काफी कम प्रभावशाली था, जहां प्रत्येक करूब का एक पंख सन्दूक के ऊपर दया आसन में जुड़ा हुआ था (निर्ग 25:17–22)। सुलैमान के मन्दिर में, वाचा का सन्दूक आगे की ओर देख रहे करूबों के नीचे रखा गया था, जो प्रतीकात्मक रक्षक थे। सन्दूक, जो मूसा के तम्बू से बचा हुआ एकमात्र प्रमुख वस्तु था, अभी भी व्यवस्था की पटियाओं को समाहित करता था, लेकिन मन्ना का बर्तन और हारून की छड़ी गायब थे (1 रा 8:9)।

मन्दिर के ठीक बाहर और डेवढ़ी के दोनों ओर दो खोखले पीतल के खम्भे थे (1 रा 7:15–20; 2 इति 3:15–17)। राजाओं की पुस्तक के अनुसार, ये खम्भे 27 फीट (8.2 मीटर) ऊंचे थे, जिनकी परिधि 18 फीट (5.5 मीटर) थी। धातु स्वयं लगभग चार इंच (10.2 सेंटीमीटर) मोटी थी। खम्भों के ऊपर पीतल के, लिली के आकार के शीर्ष थे जो साढ़े सात फीट (2.3 मीटर) ऊंचे और छह फीट (1.8 मीटर) चौड़े थे, जो जंजीर की जाली से जटिल रूप से सुसज्जित थे जो अनार की दो पंक्तियों का समर्थन करते थे। कुल वजन बहुत अधिक रहा होगा, और उनके आकार की पुष्टि यिर्मयाह द्वारा की गई है, जो बताते हैं कि बाबेली को उन्हें बाबेल ले जाने से पहले टुकड़ों में तोड़ना पड़ा था (यिर्म 52:17, 21–23)।

बरामदे के सामने बलिदान की पीतल वेदी का उल्लेख 1 रा 7 की विशिष्टताओं में सूचीबद्ध नहीं है। हालांकि, इसका उल्लेख मन्दिर स्थापना और बाद (1 रा 8:22, 54, 64; 9:25) में किया गया है और यह स्पष्ट रूप से भीतरी आँगन में स्थित थी। इसके आयाम 30 फीट (9.1 मीटर) वर्ग और 15 फीट (4.6 मीटर) ऊंचे थे (2 इति 4:1)। इसके वजन को देखते हुए, इसे संभवतः यरदन की तराई में सुलैमान की ढलाईघर भागों में ढाला गया था (वचन 17–18) और फिर संयोजन के लिए मन्दिर स्थल पर ले जाया गया था।

शायद भीतरी आँगन में सबसे आकर्षक वस्तु "पिघला हुआ (पीतल) हौज" था, जो पीतल का बना एक विशाल, गोल हौज था, जिसकी मोटाई 3 इंच (8 सेंटीमीटर), ऊंचाई 7½ फीट (2.3 मीटर), और व्यास 15 फीट (4.6 मीटर) था (1 रा 7:23–26)। इसका किनारा एक सोसन की तरह फैला हुआ था (2 इति 4:2–5)। हौद को 12 पीतल बैलों पर रखा गया था, प्रत्येक तरफ चार, और इसके किनारे के नीचे दो पंक्तियों में सजावट थी, संभवतः हौदियाँ या अनार। इसकी क्षमता 10,000 से 12,000 गैलन (37,850–45,420 लीटर) के बीच थी। पीतल हौदी का उपयोग याजकों के शुद्धिकरण के लिए किया जाता था (वचन 6)। संभवतः इसमें किसी प्रकार का मंच शामिल था, क्योंकि इस विशाल हौद का किनारा जमीन के स्तर से लगभग 15 फीट (4.6 मीटर) ऊपर होता।

हीराम ने दस बड़े हौद भी बनवाए, जिन्हें चलते-फिरते ढांचों पर रखा गया और भीतरी आँगन के उत्तर और दक्षिण पक्षों में पाँच-पाँच के दो समूहों में रखा गया (1 रा 7:27–39)। मूल रूप से ढांचे पीतल के सन्दूक थे, जो छह फीट (1.8 मीटर) चौड़े और साढ़े चार फीट (1.4 मीटर) ऊंचे थे, और शीर्ष किनारे के चारों ओर नौ इंच (22.9 सेंटीमीटर) का रिम था। प्रत्येक कोने को मजबूती से लगे खंभों से जोड़ा गया था, जिनसे धुरे जुड़े हुए थे। चार तीलियों वाले पहिये 27 इंच (68.6 सेंटीमीटर) ऊंचे थे। प्रत्येक ढांचे में लगभग 220 गैलन (832.7 लीटर) पानी से भरा एक हौदी लगी हुई थी, जिसका उपयोग बलि के पशुओं को धोने के लिए किया जाता था (2 इति 4:6)। संभवतः प्रत्येक दस मेज़ों में से एक के बगल में था, जिनका उपयोग बलिदानों की खाल उतारने और उन्हें तैयार करने के लिए किया जाता था (वचन 8)। कटोरों, फावड़ियों और हौदियों जैसी अतिरिक्त वस्तुएँ, जो सभी पीतल से बनी थीं, का भी निर्माण किया गया (1 रा 7:40, 45)।

समर्पण

मन्दिर के पूरा होने और इसके प्रतिष्ठा के बीच ग्यारह महीने बीत गए (1 रा 6:38; 8:2), इस दौरान प्रमुख वस्त्रों और सामान को स्थापित किया गया। प्रतिष्ठा स्वयं सातवें महीने में हुई, संभवतः झोपड़ियों के पर्व और प्रायश्चित के दिन के सम्बन्ध में (लैव्य 23:23–36)। वाचा का सन्दूक अपने अन्तिम विश्राम स्थान पर लाया गया (1 रा 8:3–4), लेकिन भीतरी आँगन बलिदान किए गए विशाल संख्या के पशुओं के लिए अपर्याप्त साबित हुआ (1 रा 8:62–64; 2 इति 7:7)।

मन्दिर ने उस युग की सबसे उन्नत निर्माण तकनीकों का उपयोग किया था, और निर्माण, सजावट, या उपकरण में कोई खर्च नहीं बचाया गया था। फिर भी सुलैमान ने इसे अनन्त परमेश्वर को समर्पित करने में इसकी पूर्ण अपर्याप्तता को सहजता से स्वीकार किया (1 रा 8:27)। उनकी प्रार्थना ने इस्राएल की यहोवा को त्यागने की प्रवृत्ति को भी इंगित किया, राष्ट्र की तुलना परमेश्वर से की, जो एक न्यायप्रिय न्यायाधीश होने के बावजूद दयालु और विश्वासयोग्य भी थे। कार्यवाही का उत्कर्ष तब आया जब स्वर्ग से आग ने बलिदानों को भस्म कर दिया और यहोवा के तेज ने मन्दिर को भर दिया (2 इति 7:1–3)।

बाद का इतिहास

ज्यादातर प्राचीन मन्दिरों की तरह, यह मन्दिर राष्ट्रीय धन का भण्डार बन गया और इस कारण से अक्सर हमलों का निशाना बना। मिस्र के शीशक ने सुलैमान की मृत्यु के पाँच वर्षों के भीतर इसे लूट लिया (1 रा 14:25–38)। इसके तुरंत बाद, राजा आसा (910–869 ई.पू.) ने अपने उत्पीड़क बाशा (908–886 ई.पू.), इस्राएल के राजा, के खिलाफ सीरियाई मदद खरीदने के लिए इसके सोने और चांदी के खजाने को समाप्त कर दिया (15:16–19)। यहूदा के राजा योआश

(835–796 ई.पू.), जो अपनी युवावस्था में क्रूर अतल्याह से मन्दिर में छिपा हुआ था (2 रा 11), याजकों द्वारा भेंट की धोखाघड़ी के विरोध के बाद इसकी मरम्मत का प्रावधान किया (12:4–16)। लेकिन महायाजक यहोयादा की मृत्यु के बाद, योआश पर उनके कुलीनों का प्रतिकूल प्रभाव पड़ा (2 इति 24:15–19)। अपने धर्मत्याग के लिए दण्ड के रूप में, यहोवा ने सीरियाई लोगों को हमला करने की अनुमति दी, और योआश ने उन्हें खरीदने के लिए मन्दिर के भण्डारों का उपयोग किया (2 रा 12:17–18)। प्रतिस्थापन के लिए शायद ही प्रावधान किया गया था, जब इस्राएल के यहोआश (798–782 ई.पू.) ने यहूदा के अमस्याह (796–767 ईसा पूर्व) के अहंकारी अभिमान को चूर-चूर कर दिया, फिर से मन्दिर को छीन लिया (14:8–14)। बाद में, राजा आहाज (735–715 ई.पू.) ने अश्शूरियों से समर्थन प्राप्त करने के लिए मन्दिर के शेष संसाधनों का उपयोग किया (16:7–9), हालांकि अंततः वह पूरी तरह से उनके अधीन हो गया।

फिर हिजकिय्याह (715–686 ई.पू.), जो महान सुधारक राजाओं में से एक थे, ने मन्दिर का पूरी तरह से नवीनीकरण किया और उपासना को बहाल किया जब यह आहाज के अंतिम वर्षों के दौरान उपेक्षित हो गया था (2 इति 29:1–19; 31:9–21)। हालांकि, मनश्शे (696–642 ई.पू.) ने अपने पिता की नीति को पूरी तरह से उलट दिया, और कनानी और मेसोपोटामियाई उपासना की प्रथाओं को मन्दिर में ले आया (2 रा 21:3–7)। उनका परिवर्तन अनुभव, जो शायद उनके शासनकाल के अन्त में हुआ और जिसके परिणामस्वरूप मन्दिर में कुछ सुधार उपाय किए गए (2 इति 33:12–19), इस अन्तिम निर्णय से बचने के लिए पर्याप्त व्यापक नहीं था कि उनका शासनकाल यहूदा के लिए काला धब्बा था (2 रा 21:10–16)।

मनश्शे के पोते योशियाह (640–609 ई.पू.), दूसरे महान सुधारक राजा थे। उन्होंने 622 ई.पू. में मन्दिर की मरम्मत का आयोजन किया, जिसके दौरान व्यवस्था की खोई हुई पुस्तक (लगभग निश्चित रूप से व्यवस्थाविवरण की पुस्तक) की खोज की गई (2 रा 22:3–13)। इसके परिणामस्वरूप, योशिय्याह के सुधार को एक नया आयाम और तात्कालिकता की भावना मिली (22:14–23:3)। सुधार में मन्दिर से सभी मूर्तिपूजक तत्वों की पूरी तरह से सफाई (23:4–12) और पारंपरिक पर्वों की बहाली शामिल थी। दुख की बात है कि, योशिय्याह के साथ ही उनका सुधार भी समाप्त हो गया, और यहोयाकीम (609–598 ई.पू.) के शासन में यहूदा का पतन जारी रहा। संभवतः इसी समय यिर्मयाह ने अपने प्रसिद्ध मन्दिर उपदेश का प्रचार किया जिसमें इसके विनाश की भविष्यद्वाणी की गई थी (यिर्म 7:1–8:3; 26:1–19), जिसने उन्हें धर्म के अगुवों से अलग कर दिया। यहोयाकीम के अधर्म के बाद नबूकदनेस्सर के प्रतिशोधी हमले में 601 ई.पू. (2 रा 24:1–4), यरूशलेम पर कब्जा कर लिया गया (596 ई.पू.) और मन्दिर के कई भण्डार बाबेल ले जाए गए (2 इति 36:7)। ऐसा प्रतीत होता है कि मन्दिर स्वयं क्षतिग्रस्त होने से बच गया, लेकिन जब यहूदा ने फिर से सिदकिय्याह (597–586 ई.पू.) के अधीन विद्रोह किया, तो मन्दिर को ध्वस्त कर दिया गया (2 रा 25:8–10)। मन्दिर का बचा हुआ खजाना भी ले लिया गया।

जरुब्बाबेल का मन्दिर

निर्माण

हालांकि मन्दिर नष्ट हो गया था, बन्धुवाई के दौरान यह स्थल अभी भी धार्मिक यात्रा का स्थान बना रहा (यिर्म 41:4–5)। 538 ई.पू. में फारसी राजा, कुस्रू, जो पहले के साम्राज्यों की नीति के विपरीत एक उदार नीति का पालन कर रहे थे, ने यहूदियों को बन्धुवाई से लौटने की अनुमति दी। और उन्होंने मन्दिर के पुनर्निर्माण को अधिकृत किया, इसे फारसी भण्डार से वित्तपोषित किया।

एज्रा की पुस्तक में, प्राधिकरण की आज्ञा दो रूपों में संरक्षित है: सामान्य घोषणा (एज्रा 1:2–4) और राष्ट्रीय अभिलेखागार में एक अधिक गद्यात्मक ज्ञापन जिसमें मुख्य मन्दिर विनिर्देश और वाचा की गई फारसी सहायता की मात्रा का उल्लेख है (6:1–5)। संभवत: केवल अल्पसंख्यक यहूदियों ने अपने उजाड़ मातृभूमि की लंबी यात्रा के खतरों के लिए मेसोपोटामिया की सापेक्ष आरामदायक स्थिति को छोड़ने का विकल्प चुना। एज्रा की पुस्तक के अनुसार, 42,360 समर्पित व्यक्तियों और उनके सेवकों (2:64–65) ने शेशबस्सर (1:8–11; 5:14–16) और जरूब्बाबेल (2:2; 3:2, 8; 4:2) के अगुवाई में प्रतिक्रिया दी। बड़े उत्साह के साथ, मन्दिर स्थल पर वेदी का पुनर्निर्माण किया गया और आराधना के पारंपरिक तरीके को फिर से स्थापित किया गया (3:1–6)। फारस से अनुदान का उपयोग करते हुए और अपनी स्वयं की स्वेच्छा से दिए गए भेंट का उपयोग करते हुए (2:68–69; 3:7), यहूदियों ने दूसरे मन्दिर की योजना बनाना और उसकी नींव रखना शुरू किया (3:7–13)। स्थानीय विरोध (4:1–4, 24), स्वार्थी व्यस्तता, और फसल की विफलताओं (हाग 1:2–11) के परिणामस्वरूप प्रारंभिक प्रेरणा जल्दी ही मर गई। 520 ई.पू. में (एज्रा 4:24; हाग 1:1; जक 1:1), भविष्यद्वक्ता हाग्गै और जकर्याह से प्रेरित होकर, जरुब्बाबेल और महायाजक यहोशू के अगुवाई में यहूदियों ने पुनर्निर्माण शुरू किया। यदि प्रत्यक्ष विरोध नहीं तो आधिकारिक सन्देह के बावजूद काम जारी रहा, और मन्दिर 515 ईसा पूर्व में पूरा हुआ और समर्पित किया गया (एज्रा 5:1–6:22)।

जरुब्बाबेल के मन्दिर की भौतिक विशेषताओं के बारे में बहुत कम जानकारी है। यह अनुमान कि यह सुलैमान के मन्दिर (हाग 2:3) से बहुत हीन था, शायद निर्माण कार्य के प्रारंभिक चरण से सम्बन्धित है। वास्तव में, दूसरा मन्दिर 500 से अधिक वर्षों तक खड़ा रहा। एज्रा 6:3 में उल्लिखित आयाम अधूरे हैं; नया मन्दिर निस्संदेह अपने पूर्ववर्ती के समान आकार का था

और शायद उसी नींव पर बनाया गया था। निर्माण तकनीक मूल विधि का पालन करती प्रतीत होती है, जिसमें लकड़ी की परतें चिनाई के खंडों के लिए एक ढांचा प्रदान करती हैं (वचन 4)। स्पष्ट रूप से वहाँ, सहायक आवास था, संभवतः सुलैमान के मन्दिर के बगल की कोठरियाँ की तरह (एज्रा 8:29; नहे 12:44; 13:4–5)। यदि फारसी सहायता वादे के अनुसार प्राप्त हुई थी (एज्रा 6:8–12), तो दूसरा मन्दिर आमतौर पर कल्पना की तुलना में अधिक शानदार और ठोस संरचना थी।

बाद का इतिहास

अप्रमाणिक ग्रन्थ, स्यूडोएपिग्राफा, रब्बी लेखन, और इतिहासकार जोसेफस में कई संदर्भ मन्दिर के इतिहास को उजागर करने में मदद करते हैं इसकी संरचना और साजों पर अधिक विवरण देते हैं। जोसेफस,अबडेरा के हेकेटियस (चौथी शताब्दी ई.पू.) से उद्धृत करते हुए, कहते हैं कि मन्दिर एक बड़े भवन में था, जो लगभग 500 फीट बाय 150 फीट (152.4 मीटर बाय 45.7 मीटर) के घेरे में था, जो पत्थर की दीवार से घिरा हुआ था, और इसमें एक बिना तराशे पत्थरों की वेदी थी, जो सुलैमान की पीतल वेदी के समान आकार की थी(पुष्टि करें 2 इति 4:1)। पवित्र स्थान के भीतर एक सोने की वेदी और एक दीवट थी, जिसकी लौ लगातार जलती रहती थी। जोसेफस ने यह भी उल्लेख किया है कि एंटिओकस III (223–187 ई.पू.) ने मन्दिर को आर्थिक सहायता दी थी जब सेल्युसिड ने यरूशलेम के स्वामी के रूप में ष्टोलेमियों को विस्थापित किया था।

दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में, बेन सिराख़ ने मंदिर क्षेत्र को मजबूत करने और मरम्मत करने में उनके काम के लिए महायाजक ओनियास के बेटे साइमन की सराहना की। प्रथम मक्काबी ऐन्टायकस IV इपिफेनज़ (175–164 ई.पू.) के तहत सताव के दौरान मन्दिर के नियति के बारे में मूल्यवान साक्ष्य प्रदान करता है। मक्काबी की किताबें होमबलि की वेदी की अपवित्रता (1 मक्क 1:54) और स्वर्ण दीवट, धूप की वेदी, भेंट की मेज, परदा, और अन्य भण्डारों की लूटपाट का वर्णन करती हैं (2 मक्क 5:15–16; 6:2–4)। जब मन्दिर को पुनः प्राप्त और बहाल किया गया, तो विजयी मक्काबी ने सेल्युसिड द्वारा लिए गए वस्तुओं को बदल दिया, सिवाय बलि की वेदी के, जिसे इतना प्रदूषित माना गया कि इसे तोड़कर बिना तराशे पत्थरों से एक नई वेदी बनाई गई (1 मक्क 4:36–61; 2 मक्क 10:1–9)। स्पष्ट रूप से मन्दिर क्षेत्र का उपयोग एक किले के रूप में किया गया था, दोनों मक्काबी काल में यरूशलेम में बनाए गए सेल्युसिड गैरीसन के विरोध में और बाद के हस्मोनियन काल के संघर्षों में। जब लगभग 63 ई.पू. में पोम्पे ने यरूशलेम पर कब्जा कर लिया, तो उसने मन्दिर में प्रवेश किया ताकि अपनी सत्ता स्थापित कर सके लेकिन कोई लूटपाट नहीं की, इस प्रकार उसने इसका सम्मान दिखाया।

जब हेरोदेस ने 37 ई.पू. में रोमी सहायता से यरूशलेम पर नियंत्रण प्राप्त किया और इसे किसी बड़े नुकसान से बचाया, तब जरुब्बाबेल के मन्दिर का इतिहास समाप्त हो गया। 21 ई.पू. के आसपास, हेरोदेस ने अपने भव्य मन्दिर के निर्माण की तैयारी में इसे तोड़ना शुरू किया।

हेरोदेस का मन्दिर

नए नियम में 100 से अधिक संदर्भों के अलावा, हेरोदेस के मन्दिर के बारे में हमारी मुख्य जानकारी के स्रोत यहूदी इतिहासकार जोसेफस और मिद्दोथ (यहूदी रब्बी लेखनों का एक हिस्सा) से आते हैं। दोनों के बीच विवरण में काफी अन्तर हैं, जो पुनर्निर्माण के प्रयास में किसी भी कट्टरपंथी व्याख्या को खारिज करता है। चूंकि जोसेफस मन्दिर के समकालीन थे (उनका जन्म लगभग 37 ई.पू. में हुआ था और उनकी मृत्यु दूसरी शताब्दी की शुरुआत में हुई थी), वह संभवतः मिद्दोथ की तुलना में अधिक विश्वसनीय हैं, जो लगभग 150 ई.पू. से है और कभी-कभी अतिशयोक्ति करता प्रतीत होता है। पुरातात्विक अनुसंधान बाहरी दीवारों और द्वारों की स्थिति निर्धारित करने में सहायक रहा है।

अपने मन्दिर के निर्माण में हेरोदेस का उद्देश्य धार्मिक के बजाय राजनीतिक था। एक इदुमी के रूप में, वह सुलैमान के समान भव्य मन्दिर का निर्माण करके अपनी यहूदी प्रजा को संतुष्ट करना चाहता था। इस स्थल के अपवित्र होने या मौजूदा मन्दिर के ध्वस्त होने और फिर कभी न बनने की संभावनाओं को 1,000 याजकों को राजमिस्त्री के रूप में प्रशिक्षित करके और काम शुरू होने से पहले सामग्री इकट्ठा करके दूर किया गया। हेरोदेस का मन्दिर अपने पूर्ववर्तियों की त्रिपक्षीय योजना का पालन करता था, हालांकि इसका बरामदा बहुत बड़ा था। इसे समकालीन यूनानी-रोमी वास्तुकला शैली में बनाया गया था और इसलिए इसे जरूब्बाबेल के मन्दिर से अलग माना जाना चाहिए। काम 20 ई.पू. में शुरू हुआ, और जबकि मुख्य मन्दिर जल्दी से खड़ा किया गया (यह दस वर्षों के भीतर पूरी तरह से संचालन में था), कुल परियोजना 64 ईस्वी तक पूरी नहीं हुई थी, केवल छः वर्ष पहले इसे रोमियों द्वारा नष्ट कर दिया गया था।

हेरोदेस ने पहले उत्तर से दक्षिण तक लगभग 500 गज (457.2 मीटर) और पूर्व से पश्चिम तक लगभग 325 गज (297.2 मीटर) क्षेत्र को साफ और समतल करके स्थल तैयार किया। इसमें कुछ क्षेत्रों में चट्टानों के हिस्सों को काटना और अन्य क्षेत्रों में मलबे से भरना शामिल था। पत्थर के खंडों पर निर्मित घेरने वाली दीवार के महत्वपूर्ण हिस्से, जिनकी औसत लंबाई लगभग 15 फीट (4.6 मीटर) और ऊंचाई 4 फीट (1.2 मीटर) थी, अभी भी बचे हुए हैं। दक्षिण दीवार के कोनों में कुछ पत्थरों का वजन 70 टन (63.5 मीट्रिक टन) तक है।

ऐसा प्रतीत होता है कि पवित्र स्थान सुलैमान के मन्दिर के समान आयामों पर आधारित है। इसे पवित्र स्थान में विभाजित किया गया था, जो 60 फीट (18.3 मीटर) लंबा, 30 फीट (9.1

मीटर) चौड़ा और 60 फीट ऊँचा था, और अति पवित्रस्थान, जो 30 फीट वर्गाकार था। अति पवित्रस्थान के भीतर कोई समान नहीं था, जिसे पवित्र स्थान से एक परदे द्वारा अलग किया गया था। पवित्रस्थान में सात शाखाओं वाला दीवट, भेंट की रोटी के लिए मेज़ और धूप की वेदी थी। सुलैमान के मन्दिर से मुख्य अंतर प्रभावशाली बरामदा था, जो 150 फीट (45.7 मीटर) चौड़ा और ऊँचा था। बाहर एक दरवाजा था जो लगभग 30 फीट (9.1 मीटर) चौड़ा और 40 फीट (12.2 मीटर) ऊँचा था, जिसमें एक आंतरिक दरवाजा था जो पवित्रस्थान में जाने के लिए लगभग आधा आकार का था। अति पवित्रस्थान और पवित्र स्थान के ऊपर खाली कमरे होने के कारण, 150 फीट (45.7 मीटर) की एक समान छत की ऊँचाई थी। छत पर सोने की कीलें पक्षियों को बैठने और संरचना को अपवित्र करने से रोकती थीं। अपने पूर्ववर्तियों की तरह, मन्दिर पूर्व की ओर उन्मुख था और अन्य पक्षों पर तीन मंजिलों के कोठरियों से घिरा हुआ था, जो 60 फीट (18.3 मीटर) की ऊँचाई तक उठते थे। निर्माण में उपयोग किया गया पत्थर स्थानीय सफेद पत्थर था, जिसे बड़े-बड़े खंडों में काटकर अच्छी तरह से चमकाया गया था।

याजकों के आँगन से बरामदे तक पहुंचने के लिए 12 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती थीं। बरामदे के सामने और 33 फीट (10.1 मीटर) दूर बलिदान की वेदी थी। बिना तराशे पत्थर से बनी, यह एक बहुस्तरीय निर्माण था जो 15 फीट (4.6 मीटर) ऊंचा और अपने आधार पर लगभग 48 फीट (14.6 मीटर) चौकोर था। पुरुष इस्राएलियों को इस क्षेत्र में वर्ष में एक बार, झोपड़ियों के पर्व के दौरान, बलिदान की वेदी के चारों ओर घूमने की अनुमति थी। अन्यथा, उन्हें इस्राएल के आँगन तक ही सीमित रखा गया था। इस्राएल के आँगन के पूर्व में, और 15 सीढ़ियाँ की दूरी पर और कुरिन्थ पीतल से बने सुन्दर महान द्वार से अलग होकर, स्त्रियों का आँगन था। यहाँ मन्दिर के खर्चों के लिए भेंट की पेटियाँ रखी जाती थीं (मर 12:41–44)। अगला आँगन बड़ा, निचला, बाहरी अन्यजाती का आँगन था, जो भीतरी आँगनों को घेरता था और एक रेलिंग और चेतावनी सूचनाओं की एक श्रृंखला द्वारा अलग किया गया था।। इनमें से दो को खुदाई में पाया गया है, जो लैटिन और यूनानी में लिखे गए हैं और अन्यजाती को भीतरी क्षेत्रों में प्रवेश करने से मना करते हैं, मृत्यु के दण्ड पर। इस बाहरी आँगन का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था। इसकी दीवारों के ठीक अंदर एक बरामदा था, जो दक्षिण की ओर लगभग 40 फीट (12.2 मीटर) ऊंचे चार पंक्तियों के स्तंभों द्वारा समर्थित था (रॉयल पोर्च), और अन्य पक्षों पर दो पंक्तियों द्वारा, पूर्वी बरामदा जिसे "सुलैमान का बरामदा" या "सुलैमान के ओसारा" कहा जाता था। यहां मुद्रा परिवर्तकों और व्यापारियों के ठेले लगाए गए थे, जहां महासभा मिलती थी, और जहां मसीह और शास्त्री शिक्षा देते और वाद-विवाद करते थे (मर 11:27; लूका 2:46; 19:47; यूह 10:23)। यहां भी, बाल कलीसिया शत्रुतापूर्ण यहूदी धर्म द्वारा अस्वीकार किए जाने से पहले मिली थी (प्रेरितों के काम 3:11; 5:12)। मन्दिर परिसर के उत्तर-पश्चिम में ऐन्टोनिया का किला था, जहां रोमी राज्यपाल यरूशलेम में रहते समय निवास करते थे, और जहां एक रोमी सेना गड़बड़ी से निपटने के लिए तैनात थी (प्रेरितों के काम 21:31–40)। मन्दिर क्षेत्र को देखते हुए, यह एक विस्तृत खाई से अलग हो गया था। महायाजक के वस्त्र किले में रोमी अधिकार के प्रतीक के रूप में संग्रहीत थे। अन्यजातियों के आँगन तक पहुंच पश्चिमी दीवार में चार द्वारों द्वारा थी; दक्षिणी दीवार में दो, जहां जमीन घाटी में गहराई तक गिरी थी, एक स्थल जिसे अक्सर मन्दिर की चोटी के रूप में पहचाना जाता है (मत्ती 4:5; लूका 4:9); और पूर्व और उत्तर की दीवारों में एक द्वार।

पुराने नियम में मन्दिर का महत्व

यरूशलेम में मन्दिर जनजातीय संघ का केंद्र बिंदु था। उत्तरी राज्य के पहले राजा, यारोबाम प्रथम के, बेतेल और दान में मन्दिर स्थापित करके यरूशलेम से ध्यान हटाने के प्रयास के बावजूद (1 रा 12:26–30), यरूशलेम ने कभी अपनी प्रमुखता नहीं खोई। स्वाभाविक रूप से, हिजकिय्याह और योशिय्याह दोनों ने अपने सुधार को उत्तरी जनजातियों के क्षेत्र में विस्तारित करने की कोशिश की (2 इति 30:1–12; 34:6–7), और यरूशलेम उन क्षेत्रों के लिए एक तीर्थ केंद्र था यहां तक कि इसके विनाश के बाद भी (यिर्म 41:5)। भविष्यद्वक्ताओं ने इसे सार्वभौमिक उपासना के केंद्र बिंदु के रूप में भविष्यद्वाणी की (यशा 2:1–4)। ----

मन्दिर परमेश्वर का निवास स्थान था जो उनके लोगों के बीच था। परमेश्वर की उपस्थिति, जो शेकेनाह महिमा और बादल के स्तम्भ में प्रतीकात्मक थी, मिलन के तम्बू (निर्ग 33:9–11), तम्बू (40:34–38), और अंततः मन्दिर (1 रा 8:10–11) से जुड़ी थी। विरोधाभास यह है कि जबकि परमेश्वर पूरी तरह से अप्रतिबंधित हैं, मन्दिर को परमेश्वर के हमेशा के लिए रहने का स्थान माना जाता था (वचन 13, 27)। परमेश्वर ने सिय्योन को चुना था, जैसे उन्होंने दाऊद को चुना था (भज 68:15–18; 76:2; 78:67–72), इसलिए मन्दिर को परमेश्वर का भवन माना जाता था (27:4; 42:4; 84:1–4)।

यहेजकेल का मन्दिर

यहेजकेल का आदर्श मन्दिर का विस्तृत वर्णन (यहेज 40–48) जरूब्बाबेल के मन्दिर के लिए नींव के रूप में उपयोग नहीं किया गया था। वास्तव में, चूंकि यहेजकेल 597 ई.पू. में निर्वासन से पहले सुलैमान के मन्दिर से परिचित होना चाहिए, उनका वर्णन पहले मन्दिर के अनिश्चित विवरणों को निर्धारित करने में अधिक सहायक है। यहेजकेल की चिंता शुद्ध उपासना की प्रकृति को दिखाने की थी, जो सभी प्रदूषण से सुरक्षित हो। यह उपासना परमेश्वर की महिमा को, जो भ्रष्ट सुलैमान के मन्दिर से चली गई थी (9:3; 10:4, 18–19: 11:22–23), को वापस आने की अनुमति देगी ताकि यरूशलेम को फिर से "यहोवा शाम्मा" नाम दिया जा सके

(43:1–5; 48:35)। यह विचार, यहेजकेल की महत्वपूर्ण अवधारणा के साथ जुड़ा हुआ है कि परमेश्वर की आत्मा उनके विश्वासयोग्य उपासकों में निवास करती है (36:24–28), विश्वासियों के परमेश्वर का मन्दिर बनने की नए नियम शिक्षा की भविष्यवाणी करता है।

नए नियम में मन्दिर का महत्व

मसीह और मन्दिर

मसीह ने मन्दिर के प्रति काफी सम्मान दिखाया। जब वह 12 वर्ष के थे, तो उन्होंने इसके बरामदों में रब्बीनिक चर्चाओं में भाग लिया और इसे अपने पिता का घर बताया (लूका 2:41–50)। उनके लिए "परमेश्वर का घर" परमेश्वर द्वारा निवासित था (मत्ती 12:4; 23:21)। हालांकि उन्होंने इसे दो बार धार्मिक क्रोध में इसे शुद्ध किया (मत्ती 21:12–13; यूह 2:13–16), उन्होंने शहर और मन्दिर के आसन्न विनाश पर रोया (लूका 19:41–44)। उन्होंने अक्सर वहां शिक्षा दी, लेकिन वह "मन्दिर से भी महान" थे (मत्ती 12:6)। जब यरूशलेम में भविष्यवाणी किए गए मसीह के रूप में उनकी प्रस्तुति को अस्वीकार कर दिया गया, तो चमत्कारों के बावजूद, उन्होंने इसके अनिवार्य विनाश की भविष्यवाणी की (मत्ती 21:9–15; 24:1–2)। पिन्तेकुस्त के बाद थोड़े समय के लिए, प्रारंभिक कलीसिया ने मन्दिर का उपयोग अपनी बैठक स्थल के रूप में किया, जब तक कि बढ़ते विरोध ने विश्वासियों को यरूशलेम से बाहर नहीं कर दिया (प्रेरितों के काम 5:12, 21, 42; 8:1)।

मन्दिर के रूप में कलीसिया

नए नियम लेखकों ने मन्दिर का वर्णन करने के लिए दो अलग-अलग यूनानी शब्दों का उपयोग किया: नाओस और हीरोन. नाओस मन्दिर के वास्तविक पवित्र स्थान, परमेश्वर के निवास स्थान को सन्दर्भित करता है। हीरोन मन्दिर के आँगन के साथ-साथ पवित्र स्थान को भी सन्दर्भित करता है। सामान्य रूप से, नाओस का उपयोग मन्दिर के भीतरी भाग को नामित करने के लिए किया जाता था जिसे पवित्र स्थान और परम पवित्र स्थान के रूप में जाना जाता है, जबकि हीरोन में बाहरी आँगन और मन्दिर का मुख्य भाग शामिल होता था।

पौलुस के पत्रों में शब्द नाओस छः बार आता है (1 कुरि 3:16–17; 6:19; 2 कुरि 6:16; इफि 2:21; 2 थिस्स 2:4) और हीरोन एक बार (1 कुरि 9:13)। इन वचनों में पौलुस ऊपर उल्लिखित परिभाषा का अन्तर बनाए रखते हैं। जब वास्तविक भौतिक मन्दिर की बात करते हैं, तो उन्होंने हीरोन शब्द का उपयोग किया, जो उस स्थान को इंगित करता है जहां याजक वेदी पर पशु बलि चढ़ाते थे (1 कुरि 9:13), जो बाहरी आँगन में स्थित था (देखें निर्ग 27–29, 40। और जब पौलुस ने अधर्मी के द्वारा मन्दिर में परमेश्वर के स्थान को हड़पने के अधर्म कार्य का उल्लेख किया, तो उन्होंने नाओस शब्द का उपयोग किया—जो देवता की उपस्थिति के स्थान को निर्दिष्ट करता है (2 थिस्स 2:4)।

सभी अन्य पौलुस लेखों में, नाओस का उपयोग रूपक रूप में किया गया है—दिव्य आत्मा के लिए एक मानव निवास को चित्रित करने के लिए। एक उदाहरण में पवित्र स्थल की छवि का उपयोग व्यक्तिगत विश्वासियों के शरीर का वर्णन करने के लिए किया गया है (1 कुरि 6:19); अन्य सभी उदाहरणों में, पवित्र स्थल की छवि मसीह के शरीर,, कलीसिया को चित्रित करता है (1 कुरि 3:16–17; 2 कुरि 6:16; इफि 2:21)। गलती से, कई पाठक सोचते हैं कि 1 कुरिन्थियों 3:16–17 व्यक्तिगत के बारे में बोलता है, लेकिन यूनानी पाठ के अनुसार, यह निर्विवाद रूप से स्पष्ट है कि पौलुस सामूहिक कलीसिया (विशेष रूप से, कुरिन्थ में कलीसिया) के बारे में बोल रहे थे।

जब पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया से कहा कि यह परमेश्वर का पवित्रस्थान है, तो उन्होंने अपने मूर्तिपूजक मन्दिरों के ज्ञान से इस छवि को समझा होगा। लेकिन पौलुस के मन में शायद यरूशलेम का एकमात्र मन्दिर था। अन्यजातियों के पास एक शहर में कई मन्दिरों के साथ कई देवता थे; यहूदियों के पास पूरे इस्राएल में केवल एक मन्दिर के साथ एक ही परमेश्वर था। इससे इस्राएलियों के बीच एकता बनाए रखने में मदद मिली। कुरिन्थियों को आत्मिक एकता की आवश्यकता थी; वे अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के कारण बिखरे हुए थे (देखें 1 कुरि 1:10–13)।

इफिसियों में, पौलुस की कलीसिया पर उत्कृष्ट कृति, वह स्थानीय कलीसियाओं को जीवित, जैविक संस्थाओं के रूप में वर्णित करते हैं जो सभी (सामूहिक रूप से बोलते हुए) यहोवा में एक पवित्र निवास स्थान में बढ़ रही हैं (इफि 2:21)। पौलुस ने प्रत्येक स्थानीय कलीसिया को उस स्थान में परमेश्वर के लिए एक आत्मिक निवास प्रदान करने के रूप में चित्रित किया (वचन 22) और सभी अन्य कलीसियाओं के साथ एक पवित्र, सार्वभौमिक निवास स्थान में बढ़ते हुए यहोवा के निवास के लिए।

यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य में मन्दिर

यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य में कोई भौतिक मन्दिर नहीं है, हालांकि वह यरूशलेम और सिय्योन पहाड़ की छवि का उपयोग जारी रखता है (प्रका 3:12; 14:1; 21:2, 10, 22)। तीन परस्पर सम्बन्धित विचार प्रमुख हैं। पहला विचार कलीसिया का है, जो उन लोगों से बनी है जिन्होंने अपने विश्वास के लिए प्राण दिए हैं, जिनके विश्वासयोग्य सदस्य परमेश्वर का मन्दिर हैं ((3:12; 14:1)। यह मन्दिर धीरे-धीरे बढ़ता है जैसे-जैसे इन विश्वासयोग्य लोगों की संख्या बढ़ती है (6:11)। दूसरा पहलू है मन्दिर का न्यायस्थल के रूप में उपयोग (11:19; 14:15; 15:5–16:1)। अंततः, नए युग में कोई भी मन्दिर की आवश्यक नहीं होगी, क्योंकि “सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मन्दिर है”

(21:22)। अन्तिम स्थिति परमेश्वर का अपने लोगों के साथ निवास होगा —अनन्त, आत्मिक मन्दिर।

यह भी देखें वेदी; वाचा का सन्दूक; पवित्र रोटी; दाऊद; इस्राएल के पर्व और उत्सव; पहला यहूदी विद्रोह; यहूदी धर्म; दया की आसन; भेंट और बलिदान; याजक और लेवी; पवित्र स्थान; मन्दिर में गायक; सुलैमान (व्यक्ति)।

मन्नत, मन्नतें

मन्नत, मन्नतें

परमेश्वर से किए गए गंभीर वादे या प्रतिज्ञाएँ। परमेश्वर से मन्नत करना एक धार्मिक प्रथा है जिसका उल्लेख अक्सर पवित्रशास्त्र में मिलता है। मन्नतों के अधिकांश संदर्भ पुराने नियम में, विशेष रूप से भजनों में पाए जाते हैं, लेकिन कुछ नए नियम में भी हैं।

दशमांश, बलिदान और भेंट, सब्त का पालन, और खतना के विपरीत, मन्नत करना मूसा की व्यवस्था द्वारा आदेशित नहीं था। उदाहरण के लिए, भज 50:14 कहता है, "परमेश्वर को धन्यवाद ही का बलिदान चढ़ा, और परमप्रधान के लिये अपनी मन्नतें पूरी कर"। आज्ञा है "पूरी करो," अर्थात, पहले से की गई मन्नतों को निभाना या पूरा करना। ऐसी मन्नतें करने की कोई आज्ञा नहीं दी गई है। इस रीति को स्वीकार और व्यवस्थित किया गया है लेकिन इसे अनिवार्य नहीं किया गया है।

एक मन्नत का उद्देश्य प्रभु से इच्छित अनुग्रह प्राप्त करना, किसी उद्धार या लाभ के लिए उनका आभार व्यक्त करना, या कुछ त्यागों के माध्यम से उनके प्रति पूर्ण भक्ति साबित करना है। स्वयं को समर्पित करना और प्रभु के लिए अलग होना नाज़ीर मन्नत की मुख्य विशेषताएँ थीं। शिमशोन, शमूएल, और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला इस प्रकार कि मन्नत लेने वालों के सबसे परिचित उदाहरण हैं। गिन 6:1–8 इस प्रतिबद्धता की शर्तों को निर्धारित करता है, और 13–21 वचन बताते हैं कि इस मन्नत से मुक्ति कैसे प्राप्त की जा सकती है। स्त्रियाँ, साथ ही पुरुष, इस नाज़ीर की मन्नत को ले सकते थे (पद 2), जो सीमित अवधि की हो सकती थी। रेकाबियों के घराने ने खुद को तपस्वी और डेरों में रहनेवाले जीवन के लिए प्रतिबद्ध किया। वे इस्राएल के परमेश्वर के प्रति निष्ठा का एक प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं (यिर्म 35)।

हालांकि, अक्सर, मन्नतें परमेश्वर के साथ समझोते के रूप में ली जाती थीं। बेतेल में, याकूब ने परमेश्वर से मन्नत मानी कि अगर वह उनकी रक्षा करेंगे और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेंगे तो वह उनकी आराधना करेगा और दशमांश भी देगा (उत 28:20–22)। हन्ना ने मन्नत मांगी कि अगर परमेश्वर उन्हें एक पुत्र देंगे, तो वह उसे परमेश्वर को लौटा देगी (1 शमू 1:11, 27–28)। भजनों में, मन्नतों का भुगतान अक्सर खतरे या कष्ट से मुक्ति के लिए धन्यवाद के साथ जुड़ा होता है (जैसे, भज 22:24–25; 56:12–13)।

सबसे महत्वपूर्ण यह है कि एक बार मन्नत ले ली जाए, तो यह एक गंभीर दायित्व बन जाता है। मन्नत ना करने में कोई भी पाप नहीं है (व्य. वि. 23:22), लेकिन एक बार घोषित करने के बाद, मन्नत को पूरा करना आवश्यक है (व्य. वि. 23:21–23; देखें गिन 30:2; सभो 5:4–6)।

शब्द "मन्नत" नए नियम में केवल दो बार आता है, दोनों बार प्रेरित पौलुस के साथ संबंध में (प्रेरि 18:18; 21:23–24)। लेकिन वही सिद्धांत "कुरबान" शब्द के मामले में भी शामिल है (मरक 7:11–13; पुष्टि करें मत्ती 15:5–6)। इन दो गद्यांशों में यीशु ने उन लोगों को कड़ी फटकार लगाई जिन्होंने एक ऐसी मन्नत ली जो वृद्ध माता-पिता की देखभाल के दायित्वों से बचने का चतुर तरीका था। ऐसे "**कुरबान**" या "भेंट" में एक मौद्रिक आंकड़ा शामिल था। लेकिन यीशु ने घोषणा की कि परमेश्वर ऐसी भेंट नहीं चाहते जो किसी को वंचित करने के लिए बनाई गई हो।

पौलुस के मामले में, उन्होंने अपनी मन्नत शायद इसलिए ली होंगी ताकि विरोधी यहूदी या यहूदी-मसीही विश्वासियों की आपत्तियों को टाला जा सके, जो गैर-यहूदी विश्वासियों के कन्धों से मूसा की नियमावली का जुआ हटाने के खिलाफ थे। पौलुस यहूदी अधिकारियों की कड़ी निगरानी में यरूशलेम में थे। उन्होंने मन्दिर में चार अन्य यहूदी विश्वासियों के साथ मन्नतों के भुगतान में शामिल होने का निर्णय लिया। हालांकि, इस कार्रवाई को उनके शत्रुओं ने गलत समझा, जिन्होंने आरोप लगाया कि वह गैर-यहूदियों को पवित्र मन्दिर में ला रह थे।

*यह भी देखें*वाचा; शपथ।

मन्ना

वह आश्चर्यजनक भोजन जिसे प्रभु ने मरूभूमि में इस्राएलियों के लिए प्रदान किया। यह मूल रूप से पतले परतों के रूप में दिखाई दिया, जैसे कि इस्राएलियों के शिविर के चारों ओर जमीन पर पाला पड़ा हो (निर्ग 16:14–15)। इसकी तुलना अन्यत्र धनिये के बीज और मोती या राल से की गई है (गिन 11:7)। इसका स्वाद मधु या ताजे तेल के समान बताया गया है (निर्ग 16:31; गिन 11:8)। चूँकि स्वाद और रंग का अनुभव कुछ हद तक व्यक्तिगत होता है, ये विवरण आवश्यक रूप से विरोधाभासी नहीं हैं। यह शब्द इब्री पुरुष से आता है, जिसका अर्थ है, "क्या?" जब इस्राएलियों ने मन्ना देखा, तो उन्होंने पूछा, "यह क्या है?" (निर्ग 16:15)।

मन्ना को सीनै और अरब में आधुनिक यात्रियों द्वारा खोजी गई वस्तुओं से जोड़ने के प्रयास किए गए हैं। प्रारंभिक गर्मियों (जून–जुलाई) में इन क्षेत्रों में झाऊ एक मीठा स्वाद वाला तरल

छोड़ता है, जो एक छोटे कीड़े की गतिविधि के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। यह तरल जमीन पर गिरता है, जहाँ यह छोटे अनाज के रूप में बनता है जो सूरज के गर्म होने पर लुप्त हो जाता है। संदर्भ दक्षिण-पश्चिम एशिया के उन हिस्सों में एक खाद्य लाइकेन का भी किया गया है, जिसका उपयोग अकाल के वर्षों में अनाज के बजाय किया जाता है। लेकिन मन्ना की नियमितता, आवृत्ति और प्रचुरता को केवल चमत्कारी आधारों पर ही समझाया जा सकता है। इस्राएलियों को इसे एक समय में एक दिन के लिए इकट्ठा करना था। उस माप से अधिक इकट्ठा की गई कोई भी चीज खराब हो जाती थी (16:20)। केवल सब्त का दिन उस नियम का अपवाद था। इस्राएल के कनान में प्रवेश करने के बाद मन्ना अब और प्रदान नहीं किया गया (यहो 5:12)। जब इस्राएल ने मन्ना के अलावा अन्य भोजन की लालसा की, तो लोगों को बटेरों की अधिकता के साथ दण्डित किया गया (गिन 11:4–6, 18–20)। काव्य साहित्य में इसे "स्वर्ग का अन्न" कहा गया (भज 78:24; पुष्टि करें 105:40) और "स्वर्गदूतों की रोटी" (78:25)। यीशु ने स्वयं को सच्चे मन्ना, स्वर्ग से रोटी के रूप में बताया, जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और अनन्त जीवन पाएगा (पुष्टि करें यूह 6:25–59)।

*यह भी देखें*जंगल में भटकना I

मपीबोशेत

1. दाऊद के मित्र योनातान का पुत्र। नाम का मूल रूप नि:संदेह मरीब्बाल था (1 इति 8:34; 9:40), लेकिन जब शब्द बाल मुख्य रूप से कनानी उर्वरता पंथ के प्रधान पुरुष देवता से जुड़ गया, तो इसे कुछ मामलों में इब्रानी शब्द बोशेथ (जिसका अर्थ "शर्म") से बदल दिया गया। शाऊल के पोते के रूप में, मपीबोशेत एक विशेषाधिकार की स्थिति में पैदा हुआ था, जो पलिश्तियों के हमले के साथ नाटकीय रूप से बदल गई। शाऊल, योनातान और उसके दो भाइयों की गिलबो पहाड़ की लड़ाई में मृत्यु हो गई (1 शमू 31:1–6)। जब इस आपदा की खबर इस्राएली राजभवन यिज्रेल में पहुँची, तो पाँच वर्षीय मपीबोशेत को उसकी धाई ने उठा लिया। सुरक्षा के लिए भागते समय घबराहट में वह गिर गईं, जिससे मपीबोशेत के पैर या टखने टूट गए। उचित चिकित्सा देखभाल की कमी के कारण वह पूरी तरह से अपंग हो गया (2 शमू 4:4)। अन्ततः उसने यरदन पूर्व के लोदबार में माकीर के पास शरण पाई, जिसने बाद में दाऊद से मित्रता की (9:4; 17:27)। मपीबोशेत का चाचा, ईशबोशेत की (शाऊल का एकमात्र जीवित पुत्र), जिसे इस्राएल का कठपुतली राजा बनाया गया था (2:8–10), हत्या कर दी गई (अध्याय 4)। मपीबोशेत, हालांकि जाहिर तौर पर उत्तराधिकार में अगला था, उसके बारे में कोई विचार नहीं किया गया। जब दाऊद अब एकीकृत राज्य के सिंहासन पर स्थापित हो गए और योनातान के परिवार के किसी भी जीवित सदस्य को दयालुता दिखाना चाहते थे, तो उन्हें शाऊल के राजभवन में एक बार प्रभावशाली भण्डारी सीबा द्वारा मपीबोशेत के अस्तित्व की जानकारी दी गई (9:1–13)। यरूशलेम बुलाए जाने पर, मपीबोशेत स्वाभाविक रूप से चिंतित था, शायद डरते हुए कि दाऊद सभी सम्भावित प्रतिद्वंद्वियों को समाप्त करना चाहते हों (देखें 19:28)। लेकिन दाऊद के उदार स्वभाव ने स्वयं को प्रकट किया जब उन्होंने मपीबोशेत को शाऊल की सभी मूल भूमि वापस लौटा दी, सीबा और उसके परिवार को सम्पत्ति का प्रबन्धन जारी रखने दिया और अपंग को शाही मेज पर एक स्थायी स्थान प्रदान किया गया।

जब अबशालोम का विद्रोह शुरू हुआ, तब सीबा भागते हुए दाऊद से मिला और उसे आवश्यक आपूर्तियाँ प्रदान कीं, इस अवसर का लाभ उठाकर उसने अपने स्वामी की हानि पर राजकृपा पाने की कोशिश की। उसने संकेत दिया कि मपीबोशेत भी स्वयं के लिए राज्य प्राप्त करने की आशा रखता था। संकट की घड़ी में दाऊद इस अविश्वसनीय कहानी से प्रभावित हो गए और सीबा को मपीबोशेत की पूरी सम्पत्ति देने का वादा किया (2 शमू 16:1–4)। गृहयुद्ध समाप्त होने पर, मपीबोशेत खुद दाऊद के पास आया और उनकी बँधुआई के प्रति अपने दु:ख का स्पष्ट प्रमाण दिया और और सीबा की कपटता का भी। लेकिन दाऊद, सीबा को अलग नहीं करना चाहते थे और शायद उसके पहले के उपहार के लिए आभारी थे, समझौता किया, भूमि को दोनों के बीच विभाजित कर दिया। राजा की पुनःस्थापन पर मपीबोशेत की सच्ची खुशी ऐसी थी कि उसको भूमि की हानि की कोई परवाह नहीं थी (19:24–30)। बाद में, जब गिबोनियों को शांत करने के लिए शाऊल के सात वंशज मारे गए, दाऊद की योनातान की निरंतर स्मृति के कारण मपीबोशेत को बख्शा गया (21:7)। मपीबोशेत का पुत्र, मीका (9:12), एक काफी बड़े परिवार का मुखिया बना (1 इति 8:35; 9:41)।

2. शाऊल की रखैल रिस्पा का पुत्र। अपने अधिक प्रसिद्ध नामधारी के विपरीत, वह शाऊल के उन सात वंशजों में से एक था जिन्हें गिबियोनियों को संतुष्ट करने के लिए फाँसी पर लटकाना पड़ा, क्योंकि शाऊल ने इस्राएल के साथ उनकी प्राचीन संधि को तोड़ दिया था, जिससे तीन साल का अकाल पड़ा (2 शमू 21:8; देखें यहो 9:3–27)। इसके बाद की घटना में (2 शमू 21:10–14), रिस्पा की लाशों पर अटूट पहरेदारी ने दाऊद को प्रेरित किया कि वह शाऊल और योनातान के अवशेषों के साथ इन शवों का सम्मानजनक अन्तिम संस्कार करवाए और उन्हें परिवार की कब्रगाह में दफनाए।

मबुन्ने

सिब्बकै का वैकल्पिक नाम (सम्भवतः एक पाठीय विकृति), जो 2 शमूएल 23:27 में दाऊद के "पराक्रमी पुरुषों" में से एक योद्धा है।

*देखें*सिब्बकै।

ममूकान

ममूकान

फारस और मादियों के सात राजकुमारों में से एक जो राजा क्षयर्ष के अधीन था (एस्त 1:14–21)। उन्होंने फारस की रानी वशती, के खिलाफ आरोप लगाए, क्योंकि उन्होंने राजा की आज्ञा पर उपस्थित होने से इनकार कर दिया था (एस्त 1:16)। ममूकान ने उन्हें हटाने और किसी और को रानी बनाने का प्रस्ताव रखा। राजा ने ममूकान की बात मानी और एक नई रानी खोजने का आदेश जारी किया (एस्त 1:21)। एस्तेर को मादियों और फारस की रानी के रूप में चुना गया।

मम्रे (व्यक्ति)

वह "मम्रे के मैदान" नामक भूमि के एक टुकड़े का स्वामी था। वह एमोरी थे और उनके दो भाई थे: एशकोल और आनेर (उत्प 14:13)। जब अब्राहम ने अपने भतीजे लूत को बचाने के लिए युद्ध किया, वह (दोनों भाई) उनके सहयोगी बन गए।

मम्रे (स्थान)

महत्वपूर्ण बांजवृक्षों का उपवन जिसके पास अब्राहम रहते थे, और इसका नाम एक एमोरी के नाम पर रखा गया था जो कदोर्लाओमेर को हराने और लूत को बचाने में अब्राहम के सहयोगी बने (उत्प 14:13, 24)। अब्राहम ने मम्रे के बांजवृक्षों के नीचे एक वेदी बनाई (13:18)। अब्राहम पवित्र वृक्षों के पास बैठे थे जब उन्होंने तीन रहस्यमय अतिथियों का स्वागत किया था (अध्याय 18)। मम्रे अब्राहमी वाचा समारोहों के दृश्य के लिए भी एक सम्भावित स्थल है (अध्याय 15)। इसहाक और याकूब भी वहाँ रहते थे (35:27)।

मम्रे का बांजवृक्ष

मम्रे का बांजवृक्ष

अब्राहम और इसहाक से संबंधित स्थल (उत 13:18)। *देखें* मम्रे (स्थान)।

मरकुस

मरकुस का के.जे.वी वैकल्पिक वर्तनी (कुल 4:10; फिले 1:24; 1 पत 5:13) । *देखें*मरकुस, यूहन्ना।

मरकुस का सुसमाचार

नए नियम की दूसरी पुस्तक, जो शायद यरूशलेम के यूहन्ना मरकुस द्वारा ईस्वी 60 और 68 के बीच लिखी गई थी।

पूर्वावलोकन

- लेखक, तिथि, स्थान
- विशिष्टताएँ
- संरचना
- अवसर, उद्देश्य, धर्मशास्त्र ज्ञान
- विषयवस्तु

लेखक, तिथि, स्थान

हमारे पास इस दूसरे सुसमाचार को किसने लिखा, इसके बारे में सबसे प्राचीन गवाही पापियास (लगभग 60–130 ई.) से आता है, जो यीशु की शिक्षाओं पर कई व्याख्याओं के लेखक थे। उन्होंने "प्राचीन यूहन्ना" से प्राप्त विभिन्न परंपराओं की जानकारी दी (संभवतः इसे प्रेरित यूहन्ना के साथ जोड़ा जा सकता है, हालांकि यह निश्चित नहीं है)। एक स्थान पर पापियास कहते हैं, "प्राचीन यह भी कहा करते थे: मरकुस पतरस के अनुवादक बने और जो कुछ भी [पतरस] को प्रभु के द्वारा कहे और किए गए कार्यों के बारे में याद था, उसे ठीक से लिख दिया, हालांकि वह क्रमबद्ध नहीं था" (इस उद्धरण को चौथी शताब्दी के लेखक कैसरिया के यूसेबियस ने अपनी पुस्तक *कलीसिया इतिहास* 3.39.15 में सुरक्षित रखा था)। इस बयान की मूल विश्वसनीयता पर संदेह करने की आवश्यकता नहीं है। मरकुस—लगभग निश्चित रूप से प्रेरितों 12:12 के यूहन्ना मरकुस के रूप में पहचाना जाएगा (देखें 1 पतरस 5:13)—पतरस के एक शिष्य थे, और दूसरी सुसमाचार का अस्तित्व, कम से कम आंशिक रूप से, प्रेरित की स्मृतियों का परिणाम है। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि यदि कोई केवल इतना ही कहता है तो उसने मरकुस के काम का पर्याप्त वर्णन कर दिया है। उदाहरण के लिए, पापियास यह कहना, "हालांकि क्रम में नहीं," इंगित करती है कि मरकुस ने एक कालानुक्रमिक जीवनी लिखने का इरादा नहीं किया था। इसके अलावा, पापियास आगे टिप्पणी करते हैं (उनके अस्पष्ट शब्दों की एक व्याख्या के अनुसार) कि मरकुस (या पतरस?) ने सामग्री को शिक्षण स्थिति के अनुसार अनुकूलित किया और इसलिए मरकुस किसी भी (अंतर्निहित) दोष के आरोप से मुक्त है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारंभिक समय से ही मसीहियों ने विभिन्न सुसमाचारों में पाए जाने वाले सामग्री को समन्वित करने में कठिनाइयों का हिसाब देने के लिए मरकुस के लेखन के उद्देश्यों और परिस्थितियों का सहारा लिया।

दूसरी, तीसरी, और चौथी शताब्दी के मसीही लेखकों की बातें पापियास की गवाही पर निर्भर दिखती हैं, लेकिन जो अतिरिक्त जानकारी वे देते हैं, वे भी अपने आप में स्वतंत्र महत्व रखती हैं।उदाहरण के लिए, एक अपेक्षाकृत प्रारंभिक दस्तावेज़ (तिथि अनिश्चित) जिसे एंटी-मर्शियोनाइट प्रस्तावना के रूप में जाना जाता है, यह दावा करता है कि मरकुस ने पतरस की मृत्यु (मध्य-60 के दशक में) के बाद कहीं इटली में अपना सुसमाचार लिखा, और इस गवाही को कई विद्वानों द्वारा विश्वसनीय माना जाता है। फिर भी, इस संभावना को पूरी तरह से खारिज नहीं किया जा सकता कि मरकुस ने अपने काम को पतरस की शहादत से पहले लिखा था।

पापियास ने सुसमाचार के लिखे जाने के *समय के बारे* में कुछ भी विशिष्ट रूप से नहीं कहा है।कुछ विद्वानों का एक छोटा सा समूह मरकुस का समय ईस्वी 70 के तुरंत बाद मानता है। एक अन्य अल्पसंख्यक कुमरान में पाए गए 7Q5 नामक सरकण्डे टुकड़े के आधार पर 40 या 50 के दशक की एक तारीख का सुझाव देते हैं (जोसे ओ'कल्लाघन के अनुसार, इस टुकड़े को, जिसे लगभग ईस्वी 50–68 का माना गया है, मरकुस 6:52–53 के रूप में पहचाना जाना चाहिए)। इस टुकड़े में केवल एक तरफ 20 अक्षर हैं, जिससे मरकुस की पुनर्निर्माण बहुत अनिश्चित हो जाती है।कुछ विद्वान इस बात से आश्वस्त हैं कि यह लेख मरकुस का है; कुछ का मानना है कि यह 1 हनोक या जकर्याह का हिस्सा है। विद्वानों का एक प्रभावशाली बहुमत मरकुस को 60 के दशक में दिनांकित करते हैं, जिसमें रूढ़िवादी आमतौर पर दशक के प्रारंभिक वर्षों को प्राथमिकता देते हैं।यह प्राथमिकता क्यों? यदि मरकुस की प्राथमिकता का सिद्धांत स्वीकार किया जाता है, तो स्पष्ट रूप से मरकुस लूका से पहले लिखा गया था; और चूंकि रूढ़िवादी लूका को सामान्यतः लगभग ईस्वी 62 में दिनांकित करते हैं, मरकुस ईस्वी 60 या 61 से बाद का नहीं हो सकता।

यह तर्क, हालांकि मजबूत है, निर्णायक नहीं है। पहली बात, लूका को पूरी निश्चितता के साथ दिनांकित नहीं किया जा सकता है। दूसरा, यह दृष्टिकोण कि मत्ती और लूका ने मरकुस का उपयोग किया (अधिकांश विद्वानों की कार्यशील धारणा) केवल एक परिकल्पना है, और कुछ लेखकों द्वारा इसका जोरदार विरोध किया जाता है। तीसरा, दूसरी सदी से चली आ रही एक परंपरा (ऊपर देखें) का दावा है कि मरकुस ने अपना सुसमाचार *पतरस की मृत्यु के* बाद लिखा, ईस्वी 64 से पहले नहीं। चौथा, इस सुसमाचार के प्रसंग के बारे में एक प्रभावशाली दृष्टिकोण मानता है कि नीरो के द्वारा उत्पीड़न (ईस्वी सन् 64) शुरू हो चुका था। (मरकुस के प्रसंग को लेकर एक अलग दृष्टिकोण के अनुसार, मरकुस यहूदी विद्रोह की शुरुआत के बाद ईस्वी 66 में लिखा गया था) इसलिए, जबकि 60 के दशक की शुरुआत में एक तारीख संभव बनी रहती है, जिसके लिए प्रतिबद्धता की आवश्यकता नहीं है।

दूसरे सुसमाचार के लेखन के संबंध में, ऐसा कोई ठोस कारण नहीं लगता है कि पापियास की रिपोर्ट को नकारा जाए कि मरकुस (निस्संदेह प्रेरितों के काम 12:12 के यूहन्ना मरकुस) ने पतरस की यादों को लिखा और यह उनके लेखन कार्य का आधार बना। कुछ विद्वानों का तर्क है कि सुसमाचार में भौगोलिक त्रुटियाँ हैं (जैसे, हमारे पास दलमनूता नामक क्षेत्र का कोई प्रमाण नहीं है, मरकुस 8:10) और यरूशलेम के निवासी जैसे मरकुस अपनी जानकारी में अधिक विश्वसनीय होते।हालाँकि, मार्कुस में भौगोलिक समस्याएँ वास्तविक हैं, परंतु इन्हें त्रुटियों के रूप में नहीं देखना चाहिए (एक स्थान जिसका नाम दलमनुथा है, वर्तमान अज्ञानता इसे अस्तित्वहीन साबित नहीं करती)। इसके अलावा, अन्य मामलों में (जैसे, 14:54, 66) सुसमाचार स्थानीय विवरणों का प्रभावशाली ज्ञान प्रकट करता है। कई लेखक भी जानकारी के अंशों की ओर इशारा करते हैं जो पतरस की पृष्ठभूमि का समर्थन करते हैं, जैसे कि पतरस के सास की चंगाई (1:30–31)। संक्षेप में, आंतरिक साक्ष्य, यद्यपि पूर्ण प्रमाण के रूप में नहीं है, फिर भी पापियस द्वारा संरक्षित परंपरा को नष्ट नहीं करता। एक पीढ़ी पहले, पापियस की गवाही की विश्वसनीयता लगभग सार्वभौम रूप से स्वीकार की जाती थी। यह स्थिति कुछ हद तक बदल गई है, लेकिन वे विद्वान जो इस परंपरा के प्रति संदेहात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं, भी मानते हैं कि यह सच *हो सकता* है।

जैसे ही ध्यान सुसमाचार के लिखे गए स्थान की ओर जाता है, कार्य और अधिक कठिन हो जाता है। दूसरी शताब्दी से चली आ रही परंपरा यह दावा करती है, जो शायद पापियास द्वारा पहले से ही निहित हो सकता है—अर्थात, मरकुस ने रोम में अपना सुसमाचार लिखा। हालांकि कुछ विद्वानों ने अन्य संभावनाओं का सुझाव दिया है, जैसे गलील और अन्ताकिया ये संतोषजनक साबित नहीं हुई हैं। मरकुस ने रोम में कुछ समय बिताया, और सुसमाचार में कुछ विशेषताएँ (जैसे यूनानी में लैटिन प्रभाव और यहूदी रीति-रिवाजों की व्याख्या, जैसे 7:3–4 में), जबकि कुछ साबित नहीं करती हैं, निश्चित रूप से एक रोमी उत्पत्ति के अनुरूप हैं। इसके अतिरिक्त, एक प्रभावशाली दृष्टिकोण जो सुसमाचार की उत्पत्ति की ओर इंगित करता है, यह मानता है कि इसका संदर्भ रोम में उत्पीड़न की पृष्ठभूमि में था।

विशिष्टताएँ

मरकुस की कई विशेषताएँ इसे अन्य सुसमाचारों से अलग करती हैं। उदाहरण के लिए, एक शब्द जिसे आमतौर पर "तुरन्त" के रूप में अनुवादित किया जाता है, मरकुस में 40 से अधिक बार और नए नियम के अन्य हिस्सों में केवल एक दर्जन बार पाया जाता है। जबकि इस विशेषता को मरकुस की विनम्र, सामान्य शैली के साथ मेल खाने वाले सरल "आदत" के रूप में व्याख्यित किया जा सकता है, यह निश्चित रूप से उनके वर्णन की तीव्र गति को जोड़ता है, जो यीशु की गतिविधियों पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है बजाय उनकी उपदेशों के (मत्ती और लूका की तुलना में), और दृश्य से दृश्य

की ओर बिना किसी विराम के बदल जाता है। चूंकि सुसमाचार भी काफी संक्षिप्त है (लूका का सुसमाचार लगभग दोगुना लंबा हैं), कोई सोच सकता है कि लेखक ने इसे एक बैठक में पढ़ने का इरादा किया था; यहां तक कि जोर से पढ़ने पर भी, इसमें केवल लगभग डेढ़ घंटे लगेंगे। किसी भी स्थिति में, इस बात में बहुत कम संदेह हो सकता है कि यह कार्य तात्कालिकता की भावना को व्यक्त करता है।

हालांकि, अन्य विशेषताएँ अधिक महत्वपूर्ण साबित होती हैं। जो कोई यीशु की कहानी से अपरिचित है और जिसने पहली बार मरकुस को पढ़ा, वह निसंदेह इसकी काफी अचानक शुरुआत से चौंक जाएगा। एक संक्षिप्त वाक्यांश के बाद जो एक प्रकार के शीर्षक के रूप में खड़ा है (1:1), मरकुस संक्षेप में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई का वर्णन करने के लिए आगे बढ़ते हैं। फिर बिना हमें उसके पहले के जीवन के बारे में कुछ भी बताए वह यीशु को नासरत से आने वाले के रूप में परिचय कराता है। इसके अलावा, पुस्तक का एक-तिहाई से अधिक हिस्सा (जिसमें तथाकथित दुखभोग कथा शामिल है) यीशु के अंतिम सप्ताह को समर्पित है। इन और अन्य कारकों से कार्य में रहस्य का एक तत्व जुड़ जाता है, जिसे इस तथ्य से और भी बढ़ाया जाता है कि विभिन्न बिंदुओं पर मरकुस उन लोगों के भय या आश्चर्य की ओर ध्यान आकर्षित करता है जो यीशु के संपर्क में आए (2:12; 4:41; 5:15, 33, 42; 6:51; 9:6; और कई अन्य अंश, विशेष रूप से 10:32 के अजीब शब्द)। इसके अलावा, यदि कोई मानता है कि सुसमाचार मूल रूप से 16:8 पर समाप्त हुआ, तो मरकुस अपने पाठकों को वही विस्मय का अनुभव कराना चाहते थे जो शिष्यों ने यीशु के पुनरुत्थान पर अनुभव किया था।

लेकिन इस डर और आश्चर्य का क्या कारण है? मरकुस का स्पष्ट उत्तर है कि यीशु, यद्यपि वास्तव में एक मनुष्य हैं, वे भी दिव्य हैं। जबकि मरकुस का सुसमाचार यीशु मसीह की मानवता को प्रदर्शित करता है (1:41; 3:5; 8:12; 10:14), उनका मुख्य जोर प्रभु की दिव्यता पर है। वास्तव में, मरकुस अपने पुस्तक की शुरुआत यीशु को "परमेश्वर का पुत्र" कहकर करते हैं (हालांकि कुछ पांडुलिपियों में यह वाक्यांश छुट गया है), एक स्थिति जिसे दोनों दुष्टात्माओं (3:11; 5:7) और स्वयं परमेश्वर (9:7) द्वारा मान्यता प्राप्त है। सुसमाचार का वास्तविक चरमोत्कर्ष 15:39 पर होता है, जहां मरकुस लिखते हैं कि एक गैर-यहूदी, एक रोमी सेनापति, यीशु की मृत्यु की पुकार सुनकर उच्चारित किया, "सचमुच यह व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र था!"

संरचना

लेखक ने अपने सुसमाचार को एक सरल योजना के अनुसार व्यवस्थित किया। पहले आठ अध्याय मसीह की सार्वजनिक सेवा की प्रकृति को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं, जिसमें उनकी बढ़ती लोकप्रियता की कहानियों को यहूदी अगुवों की अस्वीकृति की कहानियों के साथ बारी-बारी से दिखाया गया है। पुस्तक का पहला भाग, जबकि यीशु के आगमन से उत्पन्न कुछ तनावों को दर्शाता है, सफलता और सामान्य आशावाद की मूल छाप देता है। अध्याय 8 के अंत की ओर पाठक को एक महत्वपूर्ण बदलाव महसूस होता है, विशेष रूप से पद 31 से शुरू होकर। कैसरिया फिलिप्पी में, पतरस ने अभी-अभी स्वीकार किया है कि यीशु मसीह हैं, और अब पहली बार यीशु प्रकट करते हैं कि मसीह के रूप में उन्हें मरना होगा। शिष्य उलझन और निराशा में पड़ जाते हैं और उनकी निराशावादिता बढ़ती जाती है क्योंकि यह विचार बार-बार उनके सामने आता है (9:9, 31; 10:32–34; 14:17–25)। अंत में वे अपने स्वामी को छोड़ देते हैं (14:50)।

दिलचस्प बात यह है कि यह निराशावादी टिप्पणी सुसमाचार के पहले भाग में तीन बिंदुओं पर अनुमानित है: 3:6 (यीशु के दुश्मन उनकी मृत्यु की साजिश रचते हैं); 6:6 (नासरत में अविश्वास); और 8:21 (शिष्यों में समझ की कमी)। कुछ विद्वानों का सुझाव है कि मरकुस ने अपनी पुस्तक के पहले तीन विभाजनों को इंगित करने के लिए इन तीन पदों का उपयोग किया। इसके अलावा, अन्य विद्वानों का मानना है कि दो अंधे पुरुषों की चंगाई (8:22–26; 10:46–52) एक खंड की शुरुआत और निष्कर्ष प्रदान करते हैं जो शिष्यों की आत्मिक अंधेपन पर जोर देता है। एक और संरचनात्मक संकेत है 14:1, जो स्पष्ट रूप से सुसमाचार के अंतिम खंड को चिह्नित करता है।

अवसर, उद्देश्य, धर्मशास्त्र ज्ञान

कुछ विद्वानों का मानना है कि मरकुस एक विधर्मी संप्रदाय से लड़ रहे थे जो यीशु के चमत्कारों पर जोर देता था और उन्हें केवल एक दिव्य चमत्कार-कार्यकर्ता के रूप में देखता था। हालांकि इस दृष्टिकोण को मूल रूप से तैयार किए गए रूप में स्वीकृति नहीं मिली है, कई लेखक सुसमाचार को एक धार्मिक सुधार के रूप में देखते हैं। राल्फ मार्टिन, जो मरकुस को पौलुस के साथ बहुत करीब से जोड़ते हैं, सुझाव देते हैं कि सुसमाचार लेखक कुछ विधर्मी समूहों का विरोध कर रहे हैं जिन्होंने पौलुस के संदेश को विकृत कर दिया है और मसीह को एक *स्वर्गीय* व्यक्ति के रूप में विशेष जोर दिया है (तुलना करें. वे विचार जिनका पौलुस स्वयं कुलुस्सियों में विरोध करते हैं)। मरकुस इन विचलनों का उत्तर देते हैं, मार्टिन के शब्दों में, "यीशु के पृथ्वी पर जीवन की विडंबना को उजागर करके, जिसमें दुख और न्याय के बीच एक दो-ताल का तालमेल होता है।" यदि कोई यह तय करता है कि यह पुनर्निर्माण भी काफी अटकलों पर आधारित है, तो भी कुछ तत्वों को मान्य के रूप में रखा जा सकता है।

अन्य विद्वान, जैसे एच. की, मरकुस की भविष्यसूचक पृष्ठभूमि पर जोर देते हैं। की और अन्य लोग इस तत्व को 66 ई.पू. के यहूदी विद्रोह से जोड़ते हैं, लेकिन सुसमाचार के उन मूल पाठकों के लिए मरकुस 13 (यीशु का भविष्यसूचक प्रवचन)

के महान महत्व की सराहना करने के लिए इस विशेष ऐतिहासिक संबंध के प्रति प्रतिबद्धता अनावश्यक है जो उत्पीड़न से गुजर रहे होंगे।

शायद सबसे संतोषजनक पुनर्निर्माण इस सुसमाचार को 60 के दशक के मध्य में नीरो के उत्पीड़न से जोड़ता है। उदाहरण के लिए, मरकुस एकमात्र सुसमाचार है जो यह दर्ज करता है कि यीशु, जंगल में भेजे जाने के बाद, खुद को जंगली जानवरों के बीच पाया (1:13)। विलियम लेन के अनुसार यह विवरण, "उन लोगों के लिए विशेष महत्व से भरा हुआ था जिन्हें जंगली जानवरों की उपस्थिति में असहाय खड़े होने के लिए अखाड़े में प्रवेश करने के लिए बुलाया गया था।" यह व्याख्या, हालांकि कठिनाइयों से मुक्त नहीं है, अधिकांश उपलब्ध आधार-सामग्री का हिसाब रखने का लाभ है। पहले, यह उस मजबूत परंपरा के साथ संगत है जो मरकुस के काम की उत्पत्ति को रोम से जोड़ती है। दूसरा, मरकुस उन लोगों से स्पष्ट रूप से बात करते हैं जो उत्पीड़न का सामना कर रहे हैं, उन्हें जल्दी से यूहन्ना की कैद और कई अन्य विवरणों से परिचित कराते हैं। तीसरा, इससे संबंधित है मरकुस का शिष्यत्व पर जोर। मसीही जो उत्पीड़न का सामना कर रहे थे, उन्हें मानकों को ढीला करने का प्रलोभन हुआ होगा (4:17–19)। चौथा, इस सामान्य स्थिति को देखते हुए, हमारे प्रभु के भविष्यसूचक संदेश की महत्वपूर्णता पर संदेह करना कठिन है, जो अध्याय 13 में है, जिसका उद्देश्य अपने शिष्यों को उनके संघर्षों के बीच प्रोत्साहित करना है, उन्हें आने वाली महिमा की याद दिलाते हुए। अंततः, अन्यजाती मिशन के प्रति मरकुस की स्पष्ट चिंता मूर्तिपूजक रोम की आवश्यकताओं के साथ मेल खाती है। पीड़ित मसीही उस अविश्वासी समाज को भूलने का जोखिम नहीं उठा सकते जिसमें वे रहते हैं। इस विशेष जिम्मेदारी के प्रकाश में, मरकुस अपने पाठकों को आश्वस्त करते हैं कि जो कुछ भी रोमी सरदार ने पहचानना शुरू किया—निश्चित रूप से यीशु *ही* परमेश्वर के पुत्र हैं (15:39).

विषयवस्तु

मरकुस की कथा का विकास दोहरे ढांचे के भीतर छह प्रमुख विभाजनों में प्रस्तुत किया जा सकता है:

परिचय (1:1–13)

भाग I: लोकप्रियता और विरोध (1:14–8:21)

1. यीशु का अधिकार और फरीसियों की शत्रुता (1:14–3:6)

2. लोगों की प्रतिक्रिया (3:7–6:6a)

3. शिष्यों की गलतफहमी (6:6b–8:21)

भाग II: अंधकार और मृत्यु (8:22–15:47)

4. मसीहा का मिशन और शिष्यों का अंधापन (8:22–10:52)

5. अंतिम सेवकाई (11:1–13:37)

6. दुखभोग कथा (14:1–15:47)

समापन (16:1–8)

हालांकि कोई यह दावा नहीं कर सकता कि यह रूपरेखा लेखक की मूल योजना से पूरी तरह मेल खाती है (मरकुस ने शायद जानबूझकर विस्तृत रूपरेखा तैयार नहीं की होगी), छह भागों में विभाजन विषयवस्तु का व्याख्यात्मक सारांश प्रदान करने के लिए एक उपयोगी प्रारंभिक बिंदु है।

यीशु का अधिकार और फरीसियों की शत्रुता (1:14–3:6)

परिचयात्मक भाग (1:1–13) के तुरंत बाद, जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवा के साथ-साथ यीशु के बपतिस्मा और प्रलोभन का वर्णन करता है, मरकुस कार्य के मुख्य भाग की शुरुआत एक सारांश कथन (पद 14–15) के साथ करते हैं। इन दो पदों में वह सुझाव देते हैं कि यीशु की सार्वजनिक सेवा, जो परमेश्वर के राज्य की उद्घाटन की घड़ी की घोषणा से परिचित है, यूहन्ना की कारावास के कारण शुरू हुई। इसके बाद पहले शिष्यों का बुलाहट आता है (पद16–20) और फिर कहानियों का एक समूह के द्वारा (पद 21–38), जिनमें सभी घटनाएं कफरनहूम में हुई थीं, जाहिर तौर पर 24 घंटे की अवधि के भीतर: आराधनालय में शिक्षा के बाद एक दुष्टात्माग्रसित की चंगाई; पतरस के सास की चंगाई; शाम को कई अन्य चंगाइयां; एकांत स्थान में प्रार्थना। यह कथन कि यीशु ने गलील प्रांत में अपनी सेवा का विस्तार किया (पद 39), एक कोढ़ी के इलाज की कहानी के बाद आता है (पद 40–45)। इसके बाद घटनाओं का एक बहुत महत्वपूर्ण समूह पाया जाता है (2:1–3:6), जिनमें से सभी यीशु के यहूदी अगुवों के साथ संघर्षों पर केंद्रित हैं: एक लकवाग्रस्त व्यक्ति की चंगाई और क्षमा; लेवी की बुलाहट, जिसका रात्रिभोज (जिसमें यीशु और घृणित चुंगी लेनेवाले भी शामिल थे) कुछ विवादों का कारण बना, विशेष रूप से उपवास के मुद्दे पर; और सब्त के दिन उचित व्यवहार के बारे में दो महत्वपूर्ण कहानियाँ।

लोगों की प्रतिक्रिया (3:7–6:6a)

मरकुस इस दूसरे भाग को उसी तरह खोलते हैं जैसे उन्होंने पहले को खोला था: एक सारांश वक्तव्य (झील के पास यीशु के द्वारा चंगाईयां—3:7–12) के बाद 12 प्रेरितों की आधिकारिक नियुक्ति (पद 13–19)। फिर एक भाग आता है जो यीशु के खिलाफ उनके अपने परिवार और शास्त्रियों द्वारा लगाए गए आरोपों पर केंद्रित है (पद 20–22), जो शैतान, पवित्र आत्मा के खिलाफ निंदा, और उनके परिवार में सच्ची सदस्यता क्या है, इस पर प्रतिक्रिया की ओर ले जाता है (पद 23–35)।अध्याय 4 का अधिकांश भाग यीशु के राज्य के दृष्टांतों के लिए समर्पित है—बीज बोने वाला, गुप्त रूप से बढ़ता हुआ बीज, सरसों का बीज—और इसमें उनकी शिक्षाओं की प्रकृति और उद्देश्य पर कथन शामिल हैं (4:10–

12, 21–25, 33–34)। शाम को यीशु और उनके शिष्य गलील सागर को पार करने के लिए निकले, जहाँ आगे तूफान को शांत किया गया (पद 35–41), झील के दूसरी ओर गेरासेन दुष्टात्माग्रसित की चंगाई हुआ (5:1–20), और, कफरनहूम लौटने पर, एक लहू बहने वाली महिला की चंगाई और याईर की बेटी को जीवित करना (पद 21–43)। इस भाग का समापन यीशु की अपने गृहनगर नासरत की यात्रा और वहां उन्हें जो अस्वीकृति सहनी पड़ी (6:1–6a)।

शिष्यों की गलतफहमी (6:6b–8:21)

तीसरा भाग दो प्रारंभिक पद्यांशों के साथ शुरू होता है: 12 का भेजा जाना (6:6b-13) और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु की कहानी (पद 14–29)। जब शिष्य लौटते हैं, यीशु विश्राम करने का निर्णय लेते हैं, लेकिन भीड़ उनका पीछा करती है; फिर यीशु 5,000 लोगों को सिखाते और भोजन खिलाते हैं (पद 30–44), और झील पार करने के बाद (पद 45–52, जिसमें यीशु का पानी पर चलना शामिल है), वह गनेसरत के आसपास कई चंगाईयां करते हैं (पद53–56)। फिर हाथ धोने की रस्म के बारे में फरीसियों के साथ एक विवाद होता है (7:1–8), और यह घटना मानव परंपरा पर परमेश्वर के वचन के अधिकार की मसीह की पुष्टि (पद 9–13) और सच्ची पवित्रता पर कुछ सामान्य निर्देशों की ओर की ओर ले जाती है (पद 14–23)।अगली कई कहानियाँ यीशु के गलील से प्रस्थान का वर्णन करती हैं, पहले सोर में, जहाँ एक अन्यजाती महिला की बेटी चंगी होती है (पद 24–30), फिर दिकापुलिस में, जहाँ वह एक मूक-बधिर व्यक्ति को चंगा करते हैं (पद 31–37) और चार हजार लोगों की भीड़ को भोजन कराते हैं (8:1–10)। फरीसियों की चिन्ह की माँग (पद 11–12) यीशु की फरीसियों के "खमीर" के खिलाफ चेतावनी की ओर ले जाती है, जिसे शिष्योंने (पद 13–21) गलत समझा।

मसीहा का मिशन और शिष्यों का अंधापन (8:22–10:52)

अभी भी गलील से दूर, लेकिन अब पास के नगर बैतसैदा में, यीशु एक अंधे आदमी को ठीक करते हैं (8:22–26)। फिर वह अपने शिष्यों को उत्तर की ओर कैसरिया फिलिप्पी की ओर ले जाता है, जो पतरस के अंगीकार के लिए मंच तैयार करता है (पद 27–30)। शिष्यों द्वारा इस पहचान (जिनमें पतरस वास्तव में एक प्रतिनिधि हैं) के कारण यीशु अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी करते हैं, लेकिन पतरस की भविष्यवाणी को स्वीकार करने से इनकार करने पर एक फटकार और शिष्यत्व पर निर्देश मिलता है (पद 31–38)। शिष्यों की मसीह की मृत्यु की आवश्यकता को न समझ पाने की विफलता रूपांतरण (9:1–8) की पृष्ठभूमि प्रदान करती है, जो पतरस, यूहन्ना और याकूब को यह आश्वासन देती है कि परमेश्वर का राज्य वास्तव में आएगा (टिप्पणी पद 1); इसके अलावा, पिता स्वयं उन्हें यीशु की भविष्यवाणी पर विश्वास करने का आदेश देते हैं (पद 7)। पुनरुत्थान और एलिय्याह के आगमन के बारे में कुछ शब्दों के बाद (पद 9–13), मरकुस एक दुष्टात्मा से पीड़ित लड़के की चंगाई का वर्णन करते हैं (पद14–29)। गलील में वापस, यीशु की मृत्यु की दूसरी भविष्यवाणी (पद 30–32) के बाद, दुख की बात है, शिष्यों के बीच यह तुच्छ चर्चा होती है कि कौन सबसे बड़ा है (पद 33–37)। उचित रूप से, शिष्यत्व के संबंध में कुछ और निर्देश मिलते हैं (पद 38–50)। मरकुस आगे लिखते हैं कि यीशु ने आखिरी बार गलील छोड़ दिया और दक्षिण की ओर अपनी यात्रा शुरू की। इस यात्रा के दौरान, यीशु ने तलाक और बच्चों के आत्मिक विशेषाधिकारों पर शिक्षाएं दीं (10:1–16), फिर धनी युवा शासक से मिले (पद 17–22), एक घटना जो शिष्यत्व पर आगे के शब्दों की ओर ले जाती है (पद 23–31)। यीशु की मृत्यु की तीसरी भविष्यवाणी (पद 32–34) के बाद फिर से शिष्यों के स्वार्थी व्यवहार का पालन किया गया, इस मामले में याकूब और यूहन्ना से एक महत्वाकांक्षी अनुरोध (पद 35–40)। इस घटना से शेष शिष्यों में आक्रोश उत्पन्न होता है, जिससे उनके गुरु द्वारा एक और फटकार की आवश्यकता होती है, जो स्वयं सेवा करने और मरने के लिए आए थे (पद 41–45)। इस कहानी में यरीहो के अंधे व्यक्ति, बरतिमाई के चंगाई के विवरण के साथ यह भाग उसी तरह समाप्त होता है जैसे यह शुरू हुआ था (पद 46–52)।

अंतिम सेवकाई (11:1–13:37)

यह भाग स्वाभाविक रूप से तीन संतुलित उपखंडों में विभाजित होता प्रतीत होता है। पहला (11:1–26) तीन घटनाओं को शामिल करता है: विजयी प्रवेश, अंजीर के पेड़ का मुरझाना, और मंदिर का शुद्धिकरण। दूसरा उपखंड (11:27–12:44) विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ यीशु की यहूदी अगुवों के साथ अंतिम विवाद श्रृंखला पाई जाती है। विषयों में यीशु के अधिकार का स्रोत (11:27–33), दुष्ट किसानों का दृष्टांत (12:1–12), कैसर के कर की वैधता (पद 13–17), सदूकीयों का पुनरुत्थान का इनकार (पद 18–27), मुख्य आज्ञा (पद 28–34), और दाऊद के पुत्र के बारे में प्रश्न (पद 35–37) शामिल हैं। इस उपखंड का अंत शास्त्रियों के खिलाफ चेतावनी और विधवा के दान की कहानी के साथ होता है (पद 38–44)। तीसरा उपखंड (अध्याय 13) पूरी तरह से जैतून पहाड़ प्रवचन को समर्पित है, जिसमें विनाश, आपदाओं, उत्पीड़न, धोखेबाजों और अंतिम न्याय की भविष्यवाणियाँ हैं। सतर्क रहने की विभिन्न सलाह के साथ प्रवचन समाप्त होता है।

दुखभोग कथा (14:1–15:47)

यह अंतिम भाग, जो याजकों के साजिश की विवरण द्वारा प्रस्तुत किया गया है (14:1–2), दो उपखंडों में विभाजित किया जा सकता है। पहला यीशु के मुकदमे से पहले की घटनाओं को बताता है (पद 3–52)। इनमें यीशु का अभिषेक (पद 3–9), यहूदा का विश्वासघात (पद 10–11), अंतिम भोज

से संबंधित घटनाएँ (पद 12–31), गतसमनी का दृश्य (पद 32–42), और गिरफ्तारी (पद 43–52) शामिल हैं। दूसरे उपखंड में यीशु का यहूदियों के समक्ष मुकदमा (पद 53–65), पतरस के इनकार (पद 66–72), पीलातुस के समक्ष मुकदमा (15:1–15), क्रूस पर चढ़ाया जाना (पद 16–41), और दफनाना (पद 42–47) शामिल हैं।

सुसमाचार कुछ रहस्यमय तरीके से समाप्त होता है, लेकिन कम विजयी नहीं, इस खबर के साथ कि यीशु मृतकों में से जी उठे हैं (16:1–8)। सबसे पुराने जीवित यूनानी पांडुलिपियों, जिन्हें आमतौर पर सबसे विश्वसनीय माना जाता है, पद 8 पर अंत होता है; हालांकि, अधिकांश पांडुलिपियों में अतिरिक्त 12 वचन शामिल हैं जो यीशु के अपने शिष्यों को दिखाई देने का विवरण देते हैं।

यह भी देखें यीशु मसीह की, जीवन और शिक्षाएं; मरकुस, यूहन्ना; मत्ती का, सुसमाचार; लुका का, सुसमाचार; सहदर्शी सुसमाचार.

मरकुस, यूहन्ना

बरनबास के चचेरे भाई; पौलुस और पतरस दोनों के साथी; दूसरे सुसमाचार के लेखक।

यरूशलेम में एक यहूदी परिवार के सदस्य, जो यीशु मसीह के प्रारंभिक विश्वासियों में से थे, यूहन्ना मरकुस का एक यहूदी और एक रोमी नाम था। रोमी नाम मरकुस शायद रोमी नागरिकता का प्रतीक था, जैसा कि पौलुस के मामले में था, या इसे तब अपनाया गया था जब वह अन्ताकिया में अन्यजाति कलीसिया की सेवा करने के लिए यरूशलेम से निकले थे (प्रेरि 12:25)। जब प्रभु के एक स्वर्गदूत ने पतरस को बन्दीगृह से मुक्त किया, तो प्रेरित सीधे "मरियम के घर गए, जो यूहन्ना की माता थीं, जिनका दूसरा नाम मरकुस था" (वचन 12)। यह घर, जिसमें एक बाहरी द्वार होने का वर्णन किया गया है, जो कई विश्वासियों के एकत्र होने के लिए पर्याप्त आकार का था और जिसकी सेवा रूदे नामक एक दासी द्वारा की जाती थी (वचन 12–13), स्पष्ट रूप से यह एक धनी परिवार का निवास था। इस घटना के समय तक (लगभग 44 ई.) मरकुस शायद पहले ही पतरस के व्यक्तिगत प्रभाव के माध्यम से परिवर्तित हो चुके थे (1 पत 5:13)। यह तथ्य है कि उन्हें बरनबास और शाऊल (पौलुस) के साथ अन्ताकिया जाने के लिए चुना गया था, यह दर्शाता है कि मरकुस को यरूशलेम में कलीसिया द्वारा उच्च सम्मान दिया गया था (प्रेरि 12:25)।

यूहन्ना मरकुस बरनबास और शाऊल के साथ उनके सुसमाचार प्रचार अभियान में उनकी सहायता करने के लिए गए थें (प्रेरि 13:5)। हालांकि, वह जल्द ही प्रेरितों को छोड़कर यरूशलेम लौट गए (वचन 13)। पवित्रशास्त्र इस परित्याग का कारण नहीं बताता है। शायद यात्रा की कठोरता और कठिनाइयों ने युवक को अभिभूत कर दिया। एक अन्य सम्भावित व्याख्या यह थी कि पाफुस में, यात्रा के कुछ ही समय बाद, पौलुस ने अगुवे और प्रवक्ता के रूप में आगे कदम रखा (वचन 13)। इसके बाद, प्रेरितों के काम (15:12, 25 स्वाभाविक अपवाद के साथ) में बरनबास और पौलुस के बजाय पौलुस और बरनबास की बात की गई है। शायद मरकुस को यह देखकर बुरा लगा कि उनके रिश्तेदार बरनबास, जो विश्वास में पौलुस से पहले थे (4:36–37) और जिन्होंने उन्हें प्रेरितों की संगति में शामिल किया था (9:27), सुसमाचार के कार्य में दूसरे स्थान पर आ गए। लेकिन मरकुस की वापसी का एक गहरा और अधिक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है। पौलुस की तरह, मरकुस भी "इब्रानियों में से एक इब्रानी" थे (फिलि 3:5)। इस कारण से, मरकुस ने पौलुस के केवल विश्वास के आधार पर बिना यहूदी व्यवस्था का पालन किए हुए अन्यजातियों को उद्धार का प्रस्ताव देने पर आपत्ति जताई होगी। यह उल्लेखनीय है कि सुसमाचार यात्रा (प्रेरि 13:5) पर मरकुस की उपस्थिति और पंफूलिया के पिरगा में उनके प्रस्थान (वचन 13) को दर्ज करते समय बाइबल केवल इब्रानी नाम यूहन्ना का उपयोग करती है। यह भी महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना मरकुस, अपने पूर्व सेवा स्थल, अन्यजातियों की कलीसिया अंताकिया में नहीं लौटे, बल्कि यरूशलेम की यहूदी कलीसिया में लौटे (वचन 13)। लूका का इतिहास दर्ज करता है कि "[पौलुस और बरनबास के बीच] असहमति इतनी तीव्र हो गई कि वे एक-दूसरे से अलग हो गए" (प्रेरि 15:39)। पौलुस के लिए सबसे अधिक भावनाएँ उस प्रश्न से जागृत होती थीं जो विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने पर था, और बरनबास ने इस बिन्दु पर अपनी कमजोरी प्रदर्शित की थी (गला 2:13)। इसलिए, यह उनके अलगाव का कारण हो सकता है: बरनबास और मरकुस साइप्रस के लिए, और पौलुस और सीलास एशिया के उपद्वीप में नई कलीसियाओं को मजबूत करने के लिए (प्रेरि 15:39–41)।

लगभग 11 वर्षों के बीतने के बाद, मरकुस फिर से बाइबल के अभिलेख में दिखाई देते हैं। कुलुस्सियों 4:10 और फिलेमोन 1:24 में, वह रोम में "वृद्ध पौलुस" के साथ है, जो वहाँ "यीशु मसीह के कैदी" के रूप में हैं (फिले 1:19)। उनके बीच का विभाजन अब ठीक हो चुका था, यहाँ तक कि पौलुस कहते हैं कि मरकुस और "खतना किए हुए लोगों में से केवल ये ही परमेश्वर के राज्य के लिये मेरे सहकर्मी हैं" (कुलु 4:11)। पौलुस अपनी अन्तिम पत्री में मरकुस को अपना अन्तिम सम्मान देते हैं। वह तीमुथियुस से कहते हैं, "मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न कर। केवल लूका मेरे साथ है मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिये वह मेरे बहुत काम का है" (2 तीमु 4:9, 11)। यद्यपि सभी ने पौलुस को कैसर नीरो के सामने उनके मुकदमे में छोड़ दिया था (वचन 16), मरकुस, जिन्होंने अपनी युवावस्था में भी प्रेरित को छोड़ दिया था, तीमुथियुस के साथ प्रिय पौलुस के पास आने का प्रयास करते हुए, इफिसुस से रोम तक यात्रा की।

1 पतरस 5:13 के अनुसार, प्रेरित पतरस ने मरकुस का अभिवादन बाबेल (जिसका अर्थ रोम था) में कलीसिया के अभिवादन के साथ भेजा, जो यह दर्शाता है कि मरकुस का "खतने के प्रेरित" पतरस के साथ निकट सम्बन्ध था (गला 2:9)। मरकुस के बारे में सबसे महत्वपूर्ण और विश्वसनीय अतिरिक्त-बाइबल परम्परा यह है कि वह पतरस के निकट सहयोगी थे। प्रारंभिक कलीसिया के पिताओं ने कहा कि इस सम्बन्ध ने मरकुस के सुसमाचार को जन्म दिया। मरकुस ने पतरस की यीशु के बारे में शिक्षाओं को ध्यान में रखकर उन्हें अपने सुसमाचार में प्रस्तुत किया, जिसे शायद रोम में 60 और 68 ई. के बीच लिखा गया था।

मरला

यहोशू 19:11 में जबूलून की पश्चिमी सीमा पर स्थित एक स्थान। *देखें*मरेल।

मरहम

विभिन्न तैयारियाँ, आमतौर पर तेल आधारित मसालेदार प्रकृति की होती हैं। फिलिस्तीन में, जैतून का तेल मलहम का मुख्य आधार था और इसे स्वयं मलहम माना जाता था। पुराना नियम "तेल" और "मलहम" के बीच अन्तर नहीं करता है। मिस्र और मेसोपोटामिया में, कई वनस्पति तेल और पशु चरबी मलहम का आधार बनते थे। वनस्पति तेलों में, कुछ महत्वपूर्ण तेलों में अरंडी का तेल, तिल का तेल, अलसी का तेल, मूली का तेल, कोलोसिंथ का तेल, और विभिन्न बादाम आदि से प्राप्त तेल शामिल हैं।

प्राचीन काल में मलहमों ने एक महत्वपूर्ण और प्रत्यक्ष भूमिका निभाई। पश्चिम एशिया की गर्म और शुष्क जलवायु में, मलहम सुरक्षा का एक उपाय प्रदान करते थे। व्यापक औषधीय उपयोग, सुखदायक गुण, और दुर्गन्ध को छिपाने में प्रभावशीलता ने मलहमों के उपयोग को सभी वर्गों के बीच एक वास्तविक आवश्यकता बना दिया। पुराने नियम औषधि विक्रेताओं या इत्र बनाने वालों (1 शमू 8:13; 2 इति 16:14) का उल्लेख करता है, एसे कारीगर जो अपने समाज में संगठित थे (नहे 3:8)।

सामान्यतः, मलहम सुगंधित पदार्थों को तेल में उबालकर बनाए जाते थे (पुष्टि करें अय्यू 41:31)। सुगंधित मलहम कुछ कच्चे माल और विशेष रूप से तैयार तेल का मिश्रण थे। पुराने नियम में, “सुगंधित" (श्रे.गी. 1:3) या “अनमोल” (सभो 7:1) जैसे योग्य शब्द सुगंधित तेलों को दर्शाते हैं। मलहम को कई तरह के बर्तनों में रखा जा सकता था, लेकिन संगमरमर से बने कुप्पी को प्राथमिकता दी जाती थी। संगमरमर के बर्तन में वह महंगा मलहम रखा गया था जिससे मरियम ने बैतनिय्याह में यीशु का अभिषेक किया था (मर 14:3)।

मलहम के कई उपयोग थे। खास तौर पर शेम के वंशज के बीच, मलहम ने महत्वपूर्ण सम्बन्ध बनाए। हारून, उसके बेटे, तम्बू और उसके सामान सभी को पवित्र अभिषेक तेल से पवित्र किया गया था। इस मिश्रण में लोबान, दालचीनी, सुगन्धित अगर और तज को जैतून के तेल के साथ मिलाया गया था (निर्ग 30:23–25)। राजाओं और भविष्यद्वक्ताओं का अभिषेक किया जाता था, लेकिन पवित्र अभिषेक तेल मिश्रण से नहीं।

एक सौंदर्य प्रसाधन के रूप में, सुगंधित मलहम अप्रिय दुर्गंधों को नियंत्रित करते थे। शरीर पर (2 शमू 12:20), कपड़ों पर (भज 45:8), या व्यक्तिगत वस्तुओं पर (नीति 7:17) पर इसका प्रयोग किया जाता था। महिलाएं त्वचा को साफ करने और अपनी त्वचा के आकर्षण को बढ़ाने के लिए मलहम का उपयोग करती थीं (एस्त 2:12)। कुछ मलहमों की खुशबू विपरीत लिंग का ध्यान आकर्षित करती थी (श्रे.गी. 4:10)। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि श्रेष्ठगीत में सुगंधित मलहमों के कई संदर्भ हैं।

मेहमानों को तरोताजा और आराम पहुँचाने के लिए मलहम का इस्तेमाल प्राचीन पश्चिम एशिया में आतिथ्य का प्रतीक था। मिस्र के लोग मेहमानों के सिर पर मलहम की शंकु रखते थे और शरीर पर टपकने देते थे (पुष्टि करें भज 133:2)। सम्मान और आदर के संकेत के रूप में, मेहमान के सिर पर तेल लगाया जाता था। यीशु ने एक फरीसी को डांटा जिसने आतिथ्य के इस पारम्परिक चिह्न की उपेक्षा की (लूका 7:37–40)। मरियम ने जटामांसी की एक महंगी कुप्पी से यीशु का अभिषेक किया, जो भारत की एक सुगंधित जड़ी-बूटी की जड़ों से प्राप्त एक सुगंधित तेल है (मर 14:3)।

गाड़े जाने की प्रक्रिया में मलहम का इस्तेमाल किया जाता था। नए नियम में शव को धोया जाता था (प्रेरि 9:37) और मलहम से अभिषेक किया जाता था (मर 16:1)। शव को मसालों और मलहमों के साथ सन के कपड़ों में लपेटा जाता था (लूका 23:56; यूह 19:40)। यहूदी और रोमी दोनों ही गाड़ने के लिए जटामांसी तेल का इस्तेमाल करते थे। यीशु के गाड़ने में लोबान और एलोवेरा का मिश्रण इस्तेमाल किया गया था।

मरहम का औषधीय उपयोग अक्सर होता था। घावों पर तेल लगाया जाता था (लूका 10:34)। मलहम (संभवतः एक सुगंधित गोंद) के औषधीय उपयोग प्रसिद्ध थे और यह गिलाद से जुड़ा हुआ है (यिर्म 8:22)। मलहम फिलिस्तीन से निर्यात की जाने वाली वस्तु थी (उत्प 37:25; यहेज 27:17)। बाइबल में लौदीकिया शहर द्वारा उत्पादित और निर्यात किए जाने वाले एक प्रसिद्ध नेत्र मरहम का उल्लेख किया गया है (प्रक 3:18)। रोमी काल में व्यापारियों के लिए मरहम एक महत्वपूर्ण वस्तु थी (18:13)।

तेल से अभिषेक करना खुशी और आनन्द से जुड़ा हुआ है (भज 45:7; यशा 61:3)। इसलिए, शोक के समय में अभिषेक करने से बचना चाहिए (2 शमू 14:2)। अभिषेक के

लिए तेल की कमी को न्याय के रूप में देखा जाता था (मीक 6:15)। ढालों को लचीला बनाने के लिए और संभवतः प्रक्षेपास्त्रों को मोड़ने में सहायता के लिए तेल से अभिषेक किया जाता था (2 शमू 1:21)।

यह भी देखें चिकित्सा और चिकित्सा अभ्यास; तेल; पौधे (जैतून, जैतून का पेड़)।

मरात

मरात

यहूदा की विरासत के नगरों में से एक, जो पहाड़ी देश में स्थित है (यहो 15:59), यह स्थान शायद आज के बेत उम्मार के सामान हो सकता है, जो हेब्रोन के उत्तर में सात मील (11.3 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित है। यह सम्भवतः मारोत के समान हो सकता है, जिसका उल्लेख मीका 1:12 में किया गया है।

मरातैम

मरातैम

नाम जो यिर्मयाह ने परमेश्वर के न्याय के संदर्भ में बाबेल के लिए उपयोग किया था (यिर्म 50:21)। हालांकि इसका अर्थ "दोहरा बलवा" या "दोगुना विद्रोही" है, यह शब्द बाबुल के दक्षिणी भाग *मर्रतु* के नाम पर एक शब्द-खेल (शब्द-प्रयोग) है। इस प्रकार परमेश्वर कहते हैं, "उस देश पर चढ़ाई कर, हे दोगुना विद्रोही ... और उसका पूर्ण रूप से सत्यानाश कर!"

मरायाह

मरायाह

बँधुआई के पश्चात यरूशलेम में योयाकीम के याजकत्व के समय में सरायाह के याजकीय कुल का प्रधान (नहे 12:12)।

मरायोत

1. एक लेवी, जो हारून से छः से सात पीढ़ी बाद हुआ (1 इति 6:6–7; एज्रा 7:3)।

2. अहीतूब का पुत्र और सादोक का पिता (1 इति 9:11; नहे 11:11); सम्भवतः #1 व्यक्ति के समान यद्यपि वंशावली में कुछ भिन्नताएँ हैं।

3. याजकीय घर जिसका मुखिया योयाकीम के दिनों में हेलकै था, निर्वासन के बाद के यरूशलेम में (नहे 12:15)। इसका पूर्वज मरेमोत के रूप में उल्लेखित है (पद 3)। कुछ लोग नहेम्याह 12:15 को एक लिपिकीय त्रुटि मानते हैं और 3 और 15 के पदों में दिए गए नामों को एक ही व्यक्ति के रूप में पहचानते हैं।

मरारी, मरारी के वंशज

मरारी, मरारी के वंशज

इब्रानी शब्द का लिप्यंतरण जिसका अर्थ है "कड़वा," "कड़वा पेय," या "कड़वा होना।" इसका अरबी और अक्कादी में एक ही अर्थ है, लेकिन उगारिटिक में इसका अर्थ "मजबूत करना, आशीर्वाद देना" है। परंपरागत रूप से, इस शब्द को इब्रानी भाषा से लिया गया माना जाता है और इस प्रकार इसका अर्थ "पित्त" या "कड़वाहट" होता है। लेकिन उगारिटिक मूल जिसका अर्थ "मजबूत करना, आशीष देना" इब्रानी विचार से परे नहीं है। जब इसे किसी व्यक्ति के नाम के रूप में उपयोग किया जाता है, तो इसे "शक्ति" या "आशीष" के अर्थ में समझा जाना चाहिए। इस तरह की समझ कई बाइबल सन्दर्भो में पसंद की जा सकती है। मरारी के मामले में, जो लेवी के तीसरे पुत्र हैं, यह समझ उनकी और उनके परिवार की महत्ता को दर्शाने में अधिक उपयुक्त है। सबसे छोटे पुत्र का नाम "पित्त" या "कड़वाहट" का अर्थ होना और फिर उनकी सेवा के लिए सबसे बड़ी जिम्मेदारी और सबसे बड़ा पुरस्कार प्राप्त करना असंगत है।

बाइबल में लेवी के पुत्र मरारी का कई बार उल्लेख किया गया है। वह लेवी के तीन पुत्रों में सबसे छोटे थे (उत्प 46:11; निर्ग 6:16–19; गिन 3:17–20, 33; 1 इति 6:1)। वह दो पुत्र, महली और मूशी के पिता थे (निर्ग 6:19; गिन 3:20), जिन पर तम्बू के तख्ते, बेंड़े, खम्भे, कुर्सियाँ, और सारा सामान ले जाने की जिम्मेदारी थी (गिन 3:36–37; 4:31–33; 7:8; 10:17; यहो 21:7, 34, 40)। उनके वंशजों को मरारियों के नाम से जाना जाता है। इतिहास के पुस्तकों में मरारी के परिवार का कई बार उल्लेख मिलता है, जो इनके महत्व को दर्शाता है (1 इति 6; 9; 15; 23; 26; 2 इति 29; 34)।

यह भी देखें याजक और लेवी; लेवी का गोत्र ।

मरियम

पहली सदी के यहूदियों में लोकप्रिय स्त्री नाम, जिसे नए नियम में छः (या सात) स्त्रियों द्वारा धारण किया गया था।

1. मरियम, यीशु की माता। मत्ती और लूका की प्रारंभिक कहानियों के अनुसार, मरियम एक युवा यहूदी कुँवारी थी,

संभवतः यहूदा के गोत्र से थी, जो अपनी मंगनी के दौरान यूसुफ (जो दाऊद के वंश से यहूदा के गोत्र का था) के साथ गर्भवती पाई गई थी। यह पवित्र आत्मा के प्रति उसकी समर्पण के कारण था (मत्ती 1:18–25; लूका 1:26–38)। इस जोड़े ने विवाह किया और पहले गलील के नासरत में रहे, फिर जनगणना के लिए बैतलहम (यूसुफ का गृहनगर) गए, जहां यीशु का जन्म हुआ (मत्ती 2:1; लूका 1:5; 2:4–5)। मत्ती हमें सूचित करते हैं कि जन्म के तुरंत बाद परिवार को हेरोदेस से बचने के लिए मिस्र भागना पड़ा (मत्ती 2:13–14)। बाद में, परिवार फिर से नासरत में रहने लगा (मत्ती 2:23; लूका 2:39)।

हमारे पास मरियम के बारे में अन्य जानकारी बहुत कम है। वह निश्चित रूप से एक चिंतित माता थी (जैसा कि लूका 2:48 में यीशु को डांटने से पता चलता है), और बाद में उसने यीशु की क्षमता का उच्च मूल्यांकन किया (जैसा कि काना के विवाह में, यूहन्ना 2:1–4 में)। उसकी देखभाल के लिए कई अन्य बेटे और बेटियाँ थे। वह क्रूस के नीचे दिखाई दी, जहाँ यीशु ने "प्रिय चेले" से उसके दुःख में उसकी देखभाल करने के लिए कहा (यूह 19:25–27)। पुनरुत्थान के बाद वह और यीशु के भाई उन चेलों में शामिल थे जिन्होंने पिन्तेकुस्त पर आत्मा का उंडेलना अनुभव किया (प्रेरितों के काम 1:14)। उसका आगे कोई उल्लेख नहीं किया गया है।

मरियम का स्तुति गीत, "मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है" (लूका 1:46–55) उसकी उत्कृष्ट विनम्रता और परमेश्वर की इच्छा में विश्वास को दर्शाता है। वह वास्तव में "स्त्रियों में धन्य है" (वचन 42)।

2. मरियम, याकूब और यूसुफ की माता। यह स्त्री कई नामों से जानी जाती है, लेकिन हर विवरण में वह यीशु की विश्वासयोग्य स्त्री चेलों में से एक के रूप में दिखाई देती है, जो क्रूस के पास खड़ी होती है और खाली कब्र की गवाह बनती है। मत्ती उसे "याकूब और यूसुफ की माता मरियम" या सिर्फ "दूसरी मरियम" (27:56, 61; 28:1) कहते हैं; मरकुस ने उसे "छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम," "योसेस की माता मरियम," या "याकूब की माता मरियम" (15:40, 47; 16:1) कहते हैं; यूहन्ना के सुसमाचार में, वह "क्लोपास की पत्नी मरियम" (19:25) है, हालांकि वह संभवतः एक अलग मरियम हो सकती है। परंपरा के अनुसार, यह मरियम यीशु की चाची थीं, क्योंकि क्लोपास यूसुफ के भाई थे (यूसिबियस की कलीसियाई इतिहास 3.11)।

3. मरियम मगदलीनी। हमें इस स्त्री के बारे में बहुत कम जानकारी है, सिवाय इसके कि उसका नाम यह दर्शाता है कि वह गलील के मगदला से थी। गलील में कहीं उसने यीशु से मुलाकात की, जिन्होंने उससे सात दुष्टात्माओं को निकाला। फिर वह चेलों के समूह में शामिल हो गई और यीशु का अनुसरण किया जहां भी वह गए (लूका 8:2), और अंत में यरूशलेम में क्रूस के नीचे पहुंची जब सभी पुरुष चेले भाग गए थे (मरकुस 15:40; यूहन्ना 19:25)। उसने यीशु के दफन को देखा (मर 15:47) और पुनरुत्थान से संबंधित घटनाओं की गवाही दी। मत्ती 28:1, मरकुस 16:1, और लूका 24:10 उसे उन अन्य स्त्रियों के साथ समूहित करते हैं जो कब्र पर गई थीं। यूहन्ना कहते हैं कि वह इन स्त्रियों में से पहली थी जिसने खाली कब्र की खोज की, पहली जिसने चेलों को सूचना दी, और पहली जिसने जी उठे मसीह को देखा जब वह कब्र के पास रुकी रही जबकि बाकी सभी जा चुके थे (यूहन्ना 20:1–2, 11–18)। हालाँकि, इस विश्वासयोग्य शिष्या को अपने प्रभु को छूने की अनुमति नहीं थी (वचन 17)।

4. बैतनिय्याह की मरियम। यह यहूदी मरियम मार्था और लाज़र की बहन थी। हम उसके बारे में तीन तथ्य जानते हैं। पहले, वह यीशु की इतनी समर्पित अनुयायी थी कि उसने उसकी बात सुनने के लिए अपने घरेलू कर्तव्यों की उपेक्षा की (लूका 10:38–42; यीशु ने इसे मंजूरी दी)।दूसरा, जब यीशु उसके भाई को मृत्यु से पहले चंगा करने नहीं आए, तो वह स्पष्ट रूप से नाराज थी (यूहन्ना 11:20, 28–33)। अंत में, यीशु की मृत्यु से पहले, उसने बैतनिय्याह में अपने घर पर भोज के दौरान उसे महंगे इत्र से अभिषेक किया (मत्ती 26:6–13; मरकुस 14:3–9; यूहन्ना 12:1–8)।

5. मरियम, यूहन्ना मरकुस की माता। यह स्त्री पवित्रशास्त्र में केवल एक बार दिखाई देती है (प्रेरितों के काम 12:12)। उसका घर सताए हुए कलीसिया का मिलन स्थल था। चूंकि यह जाहिर तौर पर बड़ा था और उसके पास नौकर थे, वह एक धनी स्त्री थी, शायद एक विधवा (क्योंकि किसी पति का उल्लेख नहीं है)। उसके घर में कलीसिया ने पतरस के लिए प्रार्थना की, और पतरस बन्दीगृह से रिहा होने के बाद वहां आया। पौलुस और शायद पतरस के साथ उनका पुत्र यूहन्ना मरकुस भी था।

6. रोम की मरियम। रोमियों 16:6 में पौलुस रोम में एक स्त्री का अभिवादन करता है जिसका नाम केवल "मरियम, जिसने तुम्हारे लिये बहुत परिश्रम किया" है। किसी समय वह यूनान या आसिया माइनर में रही होगी, शायद अक्विला और प्रिस्किल्ला के साथ रोम से निष्कासित होने के कारण (प्रेरितों के काम 18:2; सी 49 ई.)। वहां रहते हुए उसने पौलुस से मुलाकात की थी, शायद उनके द्वारा उसका मन परिवर्तित हुआ था, और उसने उनके साथ सुसमाचार प्रचार या कलीसिया की देखभाल के कार्य में कड़ी मेहनत की थी। 56 ई. तक (रोमियों की पुस्तक के लिए एक संभावित तिथि), वह रोम लौट आई थी। पौलुस द्वारा उसकी और रोम में रहने वाले उसके अन्य सहकर्मियों की प्रशंसा से वह प्रतिष्ठित हुई।

मरियम का गीत

मरियम का गीत

मरियम, यीशु की माता का गीत, लूका 1:46–55 में पाया जाता है। "मैग्नीफिकैट" शब्द गीत के पहले शब्द है जो लातीनी से आया है, जिसका अर्थ है "बड़ाई" या "बहुत प्रशंसा करना।"

यह गीत पुराने नियम के भजन संहिता की शैली में है और 1 शमू 2:1–10 में हन्ना की प्रार्थना के बहुत समान है। मसीहियों ने अपनी आराधना सेवाओं में बहुत पहले से ही "मैग्नीफिकैट या बड़ाई" का उपयोग करना शुरू कर दिया था। रोमन कैथोलिक चर्च ने इसे अपनी शाम की प्रार्थना सेवाओं का हिस्सा बना दिया था। बाद में, लूथरन और एंग्लिकन कलीसियाओं ने भी इसे अपनी सेवाओं में उपयोग करना शुरू कर दिया था।

कई सदियों से, अनेक संगीतकारों ने इस सुंदर स्तुति गीत के लिए संगीत रचा है। उन्होंने इसके लातीनी और कई अन्य पश्चिमी भाषाओं में संस्करण लिखे हैं।

मरियम मगदलीनी

मरियम मगदलीनी

यीशु का अनुसरण करने वाली कई मरियमों में से एक का नाम। यह मरियम पुनरुथित मसीह को देखने वाली पहली स्त्री थीं (यूह 20:11–18)। *देखें*मरियम #3।

मरियम मगदलीनी

*देखिए*मरियम #3।

मरीबा

मरीबा

1. संज्ञा का अर्थ है “संघर्ष”, जिसका नाम होरेब में एक स्थान के लिए रखा गया है, जो रपीदीम (वादी फ़ेरान) के पास है, जहाँ इस्राएल ने जंगल में भटकने की शुरुआत के समय मूसा के साथ पानी के लिए झगड़ा किया था (निर्ग 17:7)। यह वह स्थान है जिसका उल्लेख संभवतः व्यवस्थाविवरण 33:8 और भजन संहिता 95:8 में किया गया है, और इसे वैकल्पिक रूप से मस्सा कहा जाता है।

2. एक और जगह, सीन के जंगल में कादेश-बर्ने के पास, जहाँ इस्राएल ने पानी के लिए मूसा से विवाद किया था, और परमेश्वर ने फिर से एक चट्टान से पानी उपलब्ध कराया (गिन 20:13, 24; 27:14); इसे वैकल्पिक रूप से व्यवस्थाविवरण 32:51 में मरीबाथ-कादेश कहा जाता है। यह घटना मरूभूमि की यात्रा के अंत की ओर हुई। मरीबा का पानी विवाद का पानी था। यहां परमेश्वर का क्रोध मूसा और हारून पर भड़क उठा क्योंकि उन्होंने उनकी बात नहीं मानी और इस्राएल के सामने उन्हें पवित्र नहीं किया। परमेश्वर के आदेश के अनुसार चट्टान से बोलने के बजाय, मूसा—इस्राएलियों के हृदय की कठोरता पर क्रोधित होकर—अपनी छड़ी से चट्टान को दो बार मारा। भजनकार दर्ज करता है कि यहां परमेश्वर ने इस्राएलियों की परीक्षा ली (भज 81:7), और इस्राएलियों के बाद के बलवा ने मूसा को पाप करने के लिए उकसाया (106:32)। मरीबा-कादेश को इस्राएल की दक्षिणी सीमा पर एक स्थान के रूप में उल्लेख किया गया है (यहेज 47:19; 48:28)।

*यह भी देखें*मस्सा और मरीबा।

मरीबा-कादेश, मरीबा-कादेश

मरीबा-कादेश, मेरीबा-कादेश

कादेश-बर्ने (व्य.वि. 32:51; यहेज 47:19; 48:28) के वैकल्पिक नाम, जंगल में भटकने के दौरान इस्राएलियों द्वारा लंबे समय तक डेरा डालने का स्थान। *देखें*कादेश, कादेश-बर्ने।

मरीब्बाल

मपीबोशेत, योनातान के विकलांग पुत्र का मूल नाम (1 इति 8:34; 9:40)। इस नाम का अर्थ “बाल संघर्ष करता है” है और बाद में इसे मपीबोशेत नाम से प्रतिस्थापित किया गया, जिसका अर्थ “मूर्ति तोड़ने वाला” है 2 शमूएल 4:4 और 9:6 में। बाल (“प्रभु”) के लिए बोशेत (“शर्म”) का प्रतिस्थापन असामान्य नहीं था जब इस शब्द ने मूर्तिपूजक अर्थ प्राप्त किया (पुष्टि करें 2 शमू 11:21)। *देखें*मपीबोशेत #1।

मरूभूमि में भटकना

मरूभूमि में भटकना

*देखें*जंगल में भटकना।

मरेमोत

मरेमोत

1. याजक, ऊरिय्याह के पुत्र और हक्कोस के पोते (एज्रा 8:33; नहे 3:4, 21)। हक्कोस के परिवार को अपनी वंशावली साबित करने में असमर्थता के कारण याजक का पद नहीं मिला। मरेमोत एक अपवाद प्रतीत होते हैं। उन्होंने चाँदी और सोना तौला (एक याजकीय कार्य [एज्रा 8:24–30]), यरूशलेम की दीवार के एक हिस्से की मरम्मत की (नहे 3:4, 21), और वाचा पर मुहर लगाई (10:5)।

2. याजक और बानी के पुत्र, जिन्होंने एज्रा की विनती पर अपनी विदेशी पत्नी और बच्चों से सम्बन्ध तोड़ लिए (एज्रा 10:36)।

3. याजक जो जरूब्बाबेल के साथ बाबेल से लौटे (नहे 12:3) और नहेम्याह 12:15 में मरायोत नामक याजकों के घर की स्थापना की (हालांकि कुछ लोग इन दोनों संदर्भों को एक ही व्यक्ति के रूप में पहचानते हैं)।

मरैल

यह नगर जबूलून के गोत्र को विरासत में आवंटित की गई भूमि की पश्चिमी सीमा का हिस्सा चिन्हित करता है। यह सारेद और दब्बेशेत के बीच स्थित था (यहो 19:11 "मरला")।

मरोदक

मरोदक

सर्वोच्च बाबेली देवता, जिन्हें सृष्टि और भाग्य के देवता के रूप में पूजा जाता है। मरोदक (जिन्हें बेल भी कहा जाता है) मूल रूप से बाबेल के स्थानीय नगर के देवता थे। हालांकि, जैसे-जैसे बाबेल की शक्ति बढ़ी, मरोदक ने पूरे मेसोपोटामियन देवताओं के पंथ में प्रमुखता प्राप्त की। उनकी सर्वोच्चता की कहानी सृष्टि महाकाव्य *एनुमा एलिश* में बताई गई है, जहाँ मरोदक को आदिम अराजकता तियामत को हराने का श्रेय दिया जाता है; इसके बाद उन्होंने आकाश और पृथ्वी की रचना की। ज़ारपनित (सारपनित) मरोदक की पत्नी थीं, और बाबेल में एसागिला मंदिर उनके लिए बनाया गया था। यिर्मयाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि बाबुल को विनाश से बचाने में असमर्थ होने के कारण मरोदक को शर्मिंदा होना पड़ेगा (यिर्म 50:2; मेरोदाक—मरोदक का इब्रानी उच्चारण)।

मरोदक-बलदान

मरोदक-बलदान

नाम का अर्थ "मरदूक ने एक पुत्र दिया है!" 2 राजाओं 20:12–19 और यशायाह 39, बाबुल के राजा बलदान के पुत्र मरोदक-बलदान का एक समानांतर विवरण प्रस्तुत करते हैं, जिसने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के पास दूत भेजे थे।

अश्शूर के राजा शल्मनेसेर पंचम ने 722 ई.पू. में सामरिया पर कब्जा कर लिया और यरूशलेम में राजा हिजकिय्याह को धमकी दी, लेकिन फिर एक साल के भीतर उसकी मृत्यु हो गई। सर्गोन द्वितीय 722 ई.पू. में उसका उत्तराधिकारी बना। उस समय मरोदक-बलदान ने, जो बेबीलोन के दक्षिण में बित-याकिन नामक भूमि में रह रहा था, एलामियों के साथ एक गठबन्धन बनाया और बेबीलोन के सिंहासन पर कब्जा कर लिया, जिसे अश्शूरी मुकुट का दूसरा रत्न कहा जाता है। सर्गोन द्वितीय ने तुरन्त बेबीलोन को अश्शूरी साम्राज्य के एक प्रान्त के रूप में पुनः प्राप्त करने के प्रयास किए। वह शुरुआत में सफल नहीं हो सका, क्योंकि मरोदक बलदान ने बेबीलोन पर 10 वर्षों तक शासन किया। 710 ई.पू. में सर्गोन ने उसे हराने में सफलता प्राप्त की और बाबेली किलों पर कब्जा कर लिया। बरोदक बलदान बच निकला। 705 ई.पू. में सर्गोन की मृत्यु के बाद, 703 ई.पू. में मरोदक-बलदान ने फिर से बेबीलोन के सिंहासन पर अधिकार कर लिया, लेकिन यह शासन अल्पकालिक था। इसी संक्षिप्त शासनकाल में, उसने यहूदा के राजा हिजकिय्याह के पास दूत भेजे। माना जाता है कि उसने एदोम, मोआब, अम्मोन और अन्य राज्यों में भी दूत भेजे, ताकि अश्शूरियों के विरुद्ध एक गठबन्धन बनाया जा सके। बेबीलोन और पलिश्तीन के बीच की अरब मरूभूमि ने ऐसे गठबन्धन को अप्रभावी बना दिया और अश्शूर के नए राजा सन्हेरीब ने मरोदक-बलदान को पूरी तरह से नष्ट कर दिया और फिर पलिश्तीन में स्थित राष्ट्रों की ओर रुख किया।

यशायाह ने हिजकिय्याह को बेबीलोन के दूतों का स्वागत करने के लिए फटकार लगाई, जो प्रान्त अश्शूरी साम्राज्य से अलग हो गया था और जो बहुत ही कम समय में फिर से अश्शूरी साम्राज्य में शामिल हो गया था। यशायाह की फटकार में यह भविष्यवाणी छिपी थी कि बेबीलोन भविष्य में आक्रमणकारी और लूटने वाला देश बन जाएगा। हिजकिय्याह, जो अश्शूर की शक्ति और उस समय बेबीलोन की अश्शूर से निपटने की अक्षमता को जानते थे, बेबीलोन के सम्बन्ध में काफी सुरक्षित महसूस करते थे (2 रा 20:19)।

मर्क्यूरियस, मर्क्यरी

रोमी देवता। *देखे*हिर्मेस #1।

मर्सना

मर्सना

फारस और मादियों के सात राजकुमारों में से एक, जो राजा क्षयर्ष की सेवा करते थे। ये अधिकारी, राजा के बाद राज्य में सबसे शक्तिशाली लोग थे (एस्त 1:14)।

मलकिशूआ

*देखें*मलकिशूआ।

मलकी

मलकी

1. लूका 3:24 के अनुसार, यन्ना का पुत्र।
2. लूका 3:28 के अनुसार, अद्दी के पुत्र।
   *यह भी देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

मलकीराम

*देखें*मलकीराम।

मलखुस

यूहन्ना 18:10 में महायाजक के एक दास का नाम। यीशु की गिरफ्तारी के समय, पतरस ने तलवार से मलखुस का दाहिना कान काट दिया। मत्ती 26:51, मरकुस 14:47, और लूका 22:50–51 में इस व्यक्ति का नाम नहीं दिया गया है। लूका के अनुसार, यीशु ने तुरंत घाव को ठीक कर दिया।

मलत्याह

मलत्याह

गिबोन के वंशज, जिन्होंने नहेम्याह के समय पुराने फाटक के पास यरूशलेम की दीवार की मरम्मत में सहायता की (नहे 3:7)।

मलाकी की पुस्तक

यहूदी धर्मग्रंथ की अंतिम भविष्यवाणी की पुस्तक; पुराने नियम की अंतिम पुस्तक।

पूर्वावलोकन

- लेखक
- पृष्ठभूमि
- तिथि
- उद्देश्य और धर्मशास्त्र
- विषयवस्तु

लेखक

मलाकी नाम का अर्थ है "मेरा दूत" या "प्रभु का दूत"। चूंकि यह शब्द 3:1 में आता है, कुछ विद्वानों का मानना है कि यह कोई वास्तविक नाम नहीं है और यह पुस्तक के लेखक का नाम नहीं बताता है। एक प्राचीन परंपरा के अनुसार, "दूत" एज्रा था, जो एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकों के लिए उत्तरदायी याजक था। फिर भी यहूदियों के लिए यह बहुत ही असामान्य बात होगी कि वे किसी भविष्यवाणी की पुस्तक को उसके लेखक का नाम स्पष्ट रूप से जोड़े बिना संरक्षित रखें। अन्य सभी बड़े और छोटे भविष्यवक्ताओं—जिसमें ओबद्दाह भी शामिल हैं—का नाम एक विशेष भविष्यवक्ता के नाम पर रखा गया है। इसके अलावा, "प्रभु का दूत" एक भविष्यवक्ता के लिए सबसे उपयुक्त नाम होगा (पुष्टि करें 2 इति 36:15–16; हाग् 1:13)।

पृष्ठभूमि

पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान, यहूदा में संघर्षरत यहूदी समुदाय को एज्रा और नहेम्याह की वापसी से बहुत सहायता मिली। 458 ईसा पूर्व में, फारस के राजा अर्तक्षत्र ने एज्रा को निर्वासितों के एक समूह को यरूशलेम वापस ले जाने और धार्मिक सुधार स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। लगभग 13 साल बाद, 445 ईसा पूर्व में, नहेम्याह नामक एक उच्च-स्तरीय सरकारी अधिकारी को यरूशलेम जाने और शहर की दीवारों को फिर से बनाने की अनुमति दी गई, जिसे उन्होंने 52 दिनों में पूरा किया (नहे 6:15)। राज्यपाल के रूप में, नहेम्याह ने एक वित्तीय सुधार का नेतृत्व किया जिसमें गरीबों के लिए प्रावधान किया गया और याजकों और लेवियों की सहायता करने के लिए दसवाँ अंश देने को प्रोत्साहित किया गया (5:2–13; 10:35–39)। एज्रा की तरह, नहेम्याह ने लोगों से सब्त का पालन करने और अन्यजातिय मूर्तिपूजक पड़ोसियों के साथ विवाह न करने का आग्रह किया। 12 साल के कार्यकाल के बाद, नहेम्याह फारस लौट आए और यहूदा की आध्यात्मिक स्थिति फिर बिगड़ गई। शायद अपनी राजनीतिक शक्ति की कमी से हतोत्साहित होकर, दसवाँ अंश देना अनियमित हो गया, सब्त का पालन नहीं किया गया, अंतरविवाह आम हो गया, और यहां तक कि याजकों पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता था। जब नहेम्याह कुछ समय

बाद यरूशलेम वापस आए, तो उन्हें स्थिति को सुधारने के लिए कड़े कदम उठाने पड़े (13:6–31)।

तिथि

चूंकि मलाकी को उन्हीं पापों से निपटना पड़ा जिनका उल्लेख नहेम्याह 13 में किया गया है (देखें मला 1:6–14; 2:14–16; 3:8–11), यह संभावना है कि भविष्यवक्ता ने या तो नहेम्याह के दूसरे कार्यकाल के दौरान या उनके लौटने से ठीक पहले के वर्षों में सेवा की। मलाकी 1:8 में "राज्यपाल" का संदर्भ यह संकेत देता है कि नहेम्याह के अलावा कोई और पद पर था, इसलिए मलाकी को 433 ईसा पूर्व के बाद रखना सबसे अच्छा हो सकता है, वह वर्ष जब नहेम्याह फारस लौट आया था।

उद्देश्य और धर्मशास्त्र

मलाकी को यहूदा के लोगों को उनकी आध्यात्मिक सुस्ती से झकझोरने और उन्हें चेतावनी देने के लिए लिखा गया था कि यदि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया तो न्याय आने वाला है। लोगों ने परमेश्वर के प्रेम (1:2) और न्याय (2:17) पर संदेह किया और उनके आदेशों को गंभीरता से नहीं लिया (1:6; 3:14–18)। फिर भी परमेश्वर "एक महान राजा" थे (1:14) जिनका महान नाम था जिनसे इस्राएल की सीमा से परे भी डरना था (पद 5, 11)। मलाकी ने बार-बार याजकों और लोगों से आग्रह किया कि वे परमेश्वर का सम्मान करें और उन्हें वह सम्मान दें जिसके वे हकदार हैं। परमेश्वर इस्राएल के पिता और सृष्टिकर्ता थे (2:10), लेकिन राष्ट्र ने उनके नाम का तिरस्कार किया (1:6; 3:5)। इस तिरस्कार के जवाब में, परमेश्वर अपने दूत को प्रभु के दिन की घोषणा करने के लिए भेजेंगे (3:1)।यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने राष्ट्र को पश्चाताप के लिए बुलाया, और मसीह मंदिर को शुद्ध करने (यूह 2:14–15) और वाचा स्थापित करने के लिए (मलाकी 3:1–2) आएं। अधिकांश सुधार और शुद्धिकरण का कार्य द्वितीय आगमन पर होगा, जब मसीह अपने लोगों को शुद्ध करने (पुष्टि करें पद 2–4) और दुष्टों का न्याय करने (4:1) के लिए लौटेंगे।

विषयवस्तु

इस्राएल के लिए परमेश्वर का महान प्रेम (1:1–5)

पुस्तक का परिचय देने के लिए, मलाकी इस्राएल के लिए परमेश्वर के प्रेम और एदोम के प्रति उनकी घृणा के बीच एक अंतर प्रस्तुत करता है। फिर भी परमेश्वर के प्रेम के दावे का स्वागत एक अजीब सवाल से किया जाता है: "आपने हमसे कैसे प्रेम किया?" परमेश्वर ने मिस्र की गुलामी से मुक्त करने के तुरंत बाद, सीनै पहाड़ पर इस्राएल राष्ट्र के साथ एक वाचा में प्रवेश करके उनसे प्रेम किया। उन्होंने उन्हें अपने विशेष लोग के रूप में चुना था (पुष्टि करें उत 12:1–3; निर्ग 19:5–6), जबकि एसाव के वंशज चुने नहीं गए थे (पुष्टि करें रोम 9:10–13)। इस्राएल और एदोम दोनों ने आक्रमण और विनाश सहा, लेकिन केवल इस्राएल को निर्वासन के बाद पुनर्स्थापित और पुनर्निर्मित किया गया। एदोम के लोगों को 550 और 400 ईसा पूर्व के बीच नबातियों द्वारा उनके मातृभूमि से निकाल दिया गया था, और वे कभी भी अपनी भूमि वापस नहीं पा सके। एदोम के न्याय के माध्यम से, परमेश्वर ने दिखाया कि वह राष्ट्रों का महान शासक हैं (मला 1:5) और वह इस्राएल को नहीं भूलेंगे।

याजकों की अस्वीकार्य बलिदान (1:6–14)

हालांकि परमेश्वर इस्राएलियों के सम्मान और श्रद्धा के योग्य थे, फिर भी लोग और याजक दोनों खुलेआम उनकी विधियों और नियमों की अवहेलना करते थे। अजीब बात यह थी कि अवज्ञा में सबसे आगे याजक ही थे। बलिदान और भेंट पाप का प्रायश्चित करने के लिए मानी जाती थीं, लेकिन याजकों द्वारा चढ़ाए गए पशु केवल वेदी को प्रदूषित या अपवित्र करने का काम करते थे (1:7, 12)। लैव्यव्यवस्था के अनुसार, दोषयुक्त पशु बलिदान के रूप में अस्वीकार्य थे, लेकिन मलाकी उल्लेख करता है कि याजक प्रभु को चुराई हुई और विकृत, अपंग और बीमार पशु अर्पित कर रहे थे (वचन 13; पुष्टि करें, पद 8)। उनके तिरस्कार को उजागर करने के लिए, प्रभु ने याजकों को राज्यपाल के लिए तुलनीय उपहार लाने की चुनौती दी। क्या वे इस तरह से उसका अपमान करने की हिम्मत करेंगे और निश्चित अस्वीकृति का सामना करेंगे? याजकों के अयोग्य बलिदानों को वेदी पर लाने के बजाय, प्रभु ने उनसे मंदिर के दरवाजे पूरी तरह से बंद करने के लिए कहा (पद 10)। विधियों को बस पूरा करना कभी भी परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करता, न ही प्राचीन काल में (पुष्टि करें यशा 1:12–13) और न ही आधुनिक काल में। वेदी और उसके बलिदानों को "अवमाननीय" (मला1:7, 12) कहकर याजक एली के दुष्ट पुत्रों से बेहतर नहीं थे, जिनकी बलिदानों के नियमों की अवहेलना ने उन्हें समय से पहले मृत्यु की ओर भेज दिया (पुष्टि करें 1 शमू 2:15–17)।

याजकों के दृष्टिकोण के बिलकुल विपरीत, मलाकी 1:11 और 14 में परमेश्वर की महानता पर जोर दिया गया है। परमेश्वर अन्य राष्ट्रों के देवताओं से अधिक शक्तिशाली हैं, और भले ही इस्राएल के याजक और लोग प्रभु का अपमान करें, अंततः विश्वास करने वाले गैर-यहूदियों द्वारा शुद्ध भेंटें परमेश्वर को लाई जाएंगी। शायद ये भेंट प्रार्थना और स्तुति को संदर्भित करती हैं (पुष्टि करें भज 19:14; इब्रा 13:15; प्रका 5:8), लेकिन अन्य लोग इस संदर्भ को अधिक शाब्दिक रूप से समझते हैं (पुष्टि करें यशा 56:7; 60:7)। कुरनेलियुस के परिवर्तन के संदर्भ में पतरस शायद इस पद की ओर संकेत देते हैं। (प्रेरितों 10:35)।

याजकों की सजा (2:1–9)

याजकों का एक कार्य लोगों पर परमेश्वर के नाम में आशीर्वाद देना था, लेकिन उनके अपमानजनक व्यवहार ने

आशीर्वाद को श्राप में बदल दिया (मला 2:2)। याजकों के पापपूर्णता और पशुओं की खराब स्थिति के कारण, उनके बलिदान भी व्यर्थ थे, और यह संकेत देने के लिए कि परमेश्वर उनका तिरस्कार करते हैं, उन पशुओं की अंतड़ियों को उनके चेहरों पर फैला दिया जाएगा। याजकों पर डाली गई बदनामी हारून और उनके वंशजों द्वारा प्राप्त सम्मान से बिल्कुल विपरीत है। मलाकी जीवन और शांति की एक वाचा का उल्लेख करता है (5), जो लेवी और विशेष रूप से हारून के पोते पीनहास के साथ की गई थी, जिन्होंने मूर्तिपूजा और अनैतिकता में शामिल यहूदियों के खिलाफ साहसपूर्वक कार्रवाई की थी (गिन 25:10–13)। उन दिनों में याजक प्रभु का सम्मान करते थे और कई लोगों को पाप से फेर देते थे (मला 2:6)।

याजकों की एक और जिम्मेदारी थी कि वे राष्ट्र को मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था सिखाएं (पुष्टि करें लैव 10:11)। भविष्यवक्ताओं की तरह, वे प्रभु के दूत थे (मला 2:7) जिन्हें प्रभु के निकट चलना चाहिए था, लेकिन अब याजकों ने व्यवस्था की अवहेलना की और न्यायिक निर्णयों में बेईमानी की (मला 2:9; पुष्टि करें लैव्य 19:15)।

लोगों का अविश्वास (2:10–16)

याजकों के रवैये को देखते हुए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि बड़े पैमाने पर लोग प्रभु के प्रति अविश्वासयोग्य थे। परमेश्वर ने इस्राएल को अपने विशेष लोगों के रूप में बनाया था, लेकिन लोगों ने उनके साथ विश्वासघात किया था। उनके अविश्वासयोग्यता का एक प्रमुख कारण अन्यजातियों के साथ विवाह करना था, एक पाप जिसका उल्लेख एज्रा 9:1–2 और नहेम्याह 13:23–29 में किया गया है। मूर्तिपूजाक अन्यजातिय महिलाओं से विवाह करके, इस्राएल के पुरुष भी अन्यजातियों के देवताओं की उपासना करने लगे और प्रभु से विमुख हो गए। जब इस तरह का अंतर्विवाह होता था, तो कभी-कभी इस्राएली पत्नी से तलाक भी होता था। मला 2:14–15 में परमेश्वर उस पवित्र प्रतिबद्धता पर जोर देते हैं जिसका गवाह वह स्वयं होते हैं जब दो लोग विवाह करते हैं। यदि वह विवाह की वाचा तलाक के कारण टूट जाती है, तो परमेश्वर बहुत अप्रसन्न होते हैं। और यह और भी दुखद है अगर तलाक एक अधिक आकर्षक विदेशी से विवाह करने का बहाना बन जाए।

वाचा के दूत का आगमन (2:17–3:5)

याजकों और लोगों के पापों पर किसी का ध्यान नहीं गया, भले ही राष्ट्र को संदेह था कि परमेश्वर कोई कार्रवाई करेंगे या नहीं (2:17)। लेकिन तीसरा अध्याय इस घोषणा के साथ शुरू होता है कि वाचा का दूत वास्तव में अपने मंदिर में आएंगे। उनका मार्ग किसी अन्य दूत द्वारा तैयार किया जाएगा - यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे की गई भविष्यवाणी, जिसने मसीह की सेवकाई के लिए मार्ग तैयार किया (पुष्टि करें मत्ती 11:10; मर 1:2–3)। जब यीशु मसीह आए, तो उन्होंने मंदिर को साफ करते समय अपना क्रोध प्रकट किया (पुष्टि करें यूह 2:13–17) और शास्त्रियों और फरीसियों की निंदा की (पुष्टि करें 9:39) लेकिन उनके अधिकांश शुद्धिकरण और सुधार कार्य दूसरे आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। किसी दिन याजक और लेवी स्वीकार्य बलिदान लाएंगे, जैसा कि उन्होंने मूसा और पीनहास के दिनों में किया था (पुष्टि करें, मला 3:3–4 और 2:4–5)। अध्याय 3 के 5वें पद में जब जादूगरों, व्यभिचारियों और गरीबों पर अत्याचार करने वालों की निंदा की जाती है तब न्याय के दायरे को विस्तृत करते हुए सम्पूर्ण राष्ट्र को इसमें शामिल किया गया।

वफ़ादारी से दशमांश देने के लाभ (3:6–12)

निर्वासन के बाद के यहूदा की एक और विशिष्ट कमजोरी, लोगों द्वारा अपने दशमांश को प्रभु के पास लाने में विफलता थी। नहेम्याह से प्रोत्साहित होकर, राष्ट्र ने ईमानदारी से दशवां अंश देने का वादा किया (पुष्टि करें, नहे 10:37–39), लेकिन जाहिर तौर पर उनके अच्छे इरादे अल्पकालिक थे (पुष्टि करें, 13:10–11)। मलाकी 3:8–9 के अनुसार, राष्ट्र का दशमांश इतना निराशाजनक था कि लोग वास्तव में, परमेश्वर को लूट रहे थे और इसलिए श्राप के अधीन थे। पद 10–12 में मलाकी राष्ट्र को अपना दशमांश लाने के लिए चुनौती देता है; तब परमेश्वर उन पर अपनी आशीष बरसाएंगे। जिस तरह 2 राजाओं 7:2,19 में "आकाश के झरोखे" खुलने का मतलब अकाल का अंत था, उसी तरह परमेश्वर ने वादा किया है कि उनकी फसलें इतनी प्रचुर होंगी कि उनके भंडारगृह में जगह खत्म हो जाएगी। मलाकी 3:10 और 12 में "आशीष" की आशा 1:14, 2:2, 3:9, और 4:6 में उल्लिखित श्रापों से राहत प्रदान करती है।

प्रभु का दिन (3:13–4:6)

मलाकी 3:10–12 की चुनौती का सामना करते हुए, इस्राएल के लोगों ने दो अलग-अलग तरीकों से प्रतिक्रिया दी। एक समूह ने इस बात से इनकार किया कि परमेश्वर की सेवा करने से कोई लाभ होता है (3:13–15), जबकि राष्ट्र का एक अन्य वर्ग गहरी श्रद्धा के साथ उनके सामने झुक गए (पद 16–18)। अविश्वासियों ने तर्क दिया कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना व्यर्थ था और अहंकारी और दुष्ट लोग ही समृद्ध होते थे। उनके आरोप के जवाब में, मलाकी ने कहा कि परमेश्वर न्याय के दिन स्मरण रखेंगे कि धर्मी कौन थे। हालाँकि अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा में समस्त इस्राएल को शामिल किया गया था, परन्तु केवल वे लोग जो वास्तव में विश्वास करते थे, वे ही परमेश्वर की अनमोल सम्पत्ति होंगे (3:17; पुष्टि करें, निर्ग 19:5), और उनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे जाएंगे (पुष्टि करें, मला 3:16)। जहाँ तक अभिमानियों और कुकर्मियों का प्रश्न है, प्रभु का दिन उन्हें नष्ट कर देगा और उनमें से कोई जीवित नहीं बचेगा (4:1)। जो लोग परमेश्वर का आदर करते हैं वे परमेश्वर जिन्हें

"धार्मिकता का सूर्य" कहा जाता है उनके आशीष और सुरक्षा के तहत आध्यात्मिक और शारीरिक स्वास्थ्य का आनंद लेंगे (पद 2)। कैद से छूटे बछड़ों की तरह, धर्मी लोग दुष्टों को रौंद डालेंगे और उन पर विजय प्राप्त करेंगे (पद 3)।

प्रभु के दिन से जुड़े दण्ड को ध्यान में रखते हुए, मलाकी ने लोगों से पश्चाताप करने का आग्रह किया। ऐसा करने के लिए उन्हें मूसा की व्यवस्था पर ध्यान देने और सीनै पहाड़ पर दिए गए आदेशों और आज्ञाओं को गंभीरता से लेने की आवश्यकता थी (4:4; पुष्टि करें, 3:7)। जिस प्रकार एलिय्याह ने इस्राएल से परमेश्वर की ओर लौटने का आह्वान किया, उसी प्रकार एक नया "एलिय्याह" एक विद्रोही राष्ट्र को पश्चाताप का उपदेश देगा। जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु मसीह के लिए मार्ग तैयार किया (पुष्टि करें, मला 3:1), तब उन्होंने "एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य में" सेवा की और यहूदियों से अपने पाप से फिरने और परमेश्वर के सामने खुद को विनम्र करने का आग्रह किया (लूका 1:17)। यदि उन्होंने सुनने से इंकार कर दिया, तो राष्ट्र को पूर्ण विनाश की संभावना का सामना करना पड़ेगा, ऐसा श्राप जो कनान के लोगों पर (पुष्टि करें, यहो 6:17–19) और एदोम राष्ट्र पर भी लगाया गया, जिसके पतन का वर्णन मलाकी 1:2–5 में किया गया है।

यह भी देखें: इस्राएल का इतिहास; निर्वासन के बाद की अवधि; भविष्यवाणी, भविष्यवक्ता, भविष्यवक्तिन।

मलाकी (व्यक्ति)

पुराने नियम की अंतिम पुस्तक का लेखक (मल 1:1)। भविष्यद्वक्ता मलाकी लगभग 500–460 ईसा पूर्व के आसपास रहते थे। उनके नाम का अर्थ "मेरा स्वर्गदूत" या "मेरा दूत" है और इसे मलाकी 3:1 और अन्य स्थानों में इसी तरह अनुवादित किया गया है। पुस्तक के अलावा जो उनके नाम को धारण करती है, बाइबल से उनके बारे में और कुछ ज्ञात नहीं है। अप्रमाणिक पुस्तक 2 एसड्रास 1:40 में उन्हें "मलाकी, जिन्हें प्रभु का दूत भी कहा जाता है" के रूप में पहचाना गया है। रब्बी परम्परा सुझाव देती है कि मलाकी संभवतः एज्रा नामक शास्त्री का दूसरा नाम था, यद्यपि इस पहचान के लिए कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

यह भी देखें मलाकी की पुस्तक; भविष्यद्वक्ता और भविष्यवक्त्री।

मलिकिसिदक

मलिकिसिदक

मलिकिसिदक का के.जे.वी अनुवाद, जो शालेम के याजक और राजा थे, जिन्होंने इब्रानियों 5–7 में अब्राहम को आशीष दिया। *देखें*मलिकिसिदक।

मलिकिसिदक

रहस्यमय बाइबल व्यक्तित्व जिसका नाम "धार्मिकता का राजा" है। इस याजक-राजा के बारे में ऐतिहासिक विवरण उत्पत्ति 14:18–20 में है, और इसका उल्लेख भजन संहिता 110:4 और इब्रानियों 5:10; 6:20; 7:1–17 में किया गया है।

उत्पत्ति 14:18–20 में

एलाम के राजा कदोर्लाओमेर ने तीन अन्य मेसोपोटामिया के राजाओं के साथ मिलकर खारे नदी के किनारे पांच राजाओं के एक अधीन संघ पर हमला किया। आगे चलकर मेसोपोटामियन संघ द्वारा हुए मार-काट और भगदड़ में, अब्राहम के भतीजे लूत और उनके परिवार और सम्पत्ति को पकड़ लिया गया (उत 14:1–12)। अब्राहम ने लूत के बन्दी बनाने वालों का पीछा करते हुए एक आक्रमणकारी सेना की अगुवाई की, विजय प्राप्त की, लूत को पुनः प्राप्त किया, और लूत और उसके परिवार की रिहाई सुनिश्चित की (वचन 13–16)।

वापसी पर, अब्राहम का स्वागत न केवल खारे नदी संघ के आभारी राजाओं द्वारा किया गया, बल्कि शालेम के राजा मलिकिसिदक द्वारा भी किया गया, जिन्होंने अब्राहम को रोटी और दाखमधु के साथ-साथ "परमप्रधान परमेश्वर का याजक" के रूप में आशीष दी ('एल 'एल्योन) (उत 14:18)। शालेम यरूशलेम है (विचार विमर्श भज 76:2)। परमप्रधान परमेश्वर यहोवा कनानी उपासना के अन्यजाति देवता नहीं हैं, बल्कि सच्चे परमेश्वर का शीर्षक हैं जिन्होंने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की—जो कनानी धर्म के लिए एक अन्यजाति विचार है (विचार विमर्श उत 14:22; भज 7:17; 47:2; 57:2; 78:56)। मलिकिसिदक ने सही ढंग से अब्राहम को उसी परमेश्वर की आराधना करते हुए देखा (उत 14:22) और अब्राहम को विजय देने के लिए परमेश्वर की स्तुति की। अब्राहम ने खुद को मलिकिसिदक द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए एक सच्चे परमेश्वर की आराधना के साथ पहचाना, जिसमें उन्होंने उनके भेंट और आशीष प्राप्त किए और उन्हें सब कुछ का दसवाँ अंश दिया, इस प्रकार मलिकिसिदक की उच्च आत्मिक स्थिति को एक कुलपिता याजक के रूप में मान्यता दी। इसके विपरीत, अब्राहम ने सदोम के राजा से भेंट को ठुकराकर कनानी बहुदेववाद से स्वयं को अलग कर लिया।

यह अनुमान लगाना दिलचस्प है कि क्या मलिकिसिदक को सच्चे परमेश्वर का ज्ञान पिछले युगों से जलप्रलय के करीब से परंपरा द्वारा प्राप्त हुआ था, या क्या वह, अब्राहम की तरह, प्रत्यक्ष ईश्वरीय प्रकाश द्वारा बहुदेववाद से एकेश्वरवाद की ओर उखाड़ फेंका गया था। यह कम से कम इब्रानियों 7:3 से स्पष्ट है कि उसका याजकपद पृथक था और याजक वंशावली के माध्यम से प्राप्त नहीं हुआ था।

भजन संहिता 110:4 में

इस मसीहाई भजन में, दाऊद ने अपने से महान एक को देखा जिसे उन्होंने "यहोवा" कहा (वचन 1; विचार विमर्श मरकुस 12:35–37)। इस प्रकार आदर्श मसीहाई राजा वर्तमान शासक का आदर्शीकरण नहीं था बल्कि आने वाले किसी शासक का आदर्शीकरण था। साथ ही, उसे केवल एक व्यक्ति नहीं बल्कि इससे भी बढ़कर बनना था। मसीहा परमेश्वर का पुत्र होने के साथ-साथ दाऊद का पुत्र भी होगा। ईश्वरीय भविष्यद्वाणी भजन संहिता 110:4 मसीह को संबोधित है: "तू मलिकिसिदक की रीति पर सर्वदा का याजक है।" इस कथन का महत्व इब्रानियों को लिखे पत्र के प्रेरित लेखक पर छोड़ दिया गया है।

इब्रानियों 5:6–11; 6:20–7:28

इब्रानियों के लेखक का तर्क है कि हारून की याजकता को मसीह की श्रेष्ठ याजकता द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया है और मसीह की याजकता की श्रेष्ठता को उनके मलिकिसिदकीय चरित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है। पहले, दोनों मसीह और मलिकिसिदक धार्मिकता के राजा और शांति के राजा हैं (इब्रा 7:1–2)। दूसरा, दोनों के पास एक अद्वितीय याजकपद है जो पारिवारिक वंशावली पर निर्भर नहीं करता है (वचन 3)। तीसरा, दोनों सदा के लिए याजक बने रहते हैं (वचन 3)।

मलिकिसिदक, लेवी के पिता, अब्राहम से श्रेष्ठ थे क्योंकि मलिकिसिदक ने अब्राहम को भेंट दिए और उन्हें आशीष दी, और उनसे दसवाँ अंश प्राप्त किया (7:4–10); दाऊद ने लेवीय याजकपद के ऊपर मलिकिसिदकीय याजकपद के उत्तराधिकार की भविष्यद्वाणी की, जो लेवीय याजकपद की अपूर्णता को दर्शाता है (वचन 11–19); मसीह के मलिकिसिदकीय याजकपद की पुष्टि एक ईश्वरीय शपथ द्वारा की गई थी, जो लेवीय याजकपद के लिए सच नहीं था (वचन 20–22); और मलिकिसिदकीय याजकपद का चरित्र अपरिवर्तनीय और स्थायी था (वचन 23–25)।

कुछ विद्वानों ने सोचा है कि मलिकिसिदक पुराने नियम में पूर्व देहधारण मसीह का एक प्रकट रूप था (तकनीकी रूप से इसे मसीह प्रकट होना कहा जाता है)। वे इसका तर्क इब्रानियों 7:3 के आधार पर करते हैं, जिसमें कहा गया है कि उसके पिता या माता या किसी भी पितरों का कोई लेखक नहीं है—उनके जीवन का कोई आरंभ या अंत नहीं है। हालांकि, इस कथन को केवल इस अर्थ में समझा जाना चाहिए कि उनका याजकपद किसी भी याजक परिवार से जुड़ी नहीं था।मलिकिसिदक को विशेष ईश्वरीय नियुक्ति द्वारा एक याजक पद प्राप्त हुआ था, और इस प्रकार वह अपने याजकपद में यीशु मसीह का एक प्रकार था। इब्रानियों के लेखक कहते हैं कि मलिकिसिदक "परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप" था (7:3); यह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि वह स्वयं परमेश्वर का पुत्र नहीं था।

यह भी देखें इब्रानियों को पत्र; याजक और लेवीय।

मलेआह

मलेआह

लूका 3:31 के अनुसार, यीशु के एक पूर्वज हैं।

देखें यीशु मसीह की वंशावली।

मल्काम

बिन्यामीन के गोत्र से शहरैम का पुत्र (1 इति 8:9)।

मल्काम

1. 1 इतिहास 8:9 में उल्लेखित। *देखें* मल्काम।

2. सपन्याह 1:5 में केजेवी में मिल्कोम का रूप, एक अम्मोनी देवता। *देखें* मिल्कोम।

मल्कियाह

देखें मल्कियाह।

मल्कियाह

1. गेर्शोन के वंशज, 1 इतिहास 6:40 में उल्लेखित। *देखें* मल्कियाह #1।

2. एज्रा 10:25 में परोश के पुत्र, मल्कियाह का उल्लेख। *देखें* मल्कियाह #4।

3. एज्रा 10:31 में हारीम के पुत्र मल्कियाह का उल्लेख। *देखें* मल्कियाह #6।

4. नहेम्याह 3:14 में रेकाब के पुत्र, मल्कियाह का उल्लेख। *देखें* मल्कियाह #7।

5. नहेम्याह 3:31 में सुनार मल्किय्याह का उल्लेख। *देखें* मल्किय्याह #8।

6. नहेम्याह 8:4 में एज्रा के सहायक, मल्किय्याह का उल्लेख। *देखें*मल्किय्याह #9।

7. नहेम्याह 11:12 में अदायाह के पूर्वज मल्किय्याह का उल्लेख। *देखें*मल्किय्याह #2।

8. मल्किय्याह का उल्लेख, वह शाही राजकुमार जिसके गड्ढे में यिर्मयाह को कैद किया गया था (यिर्म 38:6)। *देखें* मल्किय्याह #12

मल्किय्याह

1. गेर्शोन का वंशज, जिसे दाऊद द्वारा अपने परिवार के साथ मन्दिर के संगीतकार के रूप में सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया था (1 इति 6:40)।

2. दाऊद के समय में सेवा करने वाला एक याजक (1 इति 9:12)। उसके वंशज जरूब्बाबेल के साथ यरूशलेम लौटने वालों में शामिल थे (नहे 11:12)।

3. दाऊद के शासनकाल में एक याजक (1 इति 24:9); सम्भवतः ऊपर दिए गए #2 के समान।

4. परोश का पुत्र, जिसने एज्रा की इस सलाह का पालन किया कि बँधुआई के बाद अपनी अन्यजातिय पत्नी को तलाक दें (एज्रा 10:25)।

5. परोश के एक अन्य पुत्र, हशब्याह का केजेवी अनुवाद, एज्रा 10:25 में। *देखें*हशब्याह #9।

6. हारीम का पुत्र, जिसने एज्रा के इस आग्रह का पालन किया कि वह अपनी अन्यजातिय पत्नी को बँधुआई के बाद तलाक दे दें (एज्रा 10:31)। उसने नहेम्याह के अधीन यरूशलेम की दीवार के एक हिस्से की मरम्मत की (नहे 3:11)।

7. रेकाब का पुत्र और बेथक्केरेम का हाकिम जिसने नहेम्याह के निर्देशन में यरूशलेम की शहरपनाह के कूड़ा फाटक की मरम्मत की (नहे 3:14)।

8. नहेम्याह के निर्देशन में काम करने वाला सुनार जिसने यरूशलेम की शहरपनाह की मरम्मत में सहायता की (नहे 3:31)।

9. सार्वजनिक रूप से व्यवस्था पढ़ते समय एज्रा के बाईं ओर खड़ा एक व्यक्ति (नहे 8:4)।

10. वह याजक जिसने एज्रा की परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य वाचा पर नहेम्याह और अन्य लोगों के साथ बँधुआई के बाद हस्ताक्षर किए (नहे 10:3)।

11. पुनर्निर्मित यरूशलेम की शहरपनाह के समर्पण में एक सहभागी (नहे 12:42)।

12. शाही राजकुमार, जिसके पास एक गड्ढा था जिसमें भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को कैद किया गया था (यिर्म 38:6), मल्किय्याह का पुत्र पशहूर (21:1; 38:1) उनमें से एक था, जिन्होंने यिर्मयाह की कठोर भविष्यवाणियों को सुनने के बाद, राजा सिदकिय्याह से यिर्मयाह को मृत्यु दण्ड देने की अपील की। राजकुमारों ने मल्किय्याह के गड्ढे में उन्हें फेंककर ऐसा करने का प्रयास किया।

मल्किय्याह

मल्किय्याह

यिर्मयाह 21:1 में मल्किय्याह, पशहूर के पिता का के.जे.वी. में वर्तनी। *देखें* मल्किय्याह #8।

मल्कीएल, मल्कीएलियों

मल्कीएल*, मल्कीएलियों*

बरीआ के पुत्र, आशेर के पोते (उत्प 46:17; 1 इति 7:31), और मल्कीएलियों के कुल का संस्थापक (गिन 26:45)।

मल्कीराम

यकोन्याह (यहोयाकीन) का पुत्र और दाऊद का वंशज (1 इति 3:18)।

मल्कीशूअ

मल्कीशूअ

राजा शाऊल का तीसरा पुत्र (1 शमू 14:49; 1 इति 8:33; 9:39)। उसे गिलबो की लड़ाई में पलिश्तियों द्वारा मार डाला गया था (1 शमू 31:2; 1 इति 10:2)।

मल्कीशूअ

मल्कीशूअ

1 शमूएल 14:49 में राजा शाऊल के तीसरे पुत्र के रूप उल्लेखित है। *देखें*मल्कीशूअ।

मल्लूक

1. मरारी वंश का लेवी और एतान का पूर्वज, जो सुलैमान के मन्दिर में गायक था (1 इति 6:44)।

2. बानी का पुत्र, जिसे एज्रा ने उनकी विदेशी पत्नी को तलाक देने को कहा (एज्रा 10:29)।

3. हारीम का पुत्र, जिसे एज्रा ने अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देने को कहा (एज्रा 10:32)।

4. एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाने वाला याजक (नहे 10:4)।

5. एक अन्य याजक जिसने एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाई (नहे 10:27)।

6. जरूब्बाबेल के साथ बँधुआई से लौटा एक याजक (नहे 12:2)।

मल्लूकी

मल्लूकी

महायाजक योयाकीम के दिनों में योनातान द्वारा संचालित एक घर के पिता, जो निर्वासन के बाद की अवधि में थे (नहेम 12:14, एन.एल.टी एमजी)। संभवतः वही व्यक्ति जो मल्लूक #6 हैं।

मल्लोती

हेमान के 17 बच्चों में से एक (1 इति 25:4–5), जो दाऊद के शासनकाल में निवासस्थान में सेवा के लिए गायकों के 24 विभागों में से 19वें का अगुवा बना (पद 26)।

मवेशी

मवेशी बड़े खेत के जानवर होते हैं जिन्हें लोग मांस, दूध और अन्य उपयोगों के लिए पालते हैं। मवेशी आमतौर पर गायों और बैलों को संदर्भित करते हैं, लेकिन बाइबल में "मवेशी" कभी-कभी भेड़ और बकरियों को भी संदर्भित करता है।

मवेशियों का प्रारंभिक उपयोग

पुराने नियम में अक्सर मवेशियों की खूबसूरती पर ज़ोर दिया गया है। मिस्र, खास तौर पर नील नदी के पास गोशेन नामक क्षेत्र में बहुत सारे मवेशी थे। जब यूसुफ़ उन्हें मिस्र लेकर आया तो इब्रानी लोग वहाँ रहते थे।

प्राचीन लोगो ने संभवतः पहले मवेशियों को मांस के बजाय मुख्य रूप से दूध के लिए रखा होगा। उन्हें अपना मांस जंगली जानवरों से मिलता था जिनका वे शिकार करते थे। मवेशियों ने लकड़ी की जगह ढाल के लिए मजबूत खाल का काम किया। जब लकड़ी पर्याप्त नहीं होती थी तो वे अपने गोबर का इस्तेमाल ईंधन के रूप में करते थे (एज्रा 4:15)। मवेशियों का इस्तेमाल भारी बोझ उठाने और हल चलाने के लिए भी किया जाता था। किसान किसी भी अन्य जानवर की तुलना में पहिएदार परिवहन को खींचने के लिए मवेशियों का अधिक इस्तेमाल करते थे।

मवेशीओं के प्रकार

बाइबल में "मवेशी" शब्द का इस्तेमाल सभी प्रशिक्षित जानवरों या मवेशियों के लिए किया गया है (उत्प 1:24; 2:20; 7:23; 47:6, 16–17; निर्ग 9:3–7; गिन 3:41, 45)। कभी-कभी, इसका मतलब सभी बड़े प्रशिक्षित जानवर होते हैं (गिन 31:9; 32:26)। हालाँकि, कभी-कभी किंग जेम्स अनुवाद में मवेशियों का इस्तेमाल केवल भेड़ और बकरियों के लिए किया जाता है (उत्प 30:32, 39, 43; 31:8, 10; यशा 7:25; 43:23)।

पवित्र भूमि में विभिन्न प्रकार के मवेशियों को पाला जाता था। दक्षिणी यहूदा में, छोटे, छोटे पैरों वाले, काले या भूरे रंग के छोटे सिघ वाले मवेशी खूब फलते-फूलते थे। उन्हें प्रशिक्षित करना आसान था और खेती के लिए ज़रूरी थे। तट के किनारे, एक बड़ी किस्म का मवेशी पाया जाता था। इस बीच, यरदन के पूर्व में जंगली इलाके बड़े काले मवेशियों का घर थे।

मवेशियों के प्रजनन और उनसे संबंधित व्यवस्था

मवेशी प्रजनन पितृसत्ताओं द्वारा व्यापक रूप से किया जाता था (देखें उत्पत्ति 32:15; अय्यूब 21:10)। मेसोपोटामिया और इस्राएल में सख्त कानून थे, जो एक सांड के मालिक को दंडित करते थे यदि वह किसी पुरुष या अन्य मवेशी को मार देता (निर्गमन 21:28–36)। सांडों का कभी-कभी शक्ति या हिंसा के प्रतीक के रूप में उपयोग किया जाता था (व्यवस्थाविवरण 33:17; भजन संहिता 22:12; 68:30; यशायाह 10:13)। आमतौर पर, एक सांड लगभग 30 गायों के साथ प्रजनन कर सकता है। हालांकि, इस्राएल में अधिक सांड रखे जाते थे। इसका कारण यह था कि सांडों का अक्सर सेनापति बलिदानों के लिए उपयोग किया जाता था (लैव्यव्यवस्था 22:23; गिनती 23:1) या विशेष बलिदानों के लिए (न्यायियों 6:25; 1 शमूएल 1:24)।

कुलपिताओं द्वारा मवेशी पालन का व्यापक रूप से अभ्यास किया जाता था (देखें उत्प 32:15; अय्यू 21:10)। मेसोपोटामिया के साथ-साथ इस्राएल में भी सख्त व्यवस्था के तहत, किसी व्यक्ति या अन्य मवेशियों को सींग मारने वाले बैल के मालिक को दंडित किया जाता था (निर्ग 21:28–36)। बैलों को कभी-कभी ताकत या हिंसा के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था (व्य. वि. 33:17; भज 22:12; 68:30; यशा 10:13)। आमतौर पर, एक बैल लगभग 30

गायों के साथ प्रजनन कर सकता है। हालाँकि, इस्राएल में अधिक बैल रखे जाते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि बैलों का इस्तेमाल अक्सर सामान्य बलिदान (लैव्य 22:23; गिन 23:1) या विशेष बलिदान (न्यायि 6:25; 1 शमू 1:24) के लिए किया जाता था।

विशिष्ट बलिदान निम्नलिखित स्थानों पर किए गए थे:

- याजकों का अभिषेक (निर्ग 29:1)
- वेदी की आशीष (गिन 7)
- लेवियों का शुद्धिकरण (गिन 8)
- पाप बलिदान (लैव्य 16)
- नए चंद्रमा का दिन (गिन 28:11–14)
- फसह का पर्व (गिन 28:19)
- सप्ताहों का पर्व (गिन 28:27)
- तुरहियो का पर्व (गिन 29:1–2)
- प्रायश्चित के दिन के पर्व (गिन 29:7–9)
- झोपड़ियों का पर्व (गिन 29:12–38)

सभी वार्षिक पर्वों में से झोपड़ियों के पर्व के दौरान जले हुए बलिदानों के लिए सबसे अधिक बैलों की आवश्यकता होती थी। कुल मिलाकर आठ दिनों में 71 बैल बलि चढ़ाए गए।

बाइबिल में बछड़े का उल्लेख

मूल इब्रानी में बछड़ों को कभी-कभी "झुण्ड के पुत्र" कहा जाता था (उत्प 18:8; 1 शमू 6:7; 14:32)। बछड़ा शांति का प्रतीक था (यशा 11:6)। इसका इस्तेमाल कमज़ोर लोगों को संदर्भित करने के लिए भी किया जाता था (भज 68:30)। एक बछड़े का सिर सुलैमान के सिंहासन के पीछे सुशोभित था (1 रा 10:19)। बछड़ों को कभी-कभी खलिहानों में खिलाया जाता था ताकि वे खेत में दौड़कर वजन न खो दें (आमो 6:4; मल 4:2; लूका 15:23)। उन्हें घर के आसपास भी रखा जा सकता था। एनदोर की भावी कहलाने वाली स्त्री ने अपने घर में एक बछड़ा रखा था। उसने उसे मार डाला और शाऊल और उनके आदमियों को परोसा (1 शमू 28:24–25)। बछड़ों ने वील की आपूर्ति की (उत्प 18:7), जो अमीरों का एक व्यंजन था। आमोस ने अमीरों की विलासिता और लापरवाह जीवन के लिए आलोचना की। उन्होंने खलिहानों में मोटे किए गए बछड़ों का उल्लेख किया (आमो 6:4)। बछड़ों ने फिलिस्तीनियों के महान वध में शाऊल की सभी सेनाओं के लिए मांस की आपूर्ति की (1 शमू 14:32)। "मोटा बछड़ा" भुना हुआ या पकाया हुआ परोसा जाता था, जो एक उत्कृष्ट भोज के लिए उपयुक्त था (उत्प 18:7; मत्ती 22:4; लूका 15:23)।

मवेशियों को पहलौठे के कानून में शामिल किया गया था (निर्ग 13:12)। वे धन का एक प्रतीक थे (उत्प 13:2) और उन्हें युद्ध की लूट के रूप में स्वीकार किया गया था (यहो 8:2)। पहले महायाजक हारून ने वाचा के सन्दूक के प्रतिद्वंद्वी के रूप में एक सुनहरा बछड़ा बनाया (निर्ग 32; व्य. वि. 9:16, 21)। हालांकि उन्होंने बछड़े को अदृश्य परमेश्वर की छवि कहा, यह अपमानजनक था। बछड़ा एक उर्वरता का प्रतीक था जो मिस्री और कनानी प्रथाओं से जुड़ा था। बाद में यारोबाम प्रथम ने इस्राएल के बेतेल और दान के मंदिरों के लिए दो बछड़े बनाए (1 रा 12:28–33)। होशे की भविष्यवाणी में बछड़े की पूजा को अस्वीकार कर दिया गया था (होशे 8:5–6; 13:2)।

बैल और उनका उपयोग

एक बैल एक वयस्क सांड होता है जिसे बधिया किया गया है (इसके प्रजनन अंग हटा दिए गए हैं)। एक युवा बैल को जवान सांड भी कहा जाता है। लोग काम करने के लिए बैलों का उपयोग करते थे (गिन 7:3; व्य. वि. 22:10; 25:4)। हालाँकि, गायों का इस्तेमाल भारी वस्तुओं को ले जाने के लिए किया जाता था क्योंकि वे कोमल होती थीं।

बैलों का उपयोग बोझा ढोने वाले जानवरों के रूप में भी किया जाता था (1 इति 12:40)। हालाँकि, उनमें गधे, ऊँट या खच्चरों की तुलना में कम ऊर्जा थी। वे आम तौर पर घास खाते थे (गिन 22:4; भज 106:20), लेकिन वे भूसा भी खाते थे (यशा 11:7) और नमकीन चारा (मवेशियों के लिए तैयार भोजन) (यशा 30:24)। उन्हें अस्तबल में रखा जाता था (लूका 13:15)। बैलों को बलि के रूप में नहीं चढ़ाया जा सकता था क्योंकि उन्हें बधिया कर दिया गया था (लैव्य 22:24)। उन्हें भोजन के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था लेकिन उन्हें शायद ही कभी खाया जाता था। प्राचीन फिलिस्तीन में, कृषि अर्थव्यवस्था में जीवित रहने के लिए एक बैल और एक गधा न्यूनतम था (अय्यू 24:3; तुलना करें निर्ग 20:17)।

यह भी देखें कृषि; भोजन और भोजन की तैयारी; भेट और बलिदान।

मश

मश

अराम के चौथे पुत्र (उत्प 10:23), शेम के वंशज। उन्हें 1 इति 1:17 में मेशेक कहा गया है। *देखें* मेशेक #2।

मशकों

मशकों

पशु की खाल से बने कंटेनर दाखरस रखने के लिए। यह शब्द यीशु की उस कहावत में प्रमुख है कि नया दाखरस पुराने मशकों में नहीं डाला जा सकता, बल्कि इसे नए मशकों में डाला जाना चाहिए क्योंकि नया दाखरस, जब यह किण्वित होता है और फैलता है, तो पुराने मशकों को तोड़ देगा और बाहर फैल जाएगा। नया दाखरस नए मशकों में डाला जाना चाहिए, ताकि दोनों को संरक्षित किया जा सके। यह छवि दर्शाती है कि यीशु की नई शिक्षाएं और आत्मिक जीवन का नया प्रकार पुराने यहूदी धर्म में नहीं समा सकता। उन्हें एक नए बरतन की आवश्यकता थी—अर्थात, जीवित कलिसिया।

मशिल्लीत

1 इतिहास 9:12 में मशिल्लेमोत की वैकल्पिक वर्तनी। *देखें* मशिल्लेमोत #2।

मशिल्लेमोत

मशिल्लेमोत

1. एप्रैम के एक प्रधान बेरेक्याह का पिता (2 इति 28:12)।

2. अमशै का पूर्वज, जो निर्वासन के बाद यरूशलेम लौटे याजकों में से एक था (नहे 11:13); 1 इतिहास 9:12 में वैकल्पिक रूप से मशिल्लीत के रूप में उल्लेखित है।

मशुल्लाम

1. शापान का पूर्वज, जो यहूदा के राजा योशिय्याह का मन्त्री था (2 रा 22:3)।

2. जरूब्बाबेल का पुत्र और दाऊद का वंशज (1 इति 3:19)।

3. गदियों का एक प्रधान, जो यहूदा के राजा योताम (950–932 ई.पू.) और इस्राएल के राजा यारोबाम द्वितीय (993–953 ई.पू.; 1 इति 5:13) के शासनकाल के दौरान पंजीकृत हुआ।

4. बिन्यामीन के गोत्र से एल्पाल का वंशज (1 इति 8:17)।

5. बिन्यामीन के गोत्र से सल्लू का पिता, जो निर्वासन के बाद के काल में यरूशलेम में रहता था (1 इति 9:7; नहे 11:7)।

6. बिन्यामिन के गोत्र से शपत्याह का पुत्र, जो निर्वासन के बाद के काल में यरूशलेम में रहता था (1 इति 9:8।

7. सादोक याजक का पुत्र और हिल्किय्याह का पिता, जिसके वंशजों ने निर्वासन के बाद के युग में यरूशलेम में निवास करते हुए सेवा की (1 इति 9:11; नहे 11:11)। वह सम्भवतः 1 इतिहास 6:12–13 में शल्लूम के समान है।

8. मशिल्लीत याजक का पुत्र और अदायाह का पूर्वज। अदायाह ने यरूशलेम में निर्वासन के बाद के युग में सेवा की (1 इति 9:12)।

9. कहाती लेवी, जिसे राजा योशिय्याह के शासनकाल में मन्दिर की मरम्मत का कार्य सौंपा गया था (2 इति 34:12)।

10. यहूदी अगुवों में से एक, जिसे एज्रा ने कासिफ्या में इद्दो के पास भेजा ताकि वह लेवी और मन्दिर सेवकों को बेबीलोन से वापस लौटने वाले यहूदियों के कारवां में शामिल कर सके (एज्रा 8:16)।

11. वह व्यक्ति जिसने एज्रा के उस सुझाव का विरोध किया कि इस्राएल के पुत्र उन विदेशी महिलाओं को तलाक दे दें जिनसे उन्होंने बँधुआई से फिलिस्तीन लौटने के बाद विवाह किया था (एज्रा 10:15)।

12. बानी का बेटा, जिसे एज्रा ने निर्वासन के बाद अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देने के लिए प्रेरित किया था (एज्रा 10:29)।

13. बेरेक्याह का पुत्र, जिसने नहेम्याह के दिनों में यरूशलेम की शहरपनाह के एक हिस्से का पुनर्निर्माण किया (नहे 3:4, 30)। उसकी बेटी ने यहोहानान से विवाह किया, जो अम्मोनी तोबियाह का पुत्र था (6:18)।

14. बसोदयाह का पुत्र, जिसने योयादा के साथ मिलकर यरूशलेम की शहरपनाह के पुराने फाटक की मरम्मत की (नहे 3:6)।

15. उन व्यक्तियों में से एक जो एज्रा के बायीं ओर खड़े थे जब एज्रा ने लोगों को व्यवस्था पढ़कर सुनाई (नहे 8:4)।

16. उन याजकों में से एक जिन्होंने एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाई थी (नहे 10:7)।

17. इस्राएल के उन अगुवों में से एक जिन्होंने एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाई (नहे 10:20)।

18. महायाजक योयाकीम के दिनों में एज्रा के याजकीय परिवार का प्रधान, जो निर्वासन के बाद के समय में यरूशलेम में रहता था (नहे 12:13)।

19. योयाकीम के समय में गिन्नतोन के याजकीय परिवार का प्रधान (नहे 12:16)।

20. महायाजक योयाकीम के दिनों में द्वारपालों में से एक (नहे 12:25); सम्भवतः 1 इतिहास 9:17 में शल्लूम के साथ पहचाने जा सकते हैं।

21. यहूदा के प्रधानों में से एक, जिन्होंने निर्वासन के बाद के युग में यरूशलेम की शहरपनाह के समर्पण में भाग लिया था (नहे 12:33)।

मशुल्लेमेत

यहूदा के राजा आमोन (642–640 ई.पू.) की माता और योत्बावासी हारूस की पुत्री (2 रा 21:19)।

मशेजबेल, मशेजबेल

1. मशुल्लाम के पूर्वज जिन्होंने यरूशलेम की दीवार की मरम्मत में सहायता की (नहे 3:4)।

2. वह राजनीतिक नेता जिन्होंने निर्वासन के बाद के काल में एज्रा द्वारा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य वाचा पर हस्ताक्षर किए (नहे 10:21)।

3. पतह्याह, जो यहूदा के लोगों के सम्बन्ध में राजा अर्तक्षत्र के सलाहकार थे (नहे 11:24)।

मशेलेम्याह

आसाप के घराने से कोरे का पुत्र, एक कोरहवंशी लेवी और दाऊद के समय में अपने पुत्रों के साथ निवासस्थान का द्वारपाल (1 इति 9:21; 26:1–2, 9)। 1 इतिहास 26:14 में उसे वैकल्पिक रूप से शेलेम्याह कहा गया है।

मशोबाब

शिमोन गोत्र का एक प्रधान, जो हिजकिय्याह के दिनों में 12 अन्य प्रधानों के साथ गदोर गया, वहाँ के मूर्तिपूजक निवासियों (मूनियों) को पराजित किया और अपने परिवार के साथ वहीं बस गया (1 इति 4:34)।

मश्किल

के.जे. वी. में 'मास्किल' का अनुवाद, जो कई भजनो के शीर्षकों में एक संगीत संकेत के रूप में है। *देखें*मास्किल।

मसादा

मसादा एक प्राचीन गढ़ है जो एक बड़े चट्टान के ऊपर स्थित है। यह आधुनिक इस्राएल में मृत सागर के पास है। यह गढ़ एनगदी नामक स्थान से लगभग 10 मील दक्षिण में स्थित है। यही वह स्थान है जहाँ एक दल जिसे जेलोतेस कहा जाता था, ने ईस्वी 73 में रोमी सेना के खिलाफ अपनी अंतिम लड़ाई लड़ी थी। आज, इस स्थल के दो नाम हैं: अरबी में क़स्र एस-सेब्बे और इब्रानी में मेत्सादा।

मसादा एक अत्यंत ऊँची चट्टान संरचना पर स्थित है। यह मृत सागर के ऊपर लगभग 426.7 मीटर (1,400 फीट) की ऊँचाई पर स्थित है। इसकी लंबाई उत्तर से दक्षिण तक लगभग 609.6 मीटर (2,000 फीट) है। यह पूर्व से पश्चिम तक लगभग 298.7 मीटर (980 फीट) में फैला हुआ है, और सभी दिशाओं में खड़ी चट्टानो से घिरा हुआ था। इसका शीर्ष लगभग सपाट है और दक्षिण तथा पश्चिम की ओर धीरे-धीरे ढलान है। शीर्ष का क्षेत्रफल लगभग 8.1 हेक्टेयर (20 एकड़) है, जो लगभग दो बड़े शहर के टूकड़ों के बराबर है। यह मृत सागर के तट से लगभग 3.2 किलोमीटर (दो मील) पश्चिम में स्थित है।

मसादा में हेरोदेस का गढ़

प्राचीन यहूदी इतिहासकार जोसेफस ने मसादा के प्रारंभिक इतिहास के बारे में लिखा। *यहूदियों के युद्ध* 7.8–9 में, जोसेफस ने कहा कि इस चट्टान पर हमला करना लगभग असंभव था। इसे सबसे पहले महायाजक योनातान द्वारा किलेबंद किया गया था। योनातान ने इसका नाम मसादा रखा, जिसका अर्थ है "पर्वतीय गढ़"। जोसेफस द्वारा उल्लेखित "योनातान" विद्वानों के बीच बहस का विषय रहा है। मसादा में पाए गए कई पुराने सिक्के सुझाव देते हैं कि यह योनातान संभवतः सिकंदर जन्नेयुस थे, जिन्होंने 103 से 76 ईसा पूर्व तक शासन किया।

बाद में, महान राजा हेरोदेस ने मसादा को अत्यधिक सुदृढ़ किया और वहाँ कई नई संरचनाएं बनाईं। हेरोदेस के पास मसादा को विकसित करने के दो मुख्य कारण थे। पहला, उन्हें चिंता थी कि यहूदी लोग उन्हें सत्ता से हटाकर अपने पूर्व शासकों को वापस लाने का प्रयास कर सकते हैं। दूसरा, उन्हें भय था कि मिस्र की रानी क्लियोपेट्रा अपने सहयोगी मार्क एंटनी को मना लेगी कि, हेरोदेस से राज्य छीनकर उसे दे दिया जाए।

राजा हेरोदेस के समय के दौरान मसादा के बारे में जो हम जानते हैं, वह दो स्रोतों से आता है। एक जोसेफस की लेखनी है। दूसरा पुरातत्वविद् यिगेल याडिन का कार्य है, जिन्होंने 1963 और 1965 के बीच इस स्थल का अध्ययन किया। याडिन ने मसादा में जो चीजें पाईं, उन्होंने साबित किया कि जोसेफस के कई वर्णन सही थे।

लगभग 40 ईसा पूर्व, हेरोदेस ने अपने परिवार को मसादा में छोड़ दिया जबकि वे राजा बनने के लिए रोम गए। जब वे लौटे, तो उन्होंने मसादा को एक मजबूत और शानदार गढ़ में बदल दिया। उन्होंने महल, एक रोमी स्नानागार, भंडार गृह, एक

जटिल जल आपूर्ति प्रणाली, और एक दीवार का निर्माण किया।

चट्टान के शीर्ष को दीवार ने घेर रखा था। यह 1,295.4 मीटर (4,250 फीट) लंबी थी। इस दीवार में 30 मीनारें और 8 द्वार थे। इसे दो परतों के साथ बनाया गया था, जिसमें बाहरी और आंतरिक दीवारों के बीच लगभग 110 कमरे थे। इस रूपरेखा ने दीवार को बहुत मजबूत बना दिया। दीवारों के बीच की जगह 4.1 (13.5 फीट) मीटर थी।

हेरोदेस ने पानी इकट्ठा करने और संग्रहित करने के लिए एक कुशल प्रणाली भी बनाई। बरसात के मौसम में, पानी पास की घाटियों से बहकर बड़े जलाशयों में जमा होता था। इसमें गढ़ के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में दो पंक्तियों में 12 जलाशय थे। जल आपूर्ति की क्षमता 39.7 मिलियन लीटर (10.5 मिलियन गैलन) थी, जो हजारों लोगों के लिए पर्याप्त पानी था।

चट्टान के उत्तरी छोर पर एक शानदार स्थान पर तीन-स्तरीय राजभवन विला बनाया गया था। अन्य महल, प्रशासनिक भवन और भंडारगृह चट्टान के शीर्ष पर स्थित थे। ये उत्तरी छोर पर, पश्चिमी तरफ, और दक्षिणी छोर की ओर मध्य क्षेत्र में स्थित थे।

पुरातत्वविद् ने मसादा के दक्षिणी छोर पर मिट्टी की एक परत पाई। यह सुझाव देता है कि जोसेफस सही थे जब उन्होंने लिखा था कि लोग वहाँ अनाज उगाते थे। शाही इमारतें बहुत सुंदर थीं, जिनमें छोटे रंगीन टाइलों (जिन्हें मोज़ेक कहा जाता है) से बने सजावटी फर्श और रंगीन बनावटों से सजी हुई दीवारें थीं।

यह एक विशिष्ट रोमी स्नानागार था जिसमें एक हमाम-कक्ष (गर्म या भाप वाला कमरा), टेपिडेरियम (उष्ण कमरा), और एक फ्रिजिडेरियम (ठंडा कमरा) शामिल था। पूरा स्नानागार परिसर 10.1 गुणा 11.0 मीटर (33 फीट गुणा 36 फीट) का था और दीवारें 1.8 मीटर (छह फीट) मोटी थीं।

पहले यहूदी विद्रोह के दौरान जेलोतेस ने मसादा पर अधिकार कर लिया

ईस्वी सन् 66 में, यहूदियों ने रोमी शासन के खिलाफ विद्रोह शुरू किया। जेलोतेस नामक एक समूह, जिसका नेतृत्व मनहेम नामक व्यक्ति कर रहे थे, ने मसादा को उन रोमी सैनिकों के छोटे दल से छीन लिया जो इसकी रक्षा कर रहे थे।

मसादा में जेलोतेस ने कई चीजों में परिवर्तन किया:

- उन्होंने यहूदियों के आराधना स्थल का निर्माण किया (जिसे आराधनालय कहा जाता है)।
- उन्होंने यहूदियों के धार्मिक विधि के लिए दो विशेष जलाशय जोड़े।
- उन्होंने महलों और सरकारी इमारतों को आवासों में परिवर्तित कर दिया।

पुरातत्वविद् को मसादा में सिक्के मिले जो यहूदियों के विद्रोह के प्रत्येक वर्ष के दौरान बनाए गए थे, ईस्वी 66 से 70 तक। ये सिक्के यह सिद्ध करते हैं कि जेलोतेस वहाँ कब निवास करते थे।

पुरातत्वविद् ने मसादा में प्राचीन पवित्र ग्रंथों के टुकड़े भी पाए। इनमें कई यहूदी धार्मिक पुस्तकों के भाग शामिल थे, जिनमें लैव्यव्यवस्था, व्यवस्थाविवरण, भजन संहिता, यीशु बेन सिराक की बुद्धि (जिसे एक्लेसियास्टिकस भी कहा जाता है), और जुबलीज की पुस्तक के अंश शामिल थे।

उन्होंने एक कुण्डलपत्र भी पाया जिसमें "छठे सब्त के बलिदान का गीत" का उल्लेख था। इस कुण्डलपत्र ने उसी प्रकार की तालिका का उपयोग किया जैसा कि कुमरान नामक एक अन्य महत्वपूर्ण स्थान पर पाए गए कुण्डलपत्रों में किया गया है। कुमरान एक धार्मिक समूह का निवास स्थान था जिसे एस्सीनी कहलाते थे। इन ग्रंथों के आधार पर, पुरातत्त्वविद यादीन का विश्वास था कि कुछ एस्सीनी कुमरान को छोड़कर मसादा में जेलोतेस से जा मिले थे जब वे रोम के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे। संभवतः एस्सीनी अपने पवित्र ग्रंथों को अपने साथ ले गए थे।

रोमियों ने ईस्वी 70 में यरूशलेम को नष्ट कर दिया। इसके बाद, उन्होंने पूरे क्षेत्र में यहूदी योद्धाओं को पराजित कर दिया। अंततः, केवल मसादा का गढ़ शेष था। नए रोमी राज्यपाल, फ्लेवियस सिल्वा, ने मसादा पर कब्जा करने और यहूदी प्रतिरोध को सदा के लिए समाप्त करने की योजना बनाई।

लगभग 960 यहूदी जेलोतेस मसादा के अंदर थे, जिनका नेतृत्व एक पुरुष जिसका नाम एलीआजर था, कर रहे थे। रोमी सैन्य अधिकारी फ्लेवियस सिल्वा को पता था कि गढ़ को कब्जे में लेने के लिए उन्हें एक बड़ी सेना की आवश्यकता होगी। वे लगभग 15,000 पुरुषों को लाए, जिसमें कई यहूदी कैदी शामिल थे जिन्हें रोमियों की सहायता करने के लिए मजबूर किया गया था।

सिल्वा ने मसादा के चारों ओर आठ सैन्य शिविरों का एक घेरा बनाया। उन्होंने इन शिविरों को एक मोटी दीवार से जोड़ा जो किले के चारों ओर पूरी तरह से फैली हुई थी। दीवार 1.8 मीटर (छह फीट) मोटी और 3,474.7 मीटर (11,400 फीट) लंबी थी। इसमें हर 73.2 से 91.4 मीटर (240 से 300 फीट)

पर 12 मीनार थे। प्रत्येक शिविर में लगभग 9,000 सैनिक रह सकते थे। अनुमान है कि सिल्वा के पास लगभग 15,000 पुरुष थे, जिनमें बड़ी संख्या में यहूदी बंदी शामिल थे।

सिल्वा ने मसादा के चारों ओर इतनी मजबूत रक्षा इसलिए बनाई थी क्योंकि वह सुनिश्चित करना चाहते थे कि कोई भी जेलोतेस भाग न सके और अन्य यहूदियों को रोम के खिलाफ लड़ाई जारी रखने के लिए प्रोत्साहित न कर सके।

मसादा में अंतिम युद्ध

मसादा तक चढ़ने के दो तरीके थे। "सर्प मार्ग" चट्टान के पूर्वी तरफ स्थित था। एक और मार्ग पश्चिमी तरफ था। सर्प मार्ग कठिन और संकीर्ण है। इसमें लगभग 50 मिनट की खतरनाक चढ़ाई की आवश्यकता होती है।

जेलोतेस लोगों ने पूर्वी मार्ग के शीर्ष के पास कई बड़े पत्थर इकट्ठा किए थे। वे उन रोमियों पर ये पत्थर लुढ़काने के लिए तैयार थे जो उस रास्ते से चढ़ने की कोशिश करते।

सिल्वा ने इस खतरनाक रास्ते का उपयोग न करने का निर्णय लिया। इसके बजाय, उन्होंने पश्चिमी तरफ से हमला करने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने सैनिकों को मिट्टी की बोरी और पत्थर का उपयोग करके एक विशाल रैंप बनाने का आदेश दिया। रैंप की ऊंचाई लगभग 54.9 मीटर (180 फीट) थी, जो लगभग 30 ऊंचे ताड़ के पेड़ के एक-दूसरे के ऊपर रखे जाने जितनी ऊंचाई थी। इसकी लंबाई लगभग 196.6 मीटर (645 फीट) थी और किसी को नीचे से अंत तक चलने में लगभग पांच मिनट लगते। रैंप का आधार इसे स्थिर बनाने के लिए बहुत चौड़ा था। हालांकि रैंप विशाल था, फिर भी यह मसादा के शीर्ष तक पूरी तरह नहीं पहुंच सका। यह गढ़ की दीवार से लगभग 60 फीट नीचे रुक गया।

जेलोतेस लोगों ने शीर्ष के पास बड़े पत्थरों का एक भंडार जमा कर रखा था, जाहिर तौर पर इस बिंदु पर हमले की उम्मीद करते हुए। सिल्वा ने पश्चिमी दृष्टिकोण चुना। उन्होंने अपने सैनिकों को मिट्टी का एक रैंप बनाने का आदेश दिया। रैंप की ऊंचाई लगभग 54.9 मीटर (180 फीट), लंबाई लगभग 196.6 मीटर (645 फीट) और आधार पर चौड़ाई, लंबाई के समान थी। यह गढ़ के शीर्ष तक पूरी तरह नहीं पहुंचा। यह कासमेट दीवार से लगभग 18.3 मीटर (60 फीट) नीचे समाप्त हो गया।

सिल्वा ने एक दीवार तोड़ने वाले दांव (बैटरिंग राम) और प्रक्षेपास्त्र फेंकने वाली गुलेल यंत्र (मिसाइल कैटापल्ट) के द्वारा शहरपनाह में सेंध लगाई, परन्तु जेलोतेस लोगों ने रातोंरात लकड़ियों और मिट्टी से उसे फिर से मरम्मत कर दिया। फिर सिल्वा ने लकड़ी की मरम्मत को जला दिया। जब एलीआजर बेन-या'ईर ने देखा कि रोमियों द्वारा जल्द ही मसाद पर कब्जा कर लिया जाएगा, तो उन्होंने अपने लोगों को इकट्ठा किया और एक शक्तिशाली भाषण दिया। इतिहासकार जोसेफस ने इस भाषण को लिखा, हालांकि उन्होंने शायद इसमें अपने कई शब्द जोड़े।

यहाँ एलीआजर के भाषण के कुछ महत्वपूर्ण शब्द हैं:

"यह अभी भी हमारे सामर्थ्य में है कि हम वीरता से मृत्यु को स्वीकार करें, और स्वतंत्रत स्थिति में रहें... हमारी पत्नियाँ अपमानित होने से पहले मृत्यु को प्राप्त करें, और हमारे बच्चे दासत्व का अनुभव करने से पहले; और जब हम उन्हें मार डालें, तो हम एक-दूसरे को वह अद्वितीय लाभ प्रदान करें, और स्वतंत्रता में खुद को सुरक्षित रखें, जो हमारे लिए एक उत्कृष्ट अंतिम संस्कार स्मारक होगा। लेकिन पहले हमें अपने धन और किले को आग से नष्ट कर देना चाहिए... और हमें केवल अपने प्रावधानों को छोड़कर कुछ भी नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि वे हमारे मरने के बाद यह प्रमाण होंगे कि हम आवश्यकताओं की कमी के कारण पराजित नहीं हुए थे; बल्कि, हमारी मूल संकल्प के अनुसार, हमने मृत्यु को दासत्व से पहले चुना है।"

पहले, लोग एलीआजर की योजना का पालन करने के लिए तैयार नहीं थे कि वे एक साथ मर जाएं। इसलिए एलीआजर ने अपने लोगों को एक और भाषण दिया। इस बार, उनके शब्दों ने उन्हें शर्मिंदा भी किया और साहस भी प्रदान किया।

इससे पहले कि वह बोलना समाप्त कर पाते, लोगों ने उन्हें रोक दिया। उन्होंने अपना निर्णय ले लिया था। जोसेफस ने इसके बाद के दुखद दृश्य का वर्णन किया। "पतियों ने अपनी पत्नियों को प्यार से गले लगाया और अपने बच्चों को अपनी बाहों में लिया, और उन्हें सबसे लंबा विदाई चुंबन दिया, उनकी आँखों में आँसू थे।" फिर पुरुषों ने अपनी पत्नियों और बच्चों को मार डाला और अपनी सभी संपत्तियों को एक ढेर में रखकर आग लगा दी।

फिर, दल को उनके अंतिम कार्य के लिए दस पुरुषों को चुनना था। उन्होंने ऐसा चिठ्ठी डालकर किया। अन्य पुरुष अपने परिवारों के पास लेटने चले गए जो पहले ही मर चुके थे। चुने गए दस पुरुषों ने फिर उन्हें मार डाला। इन दस पुरुषों को फिर एक अंतिम निर्णय लेना था। उन्होंने फिर से चिठ्ठी डालकर एक व्यक्ति को चुना जो अन्य नौ को मारेगा, और फिर अपने स्वयं के जीवन का अंत करेगा।

वर्षों बाद, पुरातत्वविद् याडिन ने मसादा में कुछ महत्वपूर्ण खोजा: ग्यारह टूटे हुए मिट्टी के बर्तन के टुकड़े। प्रत्येक टुकड़े पर एक नाम लिखा हुआ था। इनमें से एक टुकड़े पर उनके नेता, एलीआजर का नाम था। याडिन का विश्वास था कि ये मिट्टी के पात्र संभवतः उस अंतिम अनियोजित चयन को करने के लिए प्रयोग में लाए गए थे।

जेलोतेस लोगों ने अपनी योजना को अंजाम दिया, लेकिन सभी की मृत्यु नहीं हुई। दो महिलाएं और पांच बच्चे एक गुफा में छिप गए और बच गए। अगले दिन, जब रोमियों ने मसादा में प्रवेश किया, तो उन्होंने यहूदी लोगों से प्रतिरोध की उम्मीद

की। इसके बजाय, उन्हें केवल मौन, एक बड़े आग का अवशेष, और भंडार ग्रहों में बहुत सारा भोजन मिला। गुफा में छिपी दो महिलाएं बाहर आईं और रोमियों को बताया कि क्या हुआ था।

यह भी देखें पहला यहूदी विद्रोह; हेरोदेस, हेरोदिय परिवार; यहूदी धर्म; जेलोतेस।

मसीह का आगमन

मसीह का आगमन, यीशु मसीह के प्रत्याशित दूसरे आगमन को संदर्भित करता है जब वह महिमा में पृथ्वी पर लौटेंगे ताकि परमेश्वर का राज्य स्थापित कर सकें और मानवता का न्याय कर सकें। "एडवेंट (आगमन)" लातिनी शब्द *एडवेंटस* से आया है, जिसका अर्थ है "आगमन" या "पहुँचना।"

देखें देहधारण; प्रभु यीशु मसीह का जीवन और उनकी शिक्षाएँ; मसीह का दूसरा आगमन।

मसीह का दिन

प्रेरित पौलुस द्वारा मसीह के दूसरे आगमन के संदर्भ में प्रयुक्त वाक्यांश (फिलि 1:10; 2:16)। *देखें* प्रभु का दिन।

मसीह का प्रकटीकरण

ऐसी घटनाएँ जहाँ यीशु मसीह को उनके पुनरुत्थान के बाद मानवीय गवाहों ने देखा था। *देखें* पुनरुत्थान।

मसीह का महिमामंडन

पृथ्वी पर पीड़ा और मृत्यु में समाप्त हुए अपने कार्य के बाद यीशु को महिमा और अधिकार प्राप्त हुए। यह महिमामंडन उसके द्वारा मानवता के लिए बलिदान की पूर्णता और परमेश्वर पिता के प्रति उसकी पूर्ण आज्ञाकारिता का पुरस्कार है। इस महिमामंडन में तीन प्रमुख घटनाएँ शामिल हैं:

1. यीशु का पुनरुत्थान (मृत्यु के बाद जीवन में वापस आना)
2. यीशु का स्वर्गारोहण (स्वर्ग में जाना)
3. स्वर्ग में यीशु का सिंहासन पर विराजमान होना (परमेश्वर के राज्य में शासक के रूप में अपना स्थान लेना)

अपने सांसारिक सेवाकाल के दौरान, यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि वह कष्ट सहेगा, मरेगा और दफनाया जाएगा (मत्ती 20:28; यूह 3:14; 6:51; 10:11)। उसने यह भी भविष्यवाणी की थी कि परमेश्वर पिता उसे स्वर्ग में सामर्थ और महिमा के स्थान पर उठाएंगे (लूका 24:26; यूह 17:5)। यीशु ने इस कष्ट और महिमा के क्रम को तब दिखाया जब वह कुछ यूनानियों से मिला जो उससे मिलना चाहते थे (यूह 12:20–36)। यीशु ने कहा कि उसके कष्ट और पुनरुत्थान के माध्यम से, यहाँ तक कि अन्यजाति लोग (जो यहूदी नहीं है) भी परमेश्वर को जान सकते हैं। जब यीशु ने कहा, "वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र कि महिमा हो" (यूह 12:23), तो उसका मतलब था कि वह अपने कष्ट के बाद स्वर्ग में सम्मानित और महिमान्वित होगा। यह शिक्षा प्रारंभिक कलीसिया की यीशु के महिमामंडन की समझ की नींव बन गई।

पुनरुत्थान: यीशु मृत्यु के बाद फिर से जीवित हो गया

यीशु का पुनरुत्थान उसके महिमामंडन की पहली घटना है। यह नए नियम की एक मुख्य शिक्षा है (प्रेरि 2:24, 32; 3:15; 4:10; रोम 1:4; 1 कुरि 15:4)। प्रारंभ से ही, मसीही लोग विश्वास करते थे कि एक विशिष्ट समय और स्थान पर, यीशु मृतकों में से जी उठा और अनंत जीवन में प्रवेश किया। यीशु के पुनरुत्थान की अनूठी घटना मसीही विश्वास को अन्य धर्मों से अलग करती है। नया नियम दिखाता है कि यीशु ने अपने पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की थी। जब यहूदियों ने उसकी आधिकारिता पर सवाल उठाया, तो यीशु ने कहा: "इस मन्दिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा।" (यूह 2:19)। जब पतरस ने स्वीकार किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, तो यीशु ने अपने चेलों से कहा कि उसे मार डाला जाएगा और फिर वह तीसरे दिन जी उठेगा (मत्ती 16:21)। उसने गलील में अपने चेलों से इसे दोहराया, यह कहते हुए कि उसे मार डाला जाएगा और फिर वह तीसरे दिन जी उठेगा: "मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा। और वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा।" (मत्ती 17:22–23)। नया नियम यीशु के मृत्यु के तीन दिन बाद उसके पुनरुत्थान की निश्चितता पर जोर देता है।

नया नियम यीशु के पुनरुत्थान के महत्व को भी समझाता है:

1. यह मृत्यु पर मसीह की सामर्थ को सिद्ध करता है (प्रेरि 2:24; 1 कुरि 15:54–56)
2. यह मसीह की शिक्षाओं की पुष्टि करता है, विशेष रूप से उसके परमेश्वर के पुत्र होने के दावे की (प्रेरि 2:36; रोम 1:4)
3. यह दर्शाता है कि यीशु की पीड़ा में परमेश्वर की सहमति थी (फिलि 2:8–9)
4. यह विश्वासियों को परमेश्वर के साथ सही ठहरने की अनुमति देता है (रोम 4:25) और आत्मिक नए जन्म का अनुभव करने की अनुमति देता है (1 पत 1:3)

5. यह आश्वासन देता है कि मसीही लोग भी पुनरुत्थित होंगे (रोम 6:5; 1 कुरि 15:22–24)

नया नियम सिखाता है कि परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जीवित किया (भज 16:10; प्रेरि 2:32; इफि 1:19–20), लेकिन यह भी कहता है कि यीशु में स्वयं को जीवित करने की सामर्थ थी (यूह 2:19; 10:17–18)।

स्वर्गारोहण: यीशु स्वर्ग में गया

स्वर्गारोहण मसीह के महिमामंडन के दूसरे चरण का प्रतिनिधित्व करता है। नए नियम के अनुसार (लूका 24:50–51; प्रेरि 1:9–11), यीशु अपने पुनरुत्थान के 40 दिन बाद स्वर्ग में उठा लिया गया। यूहन्ना के सुसमाचार में, यीशु अक्सर अपने स्वर्गारोहण का उल्लेख करता है (यूह 3:13; 6:62; 14:12; 20:17), यह दिखाते हुए कि वह मानते था कि वह स्वर्ग में एक वास्तविक स्थान पर जाएगा (यूह 14:2)। प्रेरित पौलुस ने स्वर्गारोहण को मसीह की अपने शत्रुओं पर विजय और कलीसिया को आत्मिक वरदान देने से जोड़ा (इफि 4:8)। विजय प्राप्त करने वाला यीशु अपने पिता के सिंहासन पर लौट आया ताकि अपने अनुयायियों को आशीष दे सकें। पौलुस इस घटना को मसीही विश्वास का "रहस्य" बताता है: कि मसीह, जो "शरीर में प्रगट हुआ," "महिमा में ऊपर उठाया गया" (1 तीमु 3:16)।

इब्रानियों को लिखी पत्री यीशु के स्वर्गारोहण को स्वर्गीय मंदिर में उसके महायाजक की भूमिका से जोड़ती है। यीशु, जिसने सभी सांसारिक प्रलोभनों का विरोध किया, "स्वर्गों से होकर गया है।" अब वह अपने अनुयायियों के साथ पूरी तरह से सहानुभूति रखता है। वह उन्हें आवश्यकता के समय अनुग्रह प्रदान करता है (इब्रा 4:14–16)। इब्रानियों की पत्री कहती है कि यीशु स्वर्गीय मंदिर में उठाया गया (इब्रा 6:19)। उसने अपना लहू (इब्रा 9:12) परम बलिदान के रूप में मानवता के लिए परमेश्वर के सामने प्रस्तुत किया (इब्रा 9:24)।

नया नियम यीशु के इस महिमामंडन के भाग को बहुत महत्व देता है। पिता के पास उठा लिए जाने के माध्यम से, यीशु ने:

1. प्रत्येक सांसारिक शत्रु पर अपनी विजय प्रदर्शित की (इफि 4:8)
2. वादा किया हुआ पवित्र आत्मा भेजा (यूह 16:7; प्रेरि 2:33), जो केवल उसकी महिमा के बाद ही हो सकता था (यूह 7:39)
3. स्वर्ग में महायाजक के रूप में अपना काम शुरू किया (इब्रा 6:20)

सिंहासन पर विराजमान: यीशु ने परमेश्वर के राज्य में शासक के रूप में अपना स्थान लिया

यीशु के महिमामंडन का अंतिम चरण उसका परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर सिंहासन ग्रहण करना है। उसके कष्ट, मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद, बाइबल यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठे हुए वर्णित करती है। "परमेश्वर की दाहिनी ओर" वाक्यांश (प्रेरि 7:55–56) यह कहने का एक रूपक तरीका है कि अब यीशु को परमेश्वर की उपस्थिति में सार्वभौमिक सामर्थ और अधिकार प्राप्त हैं। यीशु के महिमामंडन का यह हिस्सा उसकी उस प्रार्थना को पूरा करता है जो यूहन्ना 17:5 में दर्ज है: "और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी।"

पुराने नियम में, परमेश्वर को अक्सर जगत के सिंहासन पर बैठे हुए वर्णित किया गया है। यह दिखाता है:

- उसकी सर्वभौमिकता (1 रा 22:19; भज 99:1)
- उसका वैभव (यशा 6:1–4)
- उसकी पवित्रता (भज 47:8)

पूर्वी संस्कृतियों में, किसी शासक के दाहिने हाथ पर बैठने के लिए आमंत्रित किया जाना महान सम्मान और अधिकार का प्रतीक था (1 रा 2:19)। पुराने नियम ने भविष्यवाणी की थी कि महिमान्वित मसीह को यह विशेष सम्मान प्राप्त होगा (देखें भज 8:5, जिसे इब्रा 2:8 में उद्धृत किया गया है; साथ ही देखें भज 110:1)।

इब्रानियों को लिखी गई पत्री मसीह के महिमामंडन पर केंद्रित है। यह उसके स्वर्गीय सिंहासन पर विराजने को उसके पूर्ण बलिदान का परिणाम मानती है। यह उसके स्वर्गीय पवित्रस्थान में महायाजक की भूमिका की शुरुआत भी है। इब्रानियों 8:1–2 मसीह को स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ पर बैठे हुए दिखाती है, जो स्वर्गीय मंदिर में सेवक के रूप में सेवा कर रहा है। इस स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान होना यीशु के पृथ्वी पर कार्य की समाप्ति और एक बेहतर वाचा के मध्यस्थ के रूप में उसकी नई भूमिका की पुष्टि करता है। इब्रानियों 10:11–18 पुराने नियम के याजकों के बार-बार, अप्रभावी बलिदानों की तुलना मसीह के एक ही बार के, सिद्ध बलिदान से करता है। अब वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठे हुए, विश्वासियों के लिए मध्यस्थता कर रहा है।

मसीह का शारीरिक पुनरुत्थान

यह विश्वास कि क्रूस पर अपनी मृत्यु के बाद यीशु केवल आध्यात्मिक रूप से ही नहीं, बल्कि शारीरिक रूप से भी जीवित हुए।

*देखिए*पुनरुत्थान।

मसीह की दुल्हन

नए नियम में कलीसिया के लिये एक रूपक। इसमें मसीह को पति और कलीसिया को उसकी दुल्हन के रूप में चित्रित किया गया है।

कुरिन्थुस की कलीसिया को सम्बोधित करते हुए, प्रेरित पौलुस ने अपने आप को उस व्यक्ति के रूप में सन्दर्भित किया जिसने कलीसिया, मसीह को सौंप दी, उसे एक पवित्र कुँवारी के रूप में उसके एकमात्र पति को प्रस्तुत की (2 कुरि 11:2–3)। प्राचीन पश्चिमी एशिया की संस्कृति में, पिता अपनी बेटी को दूल्हे को विवाह के लिए सौंपता था, यह सुनिश्चित करता था कि वह पवित्र थी। पौलुस के लिए, स्वयं को कलीसिया का आत्मिक पिता समझने के कारण (1 कुरि 4:15), कलीसिया को अपनी बेटी की तरह देखना स्वाभाविक था। मसीह की पवित्र दुल्हन बनने के लिए, कलीसिया को शुद्ध और सरल भक्ति की आवश्यकता है। एक चिन्तित पिता की तरह, पौलुस चिन्तित थे कि युवा दुल्हन (कलीसिया) "दूसरे यीशु," "कोई और आत्मा," या "और कोई सुसमाचार" को स्वीकार करने की इच्छा से व्यभिचार कर सकती है (2 कुरि 11:4)। विवाहित जोड़ों के के समान, कलीसिया और मसीह के बीच का सम्बंध भी आपसी विश्वासयोग्यता की वाचा द्वारा शासित होता है। भक्तिहीनता वाचा को तोड़ देती है।

पुराने नियम ने पौलुस को कलीसिया के उस स्वरूप के लिए समृद्ध पृष्ठभूमि प्रदान की। इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा को प्रायः विवाह की प्रतिज्ञा के रूप में चित्रित किया गया है, जिसमें इस्राएल परमेश्वर की दुल्हन थी। भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के द्वारा, प्रभु ने इस्राएल से कहा: "तेरी जवानी का स्नेह और तेरे विवाह के समय का प्रेम मुझे स्मरण आता है" (यिर्म 2:2)। उन्होंने इस बात पर विलाप किया कि इस्राएल विश्वासघाती हो गई थी; अन्य देवताओं के पीछे जाने से, उसने वास्तव में स्वयं को वेश्या बना लिया था और एक व्यभिचारिणी बन गई थी (यिर्म 3:6–9, 20)।

इस्राएल द्वारा अपने प्रेमी (परमेश्वर) को त्यागने के विषय को यहेजकेल 16 और होशे में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। यहोवा के प्रति विश्वासघात और अन्य देवी-देवताओं के प्रति विश्वासयोग्यता को दर्शाने के लिए "व्यभिचार" और "वेश्यावृत्ति" जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया था। इस प्रकार, व्यभिचार और मूर्तिपूजा समानार्थी हो गए। एक विश्वासघाती पत्नी के साथ अपने संघर्षों के द्वारा, भविष्यद्वक्ता होशे ने अपनी दुल्हन इस्राएल के लिए परमेश्वर की पीड़ा और उसके वापस आने की लालसा का अनुभव किया। होशे को भविष्य के उस दिन का दर्शन दिया गया जिसमें परमेश्वर ने अपने लोगों को करुणा और सच्चाई में सदा के लिए उसके साथ प्रतिज्ञा दी (होश 2:19–20)। उस दर्शन ने पौलुस को परमेश्वर की दुल्हन के रूप में इस्राएल की छवि को, मसीह की दुल्हन के रूप में कलीसिया में स्थानांतरित करने में सक्षम बनाया।

इफिसियों 5:22–33 में, मसीह और उसकी कलीसिया के बीच का सम्बंध एक पति और पत्नी के सम्बंध के समान है। यह छवि दुनिया के उस हिस्से में पति-पत्नी के सम्बंध की सामान्य समझ से ली गई है। कलीसिया की मसीह के प्रति अधीनता को पति के प्रति पत्नी की अधीनता के साथ तुलना की गई है, लेकिन गद्य में जोर पति की भूमिका पर है: उसे कलीसिया से उस प्रेम के साथ प्रेम करना चाहिए जैसा मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिये अपने आप को बलिदान किया। मसीह कलीसिया के साथ आत्म-बलिदान प्रेम के आधार पर सम्बंध रखते हैं। जैसे एक पति अपनी पत्नी के साथ जुड़ा होता है, जिसमें आपसी निर्भरता इतनी गहरी होती है कि वे एक बन जाते हैं, वैसे ही मसीह और उसकी कलीसिया एक देह बन जाते हैं। जैसे पति का अपनी पत्नी के प्रति प्रेम उसकी सम्पूर्णता को दर्शाता है, उसी तरह मसीह का कलीसिया के प्रति प्रेम उसकी सम्पूर्णता को दर्शाता है।

इस विषय पर एक भिन्नता यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की यीशु के प्रति गवाही में पाई जाती है (यूह 3:29)। यूहन्ना ने स्वयं को "दूल्हे का मित्र" के रूप में देखा, जो यहूदी प्रथा के अनुसार, विवाह में प्रबन्ध का ध्यान रखता है। मसीहा की पहचान दूल्हे से की जाती है, जिससे दुल्हन (उसका मसीहाई समाज) सम्बन्धित है और जो उस दुल्हन को लेने आते हैं।

प्रकाशितवाक्य 19 और 21 में मसीहा की दुल्हन के रूप में कलीसिया के रूपक को और अधिक विकसित किया गया है। प्रकाशितवाक्य 19:7–8 के दर्शन में मेमने (मसीह) का उसकी दुल्हन (कलीसिया) के साथ विवाह घोषित किया गया है। प्रकाशितवाक्य 21 में दर्शन नए यरूशलेम को स्वर्ग से नीचे उतरते हुए दर्शाता है, "वह उस दुल्हन के समान थी, जो अपने दुल्हे के लिए श्रृंगार किए हो" (पद 2)। फिर भविष्यद्वक्ता को "दुल्हन अर्थात् मेमने की पत्नी" (पद 9) को देखने और पवित्र नगर को "स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते" (पद 10) देखने के लिए आमन्त्रित किया जाता है। नया यरूशलेम परमेश्वर के लोगों के रूप में पहचाना जाता है, मसीह की दुल्हन, जिनके बीच और जिनके साथ परमेश्वर सदा के लिए उपस्थित रहेंगे।

*यह भी देखें*कलीसिया; नया यरूशलेम।

मसीह की देह

मसीह की देह

धार्मिक वाक्यांश जो संदर्भित करता है (1) यीशु मसीह का शारीरिक देह, (2) उनका टूटा हुआ शरीर और बहा हुआ खून जो प्रभु भोज की रोटी और दाखरस में प्रतीकात्मक और स्मारक रूप में देखा जाता है, और (3) स्थानीय और सार्वभौमिक कलीसिया दोनों को रूपक रूप में देखा जाता है।

यीशु मसीह का शारीरिक देह

नया नियम (एनटी) घोषित करता है कि पुत्र (त्रिएक परमेश्वर के दूसरे व्यक्ति) के लिए परमेश्वर पिता द्वारा एक मानव शरीर तैयार किया गया था (इब्र 10:5)। पार्थिव शरीर पवित्र आत्मा के गर्भाधान कार्य द्वारा कुमारी मरियम से उत्पन्न हुआ (मत्ती 1:20); इस प्रकार जन्म लेने वाला, मानव दृष्टि से, दाऊद के वंशज थे (रोमि 1:3), उन्हें परमेश्वर का पुत्र भी कहा जाता था (लूका 1:35)। प्रेरित यूहन्ना ने इस बात पर जोर दिया कि मसीह की देह वास्तव में शारीरिक रूप से मानव था, न कि कुछ गैसीय या अलौकिक वस्तु नहीं (1 यूह 4:2–3) जैसा कि यूहन्ना के समय में कुछ लोग पहले से ही तर्क करने लगे थे। परमेश्वर "देह धारण किया और हमारे बीच डेरा किया" (यूह 1:14; पुष्टि करें यशा 53:1–4)। यीशु का पार्थिव शरीर सामान्य मानव विशेषताओं और सीमाओं से युक्त था। यानी, एक वास्तविक मानव के रूप में, यीशु मसीह ने दुख (यूह 11:35; इब्रा 5:7–8), थकान (यूह 4:6), प्यास (19:28), और दर्द (पद 1–3) का अनुभव किया।

जब यीशु ने अपनी आत्मा को त्याग दिया, तो उनका शारीरिक देह क्रूस पर मर गया (यूह 19:30, 33)। नया नियम यह घोषणा करता है कि उन्होंने अपनी देह में क्रूस पर संसार के पापों को सहा (1 पत 2:24; 1 यूह 2:2; पुष्टि करें यशा 53:5–6)। उनकी मृत्यु को पापियों के लिए एक पूर्ण बलिदान के रूप में वर्णित किया गया है (इब्रा 9:12–14, 26–28), उनके देह का बलिदान जो उसमें विश्वास करने वालों को पवित्र और धर्मी बनाता है (2 कुरि 5:21; इब्रा 10:10)।

मसीह के शारीरिक देह को सामान्य तरीके से दफनाने के लिए तैयार किया गया था (मत्ती 27:59; मर 15:46; लूका 23:53, 56; 24:1; यूह 19:39–40) और अरिमथिया के युसुफ की कब्र जो चट्टान में थी, वहाँ रखा गया था (मत्ती 27:57–60; यूह 19:41)। तीसरे दिन मसीह की देह ने एक वास्तविक शारीरिक पुनरुत्थान का अनुभव किया, जैसा कि उन्होंने भविष्यवाणी की थी (यूह 2:19–22)। उन्हें उनके शारीरिक पुनरुथित शरीर में देखा गया (मत्ती 28:9; लूका 24:31, 36; यूह 20:10–19, 26)। उन्हें सुना गया, छुआ गया, और पकड़ा गया (मत्ती 28:9; लूका 24:39; यूह 20:17; 1 यूह 1:1)। उन्होंने अपनी देह को, जो क्रूस पर चढ़ाए जाने के कारण घायल था, छूने के लिए प्रस्तुत किया (लूका 24:39; यूह 20:27)। इस तथ्य से कि उन्होंने खाना खाया, यह दर्शाता है कि उनका पुनरुत्थान का शरीर एक भौतिक शरीर था (लूका 24:42–43)। इसके अलावा, मसीह की देह "महिमान्वित" था, अर्थात् यह साधारण शरीरों की तरह सीमित नहीं था: उन्होंने असाधारण तरीके से कमरों में प्रवेश किया और बाहर निकले (लूका 24:31, 36; यूह 20:19, 26)। मसीह के शारीरिक पुनरुत्थान को पवित्रशास्त्र में यह आश्वासन देने के लिए कहा गया है कि मसीह में विश्वास करने वाले अपने शरीरों के पुनरुत्थान का अनुभव करेंगे (1 कुरि 15:20–23, 50–57; फिल 3:20–21)।

प्रभु भोज में मसीह की देह

अन्तिम भोज में (मत्ती 26:26–29; मर 14:22–25; लूका 22:15–20; 1 कुरि 11:23–26), जो फसह भोज के साथ था, यीशु ने रोटी का एक टुकड़ा उठाया और कहा, "यह मेरी देह है"; फिर उन्होंने दाखरस का प्याला उठाया और कहा, "यह मेरे वाचा का लहू है" (मत्ती 26:26, 28)। यीशु का मतलब था कि रोटी उनके शरीर का प्रतीक है, जो उनके परीक्षण में तोड़े जाने और उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने पर टूट जाएगा (लूका 23:33; यूह 19:1–2)। प्रेरित पौलुस ने कहा कि मसीह, जो हमारे फसह का मेमना है, हमारे लिए बलिदान किये गए (1 कुरि 5:7), जिसका अर्थ है कि पुराने नियम में फसह का मेमना एक शिक्षा थी जो "परमेश्वर के मेमना की ओर इशारा करती है, जो संसार के पाप को उठा ले जाता है!" (यूह 1:29)। जिसका अर्थ है कि पुराने नियम में फसह का मेमना एक प्रतीकात्मक शिक्षा थी जो "परमेश्वर के मेमने की ओर इशारा करती है, जो संसार के पाप को उठा ले जाता है!"

मसीहियों के लिए प्रभु के भोज में रोटी तोड़ने में मसीह की देह को प्रतीकात्मक रूप से एक टूटे हुए शरीर के रूप में देखा जाता है (मत्ती 8:17; 1 पत 2:24; पुष्टि करें यशा 53:4–5)। प्याला उनके लहू का प्रतीक है जो बहाया गया, जो उनके लोगों के साथ परमेश्वर की अनुग्रह की वाचा में केंद्रीय कारक के रूप में देखा जाता है। यीशु ने "मेरे लहू में नई वाचा" का उल्लेख किया (लूका 22:20)। पूरे प्रभु भोज विधि को भी एक स्मारक होना था (1 कुरि 11:25–26)। इस विधि में विश्वासियों को याद दिलाया जाता है कि मसीह पापियों के लिए मरे, अर्थात् उनके पापों की क्षमा के लिए (मत्ती 26:28)। उन्हें यह भी याद दिलाया जाता है कि वे मसीह की देह में भाग ले रहे हैं क्योंकि वे उनसे जुड़े हुए हैं (रोम 6:1–11; 1 कुर 10:16; गल 2:20; फिल 3:10)।

मसीह की देह, परमेश्वर के लोग

"मसीह की देह" की वाक्यांश का उपयोग पूरी कलिसीया के लिए एक रूपक के रूप में भी किया जाता है, जो मसीह से जुड़े और उस पर निर्भर विश्वासियों की एकता है। इस प्रकार कहा जाता है कि परमेश्वर के लोग मसीह के "रहस्यमय देह" (1 कुरि 12:27) के सदस्य हैं, मसीह के साथ संगति में और उनके द्वारा आत्मिक रूप से पोषित हैं (इफि 5:25, 29)। परमेश्वर के सारे लोगों के लिए कई अन्य रूपकों का भी

उपयोग किया जाता है, जैसे दाखलता (भज 80:8), परमेश्वर का मंदिर (1 कुरिं 3:16–17), घर (1 पत 2:5), चुने हुए लोग (v 9), और परमेश्वर का घराना (इफि 3:15)। ऐसे रूपक जीवित परमेश्वर पर "मसीह की देह" के आपसी-सम्बन्ध, एकता और निर्भरता को बढ़ाते हैं।

"मसीह की देह" शब्द का उपयोग पौलुस अक्सर इस उद्देश्य से करते थे कि एक स्थानीय कलीसिया को यह याद दिलाएं कि वह बड़े शरीर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पौलुस ने रोम की कलीसिया से कहा, "क्योंकि जैसे एक देह में हमारे कई अंग होते हैं, और सभी अंगों का एक ही कार्य नहीं होता, वैसे ही हम, यद्यपि कई हैं, मसीह में एक देह हैं, और व्यक्तिगत रूप से एक दूसरे के अंग हैं" (रोम 12:4–5, आरएसवी)। पौलुस ने कुरिन्थ के मसीहियों को सिखाया कि वे, व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से, मसीह की देह का हिस्सा थे (1 कुर 12:27)। उन सभी को और पौलुस को एक आत्मा द्वारा उस एक देह में बपतिस्मा दिया गया था (1 कुर 12:13)।

पौलुस द्वारा लिखित कई पद्यांशों में, कलीसिया को "देह" और मसीह को "सिर" कहा गया है (कुल 1:18)। मसीह को "कलीसिया के लिए सब चीजों का सिर" बनाया गया है, जो "उनकी देह" है (इफि 1:22–23)। देह "सिर को थामे रखने" से बढ़ता है (कुल 2:19)। देह के सिर के रूप में, मसीह इसके उद्धारकर्ता है (इफि 5:23)। सिर/देह के रूपक कलीसिया की मसीह पर जैविक निर्भरता और कलीसिया पर उनकी प्रभुता को रेखांकित करता है। कलीसिया अपने सिर के संदर्भ में अपनी आत्म-समझ को पाती है। यह सम्बन्ध जैविक है, क्योंकि जीवन सिर से प्रवाहित होता है तथा उसी के द्वारा कायम रहता है। यह सम्बन्ध तत्काल, प्रत्यक्ष और पूर्ण है। मसीह के अलावा, उनके ऐतिहासिक प्रायश्चित बलिदान और परमेश्वर के दाहिने हाथ पर उनकी वर्तमान स्थिति दोनों में कलीसिया का कोई अस्तित्व नहीं है।

नए नियम में "मसीह की देह" शब्द का उपयोग दोनों सार्वभौमिक कलीसिया और प्रत्येक स्थानीय विश्वासियों के समूह के लिए किया जाता है। दोनों अर्थों में कलीसिया को आत्मिक देह कहा जाता है जिसमें विश्वास करने वाले यहूदी और गैर-यहूदी एकजुट होते हैं (इफि 2:14–16; 3:6; 4:4)। यह देह है जिसे मसीह ने मुक्त किया (इफि 5:23), जिस पर वह अध्यक्षता करते है (कुल 1:18) और संप्रभुता से शासन करते है (इफि 1:22–23) और जिसके लिए वह शक्ति और एकता प्रदान करते है (इफि 4:15–16; कुल 2:19)।

मसीह की देह के प्रत्येक सदस्य को आत्मिक वरदान दिए गए हैं जिनसे वे देह में मसीह की सेवा कर सकें (रोमि 12:6; 1 कुरि 12:11)। ऐसे वरदानों का कई बार पवित्रशास्त्र में उल्लेख किया गया है, और यह प्रेरिताई और पासबानी से लेकर प्रोत्साहित करने और दया दिखाने तक होते हैं (रोमि 12:7–8; इफ 4:11)। सेवकाई सभी मसीहियों द्वारा साझा कि जानी चाहिए, उदाहरण के लिए, दूसरों की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के माध्यम से (प्रेरि 11:29–30; 1 कुरि 16:1–4; 2 कुरि 8:1–5) और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करने के माध्यम से (इफि 1:15–23; 3:14–19; 6:18–20)। किसी को भी दूसरों को या उनके वरदानों को नीचा नहीं देखना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने प्रत्येक को देह में अपनी जगह पर कार्य करने के लिए चुना है (1 कुरि 12:14–26)। वरदान "संतों को सुसज्जित करने के लिए दिए जाते हैं, सेवकाई के कार्य के लिए, मसीह की देह को बनाने के लिए, जब तक हम सभी विश्वास की एकता और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान तक नहीं पहुंच जाते, परिपक्व मनुष्यत्व तक, मसीह की पूर्णता की माप तक" (इफि 4:12–13, आरएसवी)। लक्ष्य है "हर तरह से उसमें जो सिर है, मसीह में विकसित होना" (पद 15–16, आरएसवि)। *देखें* देह; कलीसिया; प्रभु भोज; पुनरुत्थान।

मसीह की निष्पापता

पवित्र शास्त्र इस बात में कोई संदेह नहीं छोड़ता कि मसीह को निष्पाप माना जाता है। उन्हें हर दृष्टि से परमेश्वर का सिद्ध पुत्र घोषित किया गया है। उनका मानव स्वभाव पवित्र है, बिना किसी पाप के है। इस बात की बार-बार और स्पष्ट रूप से स्पष्ट शब्दों में पुष्टि की गई है। पौलुस कहते हैं कि मसीह "पाप से अज्ञात थे" (2 कुरिं 5:21)। पतरस कहते हैं "न तो उसने पाप किया, और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली" (1 पत 2:22); वह उन्हें "धर्मी" कहते हैं (3:18)। इब्रानियों का लेखक कहता है कि मसीह "पवित्र, निष्कपट, निष्कलंक, पापियों से अलग" हैं (इब्रा 7:26)। याकूब उन्हें "धर्मी पुरुष" के रूप में वर्णित करते हैं (याकू 5:6), और यूहन्ना पुष्टि करते हैं कि "उसमें कोई पाप नहीं" (1 यूह 3:5)। सुसमाचारों और प्रेरितों के उपदेशों में, यीशु को बार-बार परमेश्वर का पवित्र पुत्र, परमेश्वर का पवित्र जन और पवित्र और धर्मी जन के रूप में गवाही दी जाती है (लूका 1:35; यूह 6:69; प्रेरि 3:14)।

यीशु अपने शत्रुओं से दृढ़तापूर्वक पूछ सके, "तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है?" (यूह 8:46)। वे अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में एक पवित्र आत्म-जागरूकता का पर्याप्त प्रमाण देते हैं। उनके पाप और अनाज्ञाकारिता की अधार्मिकता से मुक्त होने के कई संदर्भ और संकेत दिए गए हैं। उन्होंने सम्पूर्ण व्यवस्था का हर विवरण और हर पहलू में पालन किया (रोमि 10:4; इब्रा 4:15)। पीलातुस की पत्नी ने यीशु को धर्मी व्यक्ति माना, और पीलातुस ने स्वयं उन्हें निर्दोष व्यक्ति के रूप में बताया (मत्ती 27:19, 24)। यहाँ तक कि यहूदा को भी एहसास हुआ कि उसने स्वयं "निर्दोष लहू के साथ विश्वासघात" करके पाप किया है (मत्ती 27:4)।

मसीह की निष्पापता का मुद्दा केवल इस तथ्य तक सीमित नहीं है कि उन्होंने कोई पाप नहीं किया। इस प्रश्न का गहरा धार्मिक महत्व है, जो इस मुद्दे से संबंधित है कि क्या मसीह पाप करने में सक्षम थे। क्या उनके लिए पाप करना संभव था?

इस चिंता को धर्मशास्त्र में उनकी निष्पापता (मसीह पाप करने में असमर्थ थे) या इसके विपरीत स्थिति, उनकी पाप करने की क्षमता (मसीह पाप करने में सक्षम थे, भले ही उन्होंने इस दिशा में अपनी इच्छा का प्रयोग नहीं किया) के रूप में वर्णित किया गया है। इन दोनों दृष्टिकोणों पर समस्याएँ तुरंत सामने आती हैं: यदि मसीह पाप करने में असमर्थ थे, तो वे वास्तव में कैसे परिक्षाओं में पड़ सकते थे (और हमारे पास यीशु की परिक्षाओं के बारे में पवित्रशास्त्र में पर्याप्त जानकारी है)? यदि मसीह पाप कर सकते थे, भले ही उन्होंने ऐसा नहीं किया, तो क्या इसका मतलब यह है कि परमेश्वर पाप कर सकते हैं (क्योंकि मसीह हर दृष्टि से पूर्ण रूप से परमेश्वर के पुत्र थे, त्रिएकेश्वरीय के दूसरे व्यक्ति)? यह कहना बेकार है कि यीशु अपने मानवीय स्वभाव के संदर्भ में पाप कर सकते थे परन्तु अपने ईश्वरीय स्वभाव के संदर्भ में नहीं, क्योंकि यह परमेश्वर-मनुष्य के व्यक्ति की अविभाज्य एकता को अनदेखा करता है। हम मानव स्वभाव को ईश्वरीय स्वभाव से अलग नहीं कर सकते, जैसे कि उनकी मानवता में रहते हुए वह अपनी इश्वरत्व को स्वतंत्र रूप से कार्य में ला सकते थे। यह, आंशिक रूप से, प्राचीन नेस्टोरियन विधर्मियों की गलती थी। परमेश्वर का पुत्र जो कुछ भी करते है, वह अपनी संपूर्ण ईश्वरीय-मानव स्वभाव के साथ और उसमें करते हैं।

मूल रूप से, परीक्षा में पड़ने और पाप न कर पाने के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। बेशक, हमारे लिए यह कल्पना करना कठिन है कि यह कैसे संभव हो सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम पापी हैं और बुराई के अनुभवात्मक ज्ञान के भीतर खड़े हैं। मसीह का व्यक्तित्व बिल्कुल अनोखा है; हम यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि जंगल में और जीवन भर शैतान द्वारा उनकी परीक्षा कितनी वास्तविक थी (लूका 22:28, 39–46), यद्यपि उनके लिए वास्तव में पाप करना असंभव था।

शायद उदाहरण मददगार हो सकता है। कल्पना करें कि बिल्कुल अभेद्य किला है जिसे दुश्मन द्वारा तब तक नहीं जीता जा सकता जब तक कि उसकी सुरक्षा व्यवस्था कायम है। (उदाहरण के लिए, यदि हम आधुनिक युद्ध की भयानक विनाशकारी शक्तियों को बाहर कर दें) क्योंकि किला हमले से लिया नहीं जा सकता और वास्तव में अजेय है, जब तक कि बचाव सुरक्षा बनाए रखी जाती है, इसका मतलब यह नहीं है कि इसे घेराबंदी और उग्र हमले से नहीं घेरा जा सकता। तो यह मसीह की परिक्षाओं की वास्तविकता और परमेश्वर के पवित्र पुत्र के रूप में पाप करने में उसकी असमर्थता के संदर्भ में भी हो सकता है।

उनकी परीक्षा वास्तविक थी। क्योंकि, “हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुःखी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तो भी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट साहस बाँधकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे” (इब्रा 4:15–16)।

मसीह की मध्यस्थता

यीशु मसीह के उस कार्य के लिए प्रयुक्त धर्मशास्त्रीय शब्द, जिसमें वे पृथ्वी पर लोगों को बचाने, सहायता देने और आश्रय प्रदान करने के लिए परमेश्वर पिता से प्रार्थना करते हैं।

"मध्यस्थता" के लिए इब्रानी शब्द का मूल अर्थ "मारना" है, जो एक दृढ़ विनती करने के विचार को व्यक्त करता है। यह शब्द यशायाह की एक भविष्यवाणी में "प्रभु के दास" के बारे में उपयोग किया गया है: "उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया और अपराधी के लिये विनती करता है" (यशा 53:12)। यूनानी में, "मध्यस्थता" शब्द का मूल अर्थ "मिलना," "पास जाना," या "दुहाई देना" था। पुराने और नए नियमों के बीच की अवधि के दौरान, इस शब्द का उपयोग किसी अधिकारी से व्यक्तिगत रूप से कोई अनुग्रह माँगने के लिए किया गया (जैसा कि 2 मक्काबियों 4:8 में देखा गया है)। नए नियम में, इस शब्द का संज्ञा रूप "निवेदन" (1 तीमु 2:1) और "प्रार्थना" (1 तीमु 4:5) दोनों रूपों में अनुवादित किया गया है।

धर्मशास्त्री, मसीह की मध्यस्थता को उनके याजकीय कार्य का दूसरा भाग मानते हैं। उनके दुःख और क्रूस पर मृत्यु पहला भाग थे। इसने मनुष्यों के गलत कार्यों (पाप) की समस्या को सुलझाया और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच फिर से सब कुछ सही कर दिया (1 तीमु 2:5–6)। पुराने नियम में, याजक लोगों के लिए प्रार्थना करते थे। प्रायश्चित्त के दिन, महायाजक पापबलि के लहू के साथ अति पवित्रस्थान में प्रवेश करते थे। वह धूप और लहू को "प्रायश्चित के ढकने" पर छिड़ककर स्थान को पवित्र करते थे (लैव्य 16:11–19)। जब यीशु ने पापों के लिए मृत्यु को स्वीकार किया, तो वे पिता के पास गए और स्वर्ग में प्रवेश किया, जहाँ अब वे अपने लोगों के लिए विनती करते हैं (इब्रा 7:25)।

पृथ्वी पर मसीह की मध्यस्थता

स्वर्ग में मध्यस्थता का जीवन आरम्भ करने से पहले, यीशु मसीह ने पृथ्वी पर लोगों के लिए प्रार्थना की और मध्यस्थता की। यह उनकी उस शिक्षा से मेल खाती है जिसमें उन्होंने अपने शिष्यों को सिखाया कि उन्हें नित्य प्रार्थना करनी चाहिए और साहस नहीं छोड़ना चाहिए ("मन न हारना, लूका 18:1)। बाइबल में कई बार यीशु को प्रार्थना करते हुए दिखाया गया है। उदाहरण के लिए, उन्होंने अपने मित्र लाज़र की कब्र पर प्रार्थना की (यूह 11:41–42)। बारह प्रेरितों को चुनने से पहले उन्होंने पहाड़ पर पूरी रात प्रार्थना में बिताई (लूका 6:12–13)। अपने शिष्य पतरस को यह चेतावनी देने के बाद कि शैतान उसे परखना चाहता है, यीशु ने पतरस से कहा, “मैंने तेरे लिये विनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहे” (लूका

22:32)। क्रूस पर उनकी पहली बात, उनके सताने वालों के लिए प्रार्थना थी (लूका 23:34)।

यूहन्ना 17 "महायाजकीय प्रार्थना" बाइबल में यीशु की मध्यस्थी प्रार्थना का सबसे पूर्ण उदाहरण है। यह प्रार्थना उनके अपने पिता के साथ निकट सम्बंध पर आधारित है (यूह 17:5, 8)। इस प्रार्थना में यीशु तीन बातों के लिए प्रार्थना करते हैं:

1. अपने लिए, यह प्रार्थना करते हुए कि वे पिता की महिमा कर सकें और उस काम को पूरा कर सकें जिसके लिए उन्हें भेजा गया था (यूह 17:1–5)
2. उनके शिष्यों के लिए, जिन्हें उनके जाने के बाद सुसमाचार फैलाने के लिए चुना गया था (यूह 17:8–9)
3. सभी विश्वासियों के लिए (यूह 17:20)

उनकी मध्यस्थता के उद्देश्य शामिल हैं:

1. परमेश्वर के लोगों की एकता (यूह 17:11, 21)
2. संकट के बावजूद यीशु का आनन्द अपने में पाएँ (यूह 17:13)
3. उन्हें दुष्ट से बचाए रखें (यूह 17:15)
4. उनकी पवित्रता परमेश्वर के वचन के द्वारा हो (यूह 17:17)
5. मसीह के साथ उनकी अनन्त संगति (यूह 17:24)

स्वर्ग में मसीह की मध्यस्थता

मसीह का अपने लोगों के लिए किया गया मध्यस्थ कार्य, जो पृथ्वी पर शुरू हुआ था, स्वर्ग में भी जारी है। इब्रानियों की पुस्तक मसीह को एक याजक के रूप में वर्णित करती है और उनके सर्वदा मध्यस्थ की सेवकाई पर केन्द्रित है। उनकी स्वर्गीय मध्यस्थता उनके पृथ्वी पर किए गए बलिदान के बाद होती है, जो "एक ही बार" पूरा हुआ (इब्रा 10:10–18)। स्वयं यीशु ने कहा, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूँगा" (मत्ती 10:32)। यह निरन्तर मध्यस्थता नए नियम के वाक्यांशों में स्पष्ट होती है जैसे "यीशु मसीह के द्वारा" (रोम 1:8; 16:27; 1 पत 2:5), उसके द्वारा" (कुल 3:17; इब्रा 13:15), और "हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से" (इफि 5:20)।

नया नियम मसीह की स्वर्गीय मध्यस्थता के सिद्धान्त को चार मुख्य पदों में स्पष्ट रूप से पुष्टि करता है। प्रेरित पौलुस कहते हैं कि मसीह "परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है" (रोम 8:34)। इब्रानियों का लेखक कहता है कि "वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है" (इब्रा 7:25)। इसके अतिरिक्त, मसीह "स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिये अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे" (इब्रा 9:24)। प्रेरित यूहन्ना भी इस सेवा का वर्णन करते हैं: "यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह" (1 यूह 2:1)। "अधिवक्ता" के लिए यूनानी शब्द एक कानूनी सलाहकार को सन्दर्भित करता है, जो एक न्यायी के समक्ष अपने मुवक्किल का पक्ष प्रस्तुत करता है। इस प्रकार, यूहन्ना मसीह को, जो मृतकों में से जी उठे हैं, अपने लोगों के लिए परमेश्वर के सम्मुख प्रकट होते हुए चित्रित करते हैं, जो उनके पापों की क्षमा के लिए अपनी आज्ञाकारिता और कष्टों को प्रस्तुत करता है।

मध्यस्थता कैसे कार्य करती है?

स्वर्ग में मसीह की मध्यस्थता के दो पहलू हैं। यह पूर्ण भी है और निरन्तर जारी भी। उनके छुटकारे का कार्य समाप्त हो चुका है, लेकिन वह परमेश्वर के लोगों की चिन्ता करते रहते हैं। उनकी मध्यस्थता में शामिल हैं:

1. पिता के साथ उनकी उपस्थिति प्रत्येक विश्वासियों के धर्मी ठहराए जाने का आधार है (इब्रा 9:24)
2. प्रत्येक विश्वासियों के विरुद्ध शैतान के दोषारोपण को रोकना (रोम 8:33; प्रका 12:10)
3. प्रत्येक विश्वासी को परमेश्वर की उपस्थिति में आने के अधिकार का दावा करना (इब्रा 4:14–16)
4. प्रत्येक विश्वासी की प्रार्थनाओं में मध्यस्थता करना

इसके जवाब में, पिता परमेश्वर विश्वासियों को अनेक आत्मिक आशीषें देते हैं।

जॉन ओवेन, एक नैतिकतावादी जो 1616 से 1683 ईस्वी तक जीवित रहे, ने कहा, "मसीह की मध्यस्थता... यह परमेश्वर के सामने हमारे लिए उनका निरन्तर प्रकट होना है, जो उनके बलिदान की सामर्थ के साथ-साथ उनकी कोमल देखभाल, प्रेम और कलीसिया की भलाई, आश्रय, उद्धार और छुटकारे की इच्छा को दर्शाता है।"

बाइबल में उन लोगों का वर्णन किया गया है जिनके लिए मसीह मध्यस्थता करते हैं, वह व्यापक और संकीर्ण दोनों शब्दों में है। कहा जाता है कि मसीह सब लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं (यशा 53:12; तुलना करें मत्ती 26:28)। विशेष रूप से, वह अपने छुड़ाए गए समुदाय, कलीसिया के लिए प्रार्थना करते हैं (यूह 14:16; 17:9, 20; इब्रा 4:15–16)। फिर भी

मसीह की प्रार्थनाएँ विश्वासियों की व्यक्तिगत विशिष्ट आवश्यकताओं पर भी केन्द्रित होती हैं (लूका 22:31–32; 1 यूह 2:1)।

मसीह की मृत्यु

देखें क्रूसीकरण; प्रभु यीशु मसीह का जीवन और उनकी शिक्षाएँ।

मसीह विरोधी

1 यूहन्ना के अनुसार, जो कोई यह इनकार करता है कि यीशु मसीह है, परमेश्वर के अद्वितीय पुत्र है और वह देह में आए है। हालाँकि, बाइबल का यह शब्द मुख्य रूप से एक विशेष व्यक्ति को संदर्भित करता है जो इतिहास के अंतिम चरण में एक महत्वपूर्ण विरोधी बन जाता है।

शब्द "मसीह का विरोधी" केवल चार बार आता है, सभी यूहन्ना के पत्रों में है (1 यूह 2:18, 22; 4:3; 2 यूह 1:7)। 1 यूहन्ना 2:18 "बहुत से मसीह के विरोधी" का भी उल्लेख करता है। यूहन्ना ने माना कि उनके मसीही पाठक मसीह विरोधी के बारे में जानते थे और उन्हें उसके आने की प्रतीक्षा करने के लिए सिखाया गया था (1 यूह 2:18–27)। कई मसीह विरोधियों की उपस्थिति ने संकेत दिया कि अंत समय आ गया है, लेकिन यूहन्ना ने चेतावनी दी कि एक अंतिम मसीह विरोधी प्रकट होगा और वह इनकार करेगा कि यीशु मसीह है।

यूहन्ना ने कहा कि कोई भी व्यक्ति या संदेश जो "यीशु को नहीं मानती" वह मसीह विरोधी की आत्मा का है (1 यूह 4:3)। यूहन्ना का दूसरा पत्र "बहुत से ऐसे भरमानेवाले" का वर्णन करता है जो यीशु मसीह के शरीर में होकर आने को स्वीकार नहीं करते हैं (2 यूह 1:7)। ऐसा व्यक्ति "भरमानेवाला और मसीह का विरोधी" है।

यह भी देखें झूठे मसीह, झूठे मसीहा; पशु का चिन्ह; झूठे भविष्यद्वक्ता; पशु; प्रकाशितवाक्य की पुस्तक।

मसीह संबंधी धर्मविज्ञान

मसीह संबंधी धर्मविज्ञान

यीशु मसीह कौन है और उन्होंने क्या किया, इसका अध्ययन। यह विश्वास कि यीशु ही मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र है, यह सबसे पहले कैसरिया फिलिप्पी में पतरस द्वारा साहसपूर्वक व्यक्त किया गया था (मत्ती 16:16)। यह मसीहीयों का मुख्य विश्वास है। यही वह बात है जो किसी को मसीही बनाता है। सभी मसीही धर्मशास्त्र इस विश्वास के अर्थ को समझने के इर्द-गिर्द केंद्रित हैं।

इस विश्वास के आधार पर, कलीसिया में पहला महत्वपूर्ण धार्मिक निर्णय यह था कि यीशु, परमेश्वर के पुत्र, वास्तव में दैवी है। इसका अर्थ है कि वह परमेश्वर पिता और पवित्र आत्मा के साथ एक ही सार साझा करता है। यह विश्वास 325 ईस्वी में नाइसिया की परिषद में त्रित्व के सिद्धांत में स्पष्ट किया गया। चूंकि यह सिद्धांत नासरत के यीशु पर लागू किया गया, इससे यह प्रश्न उत्पन्न हुआ: एक व्यक्ति कैसे परमेश्वर और मनुष्य दोनों हो सकता है? कोई अनन्त कैसे सीमित हो सकता है? कोई शाश्वत कैसे समय का हिस्सा बन सकता है? परमेश्वर मनुष्य कैसे बन सकते हैं?

इसका उत्तर देने के लिए, कलीसिया ने देहधारण के सिद्धांत को स्वीकार किया, जो कहता है कि परमेश्वर यीशु में मनुष्य बन गए। यह सिद्धांत बहुत चर्चा के बाद विकसित किया गया। इन बहसों के दौरान, कलीसिया ने कुछ विचारों को अस्वीकार किया:

- डोसेटिज्म (पीड़ाभासवाद) ने यीशु की दैवत्त पर जोर देने के लिए उसकी मानवता को नकार दिया
- दत्तक ग्रहणवाद ने उनकी मानवता पर जोर देने के लिए उनकी दैवत्त को नकार दिया
- अपोलिनारियों का मानना था कि यीशु केवल दिखने में मनुष्य थे, लेकिन उनकी आत्मा दैवी थी।
- अन्य लोग मानते थे कि यीशु मनुष्य थे, लेकिन नैतिक विकास के माध्यम से वे दैवी बने और फिर परमेश्वर बन गए। ऐसा या तो उनके बपतिस्मा के समय हुआ, जब उन्होंने पवित्र आत्मा को प्राप्त किया, या उनके पुनरुत्थान के समय, जैसा कि प्रेरि 13:33 में सुझाया गया है—"आज मैं तेरा पिता बन गया हूँ।"
- नेस्टोरियनवाद मानता था कि यीशु दो अलग-अलग व्यक्ति थे—एक दैवी और एक मनुष्य।
- मोनोफ़िज़िटिज़्म का मानना था कि यीशु में दैवी और मानवीय प्रकृति का मिश्रण था

काल्सेडोनियन धर्मसार

ईस्वी सन् 451 में कैल्सेडोन की परिषद में, कलीसिया ने घोषणा की कि यीशु मसीह वास्तव में परमेश्वर और मनुष्य हैं। इस परिषद से निकला धर्मसार कहता है:

"[वह] अपने ईश्वरत्व के अनुसार पिता के साथ एकरूप है, और अपने मनुष्यत्व के अनुसार हमारे साथ भी एकरूप है; सभी बातों में हमारे समान, फिर भी पाप रहित; अपने ईश्वरत्व के अनुसार, पूरे संसार से पहले पिता से उत्पन्न; लेकिन अपने

मनुष्यत्व के अनुसार, इन दिनों में, हम मनुष्यों के लिए और हमारे उद्धार के लिए, परमेश्वर की माता, कुंवारी मरियम से, एक और वही मसीह, पुत्र, प्रभु, एकलौता, दो स्वभावों में जाना जाता है, बिना किसी भ्रम के, बिना किसी परिवर्तन के, बिना किसी अलगाव के, और बिना किसी विभाजन के; स्वभावों का अन्तर किसी भी तरह से उनके मिलन से समाप्त नहीं होता है, बल्कि प्रत्येक प्रकृति की विशिष्टता को बनाए रखा जाता है, और दोनों एक व्यक्ति और अस्तित्व में एकमत होते हैं। हम एक पुत्र को दो व्यक्तियों में विभाजित और पृथक नहीं मानते हैं, बल्कि एक ही पुत्र, और एकलौता, और ईश्वर-वचन, हमारे प्रभु यीशु मसीह को मानते हैं।"

धर्मसुधार के दौरान प्रोटेस्टेंट सुधारकों ने भी इस अंगीकार को स्वीकार किया।

मसीह की यह समझ देहधारण के रहस्य को स्पष्ट नहीं करती है, बल्कि यह परिभाषित करती है कि विश्वासियों को मसीह के बारे में कैसे सोचना चाहिए। यह पूरे इतिहास में मसीही विचार में महत्वपूर्ण रहा है।

पंथ से जुड़े कुछ प्रमुख शब्द हैं:

- **प्रकृति** (यूनानी शब्द *फिजिस* से)
  यह भौतिक चीज़ों को संदर्भित नहीं करता है जिनका अध्ययन विज्ञान के माध्यम से किया जा सकता है। इसके बजाय, "प्रकृति" किसी चीज़ के सार को संदर्भित करती है। यीशु मसीह की प्रकृति "ईश्वरत्व" होने का अर्थ है कि परमेश्वर को परिभाषित करने वाले सभी गुण उन पर भी लागू होते हैं। वह सिर्फ़ परमेश्वर जैसे नहीं है, वह परमेश्वर हैं। लेकिन, यही बात उनके मानवीय प्रकृति के बारे में भी सच है—यीशु सिर्फ़ मनुष्य जैसा नहीं दिखते, वह मनुष्य हैं। वह सिर्फ़ मनुष्य या सिर्फ़ परमेश्वर नहीं है, वह परमेश्वर है जो मनुष्य बन गए। यीशु जब मनुष्य बने तो उन्होंने परमेश्वर होना बंद नहीं किया, न ही उन्होंने दैवी आत्मा को मानवीय आत्मा में बदल दिया। इसके बजाय, उन्होंने मानवता को अपनाया, इसलिए अब वे दैवी और मानवीय दोनों हैं।
- **व्यक्ति** (यूनानी *हाइपोस्टैसिस* से)
  यह यीशु मसीह को एक आत्म-जागरूक, स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में वर्णित करता है, जो खुद को "मैं" कह सकते हैं और दूसरों से "आप" के रूप में संबंध रख सकते हैं। परमेश्वर और मानवता के बीच एक संबंध के रूप में, यीशु एक व्यक्ति है जिसमें दैवी और मानवीय दोनों तरह की प्रकृति है। जबकि "प्रकृति" के बिना कोई "व्यक्ति" नहीं हो सकता है, "व्यक्ति" के बिना भी "प्रकृति" हो सकती है। उदाहरण के लिए, पत्थर जैसी वस्तु में भूरा, कठोर, गोल और चिकनी होने की "प्रकृति" हो सकती है, लेकिन यह "व्यक्ति" नहीं है क्योंकि यह आत्म-जागरूक या स्वतंत्र नहीं है।

मसीह एक "व्यक्ति" है जिसमें "दैवी प्रकृति" और "मानवीय प्रकृति" दोनों हैं। कलीसिया के पिताओं ने सिखाया कि जबकि मसीह में सभी दैवी और मानवीय गुण थे (शारीरिक मानवीय विशेषताओं सहित - वचन "देहधारी हुआ," यूहन्ना 1:14), वह "दो व्यक्ति" नहीं थे। वह मानवीय प्रकृति वाला एक दैवी व्यक्ति है। वह एक मानव व्यक्ति नहीं है। सभी मनुष्यों की एक शुरुआत होती है। एक मनुष्य किसी बिंदु पर आत्म-जागरूक हो जाता है। हालाँकि, यीशु ने कहा, "कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ" (यूहन्ना 8:58)। यह कथन पूर्ण सत्य है। वह व्यक्ति जिसने पहाड़ पर उपदेश दिया और मछुआरों को समुद्र के किनारे उनका अनुसरण करने के

लिए बुलाया, वही व्यक्ति है जो समुद्र, पहाड़ या यहाँ तक कि मछुआरों के अस्तित्व में आने से पहले भी अस्तित्व में थे।

यीशु केवल एक मनुष्य नहीं है जिसे परमेश्वर के वचन द्वारा अंतर्दृष्टि दी गई थी। यीशु परमेश्वर के शाश्वत पुत्र है जो मनुष्य बन गए। परमेश्वर के पुत्र ने मानवीय व्यक्ति में प्रवेश नहीं किया। उन्होंने अपने दैवी व्यक्तित्व में मानवीय प्रकृति को जोड़ा। वह वही व्यक्ति बने हुए है, हालाँकि अब वह हमारी मानवता में हिस्सा लेते है। इसलिए, यीशु इतिहास में जी रहें है और इतिहास से परे है। उदाहरण के लिए, उन्होंने कहा, "जो काम तूने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है। और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी" (यूहन्ना 17:4–5)। यीशु एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बोलते हैं जो संसार में हैं और जो संसार के आरंभ से पहले भी अस्तित्व में थे और पिता की महिमा में सहभागी थे।

इस रहस्य को समझने की कोशिश करने पर आमतौर पर इसका अति सरलीकरण हो जाता है। कुछ प्रयास इस प्रकार हैं:

- **डोसेटिज्म** (पीड़ाभासवाद): मसीह एक दैवी प्राणी है जो केवल मनुष्य प्रतीत होते हैं।
- **दत्तकवाद**: मसीह एक मनुष्य हैं जो दैवी बन गए।
- **रित्श्लियानिज़्म**: मसीह का दैवी महत्व केवल दूसरों के लिए है।

यीशु मसीह के दो प्रकृतियों को सुरक्षित रखने के लिए, धर्मसार चार वाक्यांशों का उपयोग करता है जो हमें बताते हैं कि देहधारण (जब मसीह मनुष्य बन गए) के बारे में क्या सत्य है:

1. बिना भ्रम के
2. बिना परिवर्तन के
3. बिना अलगाव के
4. बिना विभाजन के

कुछ लोगों ने इन्हें "चार सरल नकारात्मक बातें" कहकर मजाक उड़ाया है, लेकिन वास्तव में ये अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यदि इनमें से कोई भी असत्य साबित होती है, तो हम मसीही विश्वास के एक केंद्रीय सिद्धांत को खो देंगे—कि यीशु मसीह पूर्ण रूप से परमेश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य हैं।

धर्मसार केवल यह नहीं बताता कि देहधारण में क्या नहीं हुआ, बल्कि यह हमें यह भी बताता है कि क्या हुआ था:

- यीशु के दो प्रकृति एकीकृत थे।
- एक व्यक्ति में दो प्रकृति होते हैं।।
- वह व्यक्ति पिता का शाश्वत पुत्र है।

इन दोनों स्वभावों का यह एकीकरण परमेश्वर के पुत्र के द्वारा किया गया था। यह देहधारण का मुख्य रहस्य है: कोई नहीं जानता कि एक अनंत परमेश्वर कैसे एक सीमित मनुष्य बन गया। धर्मवैज्ञानियों ने इस पर गहन चिंतन किया है, और काल्सेडोन की परिषद के बाद से इस पर और अधिक व्याख्याएँ लिखी गई हैं।

यीशु में दैवी और मानव स्वभावों का एकीकरण "व्यक्तिपरक अभेद" कहलाता है। यह शब्द एक यूनानी शब्द से आया है, जिसका अर्थ "व्यक्ति" है। यह मिलन व्यक्तिगत है क्योंकि यह एक व्यक्ति—परमेश्वर के पुत्र का कार्य है, जिसने मनुष्य रूप धारण किया। इसका अर्थ है कि यीशु एक दैवी व्यक्ति हैं जो आराधना के योग्य हैं। वह किसी और मनुष्य की तरह केवल मानव नहीं हैं। किसी मानव की उपासना करना मूर्तिपूजा होगी। क्योंकि यीशु के दैवी और मानवीय प्रकृति एक व्यक्ति में एकीकृत हैं, इसलिए यीशु एक व्यक्ति हैं, दो नहीं। एक मानव और एक दैवी व्यक्ति की उपासना करना बेतुका होगा। इसलिए, यह व्यक्ति, जो दोनों दैवी और मानवीय स्वभावों को मिलाता है, अक्सर "ईश्वर-मनुष्य" कहा जाता है। जब तक इस शब्द का अर्थ यह समझा जाता है कि यीशु मसीह पूर्ण रूप से परमेश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य हैं, यह धर्मसार के शिक्षण के साथ संगत है।

कैल्सेडोन के बाद मसीहशास्त्र

कैल्सेडोन की परिषद के बाद, यीशु की मानवता को समझना चुनौतीपूर्ण हो गया, और धर्नवैज्ञानिकों के बीच अधिक सहमति नहीं थी। हालांकि, वह दृष्टिकोण जो कैल्सेडोनियन धर्मसार के साथ सबसे अधिक संगत है और प्रोटेस्टेंट विश्वासियों के द्वारा व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है, वह यीशु की "अव्यक्तिगत मानवता" को संदर्भित करता है। आधुनिक धर्मवैज्ञानी जैसे कार्ल बार्थ, एमिल ब्रूनर, और जी. सी. बर्कोवर ने भी इस दृष्टिकोण का समर्थन किया है।

"अव्यक्तिक मानवता" का यह अर्थ नहीं है कि अवतार में आए यीशु में मानव गुणों की कमी थी। इसके बजाय, इसका मतलब है कि उनकी मानवता केवल उस दैवत्त व्यक्ति का हिस्सा है, जिसने अवतार में मानव प्रकृति को अपनाया। यीशु का मानव प्रकृति वचन (परमेश्वर के पुत्र), जो स्वयं परमेश्वर है, के द्वारा और उसमें मौजूद है। जबकि परमेश्वर सारी सृष्टि में विद्यमान है, वह अपनी पहचान को किसी और के साथ साझा नहीं करता। यहाँ तक कि जब नए नियम में कहा गया है कि पवित्र आत्मा मसीहियों में वास करता है, इसका यह अर्थ नहीं है कि वे परमेश्वर के समान हैं। मानव और दिव्य एक समान नहीं हैं। हालाँकि, यीशु मसीह अद्वितीय हैं: यीशु परमेश्वर के साथ एक हैं क्योंकि वह वचन हैं जो देहधारी हुए। जैसा कि

कार्ल बार्थ कहते हैं, यीशु केवल परमेश्वर के माध्यम से या परमेश्वर के साथ जीने वाले नहीं हैं; वे स्वयं परमेश्वर हैं। उनका मानव प्रकृति उनके दैवी प्रकृति के साथ एकीकृत है, जिसका अर्थ यह है कि उनकी मानवता उनके दैवी प्रकृति का एक गुण है। उनका मानव प्रकृति केवल इसलिए अस्तित्व में है क्योंकि दैवी वचन उनके अंदर और उनके माध्यम से कार्य करता है।

सरल शब्दों में, यीशु परमेश्वर के साथ इतने एकीकृत हैं कि वह केवल एक मनुष्य के रूप में ही अस्तित्व में रह सकते हैं क्योंकि वह परमेश्वर हैं। इसे दो सिद्धांतों द्वारा पुष्टि की जाती है:

- **अनहाइपोस्टेसी:** यीशु का मानव प्रकृति अपने आप में अस्तित्व में नहीं है
- **एनहाइपोस्टेसी:** यीशु की मानवीय प्रकृति परमेश्वर के दैवी पुत्र के साथ उनके मिलन के माध्यम से अस्तित्व में है। नासरत के यीशु परमेश्वर के पुत्र नहीं बने, बल्कि परमेश्वर के पुत्र नासरत के यीशु बने।

देहधारण एक दैवी व्यक्ति का कार्य है, न कि एक मनुष्य व्यक्ति का दैवी बनने का अनुभव। देहधारण में, परमेश्वर के पुत्र ने कार्य किया, लेकिन एक मनुष्य व्यक्ति पर कार्य नहीं किया गया। क्योंकि ईश्वरत्व पुत्र मनुष्य बनने के लिए कार्य करते हैं, यीशु नासरी के रूप में, यह मनुष्य परमेश्वर के पुत्र हैं, जिस प्रकार कोई अन्य मनुष्य नहीं हो सकता।

देहधारण के सिद्धांत के लिए पवित्रशास्त्र प्रमाणों में शामिल हैं:

- सुसमाचार की पुस्तकें
- पौलुस के पत्रों में कई अंश, विशेष रूप से फिलिप्पियों 2:6–8, जो नए नियम में मसीह के बारे में सबसे महत्वपूर्ण कथन है। पौलुस यीशु के बारे में कहते हैं, "जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।"

काल्सेडोनियन धर्मसार देहधारण के रहस्य को हल नहीं करता है, और धर्मवैज्ञानियों ने इसे बेहतर समझने के लिए कई प्रयास किए हैं। एक प्रसिद्ध सिद्धांत, जो पहले उल्लेखित फिलिप्पियों के अंश पर आधारित है, "केनोसिस" कहलाता है। यह सुझाव देता है कि जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य बने, तो उन्होंने अपनी ईश्वरत्व के कुछ पहलुओं को त्याग दिया ("स्वयं को खाली किया")। हालांकि, फिलिप्पियों के पाठ में यह नहीं कहा गया है कि उन्होंने किसी वस्तु को त्याग दिया, बल्कि यह कहा गया है कि उन्होंने "स्वयं को खाली किया," जो एक अलंकारिक अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ है कि उन्होंने स्वयं को विनम्र किया। इस कथन की व्याख्या की कठिनाई के बावजूद, केनोसिस का सिद्धांत अभी भी मौजूद है, विशेष रूप से ब्रिटिश धर्मविज्ञान में। एक अन्य व्याख्या यह सुझाव देती है कि यीशु की मानवता एक भेष थी (एक शब्द जिसका उपयोग दार्शनिक सोरेन कीर्केगार्ड ने किया) जो उनकी ईश्वरत्व पहचान को सभी से छुपाती थी, सिवाय उन लोगों के जिनके पास विश्वास था। इस दृष्टिकोण के अनुसार, देहधारण सत्य को प्रकट करता है लेकिन इसे छुपाता भी है।

यह भी देखें मसीह का स्वर्गारोहण; मसीह; देहधारण; यीशु मसीह, जीवन और शिक्षाएँ; परमेश्वर का राज्य, स्वर्ग का राज्य; मसीहा; दृष्टान्त; परमेश्वर का पुत्र; मनुष्य का पुत्र; यीशु का कुंवारी से जन्म; वचन।

मसीहा

यह शीर्षक इब्रानी शब्द मशिआख से लिया गया है, जो क्रियात्मक विशेषण है और जिसका अर्थ है "अभिषिक्त व्यक्ति"। इसके नए नियम समकक्ष, क्रिस्टोस (ख्रीस्त) के साथ, यह अभिषेक के कार्य को संदर्भित करता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति को परमेश्वर की सेवा करने के लिए अलग किया जाता है और फिर तेल से अभिषेक किया जाता है। मौखिक मूल *(मशाख)* भी इस विचार को व्यक्त करता है।

तेल के साथ औपचारिक रूप से अभिषेक करने की इस्राएल की प्रथा कई संदर्भों में मौजूद है। याजकों को नियमित रूप से बलिदान की वेदी पर अपनी ईश्वरीय सेवा से पहले अभिषेक किया जाता था (लैव्य 4:3)। जबकि भविष्यवक्ताओं के वास्तविक अभिषेक के प्रमाण हैं (1 रा 19:16), यह एक सामान्य प्रथा प्रतीत नहीं होती थी। शमूएल द्वारा शाऊल और दाऊद का अभिषेक इस कार्य को इब्रानी राजाओं के लिए उनके राजकीय नेतृत्व के पद संभालने से पहले एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में स्थापित करता है। राजा को विशेष रूप से प्रभु का अभिषिक्त माना जाता था और इस रूप में उसे मनुष्यों (1 शमू 12:14; 2 शमू 19:21) और परमेश्वर (भजन 2:2; 20:6) के सामने एक सुरक्षित स्थान रखने वाला समझा जाता था। अनेक मसीही भविष्यवाणियों के साथ, इन घटनाओं ने यहूदियों को परम अभिषिक्त जन के बारे में जागरूक किया, जो अंततः इस्राएल के लिए उद्धार लेकर आएगा।

मोसेस मैमोनिडीज़ (सन13वीं शताब्दी) को समर्पित इब्रानी विश्वास के 13 लेखों का निष्कर्ष यह कथन है जो अभी भी कई इब्रानी प्रार्थना पुस्तकों में पाया जाता है: “मैं पूरे हृदय से विश्वास करता हूँ कि मसीहा आएगा; और यद्यपि उसके आने

में देरी हो, मैं फिर भी उसके शीघ्र आगमन की प्रतीक्षा करूंगा।"

पुराने नियम में मसीहा

मसीहा के आगमन के लिए यहूदियों की आशा दाऊद के शासनकाल की अवधि से गतिशील रूप से विकसित हुई, जब यह भविष्यवाणी की गई थी कि उसका राज्य अनंत काल तक बना रहेगा (2 शमू 7:16)। इस्राएल को बताया गया था कि दाऊद के कुल से उसका सिंहासन पूरी पृथ्वी पर कभी न समाप्त होने वाला राज्य स्थापित करेगा (2 शमू 22:48–51; यिर्म 33)। मसीही उद्धार के इसी पहलू के साथ यहूदी मन पारंपरिक रूप से व्यस्त रहा है (तुलना करे प्रेरि 1:6)।

रूढ़िवादी रब्बियों के बीच मसीहा की सेवकाई के विवरणों के बारे में अनुमान लगाने की कभी कमी नहीं रही है। एक समय में रब्बियों ने उनके व्यक्तित्व और उद्धार के लिए पवित्रशास्त्र के कम से कम 456 अंशों को लागू किया था। मसीहा के प्रति व्यस्तता लघु निबंधों का संग्रह (बाबेल का तालमूद) में स्पष्ट है, जहाँ कई पद्यांश बताते हैं कि संसार उसके खातिर बनाया गया था और सभी भविष्यवक्ताओं ने उसके दिनों की भविष्यवाणी की थी (यहूदी महासभा 98b, 99a)। कुल मिलाकर, रूढ़िवादिता अभी भी यरूशलेम में मसीहा का शासन, मंदिर के पुनर्निर्माण, और याजकीय पद और बलिदान दोनों की पुनःस्थापना में अपने पुराने विश्वास को बनाए रखता है।

जबकि बाद के यहूदी धर्म ने मसीहा को युगांतकारी व्यक्ति के रूप में देखा जो समय के अंत में शासन करेगा, आधुनिक यहूदी विचार ने व्यक्तिगत मसीहा की पारंपरिक धारणा को छोड़कर मसीही युग में विश्वास को अपनाया है। प्रचलित उदार यहूदी धर्म न्याय और करुणा के जुड़वां यहूदी आदर्शों के प्रभाव से अंततः परिपूर्ण संसार की कल्पना करता है। इस तरह का विश्वास, पतित मनुष्यों की दुर्दशा और पवित्रशास्त्र की शिक्षा को अनदेखा करते हुए, चमत्कारी स्वर्गीय हस्तक्षेप के लिए मानवतावादी सोच को प्रतिस्थापित करता है।

जबकि मसीहा की उत्पत्ति दृढ़ता से दाऊद के घराने से जुड़ी है (2 शमू 7:14; होशे 3:5), मसीहा का वादा दाऊद के जीवित रहने से बहुत पहले दिया गया था। वास्तव में, मसीहा के लिए आशा परमेश्वर के राज्य की स्थापना के पहले वादे में निहित है। शैतान को संबोधित करते हुए, उत्पत्ति 3:15 यह घोषणा करता है कि परमेश्वर सर्प और स्त्री के बीच में बैर उत्पन्न करेंगे जब तक कि समय की पूर्णता में, स्त्री का "वंश" सर्प के सिर को कुचल न डाले।

मसीही भविष्यवाणी का स्वभाव प्रगतिशील है; प्रत्येक भविष्यवाणी किसी विषय पर अधिक प्रकाश डालती है। यह उदाहरण के लिए तब होता है, जब "वंश" की अवधारणा का सम्मान किया जाता है: मसीहा स्त्री से उत्पन्न होगा (उत्पत्ति 3:15), शेम की वंशावली के माध्यम से (9:26) और विशेष रूप से अब्राहम के माध्यम से (22:18)। फिर भी उत्पत्ति 22:18 तक भी, "वंश" को स्पष्ट रूप से व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है, क्योंकि जेरह (वंश) एकवचन या बहुवचन वस्तु को इंगित कर सकता है। मसीहा संबंधी भविष्यवाणी के इन प्रारंभिक चरणों में होने वाली "कुचलने" के स्वभाव अभी भी कम स्पष्ट है। फिर भी पाप के लिए मसीहा के कुचले जाने का विचार उत्पत्ति की घोषणा में निहित है, जैसा कि उस कार्य से संबंधित हिंसा है। मसीहाई भविष्यवक्ताओं में प्रमुख, यशायाह इस सिद्धांत को पूरी तरह से व्यक्त करता है कि अभिषिक्त जन को अत्यधिक पीड़ा सहनी होगी (यश 53:1)। "प्रभु का दास" के अंतर्गत, चार "दास के गीत" भविष्य के उद्धारकर्ता के मिशन को चित्रित करते हैं (यश 42:1–7; 49:1–9; 50:4–11; 52:13–53:12)। हालाँकि यह सच है कि यशायाह स्पष्ट रूप से मसीहा के शीर्षक को प्रभु के दास के साथ नहीं जोड़ा है, दोनों व्यक्तियों को एक ही व्यक्ति के रूप में पहचानना उचित है। दोनों व्यक्तित्व विशेष रूप से अभिषिक्त हैं (61:1); दोनों अन्यजातियों के लिए ज्योति लाते हैं (55:4; तुलना करें 49:6); दोनों का प्रथम आगमन दिखावटी नहीं है (7:14–15; 11:1; तुलना करें 42:3; 53:1); और दाऊद की "शाखा" का शीर्षक उन दोनों पर लागू होता है (11:1–4)। उतना ही महत्वपूर्ण उनके अपमान और महिमा के दोहरे तथ्य हैं (49:7; 52:13–15)। प्रारंभिक मसीही युग के यहूदी विद्वान अरामी तारगुम में भविष्यवक्ताओं के यशायाह 42:1, "मेरे दास मसीहा को देखो" और यशायाह 53 को शुरू करते हैं, "देखो, मेरा दास मसीहा समृद्ध होगा।" जबकि कुस्रू को "अभिषिक्त" कहा जा सकता है, कोई अंतिम उद्धारक कार्य उसे नहीं दिया गया है (45:1–5)। इस्राएल, यद्यपि परमेश्वर द्वारा चुना गया और प्रेम किया गया है (41:8), परमेश्वर के दास के रूप में मानवजाति तक उसके उद्धारक कार्य को लाने के लिए अयोग्य है (42:18)। दाऊद के राजवंश का पतन स्पष्ट रूप से इस्राएल की अभिषिक्त राजा की आवश्यकता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है जो धर्मत्याग और आज्ञालंघन को चंगा करेगा (निर्ग 33:5; होशे 4:1)। पुराने नियम का इतिहास इस्राएल की व्यापक नैतिक विफलता को बार-बार प्रस्तुत करता है। उसकी समस्या, जो मानवजाति के साथ साझी है, केवल उस वाचा के माध्यम से हल की जा सकती है, जिसका आश्वासन और केंद्रबिंदु एक व्यक्तिगत उद्धारकर्ता और सर्वोच्च प्रभु है (यिर्म 31:31–34)। ऐसे विजेता का आगमन यिशै के गिरे हुए पेड़ के ठूँठ से अंकुर लगने के दर्ज किए गए वादे में रहता है, जो परमेश्वर के अन्धकार से घिरे हुए लोगों के लिए जीवन की रोशनी लाएगा (यश 9:2; 11:1)।

इस विचार से दूर होना कठिन है कि दासत्व और दीनता की अवधारणा राजशाही के क्षेत्र के अंतर्गत आती है (जक 9:9)। याजक और राजा के पूरक पदों को भरने वाले मसीहा की अवधारणा निर्विवाद है (भजन 110:1–4); पीड़ित याजक-राजा बहुत कम स्पष्ट है। तालमुदिक लेखकों में से कुछ ने स्पष्ट रूप से यह संभावना पहचानी कि मसीहा को कष्ट सहना

पड़ेगा। बाबेल तालमुद की येहूदी महासभा 98b के निबंध में, मसीहा को बीमारियों और दर्द को सहने के लिए कहा गया है। प्रायश्चित के दिन की प्रार्थनाओं में एलियाज़ार बेन कालिर (शायद 1000 ईस्वी तक) के शब्द मिल सकते हैं: "हमारे धर्मी मसीहा हमसे दूर चला गया हैं; हम भयभीत हैं, और हमें निर्दोष ठहराने वाला कोई नहीं है। हमारे पाप और हमारे अपराधों का जुआ वह उठाता है, और हमारे अपराधों के लिए घायल होता है। वह हमारे पापों को अपने कंधों पर उठाता है ताकि हमारे अपराधों के लिए क्षमा को वह ढूंड सके। हम उसके कोड़ों से चंगे हो जाएँ।" इसी प्रकार से रब्बी एलिय्या दे विदास लिखते हैं, "'वह हमारे अपराधों के लिए घायल हुआ, हमारे अधर्मों के लिए कुचला गया,' का अर्थ यह है कि चूँकि मसीहा हमारे अधर्मों को सहता है, जो उसके कुचले जाने का प्रभाव उत्पन्न करता है, इसलिए जो कोई यह स्वीकार नहीं करेगा कि मसीह हमारे अधर्मों के लिए इस प्रकार पीड़ित होता है, उसे स्वयं उनके लिए सहन और पीड़ित होना पड़ेगा।" इन सबके बावजूद, यह अत्यधिक संदिग्ध है कि किसी ने भी कल्पना की होगी कि मसीहा अपनी मृत्यु के माध्यम से अपने उद्धार के कार्य को पूरा करेगा (तुलना करें यशा 53:12)। जब रब्बी की अटकलें अपमान और उत्कर्ष के विरोधाभासी तथ्यों को संतोषजनक रूप से सुसंगत बनाने में विफल रहीं, तो कुछ लोगों ने यह परिकल्पना की कि परमेश्वर एक मसीहा को पीड़ित होने के साथ-साथ शासन करने के लिए भी भेजेगा। बाइबिल के अनुसार, यह स्पष्ट है कि अभिषिक्त व्यक्ति की भयानक पीड़ा अनंत महिमा के लिए आवश्यक प्रस्तावना है। उन्हें न केवल महान राजा (52:13; 53:12) के रूप में चित्रित किया गया है बल्कि विनम्र (53:2), अपमानित (52:14), अस्वीकृत (53:3) और मानवता के विद्रोह के परिणामों को सहन करने वाले (पद 5–6) के रूप में भी चित्रित किया गया है। फिर भी वह अपने लोगों के लिए मध्यस्थता करने और उन्हें भरपूर रूप से आशीष देने के लिए उठाया गया है (पद12)। मसीहा, जिसने वह पूर्ण आज्ञाकारिता को पूरा किया जिसे आदम और इस्राएल प्राप्त करने में असफल रहे, इस्राएल और अन्य राष्ट्रों को वापस परमेश्वर के पास लाएगा (42:18–19; 49:3, 6)।

दानिय्येल के लेखन में महत्वपूर्ण मसीहाई जानकारी है। दानिय्येल इस मायने में अद्वितीय है कि वह साहसपूर्वक "अभिषिक्त प्रधान" (दानि 9:25) के बारे में बात करता है, उसे "मनुष्य के संतान" (7:13) के रूप में पहचानता है, और कहता है कि वह पीड़ित होता है ("काटा जाएगा," 9:26)। मसीहा के कट जाने (यानी, मृत्यु) का यह कथन उनके प्रायश्चित कार्य को संभव बनाता है (9:24)। प्रतिस्थापनात्मक प्रायश्चित का सिद्धांत बाइबल में पाया जाने वाला प्रायश्चित का एकमात्र सिद्धांत है (तुलना करें लैव्य 17:11)। इस्राएल समझ गया कि पाप सहने का मतलब पाप के परिणाम, या दंड को भुगतना है (तुलना करें गिन 14:33)। मसीहा के प्रायश्चित बलिदान के कार्य सिद्धांत में वही दंडात्मक प्रतिस्थापन स्पष्ट है। वह पीड़ित का विकल्प है जिसे पापी के कारण होने वाला कष्ट स्थानांतरित किया जाता है। इस प्रकार से दंड को प्रतिस्थापनात्मक रूप से सहन किया गया, प्रार्थी को पूरी तरह से क्षमा कर दिया जाता है।

भजन संहिता 22:1 मसीहा के करुणामय पुकार को दर्ज करता है जो मनुष्य के पाप के दंड को सहन कर रहा है (तुलना करें मत्ती 27:46) जैसे वह अपने लोगों के लिए पाप बन जाता है (2 कुरि 5:21)। फिर भी उनकी पुकार, "मेरे परमेश्वर," घनिष्ठ संबंध को इंगित करता है जिसे मौलिक रूप से विच्छेद नहीं किया जा सकता है। एक बार फिर मसीहाई अपमान के बाद महान महिमा का अभिप्राय दृष्टिगत होती है (भजन 22:27)। तथाकथित "राजकीय भजन" (जैसे, 2; 72; 110) में यह याजक मध्यस्थ होता है जो राजा और न्यायाधीश के रूप में कार्य करने के लिए भी नियुक्त होता है।

यिर्मयाह इस चित्रण को एक कदम आगे ले जाता है। वह जो मनुष्यों को परमेश्वर के साथ उद्धारात्मक वाचा में प्रवेश करने में सक्षम करेगा, वह परमेश्वर की आरोपित धार्मिकता को व्यक्त करता है: मसीहा, परमेश्वर की धार्मिक शाखा, "प्रभु हमारी धार्मिकता" बन जाता है। विरोधाभासी रूप से, व्यवस्था के तहत कोई भी व्यक्ति जो पाप का दोषी नहीं था, उसे क्रूस पर नहीं चढ़ाया जा सकता था (व्यव 21:22)। परन्तु यह वह धर्मी मसीह है जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, जिससे किसी भी कथित कानूनी आत्मविश्वास को हमेशा के लिए कमजोर कर दिया (व्यव 21:23; गला 3:13)। क्षमा से अधिक, विश्वासियों को उसमें धर्मी माना जाता है (यिर्म 23:5–6)।

जबकि मसीहा का जन्मस्थान अच्छी तरह से स्थापित था (मी 5:2), उनके इश्वरत्व पर एक गर्मागर्म विवाद था। यद्यपि प्राचीन इस्राएल में कुछ लोग अलौकिक मसीहा में विश्वास पर विवाद करते थे, यह संदेहास्पद है कि किसी ने भी उसे "परमेश्वर हमारे साथ" के पूर्ण अर्थ में कल्पना की होगी (तुलना करें इब्रा 1:3)।

नए नियम में मसीहा

नए नियम के लेखकों ने यह चित्र प्रस्तुत किया है कि वह जो अलौकिक उत्पत्ति वाला बालक था (यश 7:14; मी 5:2), पूरी ईश्वरीय महिमा का भार अपने ऊपर लिए हुए था (यश 9:6; फिल 2:6; कुल 1:19)। वह परमेश्वर का पुत्र है, सभी लोगों की आराधना प्राप्त करने के योग्य है (भजन 45:6–7; तुलना करें इब्रानियों 1:8–9)।

पहली सदी के फिलिस्तीन के यहूदी जानते थे कि मसीहा का वादा मूसा जैसे किसी व्यक्ति के आने पर पूरा होगा (व्यव 18:18)। यीशु और मूसा के बीच समानताएँ बहु मात्रा में हैं। मध्यस्थों, नवप्रवर्तकों, और लोगों के लिए आत्मिक जीवन के नए चरणों के प्रचारकों के रूप में, वे अद्वितीय हैं। विशेष रूप से, दोनों को बचपन में चमत्कारिक रूप से बचाया गया (निर्ग 2; मत्ती 2:13–23); दोनों ने परमेश्वर के लोगों की सेवा के लिए शाही दरबार का त्याग किया (फिलि 2:5–8; इब्रा 11:24–

28); दोनों ने दूसरों के प्रति गहन करुणा दिखाई (गिन 27:17; मत्ती 9:36); दोनों ने परमेश्वर के साथ "आमना सामना" किया (निर्ग 34:29–30; 2 कुरि 3:7); और दोनों उद्धार की वाचा में मध्यस्थता करते हैं (व्यव 29:1; इब्रा 8:6–7)। परन्तु, जैसा कि लूथर देखते हैं, "मसीह कोई मूसा नहीं है।" अंतिम विश्लेषण में मूसा केवल घरेलू सेवक है; मसीहा सभी चीजों का निर्माता और स्वामी है (इब्रा 3:3–6; तुलना करें यूह 1:1–2, 18)।

पारिवारिक वंशावली पवित्रशास्त्र में महत्वपूर्ण हैं। रब्बियों ने होशे 3:5 और यिर्मयाह 30:9 के आधार पर मसीहा की दाऊद वंशावली की पूर्ण आवश्यकता पर सहमति व्यक्त की। स्वर्गदूतों की घोषणा तुरंत यीशु के लिए सही वंशावली स्थापित करती है (लूका 1:32–33; तुलना करें 2:4), जैसा कि मत्ती (मत्ती 1:1–17) करता है। लूका की सूची, मत्ती की तरह, यीशु को मसीहा के रूप में सत्यापित करते हुए विशेष राजा वंश को प्रस्तुत करती है (लूका 3:23–38)।हालाँकि दोनों वंशावलियों के बीच भिन्नताएँ होती हैं, दृढ़ एकजुटता है जो अद्वितीय मसीही वंश के भीतर एक वंशज पर जोर देती है। पवित्रशास्त्र में मसीहा की केन्द्रीयता पर पूरी तरह से जागरूक (यूह 5:46; 8:56), यीशु ने कई अवसरों पर स्वयं को मसीह के रूप में स्वीकार किया। उसने अंधे बरतिमाई (मर 10:46–48); यरूशलेम में प्रवेश करते समय भीड़ से (मत्ती 21:9); मंदिर में बच्चों से (v 15); और अन्य संदर्भों में भी (मत्ती 16:16–18; मर 14:61–62; लूका 4:21; यूह 4:25–26) से यह उपाधि स्वीकार की। फिर भी, उन्होंने अपने शिष्यों को अपनी पुनरुत्थान से पहले अपने मसीहा के महान कार्यों का प्रसारण न करने की चेतावनी दी (मत्ती 17:9; तुलना करें लूका 9:20–21)। आमतौर पर प्रचलित (लेकिन गलत) धारणा के कारण कि मसीहा की भूमिका मुख्य रूप से एक राजनीतिक मुक्तिदाता की थी, यीशु ने वास्तव में उस शब्द का उपयोग करने से परहेज किया और अपने आपको 'मनुष्य का पुत्र' के रूप में पहचानना अधिक पसंद किया। यह बिल्कुल भी नहीं माना गया था कि दोनों पदनाम एक ही व्यक्ति को संदर्भित करते थे (तुलना करें मर 14:61–62)। दानिय्येल के स्वर्गीय विजेता के दर्शन (दानि 7:13–14) से मूल रूप से उधार लेते हुए, यीशु ने लगातार इस कम-ज्ञात शीर्षक का उपयोग किया और इसे मसीही उद्धार के सच्चे चरित्र और दायरे से भर दिया। इस संबंध में यीशु की शिक्षा ने उनके शिष्यों को उनके उद्देश्य के बारे में उनकी गलत धारणाओं को सुधारने में सक्षम बनाया (मत्ती 16:21–23)। समय के पूरा होने पर वे उसे केवल मसीहा के रूप में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण पुराने नियम के विषय के रूप में भी देखेंगे (मत्ती 5:17; लूका 24:27, 44; यूह 5:39; तुलना करें इब्र 10:7)। जब यीशु ने तौरा से शुरू करके शास्त्रों की व्याख्या की (लूका 24:27), तो उन्होंने ऐसा परमेश्वर की जीवित व्याख्या के रूप में किया, वचन ने देहधारण किया (यूहन्ना 1:14, 18)। वैध मसीही व्याख्या कई वचन के भागों में पाई जाती है, जैसे भजन संहिता 2; 16; 22; 40; 110; यशायाह 7:14; 9:6; 11:1; 40:10–11; 50:6; 52:13–53:12; 61:1; 63:1–6; यिर्मयाह 23:5–6; 33:14–16; यहेजकेल 34:23; 37:25; दानिय्येल 9:24–27; होशे 11:1; मीका 5:2; जकर्याह 9:9; 11:13; 12:10; 13:7; मलाकी 3:1; 4:2।

यीशु का मसीहत्व सभी चार सुसमाचार प्रचारकों द्वारा दृढ़ता से घोषित किया गया है (मत्ती 1:1; मर 1:1; लूका 24:26; यूह 20:31)। पिन्तेकुस्त पर पतरस , कूशी खोजे से पहले फिलिप्पुस, और खुली बहस में अपुल्लोस सभी यह तर्क देते हैं कि यीशु ही मसीहा हैं (प्रेरि 2:36; 8:35; 28:28)। पतरस कहता है कि वह प्रभु और मसीह दोनों "बनाया गया" (2:36), यह दर्शाता है कि पुनरुत्थान सही ढंग से उसकी पुष्टि करता है। इसी तरह, प्रेरित पौलुस यीशु के पुनरुत्थान को उनके अविच्छेद्य अधिकार की स्पष्ट घोषणा के रूप में बताता हैं (रोम 1:4)। पूर्व फरीसी और कलीसिया के पूर्व उत्पीड़क के लिए, 'यीशु मसीह' पौलुस की प्रचार का वास्तविक हृदय और प्राण है। मसीहा की महिमा की तुलना में कुछ भी योग्य नहीं है; तुलना करने में सब कुछ फीका पड़ जाता है (फिल 3:5–10)। प्रेरित की समग्र आकांक्षा है कि दूसरों को उसके एकलौते पुत्र में परमेश्वर की पूर्णता को जानने का अनुभव हो। (इफ 3:14–19)।

पवित्रशास्त्र में पवित्र आत्मा यीशु के बारे में व्यापक अपीलों के साथ यीशु की बात करता है—पवित्र, न्यायाधीश, धर्मी, राजा, परमेश्वर का पुत्र, और प्रभु—लेकिन ये संपूर्ण नहीं हैं। उसमें मसीही भविष्यवाणी की सभी पंक्तियाँ मिलती हैं; वह कसौटी है जिसके द्वारा उनकी वैधता दृढ़ता से स्थापित होती है। प्रभु यीशु मसीह स्वयं उस वाचा का हृदय और सार हैं जिसके माध्यम से पापी लोग पवित्र परमेश्वर से मेल-मिलाप कर सकते हैं (यश 42:6; यूह 14:6)। कि यीशु इस्राएल के मसीहा हैं, देहधारी परमेश्वर है, भविष्यवाणी, प्रकार, और प्रतीक —उनके आने की सभी छायाओं - को विस्तृत रूप से पूरा करता है। इसलिए, सभी को उस पर विश्वास करना चाहिए, जो सभी अनुग्रह का स्रोत है, एकमात्र स्थायी खजाना है (मत्ती 12:21; यूह 1:16–17; कुलु 2:3)। भविष्यवक्ता के रूप में अभिषिक्त, वह हमें सभी सत्य की ओर ले जाता है (यूह 6:14; 7:16); याजक के रूप में वह हमारे लिए मध्यस्थता करता है (इब्रा 7:21); और राजा के रूप में वह हम पर शासन करता है (फिलि 2:9–10)।

प्रायश्चित; शाखा; मसीहशास्त्र; जीवन और शिक्षाएं, यीशु ख्रीस्त की; उद्धारकर्ता, उद्धार; परमेश्वर का पुत्र; मनुष्य का पुत्र *भी देखें*।

मसीही

यीशु मसीह के अनुयायियों को सबसे पहले दिया गया नाम (प्रेरि 11:26)। जब मसीही विश्वास सीरिया के अन्ताकिया पहुँचा, तो सुसमाचार यहूदियों के साथ-साथ अन्यजातीयों के

लिए भी प्रचारित किया गया। इस प्रकार की सुसमाचार प्रचार ने इस संप्रदाय को यहूदी धर्म के एक नए प्रकार से अगल और अधिक प्रभावशाली मत के रूप में चिह्नित किया; यह एक नया धर्म था। अन्ताकिया के अन्यजातियों ने इस नए समूह के लिए एक नाम गढ़ा। चूंकि समूह के सदस्य लगातार मसीह के बारे में बात करते थे, उन्हें मसीही कहा गया, जिसका अर्थ है मसीह का "परिवार" या "समर्थक" हैं। नाम में कुछ व्यंग्य भी हो सकता था। उदाहरण के लिए, चूंकि "ऑगस्टिनियन" ने सम्राट नीरो औगुस्तुस की सार्वजनिक प्रशंसा का नेतृत्व करने वाले एक संगठित समूह थे, इसलिए हो सकता है कि अन्ताकिया के नागरिकों ने मसीह का एक तुलनीय लातीनी नाम मज़ाक में रख दिया हो। इसी तरह के समूहों में हेरोदेस के समर्थक, हेरोदियों शामिल थे। "क्रिस्ट" (मसीह) अन्यजातियों के लिए एक असामान्य और अर्थहीन नाम था, लेकिन "क्रिस्टोस" (मसीही) (जिसका अर्थ "अच्छा" या "दयालु" है) एक सामान्य नाम था; कुछ ग़ैरयहूदियों ने इस नए संप्रदाय को "क्रिस्टियन" (मसीही) बुलाया। इस प्रकार, सुएटोनियस ने लिखा कि "क्रिस्टस" के कारण यहूदियों को 49 ईस्वी में रोम से निष्कासित कर दिया गया था।

मसीही स्वयं इस नाम को पसंद नहीं करते थे, लेकिन कई अन्य उपनामों की तरह, "मसीही" नाम स्थायी हो गया। यह यूनानी नए नियम में केवल तीन बार आता है: प्रेरि 11:26 में इसके उत्पत्ति का वर्णन है; प्रेरि 26:28 में हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय व्यंग्यात्मक रूप से पौलुस से कहता है, "तू थोड़े ही समय में मुझे भी मसीही बना देगा!" 1 पतरस 4:16 में विश्वासियों को यह निर्देश दिया गया है कि यदि वे इस नाम के कारण कष्ट उठाते हैं, तो उन्हें लज्जित नहीं होना चाहिए। इस नाम का कोई और उल्लेख तब तक नहीं मिलता जब तक दूसरी सदी में अन्ताकिया के इग्नेशियस ने विश्वासियों को मसीही कहने वाले पहले मसीही नहीं बन गए। रोमी राज्यपाल प्लिनी (उस क्षेत्र से, जहाँ 1 पतरस का पत्र भेजा गया था) ने सम्राट ट्राजन को उन लोगों के बारे में लिखा जो उसके न्यायालय में मसीही होने का आरोप झेल रहे थे। उस समय से यह उपनाम मसीहीयों के बीच लोकप्रिय हो गया। इससे बेहतर नाम और क्या हो सकता है जो यह घोषित करता है कि वे मसीह के हैं?

मसोबाई

मसोबाई

1 इतिहास 11:47 में यासीएल को मसोबाई का शीर्षक दिया गया है। *देखें*मसोबाई।

मसोबाई

दाऊद के "शूरवीरों" में से एक यासीएल का पदनाम (1 इति 11:47)। इसका अर्थ अज्ञात है, हालांकि कुछ इसे "सोबा का निवासी" मानते हैं।

मसोरा, मसोरियों

मसोरा एक मौखिक परंपरा है जो पुराने नियम के इब्रानी पाठ के उच्चारण और सटीकता को बनाए रखने से संबंधित है। मसोरी वे विद्वान थे जिन्होंने इन परंपराओं को लिपिबद्ध किया।

प्रारंभिक इतिहास

लगभग 400 ईसा पूर्व से 200 ईस्वी तक, विद्वानों के एक दल को सोफेरिम कहा जाता था, (जो धार्मिक ग्रंथों की प्रतिलिपि बनाने वाले लेखक थे) पुराने नियम के पाठ को विशुद्ध बनाए रखने का कार्य किया। उन्होंने बाइबल की प्रत्येक पुस्तक में हर एक पद, शब्द और अक्षर की गिनती की। इस गिनती ने भविष्य के प्रतिलिपिकारों को यह सुनिश्चित करने में मदद की कि उनकी प्रतिलिपि सही है या नहीं।

पारंपरिक इब्रानी पाठ, जिसे मसोरेटिक पाठ्य पुस्तक कहा जाता है, दूसरी शताब्दी ईस्वी के प्रारंभ में अपने मानक रूप में स्थिर हो गया। मृत सागर कुण्डलपत्र, जो कि बहुत पुराने हैं, ने दिखाया कि यह पाठ पहले के संस्करणों के साथ अच्छी तरह मेल खाता था। हालांकि, इस प्रारंभिक पाठ में केवल व्यंजन वर्ण (वे अक्षर जो स्वर नहीं होते) थे। इसमें स्वर वर्ण या शब्दों के उच्चारण को दर्शाने वाले चिह्न (जिन्हें उच्चारण चिन्ह कहा जाता है) नहीं थे।

मसोरी और उनका कार्य

मसोरियों ने बाइबल के पाठ को संरक्षित करने का कार्य जारी रखा। उनका नाम उनके मसोरा के साथ किए गए कार्य से आता है। वे मुख्यतः ईस्वी 500 से 950 तक गलील सागर के पास स्थित शहर तिबिरियास में रहते थे। मूसा बेन आशेर और उनके पुत्र हारून दो सबसे महत्वपूर्ण मसोरी थे। आज की इब्रानी बाइबल बेन आशेर के एक पाठ से प्राप्त होती है।

मसोरी उस विशुद्ध पाठ को संरक्षित करना चाहते थे जो उन्हें प्राप्त हुआ था और उसे बिना किसी बदलाव के आगे बढ़ाना चाहते थे। नकल की गलतियों को रोकने के लिए, उन्होंने हाशिये में टिप्पणी लिखे। ये टिप्पणीयां बताते थे कि बाइबल में कुछ शब्द और वाक्यांश कितनी बार प्रकट होते हैं और उन्हें कहाँ पाया जा सकता है।

स्वर और उच्चारण चिह्न जोड़ें

मसोरियों ने लोगों को पाठ को सही ढंग से पढ़ने में सहायता करने के लिए एक महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। उन्होंने स्वरों को दर्शाने के लिए (जिसे स्वर बिंदु कहा जाता है) तथा शब्दों का उच्चारण कैसे किया जाए (जिसे उच्चारण चिह्न कहा जाता है) बिंदु और छोटे चिह्न जोड़े। उन्होंने शब्दों के उच्चारण के नए तरीके नहीं बनाए। इसके बजाय, उन्होंने पारंपरिक उच्चारणों को लिखा जो लोग पहले से जानते थे। यह महत्वपूर्ण था क्योंकि एक भी स्वर ध्वनि बदलने से शब्द का अर्थ बदल सकता था।

पाठ की सुरक्षा करना

पाठ को संरक्षित करते हुए, मसोरियों ने पाठ्य-आलोचना (पाठ के मूल शब्दों को निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त एक प्रक्रिया) का भी अभ्यास किया। उन्होंने पाठ का इतना सम्मान किया कि वे इसे सीधे नहीं बदलते थे। इसके बजाय, उन्होंने टिप्पणी की एक प्रणाली बनाई। यदि उन्हें लगता था कि किसी नकलकर्ता ने गलती की है, तो वे गलती को पाठ में छोड़ देते थे (जिसे *केथिब*या "जो लिखा गया है" कहा जाता है)। लेकिन वे वांछित शब्दों के लिए स्वर चिह्न जोड़ते थे (जिसे *क़ेरे*या "जो पढ़ा जाना है" कहा जाता है) और सही व्यंजन वर्ण को हाशिये में रखते थे। वे उन शब्दों को भी चिह्नित करते थे जिन्हें शायद छोड़ देना चाहिए।

परमेश्वर का नाम

एक उल्लेखनीय *क़ेरे*पढ़ाई परमेश्वर के नाम से सम्बंधित थी। पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व तक, यहूदी परमेश्वर के वाचा नाम, यहोवा, का उच्चारण करने में असहज महसूस करते थे। उन्होंने इसके स्थान पर अदोनाय (जिसका अर्थ है "प्रभु") के लिए स्वर चिह्नों का प्रयोग करना शुरू कर दिया। इससे पाठकों को "यहोवा" के बजाय "प्रभु" कहना सिखाया गया। इस प्रथा ने आधुनिक शब्द "जेहोवाह" को जन्म दिया, जो यहोवा के व्यंजनों को अदोनाय के स्वरों के साथ मिलाता है।

मसोरियों का स्थायी प्रभाव

सोफेरिम और मसोरियों ने अपना कार्य बड़ी सावधानी से किया। इस कारण, आज हमारे पास पुराने नियम के पाठ की एक अत्यंत विशुद्ध प्रति है। लोगों ने अपने संस्करण को हाथों से लिखा जब तक कि वे प्रिंटिंग प्रेस का उपयोग नहीं कर सकते थे। कोई अन्य प्राचीन पश्चिम एशिया लेखन पुराने नियम जितनी विशुद्ध रूप से संरक्षित नहीं किया गया है।

यह भी देखें बाइबल की पांडुलिपियाँ और पाठ (पुराना नियम)।

मस्तक बंध

यह इब्रानी शब्द का अनुवाद है, जो माथे पर बांधे जाने वाली किसी भी वस्तु को संदर्भित करता है (निर्ग 13:16; व्य.वि. 6:8; 11:18)। यीशु के समय के फिलैक्टरीज (वचन लिखे हुए ताबीज़) (चमड़े के डिब्बे) (मत्ती 23:5), 13 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक इस्राएली पुरुष को सुबह की प्रार्थना में प्रतिदिन पहनना होता था। इनमें चार पवित्रशास्त्र खण्ड शामिल होते थे (निर्ग 13:1–10; 13:11–16; व्य.वि. 6:4–9; 11:13–21) जो चर्मपत्र पर लिखे होते थे और छोटे चमड़े के डिब्बों में रखे जाते थे, जिन्हें माथे और बाएँ हाथ पर बाँधा जाता था। ताबीज़ चर्मपत्र या चमड़े के डिब्बे हो सकते थे। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि इस्राएलियों ने मूसा के समय में ताबीज़ बनाए थे। ये आज्ञाएँ संभवतः शाब्दिक रूप से पालन करने के लिए नहीं थीं। उनका उद्देश्य अख़मीरी रोटी के पर्व के स्मरणार्थ मूल्य और लोगों के जीवन में व्यवस्था के महत्व को दिखाना था। फरीसियों के लिए, व्यवस्था का दिखावटी पालन, परमेश्वर के वचन को हृदय में लागू करने की आवश्यकता को प्रतिस्थापित कर चुका था (मत्ती 23:5)।

यह भी देखें फिलैक्टरी (वचन लिखे हुए ताबीज़); ताबीज़।

मस्रेका

मस्रेका

सम्ला नामक एदोमी राजा का निवासस्थान (उत्प 36:36; 1 इति1:47)।

मस्सा

मस्सा

इश्माएल के सातवें पुत्र और अब्राहम के पोते (उत्प 25:14; 1 इति 1:30)। उनके वंशज उत्तर-पश्चिमी अरब में रहते थे। तिग्लत्पिलेसेर तृतीय ने इन लोगों के साथ-साथ तेमा के निवासियों (पुष्टि करें उत्प 25:15) और अन्य लोगों का भी उल्लेख किया है, जो उनके द्वारा शासित थे और उन्हें भेंट देते थे। तेमा के लोग सम्भवतः मस्सा के भाई तेमा के वंशज थे।

मस्सा नीति 30:1 और 31:1 के शीर्षकों का हिस्सा है। 30:1 में निश्चित उपपद इसके पहले आता है और इसका अनुवाद “बोझ” या “वाणी” किया जा सकता है। यह भविष्यद्वाणी सम्बन्धी अंशों में अक्सर परमेश्वर के आसन्न न्याय के भयावह अर्थ में उपयोग किया जाता है (यशा 13:1; नहू 1:1; हब 1:1)।

मस्सा और मरीबा

मस्सा और मरीबा

दो इब्रानी शब्द जिनका अर्थ क्रमशः, "परीक्षा लेना" और "दोष ढूँढ़ना, झगड़ा करना" है। निर्गमन 17:7 के अनुसार, मूसा को रपीदीम में चट्टान से पानी मिलने के बाद, इस जगह को इन दो नामों से पुकारा, ताकि इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर के विश्वासयोग्य प्रबन्ध की "परीक्षा" लेने की याद में मनाया जा सके।

मस्सा का उल्लेख चार बार इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर के प्रति विद्रोह और अस्वीकार के स्थल के रूप में किया गया है (व्य.वि. 6:16; 9:22; 33:8; भज 95:8)। इसके विपरीत, गिनती 20:13, 24; 27:14; और व्यवस्थाविवरण 32:51 में मरीबा को सीन के जंगल में कादेश के पास बताया गया है, जहाँ मूसा ने पानी निकालने के लिए चट्टान पर दो बार प्रहार किया था। भजन संहिता 81:7 और व्यवस्थाविवरण 33:8 यह सुझाव देते हैं कि परमेश्वर इन घटनाओं में इस्राएलियों की परीक्षा ले रहे थे।

*यह भी देखें*मरीबा.

महजीओत

कहाती हेमान के 14 पुत्रों में से एक और तम्बू के संगीतज्ञों की 23वीं टोली का प्रधान, जो झाँझ, वीणा और सारंगी के साथ सेवा करता था (1 इति 25:4, 30)।

महत

1. एक लेवी, अमासै का पुत्र और दाऊद के समय में मन्दिर के गायक हेमान का पूर्वज (1 इति 6:35)।

2. एक लेवी जिसने हिजकिय्याह के समय मन्दिर के शुद्धिकरण में सहायता की (2 इति 29:12)। उसे परमेश्वर को समर्पित दान, दशमांश और वस्तुओं के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था (31:13)।

महनेदान

महनेदान

सोरा और एश्ताओल के बीच किर्यत्यारीम के पश्चिम में वह स्थान, जहाँ प्रभु के आत्मा ने शिमशोन को उभारा (न्या 13:25) और जहाँ दान का गोत्र एप्रैम के पहाड़ी देश की ओर जाते समय डेरा डाले हुए था (18:12)।

महनैम

यरदन के पूर्व गिलाद में उपनिवेश। याकूब ने वहाँ स्वर्गदूतों से मुलाकात की और इस जगह का नाम "परमेश्वर का दल" रखा। उन्होंने अपने घराने और सम्पति को दो दलों में विभाजित किया (महनैम का इब्रानी में अर्थ है "दो दल") ताकि जब वह एसाव का सामना करे तो वह सब कुछ न खो दे (उत्प 32:1–11)।

यह नगर मनश्शे और गाद के गोत्रों के बीच की सीमा पर स्थित था (यहो 13:26, 30) और लेवियों को विरासत के रूप में दिया गया था (यहो 21:38; 1 इति 6:80)। गिलबो पर्वत पर शाऊल की हार के बाद, उनके पुत्र ईशबोशेत बँधुआई में राजधानी स्थापित करने के लिए महनैम भाग गए। वह वहाँ से अधिकांश इस्राएल को नियंत्रित करने में कामयाब रहे (2 शमू 2:8, 12, 29) जब तक कि उनकी हत्या रेकाब और बानाह द्वारा नहीं की गई (4:5–7)। जब अबशालोम ने दाऊद के खिलाफ बलवा किया, तब वह भी इसी नगर में भगोड़ा बनकर गए। यहाँ उन्हें बर्जिल्लै और कुछ गिलादियों से आपूर्ति प्राप्त हुई (17:24–27)। इस नगर के फाटक पर वह अबशालोम की मृत्यु की खबर सुनकर रो पड़े थे। सुलैमान ने अपने सातवें जिले की राजधानी के लिए इसी नगर को चुना और अहीनादाब को इसका राज्यपाल नियुक्त किया (1 रा 4:14)।

बाइबल सन्दर्भ एक स्थान की ओर इशारा करते हैं जो केन्द्रीय गिलाद में यब्बोक नदी के साथ कहीं है। इसके अलावा, यह नगर लगभग कहीं भी स्थित हो सकता था। इसे पहले खिरबेट अल-मखना के रूप में पहचाना जाता था, जो ऐजालोन से दो मील (3.2 किलोमीटर) उत्तर में है। हालाँकि, हाल ही में सबसे ज़्यादा ध्यान यब्बोक पर तुलुल अल-दहाब की जुड़वाँ पहाड़ियों पर गया है। अहरोनी का सुझाव है कि तुलुल अल-दहाब का पश्चिमी टीला महनैम है और पूर्वी टीला पनूएल है।

महरै

दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में से एक और यहूदा के पहाड़ी प्रदेश, नतोपा का रहने वाला जेरहवंशी। उसे वर्ष के 10वें महीने के दौरान एक दल (24,000 सैनिक) का सेनापति नियुक्त किया गया था (2 शमू 23:28; 1 इति 11:30; 27:13)।

महलत (व्यक्ति)

1. इश्माएल की पुत्री, नबायोत की बहन, एसाव की तीसरी पत्नी और रूएल की माता (उत्प 28:9); वह उत्प 36:3–17 में बासमत के रूप में भी जानी जाती हैं।

2. यरीमोत की पुत्री और राजा रहबाम की पहली पत्नी (2 इति 11:18)।

महलत (संगीत)

संगीत संकेत, शायद "उदासी" का अर्थ, भजन संहिता 53 के शीर्षक में सूचीबद्ध है, जो यह निर्धारित करेगा कि भजन को किस प्रकार और/या किस धुन में गाया जाना चाहिए। *देखें* संगीत।

महलतलग्नोत राग

महलतलग्नोत राग

भजन संहिता 88 के शीर्षक में इब्रानी वाक्यांश का अर्थ है "दुःख की पीड़ा"; यह संभवतः एक प्राचीन परिचित धुन थी जिस पर यह भजन गाया गया था। *देखें*संगीत।

महलब

आशेर के गोत्र में एक नगर का पुनर्निर्मित नाम (यहो 19:29); इब्रानी पाठ में अन्तिम दो व्यंजनों का स्थानान्तरण है, लेकिन यह नगर शायद न्यायियों 1:31 के अहलाब और हेलबा के समान है। सही नाम सन्हेरीब के अश्शूरी अभिलेखों में महल्लिबा के रूप में संरक्षित है; एक अन्य पाठ में महलब है। इस नगर की कभी-कभी पहचान खिरबेत एल-महलीब के साथ की जाती है, जो सोर के उत्तर-पूर्व में स्थित है।

*यह भी देखें*अहलाब।

महललेल, महललेल

महललेल*, महललेल

1. केनान के पुत्र और शेत की वंशावली में येरेद के पिता (उत्प 5:12–17; 1 इति 1:2), जो लूका की वंशावली में भी उल्लेखित हैं (लूका 3:37)। *देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

2. पेरेस के पुत्र और बँधुआई-काल पश्चात यहूदी (नहे 11:4)।

महला

1 इतिहास 7:18 में हम्मोलेकेत का पुत्र। *देखें*महला #2।

महला

महला

1. एक मनश्शी। वह सलोफाद की पांच बेटियों में से एक थीं। महला और उसकी बहनों ने मूसा से अपील की और उनसे एक ऐसी व्यवस्था करने के लिए कहा जिससे उन्हें अपनी विरासत रखने की अनुमति मिल सके। ऐसा इसलिए था क्योंकि उनका कोई भाई नहीं था (गिन 26:33; 27:1; 36:11; यहो 17:3).
2. मनश्शे के गोत्र से हम्मोलेकेत का पुत्र (1 इति 7:18)।

महलियों

महलियों

लेवी के गोत्र से मरारी के पुत्र महली का कोई भी वंशज (गिन 3:33; 26:58)।

देखें महली #1.

महली

महली

यह मरारी का पुत्र था, जैसा कि निर्गमन 6:19 में उल्लेख किया गया है।

*देखें*महली #1I

महली

महली

1. मरारी के पुत्र और लेवी का पोता (निर्ग 6:19; गिन 3:20; 1 इति 6:19, 29; 23:21; 24:26–28; एज्रा 8:18)। महलियों के कुल संस्थापक (गिन 3:33; 26:58)। मरारी के अन्य कुलों के साथ महलियों को तम्बू के ढांचे और आँगन के खम्भे उठाने के लिए चुना गया था (गिन 4:29–33)।

2. मूशी का पुत्र और ऊपर #1 का भतीजा (1 इति 6:47; 23:23; 24:30)।

महलोन

एलीमेलेक और नाओमी का पुत्र और किल्योन का भाई। अपने परिवार के साथ मोआब में रहते हुए, उसने मोआब की रूत से विवाह किया। हालांकि, वह मोआब में ही मर गया और बाद में रूत ने बोअज से विवाह किया (रूत 1:2, 5; 4:9–10)।

महवीमी

महवीमी

यह शब्द 1 इतिहास 11:46 में एलीएल के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में से एक था। सम्भवतः यह शब्द उसके मूल स्थान को दर्शाने के लिए जोड़ा गया था, ताकि उसे पद 47 में उल्लेखित एलीएल से अलग किया जा सके।

महसेयाह

महसेयाह

बारूक के पूर्वज (यिर्म 32:12) और सरायाह (51:59), जिन्हें के.जे.वी में मासेयाह के रूप में लिखा गया है।

महान कुस्रू

महान कुस्रू

फ़ारसी राजा (559–530 ईसा पूर्व) जिसने अचमेनिद राजवंश और फ़ारसी साम्राज्य की स्थापना की। कुस्रू (द्वितीय) कैम्बिसेस प्रथम (600–599 ईसा पूर्व) का पुत्र था, जिन्होंने पार्शुमाश-अंशान और पारसा के एकीकृत क्षेत्रों पर शासन किया। कुस्रू की माता मांडाने थीं, जो मादियों के राजा अस्तियागेस (585?–550 ईसा पूर्व) की पुत्री थीं। वंश के पूर्वज अचमेनस थे। कुस्रू ने अपने पिता का उत्तराधिकार प्राप्त किया और लगभग 559 ईसा पूर्व में पासारगडाई में स्वयं को स्थापित किया। महत्वाकांक्षी और साहसी, उन्होंने अपने राज्य को पड़ोसी लोगों और जनजातियों के साथ एक ठोस फारसी शक्ति के रूप में संरेखित किया, फिर मादियों के अस्त्यागेस के खिलाफ विद्रोह किया। जब यह स्पष्ट हो गया कि कुस्रू मादियों पर नियंत्रण पाने के संघर्ष में जीतेंगे, तो अस्त्यागेस की सेना ने विद्रोह कर दिया और कुस्रू के पास चली गई। जब कुस्रू ने मादियों राज्य पर विजय प्राप्त की, तो वे बाबेल के साथ संघर्ष में आ गए, क्योंकि दोनों राज्यों ने एक ही क्षेत्र के अधिकांश हिस्से पर दावा किया था।

कुस्रू ने बाबेल से युद्ध करने से पहले अपनी शक्ति को सुदृढ़ किया। सबसे पहले, उन्होंने एशिया के उपद्वीप पर विजय प्राप्त की। लुदिया के धनी राजा क्रोइसस और लुदियाई लोग उनके अधीन हो गए। फिर उन्होंने कैस्पियन सागर और भारत के उत्तर-पश्चिम कोने के बीच के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र पर विजय प्राप्त की।

539 ईसा पूर्व तक, कुस्रू बाबेल के खिलाफ कदम उठाने के लिए तैयार थे। एलाम के बाबेल के राज्यपाल ने कुस्रू का साथ दिया और उनकी सेना में शामिल हो गए। न्यूनतम विरोध के साथ, कुस्रू की सेनाएँ 539 ईसा पूर्व में बाबेल की राजधानी में प्रवेश कर गईं। नबोनिडस को बंदी बना लिया गया, लेकिन उनके साथ सम्मान और दया के साथ व्यवहार किया गया। सोलह दिन बाद कुस्रू स्वयं शहर में प्रवेश किए, जहां उनके कई निवासियों ने उनका स्वागत किया।

यशायाह की भविष्यवाणी ने कुस्रू को प्रभु के अभिषिक्त के रूप में वर्णित किया (यशा 45:1)। इस्राएल ने उसे अपने परमेश्वर द्वारा उन्हें मुक्त करने के लिए बुलाया और सशक्त माना। कुस्रू के अधीन, यहूदियों को यरूशलेम और उसके मंदिर का पुनर्निर्माण करने की अनुमति दी गई थी (44:28)। पुराने नियम में संरक्षित दस्तावेजों में कहा गया है कि बाबेल में अपने पहले वर्ष में, कुस्रू ने यरूशलेम में परमेश्वर के भवन के पुनर्निर्माण की अनुमति देते हुए एक आदेश जारी किया (2 इति 36:22–23; एज्रा 1:1–3; 6:2–5)। उन्होंने नबूकदनेस्सर द्वारा मंदिर से निकाले गए पवित्र बर्तन भी लौटा दिए। बाइबल विवरण में शहर के पुनर्निर्माण के बारे में कुछ नहीं कहा गया है, लेकिन यह राजा की नीति के अनुरूप होगा।

बाबेल में खुदाई (1879–82) के दौरान पुरातत्वविद् होरमज़द रसम ने एक मिट्टी के पीपे जैसा शिलालेख खोजा, जिस पर कुस्रू ने शहर पर कब्ज़ा करने और उसके परिणामस्वरूप अपनी नीतियों के बारे में बताया था। यशायाह और इतिहास में शिलालेख की सामग्री को दर्शाया गया है, जिसमें कहा गया है कि पकड़े गए लोगों को घर लौटने और अपने देवताओं के लिए वेदियाँ बनाने की अनुमति दी गई थी।

कुस्रू की मृत्यु के बारे में कोई निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है। संरक्षित किए गए विवरणों से यह स्पष्ट है कि वह युद्ध में मारा गया था, लेकिन कथन विरोधाभासी हैं। संभवतः यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस यह संकेत देने में सही है कि कुस्रू की मृत्यु एक भयानक आपदा में हुई जिसने मैसेगेटे से लड़ने वाली फ़ारसी सेना को नष्ट कर दिया। कुस्रू की कब्र अभी भी ईरान के पसरगाडे में देखी जा सकती है।

यह भी देखें साइरस सिलेंडर; फारस, फारसी।

महापौर

देखिए नगर का मंत्री।

महामारी

महामारी

यह इब्रानी शब्द का एक रूप है जिसका अर्थ है एक घातक महामारी जो आसानी से फैलती है। बाइबल में महामारी को कभी भी एक आकस्मिक घटना के रूप में नहीं दर्शाया गया है। इसे हमेशा परमेश्वर द्वारा भेजे गए न्याय या दण्ड के रूप में माना जाता है।

पुराने नियम में महामारी

इस्राएल द्वारा अपनी वाचा की उपेक्षा करने की सज़ा महामारी थी (लैव्यव्यवस्था 26:25; व्यवस्थाविवरण 28:21)। यही कारण है कि यिर्मयाह और यहेजकेल दोनों नें इस शब्द का बार-बार उपयोग किया है। ये भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की वाचा के मुकदमे को उनके लोगों के खिलाफ चला रहे थे। दण्ड निर्धारित किया जा चुका था, और उन्होंने घोषणा की कि इसका प्रभाव शीघ्र ही होने वाला था। इस कारण से, महामारी लगभग हमेशा विपत्तियों की सूची के भाग के रूप में आती है, जैसे कि "तलवार, अकाल, और महामारी" का सूत्र, जो यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी में कुछ अनुवादों में प्रयुक्त होता है (यिर्मयाह 14:12 और अन्य वचन)। महामारी पाप को दण्डित करती है। इसलिए, यह सभी को प्रभावित नहीं करती। जो व्यक्ति विश्वासयोग्य बना रहता है, उसे इसके प्रभावों से सुरक्षा मिलेगी (भजन 91:1–3)। इस्राएल के शत्रु भी इस प्रकार के न्याय के पात्र हो सकते थे (भजन 78:50; यहेजकेल 28:23; 38:22)।

महामारी और मरी के बीच अन्तर

पुराने नियम में महामारी मरी के समान नहीं है। "मरी" का अर्थ अक्सर इस प्रकार की बीमारियों से होता है:

- ब्यूबोनिक मरी
- खसरा
- चेचक

"महामारी" निम्नलिखित को सन्दर्भित कर सकता है:

- हैजा
- टाइफस
- आंत्र ज्वर
- पेचिश

ये बीमारियाँ अक्सर घेराबन्दी में फंसे शहर को प्रभावित करती थीं। हालाँकि, इन शब्दों में कुछ समानताएँ हैं। दाऊद की जनगणना के बाद सत्तर हजार इस्राएली मारे गए। यह ईश्वरीय दण्ड की गम्भीरता को दर्शाता है (2 शमूएल 24:13–15)।

नए नियम में महामारी

यूनानी शब्द *लोइमोस* नए नियम में तीन बार आता है। प्रेरि 24:5 में, तिरतुल्लुस ने पौलुस का अपमानजनक वर्णन करने के लिए इस शब्द का उपयोग किया: "क्योंकि हमने इस मनुष्य को उपद्रवी और जगत के सारे यहूदियों में बलवा करानेवाला, और नासरियों के कुपंथ का मुखिया पाया है।" यीशु ने भविष्यद्वाणी की थी कि मन्दिर के विनाश से पहले कई न्यायदण्ड आएंगे, जिनमें महामारी या मरी भी शामिल होगी (लूका 21:11)।

यह भी देखें रोग; मरी।

महायाजक

महायाजक

याजको और लेवियों के पदानुक्रम में सबसे ऊँचा पद। यह महायाजक ही था जो पूरे इस्राएल राष्ट्र के पापों के लिए प्रायश्चित करने के लिए साल में एक बार मंदिर के परम-पवित्र स्थान में जाता सकता था।

यह भी देखें याजक और लेवी।

महायाजक

देखिए याजक और लेवी।

महायाजक

प्राचीन इस्राएल में सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक अगुए। परमेश्वर ने मूसा के भाई हारून को पहला महायाजक बनने के लिए चुना (निर्ग 28:1–3)। एक समय में केवल एक व्यक्ति महायाजक हो सकता था। यह पद आमतौर पर हारून के परिवार में ही सौंपा जाता था।

महायाजक के पास विशेष कर्तव्य थे जो अन्य याजक नहीं कर सकते थे। उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य वर्ष में एक बार प्रायश्चित के दिन होता था। महायाजक मन्दिर के सबसे पवित्र भाग में प्रवेश करते थे ताकि परमेश्वर से सभी लोगों के लिए क्षमा माँग सकें (लैव्य 16:1–19)।

महायाजक ने विशेष वस्त्र पहने थे जो उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाते थे। इनमें सुन्दर वस्त्र और एक कवच शामिल था जिसमें बारह कीमती पत्थर थे जो इस्राएल के बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व करते थे (निर्ग 28:12–15)। वे विशेष वस्तुएँ भी ले जाते थे जिन्हें "उरीम" और "थुम्मिम" कहा जाता था, जो लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए उपयोग की जाती थीं।

देखिए याजक और लेवी।

महासभा

यहूदी मत की सर्वोच्च न्यायिक सभा जिसमें 71 सदस्य होते हैं, जो यरूशलेम में स्थित है। यह सुसमाचार के यीशु के दुःख उठाने वाले लेखों में यीशु की सुनवाई करने वाली संस्था के रूप में प्रमुखता से दिखाई देता है, और यह प्रेरितों के काम में न्यायिक अदालत के रूप में फिर से दिखाई देता है जिसने बढ़ते बढ़ते मसीही कलीसिया की जाँच की और उसे सताया।

इतिहास

महासभा का इतिहास पुनर्निर्माण करना कठिन है। यहूदी परम्परा, जो मिशना में दर्ज है, इसे मूसा और उनकी 70 सदस्यीय सभा से उत्पन्न मानती है, लेकिन यह संदिग्ध है (मिशना ट्रैक्टेट *सैन्हेद्रिन* 1:6; पुष्टी करें गिन 11:16)। ये शायद गोत्रों के पुरनियों की अनौपचारिक सभाएँ थीं (1 रा 8:1; 2 रा 23:1)। महासभा की सम्भावित उत्पत्ति उत्तर-निर्वासन काल में पाई जाती है, जब बिना राजा के इस्राएल को पुनर्गठित करने वालों ने प्राचीन शासक परिवारों को अधिकार का आधार बनाया था। जो विधान सभा उभरी वह भूमि के कुलीन वर्ग और याजक अभिजात वर्ग का एक संघ था (देखें एज्रा 5:5; नहे 2:16)। इस सभा का प्रभाव फारसियों के अधीन मिली सापेक्ष स्वतंत्रता के कारण बढ़ गया।

चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में इस्राएल में यूनानी मत के आगमन ने इस शासन की पुष्टि की। यूनानी मत के शहरों में आमतौर पर लोकतांत्रिक सभाएं और सभाएं होती थीं। यरूशलेम ने एक कुलीन सभा की मेजबानी की जिसे इसका उपयुक्त यूनानी शीर्षक, गेरूसिया दिया गया था। इस सभा का पहली बार उल्लेख जोसेफस द्वारा किया गया है, जो यरूशलेम पर कब्जा करने के बाद एन्टीओकस III के आदेश को दर्ज करता है (*एंटीक्विटिस* 12.3.3)। फिर भी, भले ही राजनीतिक माहौल में भारी बदलाव आया, सभा अभी भी प्रभाव में बनी रही। यहूदा मक्काबी ने पुराने प्राचीन की पंक्ति को निष्कासित कर दिया और हस्मोनी वंश से उत्पन्न और वंशानुगत शासन स्थापित किया। इस प्रकार गेरूसिया कुलीनता की सभा के रूप में जारी रहा। लेकिन पहली शताब्दी ईसा पूर्व में, जब सदूकियों और फरीसियों के बीच तनाव यहूदी मत के ताने-बाने को तोड़ रहा था, परिषद में परिवर्तन हुआ। सिकन्दर के समय (76–67 ईसा पूर्व) से, फरीसी अनुनय के शास्त्रियों ने सभा में प्रवेश किया।इसके बाद, गेरूसिया एक मिश्रण बन गया: एक तरफ कुलीन वर्ग (धर्मनिरपेक्ष और याजक दोनों) और दूसरी तरफ लोकप्रिय फरीसी।

रोमी लोगों ने सभा को बरकरार रखा लेकिन इसके अधिकार क्षेत्र की सीमाओं को अधिक सावधानीपूर्वक परिभाषित किया। जैसे यहूदी मत ने अपनी स्वशासन खो दी, सभा ने बहुत सी विधायी और राजनीतिक शक्ति खो दी। रोम ने भूमि की वास्तविक शक्तियों को नियुक्त किया। उदाहरण के लिए, हेरोदेस महान ने अपने शासन की शुरुआत पुराने अभिजात वर्ग के साथ गंभीर संघर्ष में की, और अन्त में अधिकांश महासभा सदस्यों को मार डाला (*एंटीक्विटिस* 14.9.4)। यहूदी मत ने उच्च याजको को नियुक्त किया और, नियंत्रण के प्रतीक के रूप में, 6 से 36 ईस्वी तक उन्होंने याजको के वस्त्रों को अन्ताकिया किले में रखा।

महासभा नाम (यूनानी, सुनेद्रियन, सूर्य, "एक साथ," और हेड्रा, "सीट") पहली बार हेरोदेस महान के शासनकाल में आता है (*एंटीक्विटिस* 14.9.3–5)। यह शब्द पूरे नए नियम (22 बार) में "प्राचीन" (लूका 22:66; प्रेरितों के काम 22:5) और "गेरूसिया" (प्रेरितों के काम 5:21) के साथ प्रयोग किया जाता है। मिशना में और भी कई उपाधियाँ दी गई हैं: महान न्यायाधिकरण (*सैन्हेद्रिन* 11:2), महान महासभा (*सैन्हेद्रिन* 1:6), और 71 का महासभा (*शेबूओथ* 2:2)।

70 ई. के महान युद्ध के बाद, जब यहूदी स्वायत्तता के अंतिम अवशेष रोम द्वारा नष्ट कर दिए गए थे, महासभा ने जमनिया में पुनः बैठक की। हालांकि इसकी शक्ति केवल सैद्धांतिक थी (मुख्य रूप से धार्मिक मुद्दों को संबोधित करते हुए), और रोमी लोगों ने इस पर बहुत कम ध्यान किया।

स्वभाव

महासभा में प्रवेश की प्रक्रिया के बारे में बहुत कम जानकारी है, लेकिन क्योंकि सभा की जड़ें अभिजात वर्ग में थीं (और यह वास्तव में लोकतांत्रिक नहीं थी), नियुक्तियाँ शायद याजको, प्रमुख शास्त्रियों और सामान्य कुलीन वर्ग के बीच से की जाती थीं। मिशना यह निर्धारित करती है कि सदस्यता का एकमात्र परीक्षण रब्बी शिक्षा और सच्चे इस्राएली वंशज (सैन्हेद्रिन 4:4) के साथ था। सभा में 71 सदस्य थे (सैन्हेद्रिन 1:6) जो निम्नलिखित तीन श्रेणियों में विभाजित थे: महायाजक, प्राचीन, और शास्त्री।

महायाजक

आमतौर पर सदूकी पृष्ठभूमि से, ये महासभा के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति थे। कुछ विद्वानों का मानना है कि वे कई यूनानी और रोमी शहरों के पैटर्न पर दस धनी और प्रतिष्ठित नागरिकों की एक कार्यकारी सभा का हिस्सा थे। उदाहरण के लिए, गलील के तिबिरियास पर ऐसे बोर्ड द्वारा शासन किया जाता था, और जोसेफस उन्हें "दस प्रमुख पुरुषों" के निकाय के रूप में सन्दर्भित करते हैं (*एंटीक्विटिस* 20.8.11; पुष्टी करें प्रेरि 4:6)। एक मन्दिर का कप्तान था, जो मन्दिर की कार्यवाही की निगरानी करता था और मन्दिर के रक्षक का सेनापति था (प्रेरि 5:24–26)। अन्य लोग कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य करते थे जो याजकों और श्रमिकों के वेतन को नियंत्रित करते थे और मन्दिर में आने वाले विशाल धनराशि की निगरानी करते थे। आय बलिदानों और बाजार करों से आती थी; हेरोदेस के मन्दिर पुनर्निर्माण के दौरान वेतन-निधि में 18,000 पुरुष शामिल थे। यहाँ महासभा के एक अध्यक्ष थे जो इस सभा की अगुवाई भी करते थे और उन्हें "महायाजक" कहा जाता था (*एंटीक्विटिस* 20.10.5)। नए नियम में वह प्रमुख व्यक्ति हैं: कैफा ने यीशु के दिनों में शासन किया (मत्ती 26:3), और हनन्याह ने पौलुस के समय में (प्रेरि 23:2)। लूका 3:2 और प्रेरि 4:6 में, हन्ना को महायाजक कहा गया है, लेकिन उनका पद सेवानिवृत्त है, क्योंकि उसका शासन 15 ई. में समाप्त हो गया था।

प्राचीन

यह प्रमुख श्रेणी थी और यह यहूदिया में याजक और वित्तीय अभिजात वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थी। अरिमतियाह का रहनेवाला यूसुफ (मर 15:43), जैसे प्रतिष्ठित आम लोगों ने सदूकियों के रूढ़िवादी विचारों को साझा किया और सभा को आधुनिक संसद की विविधता प्रदान की।

शास्त्री

ये महासभा के सबसे हाल के सदस्य थे। मुख्यतः फरीसी, वे पेशेवर व्यवस्थापक थे जो धर्मशास्त्र, न्यायशास्त्र, और दर्शनशास्त्र में प्रशिक्षित थे। वे संघों में संगठित थे और अक्सर प्रसिद्ध शिक्षकों का अनुसरण करते थे। एक प्रसिद्ध महासभा शास्त्री, गमलीएल, नए नियम में प्रकट होते हैं (प्रेरितों के काम 5:34) और वही रब्बी विद्वान थे जिन्होंने पौलुस को शिक्षा दी थी (22:3)।

यीशु के दिनों में

महासभा का अधिकार क्षेत्र औपचारिक रूप से यहूदिया तक सीमित था, लेकिन वास्तविक प्रभाव था जो गलील और यहां तक कि दमिश्क को भी प्रभावित करता था (पुष्टी करें प्रेरि 9:2; 22:5)। सभा मुख्य रूप से यहूदी व्यवस्था के मामलों में मध्यस्थता करने के लिए चिंतित थी जब असहमति उत्पन्न हुई (सैन्हेद्रिन 11:2)। सभी मामलों में, इसका निर्णय अंतिम था। इसने यीशु (मत्ती 26:65) और स्तिफनुस (प्रेरि 6:12–14) के मामलों में निन्दा के आरोपों का मुकदमा चलाया, और आपराधिक न्याय में भी भाग लिया।

यह अभी भी ज्ञात नहीं है कि महासभा के पास मृत्युदंड की शक्ति थी या नहीं। फिलो संकेत देता प्रतीत होता है कि रोमी काल में मन्दिर के उल्लंघन पर मुकदमा चलाया जा सकता था (*गायस को लेगाटियो,* 39)। यह स्तिफनुस (प्रेरि 7:58–60) और याकूब (*एंटीक्विटिस* 20.9.1) की मृत्यु की व्याख्या कर सकता है। किसी भी स्थिति में, मन्दिर परिसर में अवैध रूप से प्रवेश करने वाले गैर-यहूदियों को स्वचालित मृत्युदंड के बारे में चेतावनी दी गई थी। लेकिन नए नियम और तालमुद इससे असहमत हैं। यीशु के मुकदमे में, अधिकारियों को पिलातुस को शामिल करना पड़ता है जो अकेले यीशु को मौत की सजा दे सकता है (यूह 18:31)। तालमुद के अनुसार, महासभा ने यह विशेषाधिकार "मन्दिर के विनाश से चालीस साल पहले" खो दिया था (*सैन्हेद्रिन* I 18अ, 34; VII 24ब)।

न्यायिक प्रक्रिया

यीशु के मुकदमे की गम्भीर अनियमितताओं के बावजूद, महासभा व्यवस्था की औपचारिक प्रक्रियाएँ ऐसे न्यायालय का वर्णन करती हैं जो निष्पक्ष था और न्याय की विफलता के बारे में अत्यधिक चिंतित था। दुर्भाग्यवश, मिशना में प्रक्रियात्मक नोट्स केवल छोटे न्यायालयों (23 सदस्यों वाले महासभा) के लिए दिशानिर्देशों को सम्बोधित करते हैं, लेकिन यह उचित रूप से अनुमान लगाया जा सकता है कि इसी तरह के नियम 71 सदस्यों वाले महान महासभा पर भी लागू होते थे। मिशना के ट्रैक्टेट सैनहेड्रिन के खंड चार और पाँच में, इन दिशा-निर्देशों को सावधानीपूर्वक निर्धारित किया गया है।

महासभा अर्धवृत्ताकार पंक्तियों में बैठते थे ताकि सदस्य एक-दूसरे को देख सकें। दो मुंशी दोनों छोर पर बैठकर टिप्पणियाँ लेते और वोट दर्ज करते थे। सभा के सामने छात्रों की तीन पंक्तियाँ बैठी थीं, जो आमतौर पर प्रमुख शास्त्रियों के शिष्य होते थे। आरोपी प्राचीनों की ओर मुख करके बीच में खड़ा था। उसे अत्यधिक विनम्रता दिखाने की आवश्यकता थी: उसने काले वस्त्र पहने हुए थे जैसे कि शोक में हो और उसके बाल बिखरे हुए थे (*एंटीक्विटिस* 14.9.4)। पूछताछ के बाद, उसे बर्खास्त कर दिया गया और विचार-विमर्श निजी थे।

मृत्युदंड के मामलों की प्रक्रिया निष्पक्षता के लिए चिंता को दर्शाती है। पहले बचाव सुना जाएगा और फिर आरोप। वह प्राचीन जिन्होंने बचाव के लिए बोला था, वह फिर आरोपी के खिलाफ नहीं बोल सकता था। छात्र केवल अभियुक्त के पक्ष में बोल सकते थे, लेकिन कभी भी विरोध में नहीं (लेकिन गैर-पूंजीगत मामलों में वे ऐसा भी कर सकते थे)। सदस्यों ने मतदान के लिए खड़े होकर शुरुआत सबसे छोटे से की। दोषमुक्ति के लिए साधारण बहुमत की आवश्यकता थी, लेकिन निन्दा के लिए दो के बहुमत की आवश्यकता थी।

गैर-पूंजीगत के मामलों में, दिन के समय मुकदमे की सुनवाई होती थी और रात में फैसला सुनाया जा सकता था। पूंजीगत के मामलों में, दिन के समय मुकदमा और फैसला दोनों ही होते थे और इस प्रकार अधिक सार्वजनिक जांच के लिए खुले होते थे। गैर-पूंजीगत मामलों में, कोई भी फैसला उसी दिन सुनाया जा सकता है। मृत्युदंड के मामलों में, दोष का फैसला (जिसके तुरन्त बाद निष्पादन होता था) को एक दिन के लिए स्थगित करना पड़ता था क्योंकि इसके परिणाम अपरिवर्तनीय थे। इसलिए, ये परीक्षण सब्त या किसी त्यौहार के दिन की पूर्व संध्या पर नहीं होने थे (*सैन्हेद्रिन* 4:1)।

सुसमाचारों में दर्ज यीशु का परीक्षण महासभा न्याय के सामान्य रीति से कई विचलन दिखाता है। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि यीशु की गिरफ्तारी, पूछताछ और मृत्यु में न्याय का उल्लंघन हुआ था।

इसे भी *देखें* न्यायालय और परीक्षण; यरूशलेम सभा।

महासमुद्र

भूमध्य सागर का एक वैकल्पिक नाम। प्राचीन पश्चिमी एशिया के लोगों ने इसे यह नाम दिया था क्योंकि यह उनके द्वारा ज्ञात अन्य समुद्रों की तुलना में अपने विशाल आकार में बहुत बड़ा था (गिन 34:6; यहो 1:4)। *देखें* भूमध्य-सागर।

महासमुद्र

महासमुद्र

देखें भूमध्य सागर।

महिमा

परमेश्वर की अद्वितीय भव्यता और मानवता पर इसके परिणाम।

परमेश्वर की महिमा

परमेश्वर की महिमा को दो अर्थों में वर्णित किया जा सकता है: (1) एक सामान्य श्रेणी या गुण के रूप में, और (2) एक विशिष्ट श्रेणी के रूप में जो उसकी उपस्थिति के विशेष ऐतिहासिक प्रकटीकरण को सन्दर्भित करती है।

एक गुण के रूप में

परमेश्वर की महिमा मुख्य रूप से उसकी महान सुन्दरता और वैभव को सन्दर्भित करती है; यह परमेश्वर के चरित्र की अभिव्यक्ति को भी दर्शाती है (रोम 3:23)। पवित्र शास्त्र उनके महिमामय नाम की स्तुति करते हैं (नहे 9:5), उन्हें महिमामय पिता (इफि 1:17) और महिमा के राजा (भज 24) के रूप में वर्णित करते हैं; वह स्वर्ग से भी ऊँचा है, और उसकी महिमा पूरी पृथ्वी पर है (भज 57:5, 11; 108:5; 113:4)। वह महिमा का परमेश्वर है जो पुराने नियम के पिताओं के सामने प्रकट हुआ (प्रेरि 7:2)। वह अपनी महिमा बनाए रखने के लिए ईर्ष्यालु हैं और नहीं चाहते कि इसे किसी और को दिया जाए (यशा 42:8); वह अपनी महिमा लाने के लिए कार्य करते हैं (भज 79:9; यशा 48:11)।

परमेश्वर की महिमा सृष्टि द्वारा घोषित की जाती है (भज 19:1; 97:6; रोम 1:20)। यह उनके उद्धार और मुक्ति के महान कार्यों से प्रकट होता है (1 इति 16:24; भज 72:18–19; 96:3; 145:10–12; यूह 11:4, 40)। उनकी महिमा प्रशंसा का विषय है (1 इति 16:24–29; भज 29:1–2, 9; 66:1–2; 96:7–8; 115:1; यशा 42:12; रोम 4:20; फिलि 2:9–11)।

उसकी उपस्थिति के रूप में

परमेश्वर की महिमा के सन्दर्भ अक्सर उनकी उपस्थिति के विशेष ऐतिहासिक प्रकटीकरण से होते हैं; इन घटनाओं के साथ प्रकाश और आग की छवियाँ प्रमुख रूप से जुड़ी होती हैं।

सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण वह है जिसे रब्बी साहित्य में शकाइना महिमा के रूप में जाना जाता है, एक वाक्यांश जिसका अर्थ है "निवास करने वाली महिमा"। यह मुख्य रूप से पुराना नियम में बादल और आग के खम्भे में परमेश्वर की उपस्थिति को सन्दर्भित करता है।

महिमा के बादल का पहला स्पष्ट सन्दर्भ निर्ग 13:21–22 में पाया जाता है। निर्गमन के समय समुद्र और जंगल के माध्यम से लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए बादल और आग के खम्भे में परमेश्वर की महिमा प्रकट हुई (नहे 9:11–12, 19)। सिनै पर्वत पर, जब इस्राएल पर्वत के चारों ओर डेरा डाले हुए था, तो परमेश्वर की महिमा बादल और आग में प्रकट होती है और लोगों के सामने मूसा से बात करती है (निर्ग 19:9, 16–18; 24:15–18; व्य.वि. 5:5, 22–24)। जब मूसा को बादल और आग से अनावरण की गई महिमा की झलक मिलती है, तो उसका अपना चेहरा चमक उठता है और लोगों के डर के कारण उसे ढकना पड़ता है (निर्ग 33:18–23; 34:29–35; 2 कुरि 3:7–18)।

सिनै पहाड़ पर परमेश्वर की महिमा के चारों ओर बसे हुए इस्राएल की तस्वीर परमेश्वर को अपने लोगों के बीच में निवास करते हुए दर्शाती है। जब मिलापवाला तम्बू परमेश्वर के तेज से पूरा भर जाता है और लोग अपनी यात्रा पर निकलते हैं, तो परमेश्वर की उपस्थिति का महिमा का बादल उनकी यात्रा के दौरान उनके ऊपर रहता है (निर्ग 40:34–38; गिन 10:11–12)। जब वे डेरा डालते हैं, तो सारे गोत्र तम्बू के चारों ओर

घेरा बनाते हैं (गिन 1:50–2:2), और बादल उन्हें उनके बीच परमेश्वर की उपस्थिति की याद दिलाता है। बाद में, वही महिमा नए मन्दिर में भर गई जिसे सुलैमान ने बनाया (2 इति 5:13–6:1; 7:1–3) । भजनकारों ने यरूशलेम और मन्दिर का उत्सव मनाया जहाँ उसकी महिमा वास करती थी (भज 26:8; 63:2; 85:9); परमेश्वर उनके बीच में थे।

बाद में इस्राएल के इतिहास में उन्होंने परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति से इनकार किया (यशा 3:8) और परमेश्वर की महिमा को मानव हाथों से बने मूर्तियों की समानता में बदल डाला (भज 106:20; यिर्म 2:10–11; पुष्टि करें रोम 1:23)। उनकी अवज्ञा के कारण, यरूशलेम के खिलाफ न्याय आया; वाचा उल्लंघन की सज़ाएँ लागू की गईं। परमेश्वर अब एक आज्ञा न मानने वाले लोगों के परमेश्वर नहीं होंगे (होश 1:9) । महिमा के बादल के रूप में परमेश्वर की उपस्थिति मन्दिर से निकल गई (यहेज 10:4, 18–19; 11:22), और इस्राएल बँधुआई में चला गया (12:1–15) ।

फिर भी इस न्याय के बाद परमेश्वर ने नगर और मन्दिर को पुनःनिर्माण करने के लिए बचे हुए लोगों को लाने का निश्चय किया। अपनी दर्शनों में यहेजकेल ने देखा कि परमेश्वर की महिमा फिर से मन्दिर में निवास करने के लिए लौट आई (यहेज 43:2–9), एक ऐसा समय जब महिमा शुद्ध लोगों के पास लौटेगी और हमेशा उनके बीच निवास करेगी। जब बँधुआई समाप्त हो गई और दूसरा मन्दिर निर्माणाधीन था, हाग्गै और जकर्याह ने लोगों को इस वादे के साथ प्रेरित किया कि परमेश्वर की महिमा मंदिर को उसी तरह भर देगी जैसे उसने पहले मंदिर में किया था और "उनके बीच महिमा होगी" (हाग् 2:3–9; जक 2:5, 10–11) ।

यीशु मसीह में परमेश्वर की महिमा

हमें ये नहीं बताया गया कि क्या शकाइना महिमा दूसरे मन्दिर में वापस आई थी।लेकिन हमें बताया गया है कि पृथ्वी पर फिर से परमेश्वर की महिमा यीशु मसीह के रूप में देखी गई थी। यूह 1:14 कहता है, "वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा"। इस प्रकार, यीशु परमेश्वर की स्थायी महिमा के लिए नया मिलापवाला तम्बू थे। यीशु में, परमेश्वर लोगों के बीच निवास करते थे। चूंकि मसीह परमेश्वर का सच्चा सवरूप थे (और हैं भी), उनके चेहरे की तेज़ को देखना परमेश्वर की महिमा को जानना था (2 कुरि 4:4–6) । यीशु को देखना "अन्यजातियों के लिए ज्योति और इस्राएल की महिमा" देखना था (लूका 2:30–32)। चेलों ने जो रूपांतरण देखा (मत्ती 17:1–8) उन्होंने उसकी महिमा को एक अद्भुत तरीके से देखा (2 पत 1:16–17), क्योंकि यह एक महिमा थी जो उसके मानव शरीर से बाहर निकली। इस महिमा के विस्फोट ने पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण में मसीह द्वारा अनुभव की गई महिमा का पूर्वाभास किया (देखें यूह 17:5; फिलि 2:5–11) ।

क्योंकि यीशु ने स्वयं को नम्र किया और मृत्यु तक आज्ञाकारी रहे, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें अत्यधिक महिमा दी (फिलि 2:8–9) । क्रूस पर मृत्यु सहने के बाद, वे अपनी महिमा में प्रवेश किया (लूका 24:26) एक नए और महिमामय शरीर के साथ (1 कुरि 15:39–43; फिलि 3:21) । गौरवान्वित मसीह अपने सेवकों के सामने प्रकट हुए। स्तिफनुस ने उनकी महिमा देखी (प्रेरि 7:55), और शाऊल उनकी चमक से अंधा हो गया (9:3)। वही मसीह कि महिमा में लौटने की भविष्यद्वानी की गई है। वह न्याय करने के लिए अपने सिंहासन पर बैठेंगे (मत्ती 25:31); बुराई को दण्डित किया जाएगा (16:27; 24:30; मर 13:26; लूका 21:27; 2 थिस्स 2:9–10)। जिन्होंने मनुष्यों के सामने उनका अंगीकार किया है, उन्हें उनके महिमा में प्रकट होने से डरने की आवश्यकता नहीं है (मर 8:38)।

अंत में, पूरी पृथ्वी उनकी महिमा से भर जाएगी (भज 72:19; यशा 6:3; हब 2:14)। अब एक महिमा का बादल मन्दिर के ऊपर पवित्र स्थान को चिह्नित करने के लिए नहीं रहेगा, क्योंकि एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी होगी (प्रका 21:1)।

पवित्र नगर में परमेश्वर की महिमा की चमक होगी (पद 10–11)।

महिमा और परमेश्वर के लोग

परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर की उपस्थिति की महिमा का अनुभव किया है। पुराना नियम का महिमा बादल *उनकी* महिमा था (भज 106:20; यिर्म 2:11)। मसीह परमेश्वर की महिमा के प्रतीक के रूप में आए; परमेश्वर अपने लोगों के बीच में थे। जब मसीह का स्वर्गारोहण हुआ, तो उन्होंने अपनी आत्मा को विश्वासियों के पास भेजा (यूह 16:7–14) ताकि परमेश्वर अपने लोगों के बीच रह सकें। जो मसीह के नाम के लिए कष्ट सहते हैं, उन पर महिमा की आत्मा ठहरती है (1 पत 4:14); वह आत्मा संतों की महिमामय विरासत की गारंटी है (रोम 8:16–17)।

परमेश्वर ने अपने लोगों को महिमा की आशा दी है (रोम 5:2; फिलि 3:21; कुल 1:27; यह 1:24–25)। जिन्हें उसने चुना है, उन्हें वह महिमा भी देंगे (रोम 8:30; 9:23); वे मसीह की महिमा में सहभागी होंगे (कुल 3:4; 2 थिस्स 2:14; 2 तिमु 2:10)। इस युग की पीड़ाएँ उस महिमा की तुलना में कुछ भी नहीं हैं जो प्रकट की जाएगी (रोम 8:18; 2 कुरि 4:17)। संपूर्ण सृष्टि परमेश्वर के बच्चों की महिमामयी स्वतंत्रता को देखने के लिए तरसती है (रोम 8:21)। यह महिमा की आशा इतनी निश्चित है कि पतरस अभी भी इसमें भाग लेने की बात कर सकते हैं (1 पत 5:1) जबकि उस अनन्त महिमा की प्रतीक्षा कर रहे हैं (पद 10)। मसीह की महिमा में सहभागी होने के नाते, कलीसिया को परमेश्वर की महिमा करने के लिए बुलाया

गया है। क्योंकि उनमें जो आशा है, वे अपने आप को शुद्ध करते हैं (1 यूह 3:3)।

*यह भी देखें*घमण्ड; परमेश्वर, अस्तित्व और गुण; आग और बादल का स्तंभ; शकाइना; परमेश्वर का प्रकट होना; धन।

महिमा करना

परमेश्वर की महिमा और शोभा का प्रकट होना।

इब्रानी में "महिमा" शब्द का मूल अर्थ "भारी" या "महत्वपूर्ण" था। समय के साथ, इसका उपयोग प्रभावशाली, धनी, या शक्तिशाली व्यक्ति का वर्णन करने के लिए किया जाने लगा। प्राचीन समय में, धनी और शक्तिशाली लोग सुन्दर वस्त्र और गहने पहनते थे। इस कारण, किसी व्यक्ति की महिमा उनके धन और सामर्थ के दृश्य चिह्नों को सन्दर्भित करती थी। महिमा का अर्थ सुन्दरता भी हो गया, क्योंकि सुन्दर वस्त्र और गहने सुन्दर होते थे। इस महिमा का विचार बाद में परमेश्वर पर लागू किया गया।

परमेश्वर की महिमा

पुराने नियम में, परमेश्वर का तेज उस वस्तु को सन्दर्भित करता है जो उनके बारे में स्पष्ट और प्रकट होता है। निर्गमन की पुस्तक में परमेश्वर के तेज के कई उल्लेख हैं। उदाहरण के लिए, आग का खम्भा था, और परमेश्वर का तेज निवास-स्थान के अति पवित्रस्थान में प्रवेश कर गया था (देखें निर्ग 40:34–38)।

जब निवास-स्थान का निर्माण हो रहा था (निर्ग 25–27), तेज और सुन्दरता को जोड़ा गया था। कुछ लोग मानते हैं कि परमेश्वर की "भलाई" जिसे मूसा ने देखा (निर्ग 33:19), उसे "सुन्दरता" के रूप में भी अनुवादित किया जा सकता है। इसलिए, परमेश्वर की महिमा का अर्थ उनकी सुन्दरता भी हो सकता है।

नया नियम पुराने नियम के इस विचार को जारी रखता है कि परमेश्वर महिमा से भरे हुए हैं (देखें प्रका 4 में परमेश्वर की महिमा का दर्शन)। हालाँकि, नया नियम मसीह की महिमा पर अधिक ध्यान केन्द्रित करता है। मसीह का रूपान्तरण उनकी महिमा को प्रकट रूप से दिखाता है (मत्ती 17:1–8)। प्रेरित पौलुस ने यीशु को तेजोमय प्रभु कहा (1 कुरि 2:8) और कहा कि प्रभु का प्रताप उनके चेहरे से प्रगट हुआ (2 कुरि 3:18)। यूहन्ना का सुसमाचार विशेष रूप से "महिमा का सुसमाचार" के रूप में जाना जाता है। देहधारी में (जब परमेश्वर का पुत्र मनुष्य बने), यीशु ने वह महिमा दिखाई जो उनके पास पिता के एकलौते के रूप में थी (यूह 1:14)। लाज़र का पुनरुत्थान परमेश्वर की महिमा का एक और उदाहरण था जो मसीह के माध्यम से दिखाई गई (यूह 11:40)। यूहन्ना 17 में, यीशु ने अपनी महिमा के बारे में प्रार्थना की और कहा कि उनके शिष्य भी उसमें भाग लेंगे।

विश्वासियों की महिमा

2 कुरिन्थियों 3:18 में, आत्मिक परिवर्तन को "तेजस्वी रूप में अंश-अंश" में बदलने के रूप में वर्णित किया गया है। महिमा में प्रवेश इस परिवर्तन का अन्तिम कदम है। उद्धार की प्रक्रिया में, पौलुस महिमा को अन्तिम घटना के रूप में सूचीबद्ध करते हैं (रोम 8:28–30)। रोमयों 8:30 में प्रयुक्त क्रिया भूतकाल में है, जो महिमा में प्रवेश की निश्चितता और अन्तिमता को दर्शाता है। महिमा में प्रवेश उद्धार की पूर्णता, सिद्धता और सम्पूर्ण साकारता है।

महिमा में प्रवेश पूर्ण पवित्रता (पवित्र बनने की प्रक्रिया) में पाया जाता है, जैसा कि यह व्यक्ति के भीतरी स्वभाव से सम्बन्धित है। बाइबिल में कोई भी एकल गद्य इस विषय को विस्तार से नहीं बताता, लेकिन इफिसियों 5:27 एक अच्छा सारांश प्रस्तुत करता है। इस वचन में, पौलुस ने मसीह के सामने कलीसिया को प्रस्तुत करने के बारे में लिखा। पौलुस जो कलीसिया के बारे में कहते हैं, वह प्रत्येक मसीही पर लागू होता है। यीशु कलीसिया को "न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन् पवित्र और निर्दोष" अपने सामने प्रस्तुत करेंगे। इसी प्रकार, 2 तीमुथियों 2:10 में, पौलुस कहते हैं, "मैं चुने हुए लोगों के लिये सब कुछ सहता हूँ, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में हैं अनन्त महिमा के साथ पाएँ।"

जैसे किसी विश्वासी के भीतरी स्वभाव को महिमा दी जाती है, वैसे ही उनके देह को भी महिमा दी जाएगी। पौलुस देह के पुनरुत्थान को "अपनी देह के छुटकारे" कहते हैं (रोम 8:23)। फिलिप्पियों 3:21 में, पौलुस हमारे दीन-हीन देहों (पाप और मरनहार से दुर्बल हुए देह) को मसीह जैसे महिमामय देहों में बदलने की बात करते हैं। यह कार्य वही परमेश्वर की सामर्थ करेगा जो हर बात पर नियंत्रण रखती है।

देह के तेज पर सबसे विस्तृत चर्चा 1 कुरिन्थियों 15 में पाई जाती है, और इसके अतिरिक्त विवरण 2 कुरिन्थियों 5 में हैं। 1 कुरिन्थियों 15 में पौलुस का विषय यह है कि जैसे मसीही आदम के मरनहार देह रखते हैं, वैसे ही वे परमेश्वर के पुत्र जैसे अविनाशी देह प्राप्त करेंगे। पौलुस इन दोनों देहों की तुलना करते हैं। वर्तमान शरीर नाश हो सकता है, लेकिन पुनरुत्थान का देह अविनाशी होगा। वर्तमान देह अनादर से भरा है, लेकिन पुनरुत्थान का देह महिमामय होगा। वर्तमान देह निर्बल है, लेकिन पुनरुत्थान का देह सामर्थ्य होगा। वर्तमान देह स्वाभाविक संसार से सम्बन्धित है, लेकिन पुनरुत्थान का देह भविष्य के आत्मिक और अनन्त संसार से सम्बन्धित होगा।

उद्धार में शामिल हैं:

- धर्मी ठहराना (धर्मी घोषित किया जाना)
- नये सिरे से जन्म (नई सृष्टि)
- पवित्रता (पवित्र होना)

आने वाले जीवन में, यह भीतरी मनुष्यत्व के महिमा और देह के महिमामय पुनरुत्थान को सम्मिलित करता है। एक महिमामय व्यक्ति को महिमामय वातावरण में भी रहना चाहिए। इसलिए, बाइबिल का समापन एक महिमामय नया आकाश, नई पृथ्वी और नये यरूशलेम के वर्णन के साथ होता है।

*यह भी देखें*महिमा; पुनरुत्थान।

महिला

परमेश्वर द्वारा रची गई पुरुष की साथी।

उसकी रचना

उत्पत्ति में प्रथम पुरुष और स्त्री की सृष्टि के दो विवरण दिए गए हैं। पहले, उत्पत्ति 1:26–28, में परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप और समानता में, पुरुष और स्त्री के रूप में बनाया। इसलिए, स्त्री पुरुष के साथ परमेश्वर के स्वरूप को साझा करती है, पृथ्वी पर उनकी शक्ति और ऐश्वर्य को प्रतिबिंबित करती है, और उन्हें पृथ्वी पर प्रभुत्व लाने और फूलने-फलने का आदेश दिया गया है। उत्पत्ति 1:26–28 से यह संकेत नहीं मिलता कि स्त्री पुरुष से निम्न है, न ही यह संकेत मिलता है कि वह उसकी प्रभुता के अधीन है। बल्कि, अपने निर्माता के प्रतिनिधित्व के रूप में पुरुष और स्त्री को एक साथ चित्रित किया गया है।

उत्पत्ति 2:20–25 में पहली स्त्री की सृष्टि का दूसरा चित्रण है। उत्पत्ति 2 में पुरुष को स्त्री से पहले बनाया गया था, जो उसे कुछ प्राथमिकता देता हुआ प्रतीत होता है। हालांकि, इसे बहुत अधिक प्राथमिकता नहीं दिया जाना चाहिए, क्योंकि सृष्टि का चित्रण वचन में निम्न श्रेणी से उत्तम की ओर प्रगतिशील रूप से बढ़ने का है। फिर भी, यह उसके पहले सृजन के कारण है कि पुरुष को स्त्री का नामकरण करने का विशेषाधिकार दिया गया है (उत्पत्ति 2:23)। सेमिटिक विचारधारा में, नाम देना प्रभुत्व या स्वामित्व का प्रतीक है। इसका अर्थ है कि आदम का अपनी पत्नी का नामकरण करना प्रभुता का कार्य था। हालांकि, जो नाम उसने उसे दिया था, वह उनके अपने नाम के समकक्ष था, जिसका अर्थ है कि पुरुष ने उसके साथ अपनी समानता की पुष्टि की। विरोधाभास यह है कि यह पदानुक्रम संबंध भी समानता का संबंध है।

उत्पत्ति 1 और 2 में स्थिति पुरुष और स्त्री के बीच एक संतुलित संबंध को प्रकट करती है, जो सभी मानवजाति के माता-पिता थे: दो व्यक्ति जो परमेश्वर की स्वरूप के रहस्य के सहवारिस के रूप में पूरी तरह से समान स्थिति में थे, फिर भी एक नाजुक एक-से-एक संबंध में रहते थे जिसमें एक दूसरे का अगुवा था। पतन से पहले अदन में यह नाजुक संतुलन संभव था।

उनका पतन और दुर्दशा

उत्पत्ति 3, मानवजाति के पतन की कहानी, पुरुष और स्त्री के बीच नाजुक संतुलन के टूटने और उसके बाद की संघर्षों के बारे में बताती है जो युगों से चली आ रही हैं। परमेश्वर ने स्त्री से कहा कि उसके प्रसव में पीड़ा होगी (उत्पत्ति 3:16) और उसके पति के साथ उसके संबंधों में हितों का संघर्ष होगा: "और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।" उत्पत्ति 3 और 4 के वृतांत में इब्रानी शब्द "लालसा" (तेशुक़ा/Teshukah) यौन लालसा नहीं है, बल्कि नियंत्रण करने, स्वामी होने, प्रभारी होने की इच्छा है (यौन इच्छा के अर्थ में 'तेशुक़ा' का प्रयोग श्रेष्ठगीत 7:10 में पाया जाता है)। परिणामस्वरूप, पतन के बाद, स्त्री की लालसा अपने पति पर प्रभुत्व स्थापित करने की रही है। उनके समानता के संबंध में उसके नेतृत्व को अस्वीकार करने का उसका संकल्प उनके संबंध में संतुलन को तोड़ता है। अपनी ओर से, पुरुष स्त्री पर अत्याचार करने की प्रवृत्ति रखता है।

जो महिलाएँ अपने पतियों पर प्रभुत्व जमाने का प्रयास करती हैं, प्रेरित पौलुस कहते हैं, "हे पत्नियों, अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो, जैसे प्रभु के" (इफिसियों 5:22)। उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति को परिवर्तन की आवश्यकता है, ताकि वे अपने पति के प्रति वैसे ही समर्पित हो सकें जैसे वे प्रभु के प्रति समर्पित होती हैं। क्योंकि, पौलुस तर्क करते हैं, पति पत्नी के लिए वैसे ही हैं जैसे मसीह कलीसिया के लिए हैं (पद 23)। जो पति अपनी पत्नियों पर प्रभुत्व जमाने की प्रवृत्ति रखते हैं, उन्हें भी परिवर्तन की आवश्यकता है ताकि वे अपनी पत्नियों से प्रेम कर सकें, "हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया" (पद 25)। इन वचनों के द्वारा, प्रेरित पौलुस एक ऐसा माध्यम प्रस्तुत कर रहे थे जिसके द्वारा दम्पति अपने सम्बन्ध में उस आनन्द को पुनः प्राप्त कर सकते थे जो पतन से पहले अदन की पहचान थी। इफिसियों 5:31 में पौलुस द्वारा उत्पत्ति 2:24 का प्रमाण देना एक उदाहरण है: यहाँ एक दम्पति उस मूल एकता को पुनः प्राप्त कर सकता है जिसे परमेश्वर ने उनके लिए प्रयोजन किया था। समान व्यक्तियों के संबंध को उत्तरदायित्व की एक श्रेणी में परस्पर समर्पण के संदर्भ में बताया गया है, जो उनके प्रभु यीशु के प्रति महान समर्पण की एक निशानी है।

बाइबल के अनुसार जीवन में उसकी भूमिका

एक महिला हर दृष्टि से एक पुरुष की तरह ही एक व्यक्ति है; वह ईश्वर के स्वरुप में साझीदार है और उसके पास अपने आसपास की संस्कृति, समुदाय और जीवन के प्रति विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाओं की क्षमता होती है। यह पवित्रशास्त्र

का एक तथ्य है कि महिलाओं को नियमित रूप से संतानोत्पत्ति के साथ जोड़ा जाता है, तथा वे इसमें अपना महत्व समझती हैं। तथापि वही पवित्रशास्त्र यह दर्शाता है कि स्त्री का स्वभाव केवल बच्चे पैदा करने तक ही सीमित नहीं है: समुदाय में, कलीसिया में, तथा प्रभु के समक्ष उसके सम्पूर्ण जीवन में उसकी अपनी पहचान है, न कि केवल तब जब (या यदि) वह बच्चे को जन्म देती है और उसका पालन-पोषण करती है। इसके अलावा, संतानोत्पत्ति करने की बाइबिल की अवधारणा में हमेशा पति शामिल होता है, जो संतानोत्पत्ति के समय उसका साथी होता है, प्रसव के दौरान उसके साथ होता है, और बच्चे के पोषण के निरंतर कार्य में उसका भागीदार होता है।

एक स्त्री की संतान जनने वाली छवि परमेश्वर के प्रतिज्ञा उत्पति 3:15 से शुरू होती है, जहां उन्होंने स्त्री की संतान द्वारा दुष्ट शैतान पर अंतिम विजय की घोषणा की। स्त्री की संतान के संबंध में यह प्रतिज्ञा, संतान जननी के रूप में महिलाओं पर परमेश्वर की सार्वभौमिक आशीष बन गयी। अंततः, एक स्त्री से जन्मे संतान के माध्यम से अंतिम उद्धार आएगा।

प्रत्येक जन्म अनुभव में इस प्रतिज्ञा की निरंतरता में सहभागिता का एक अर्थ है (देखें 1 तीमुथियुस 2:15 और स्त्री, उद्धार, और संतानोत्पत्ति के इस निरंतरता के संभावित संबंध)।

इसके अलावा, पुराने नियम की दुनिया की संस्कृति में, एक स्त्री का वास्तविक प्रतिष्ठा पूरी तरह से, या बड़े पैमाने पर, संतानोत्पत्ति के संदर्भ में देखा जाता था। फिर भी, केवल संतानोत्पत्ति में ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के सामने वह अपनी प्रतिष्ठा और गरिमा पाती हैं। पुरुष की तरह स्त्री के लिए भी प्रभु में विश्वास विषय केन्द्रीय है। एक स्त्री जिसके घर में बच्चे हैं, लेकिन ईश्वर में उसका कोई विश्वास नहीं है, वह खुद को एक पूर्ण व्यक्ति मान सकती है। फिर भी, अपने बच्चों की देखभाल करना परमेश्वर के प्रति उसकी भक्ति का विकल्प नहीं है। एक स्त्री जिसके कोई बच्चे नहीं हैं, और शायद कोई पति भी नहीं है, उसकी पूरी पहचान और महत्व उस परमेश्वर के साथ उसके रिश्ते में हो सकता है जिसके स्वरुप वह बनी है और जिसके कार्य करने के लिए उसे परमेश्वर ने नियुक्त किया है। एक स्त्री के जीवन में ईश्वर का अनुग्रह समाज में परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त करने के अवसर खोजने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। महिलाओं को स्पष्ट रूप से पुरुषों के समान ही नाज़ीर की मन्नत लेने के अवसर मिले थे (गिनती 6:2; अध्याय 30 भी देखें)। बाइबल में कुछ उल्लेखनीय स्त्रीयो ने सार्वजनिक सेवा का जीवन व्यतीत किया। मूसा और हारून की बहन मिर्याम (निर्गमन 15:20–21), एक भविष्यद्वक्तिन, संगीतकार और राष्ट्रीय अगुवा थीं (गिनती 12)। उसके समय के बहुत बाद, परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उस योग्यता के बारे में बताया जो उन्होंने इस्राएल को राष्ट्रीय अगुवा मिर्याम के रूप में दिया था (मीका 6:4)। अन्य अद्भुत स्त्रीयाँ भी थीं जिन्होंने आदर्श जीवन जिया: दबोरा, परमेश्वर की भविष्यद्वक्तिन और इस्राएल की एकमात्र नामित महिला न्यायी (न्यायियों 4–5); एस्तेर, क्षयर्ष की एक यहूदी रानी जिसने अपने लोगों को फारसी राजा के उन्मत्त कार्यों से बचाया, जो एक भयावह षड्यंत्र का परिणाम था; और हुल्दा, भविष्यद्वक्तिन जो योशियाह के पुनरुत्थान के आरंभ में प्रभु के वचन की वाहक थीं (2 इतिहास 34:22–28)। हुल्दा द्वारा प्रभु के वचन का स्वागत और प्रसारण और भी उल्लेखनीय है क्योंकि वह यिर्मयाह और सपन्याह की समकालीन थीं। इस मामले में परमेश्वर ने एक स्त्री के माध्यम से बात करने को चुना।

नए नियम में, कुछ स्त्रीयों को उनके सार्वजनिक सेवाकार्यों के लिए जाना गया: फिलिप्पुस की बेटियाँ, फीबे, प्रिस्किल्ला, यूनियास, त्रूफैना, त्रूफोसा, पिरसिस, यूओदिया, और सुन्तुखे। इन स्त्रीयों ने योएल की भविष्यवाणी की पूर्ति की शुरुआत को चिह्नित किया, जिसमें कहा गया था कि एक दिन स्त्रीयाँ भी पुरुषों के साथ पवित्र आत्मा के उंडेलने के साधन बनेंगी (योएल 2:28–29)। सारा, रूत, और हन्ना जैसी महिलाओं ने भी घर और परिवार के संदर्भ में परमेश्वर में अपने विश्वास का अभ्यास किया। और सबसे प्रमुख रूप से मरियम हैं, यीशु की माता, जिनमें स्त्रीत्व का आदर्श प्राचीन प्रतिज्ञा की पूर्ति के साथ जुड़ा है, जो हव्वा से किया गया था कि वह एक दिन मानव जाति के शत्रु पर महान विजय प्राप्त करेंगा।

यह भी देखें हव्वा; आदमी।

महीदा

महीदा

एज्रा के समय में मन्दिर सेवकों के एक परिवार के मुखिया (एज्रा 2:52; नहे 7:54)।

महीना

देखें प्राचीन और आधुनिक तिथिपत्र।

महीर

यहूदा के गोत्र से कलूब का पुत्र (1 इति 4:11)।

महूमान

महूमान

सात अधिकारियों में से एक, जिन्हें राजा क्षयर्ष ने रानी वशती को शाही भोज में लाने के लिए भेजा था (एस्त 1:10)।

महूयाएल

महूयाएल

ईराद के पुत्र और कैन की वंशावली में मतूशाएल के पिता (उत्प 4:18)।

महेतबेल

महेतबेल

1. मत्रेद की बेटी और हदर की पत्नी (उत्प 36:39; 1 इति 1:50), जो पूर्व-इस्राएल समय में एदोम के राजा थे।

2. शमायाह के दादा। शमायाह को तोबियाह और सम्बल्लत ने नहेम्याह को बदनाम करने के लिए इस तरह से काम पर रखा था कि उन्हें डराकर मन्दिर के भीतर भागने के लिए मजबूर किया जा सकें (नहे 6:10)।

महेर्शालाल्हाशबज

महेर्शालाल्हाशबज

यशायाह के पुत्र का नाम, जिसका अर्थ है "लूटने में तेज और नष्ट करने में शीघ्र" (एन.एल.टी एमग), जो भविश्यद्वाणी के रूप में निकट भविष्य में दमिश्क और सामरिया का अश्शूरियों के हाथों होने वाले विनाश का वर्णन करता है (यश 8:1, 3)।

महोलाई, महोलवासी

महोलाई, महोलवासी

इस स्थान का उपयोग अद्रीएल का वर्णन करने के लिए किया गया है, जो बर्जिल्लै का पुत्र और मेरब का पति था, जो शाऊल की सबसे बड़ी बेटी थी (1 शमू 18:19; 2 शमू 21:8)। सम्भवतः वह आबेल-महोला से था, जो गिलाद का एक महत्वपूर्ण नगर था। अद्रीएल और मेरब का विवाह सम्भवतः शाऊल द्वारा एक राजनीतिक कदम था, जिसे दाऊद द्वारा सहमति दी गई थी, जो स्वयं मेरब से विवाह करने वाले थे (1 शमू 18:17–19)।

मा'आनेह

माप की वह इकाई जो एक हल से खेत में बनी लकीर (20–30 गज, या 18.3–27.4 मीटर) की लंबाई के बराबर होता है। *देखें*वजन और माप।

मांस

*देखें*भोजन और भोजन की तैयारी; भोजन का महत्व।

मांस की भेंट

"भोजन" या "अन्न" की भेंट का के.जे.वी. रूप। *देखें*भेंट और बलिदान।

मांसाहारी गिद्ध

शिकारी पक्षी, जिसे केजेवी में गिद्ध (एक प्रकार की पक्षी जो अहेर करती हो) भी कहा जाता है (लैव्य 11:18; व्य.वि. 14:17)। *देखें*पक्षी (गिद्ध)।

माऐ

माऐ

एक याजकीय संगीतकार जिन्होंने पुनः निर्मित यरूशलेम की दीवार के समर्पण में भाग लिया (नहे 12:36)।

माओक

आकीश का पिता, गत का पलिश्ती राजा। दाऊद ने इस राजा के पास शरण ली ताकि शाऊल की हत्या की योजनाओं से बच सकें (1 शमू 27:2)। *देखें*माका, माका (व्यक्ति) #3।

माओन (व्यक्ति), माओनी

माओन (व्यक्ति), माओनी

शम्मै का पुत्र और बेतसूर का पिता (1 इति 2:45)। वह या तो बेतसूर के लोगों का मुलपुरुष था और/या नगर का संस्थापक। न्यायियों 10:12 के माओनी लोग सम्भवतः उसके वंशज हैं।

माओन (स्थान)

यहूदा के पहाड़ी देश में एक प्रमुख नगर (यहो 15:55), हेब्रोन के दक्षिण में लगभग नौ मील (14.5 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित है। दाऊद और उनके लोग शाऊल से भागते समय इस क्षेत्र में छिपे थे (1 शमू 23:24–25) और दाऊद की पत्नी अबीगैल इसी नगर की थी (25:2–3)। इसे आधुनिक टेल म'इन के साथ पहचाना गया है, जहाँ दाऊद के समय के मिट्टी के बर्तन पाए गए थे।

*यह भी देखें*मूनीम, मूनी।

माकस

12 नगरों में से एक, जिसने राजा सुलैमान और उसके घराने के लिए साल में एक महीने भोजन प्रदान किया (1 रा 4:9)। उत्तर-पश्चिम यहूदा में स्थित, इसे एक्रोन के दक्षिण में खिरबेत अल-मुखेज़िन के साथ पहचाना जा सकता है।

माका, अरम्माका (स्थान)

उत्तरी यरदन पार में एक छोटा राज्य जिसे वैकल्पिक रूप से 1 इति 19:6 में अरम्माका कहा जाता है। यहो 13:11 के अनुसार, गशूर और माका के राज्य गिलाद और हेर्मोन पर्वत के बीच थे और वह जगह बाशान के राजा ओग के राज्य की सीमा पर थी (यहो 12:4–5)। इसके लोगों को नाहोर के वंशज माना जाता था (उत्प 22:24) और वे नाहोरी जनजातियों में सबसे दक्षिणी थे।

*यह भी देखें*अराम (व्यक्ति) #2; अराम (स्थान)।

माका, माओक (व्यक्ति)

माका, माओक (व्यक्ति)

सामान्य इब्रानी नाम, जिसे कुछ अनुवादों में माओक लिखा जाता है।

1. अब्राहम के भाई नाहोर के चार सन्तानों में से अन्तिम, जो उनके रखैल रूमा से उत्पन्न हुई थी (उत्प 22:24)।

2. गशूर के राजा तल्मै की बेटी, दाऊद की पत्नी और अबशालोम की माता (2 शमू 3:3; 1 इति 3:2)।

3. आकीश के पिता। गत के राजा आकीश ने सुलैमान के शासनकाल के दौरान शिमी के दो दासों को पनाह दी थी (1 रा 2:39)। उन्हें 1 शमूएल 27:2 में माओक नाम से पहचाना गया है। *देखें*माओक।

4. अबशालोम (अबशालोम) की पुत्री (1 रा 15:2, 10), यहूदा के राजा रहबाम की पत्नी (930–913 ईसा पूर्व), और राजा अबिय्याह (913–910 ईसा पूर्व) की माता और यहूदा के राजा आसा (910–869 ईसा पूर्व) की दादी (1 रा 15:10; 2 इति 11:20–22)। बाद में, आसा ने उन्हें राजमाता के पद से हटा दिया क्योंकि उन्होंने अशेरा के लिए एक मूर्ति बनवाई थी (1 रा 15:10–13; 2 इति 15:16)। माका का नाम 2 इति 13:2 में मीकायाह लिखा गया है।

5. कालेब की रखैल और चार पुत्रों की माता (1 इति 2:48)।

6. हुप्पीम और शुप्पीम की बहन, माकीर की पत्नी जो मनश्शी थे और पेरेश और शेरेश की माता (1 इति 7:15–16)।

7. बिन्यामीन, यीएल की पत्नी, और राजा शाऊल की पूर्वज (1 इति 8:29; 9:35)।

8. हानान के पिता, दाऊद के पराक्रमी शूरवीरों में से एक (1 इति 11:43)।

9. शपत्याह के पिता, दाऊद के शासनकाल के दौरान शिमोनियों के मुख्य अधिकारी (1 इति 27:16)।

माकियों, माकाई, माकावासी

माकियों, माकाई, माकावासी

माका के लोग जो गशूरियों के पड़ोसी क्षेत्र और मनश्शे के आधे गोत्र को दी गई भूमि की सीमा पर अधिकार रखते थे (व्य.वि. 3:14; यहो 12:5; 13:11)। इसे याईर ने अपने कब्ज़े में ले लिया, जो अपने साथियों के साथ उनके बीच रहने वाले माकियों और गशूरियों को हटाने में असमर्थ था (यहो 13:13)।

माकियों में से एलीपेलेत आया, जो दाऊद की "पराक्रमी पुरुषों" की सेना में शामिल हो गया (2 शमू 23:34)। 1 इतिहास 11:36 में समानांतर संदर्भ उन्हें मकेराई कहता है।

इस्राएल के इतिहास में उनकी शत्रुता बनी रही। जब यरूशलेम नबूकदनेस्सर के हाथों में चला गया, तो माकाई के पुत्र याजन्याह, ने इश्माएल अम्मोनी के साथ गदल्याह के खिलाफ षड्यंत्र रचने की कोशिश कर रहा था, जिसे

नबूकदनेस्सर ने शहर पर शासन करने के लिए छोड़ दिया था (2 रा 25:23; यिर्म 40:8)।

*यह भी देखें*माका, माखा (स्थान)।

माकी

माकी

गाद के गोत्र से गूएल के पिता। गूएल उन 12 भेदियों में से एक था जिसे कनान देश की खोज के लिए भेजा गया था (गिन 13:15).

माकी

माकी

गाद के गोत्र से गूएल के पिता, माकी की एक और वर्तनी

*देखिए*माकी।

माकीर

1. यूसुफ के पोते और मनश्शे के पहलौठे पुत्र, जो उनकी अरामी रखैल के माध्यम से से उत्पन्न हुएँ थे (उत्प 50:23; 1 इति 7:14)। माकीर गिलाद के पिता और माकीरियों के कुल के संस्थापक थे (गिन 26:29)। उनके वंशजों ने मूसा के दिनों में यरदन के पूर्व में गिलाद की भूमि में रहने वाले एमोरियों को निकाल दिया था (गिन 32:39); इसके पश्चात्, उन्हें यह भूमि बाशान के साथ विरासत के रूप में दी गई थी (व्य.वि 3:15; यहो 17:1–3)। न्या 5:14 में, मनश्शे के पूरे गोत्र को इस नाम से पुकारा गया है।

2. अम्मीएल के पुत्र लोदबार में रहते थे, जो यरदन के पूर्व में एक नगर है। माकीर ने मपीबोशेत को आश्रय दिया (2 शमू 9:4–5) और बाद में, शोबी और बर्जिल्लै के साथ दाऊद के घरेलू आवश्यकताओं का ध्यान रखते थे जब वे अबशालोम से भाग रहे थे (2 शमू 17:27)।

माकीर

माकीर

माखीर नाम की एक और वर्तनी।

*देखिए*माखीर।

माकीरियों

माकीरियों

माकीर का कोई भी वंशज। वह मनश्शे के गोत्र से कुलपिता यूसुफ का पोता था (गिन 26:29)।

*देखें*माकीर #1.

माकीरियों

माकीरियों

माकीरियों की एक और वर्तनी। माकीरियों माकीर के वंशजों को संदर्भित करता है, जो मनश्शे के पहलौठे पुत्र और यूसुफ के पोते थे।

*देखें*माकीरियों।

मागस, शमौन

जादूगर का उल्लेख प्रेरितों के काम 8:9 में किया गया है। *देखें* शमौन #8।

मागोग

मागोग

यह शब्द बाइबल में केवल पाँच बार पाया जाता है, लेकिन यह महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका उपयोग प्रसिद्ध भविष्यद्वाणी वाले अंशों जैसे यहेज 38–39 और प्रका 20 में किया गया है। उत्प 10:2 (1 इति 1:5 भी देखें) में जातियों की सूची में, मागोग को येपेत के पुत्रों में सूचीबद्ध किया गया था, जो एक व्यक्ति और उनसे उत्पन्न जाति दोनों की पहचान करता है। यहेजकेल और प्रकाशितवाक्य में, मागोग का अर्थ भूमि, या लोग, या दोनों हो सकते हैं।

बाइबल के समय के समकालीन साहित्य में मागोग का उल्लेख नहीं है। इसलिए, एक परिभाषा मुख्य रूप से पवित्रशास्त्र की गवाही से आनी चाहिए, हालाँकि बाद के समय के लेखकों ने इस शब्द की पहचान के लिए अतिरिक्त संकेत दिए हैं। मागोग को बाइबल में सबसे पहले येपेत के पुत्र के रूप में (उत्प 10:2; 1 इति 1:5), मेशेक और तूबल के साथ (पुष्टि करें यहेज 38:2) पहचाना गया था। यहेज 38:2 मागोग को गोग नामक व्यक्ति के साथ जोड़ता है और यह दर्शाता है कि मागोग (तूबल और मेशेक के साथ) वह भूमि थी जिस पर गोग शासन करते थे। यहेज 39:6 मागोग की भूमि के लोगों के बारे में बात करने के लिए मागोग शब्द का उपयोग करता

है। साथ में, यहेजकेल 38 और 39 इस्राएल पर अन्तिम दिनों में गोग और उनके मागोग की भूमि के लोगों, साथ ही पृथ्वी के चारों ओर से लोगों द्वारा आक्रमण प्रस्तुत करते हैं (पुष्टि करें यहेज 38:8–16; पुष्टि करें पद 5–6)।

प्रका 20:8 गोग और मागोग को इस्राएल की पृथ्वी के चारों ओर से आने वाले अनेक जातियों के साथ आक्रमण करते हुए दर्शाता है। यह निश्चित रूप से प्रतीत होता है कि यहेजकेल और प्रकाशितवाक्य के लेखक के मन में अन्तिम दिनों की वही घटना थी। प्रका 20:8 को गोग को शैतान के रूप में पहचानने और मागोग को शैतान के साथ आने वाले और लोगों पर आक्रमण करने वाले के रूप में देखा जा सकता है। कुछ लोग प्रका 20:8 में "गोग और मागोग" को सहस्राब्दी के अन्त में होने वाली एक भविष्य की महान लड़ाई के प्रतीक के रूप में देखते हैं, जो यहेज 38–39 में आक्रमण के समान है, लेकिन स्वयं शब्दों की पहचान विशेष रूप से नहीं की गई है। कुछ लोग प्रका 20 में मागोग को गोग के साथ एक अन्य व्यक्ति के रूप में देखते हैं।

बाइबल के बाहर की लिखावटें अतिरिक्त संकेत देती हैं। जोसेफस की एंटीक्विटिस 1.6.1 मागोग को उत्तर के सीथियन के बराबर बताती है जो वर्तमान तुर्की और दक्षिण-मध्य रूस के क्षेत्र में रहते थे। जुबलीस 7:19 और 9:8 में मागोग को "उत्तरी बर्बर" के रूप में सन्दर्भित किया गया है। पुराने नियम में, मागोग को तूबल और मेशेक के साथ जोड़ा गया है, वह भौगोलिक क्षेत्र जिन्हें आम तौर पर कैस्पियन और काले सागर के बीच और दक्षिण में पहाड़ी क्षेत्र में स्थित माना जाता हैं।

उपलब्ध जानकारी यहेजकेल और प्रकाशितवाक्य में मागोग की पहचान तुर्की और दक्षिण-मध्य रूस के आधुनिक भौगोलिक क्षेत्र से उत्तरी बर्बर भीड़ (शायद सीथियन का क्षेत्र) के साथ करने का तर्क देते हैं जो अन्तिम दिनों में गोग के अगुआई में इस्राएल पर आक्रमण करेंगे। हालाँकि, पवित्रशास्त्र या अन्यत्र इस बात का अनुमान लगाने का कोई आधार नहीं है कि ये आधुनिक राष्ट्र इन शब्दों की वास्तविक पहचान हैं।

मागोर्मिस्साबीब

यिर्मयाह द्वारा पशहूर को दिया गया नाम, जो परमेश्वर के घर में प्रधान अधिकारी थे। यिर्मयाह ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि पशहूर ने उन्हें यहूदा पर न्याय की भविष्यद्वाणी करने के लिए बंदी बना लिया था (यिर्म 19:14–20:2)। पशहूर नाम का अर्थ है "चारों ओर समृद्धि" और इसे "हर तरफ आतंक" में बदल दिया गया (20:3) क्योंकि पशहूर को बाबेली आक्रमण की भयावहता देखनी थी।

माचेरस

माचेरस*

किलेबंदी वाले महल जहां यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को बंदी बनाया गया था और बाद में हेरोदेस अन्तिपास द्वारा सिर काट दिया गया था (जोसेफस की *एंटीक्विटिस 18.5.2* के अनुसार)। यह नाम न तो धर्मवैधानिक शास्त्रों में आता है और न ही अप्रमाणिक ग्रन्थ में, लेकिन यह पूरे फिलिस्तीन में सबसे मजबूत किलों में से एक था, जिसे सिकन्दर जैनियस द्वारा बनाया गया था (जोसेफस की *वार* 7.6.1–4)। इसे पोम्पी के युद्धों में गबिनियस द्वारा नष्ट कर दिया गया था (*वार* 1.8.5) लेकिन हेरोदेस महान द्वारा पुनर्निर्मित और बहुत बढ़ाया गया, जिसने घेरे के भीतर एक शानदार किले का निर्माण किया। यह मृत सागर के पूर्व में पेरिया के दक्षिणी छोर पर मृत सागर की ओर देखने वाली एक सीमा पर स्थित था। इसकी पहचान आधुनिक एम'खौर से की जाती है।

मत्ती (मत्ती 14:1–12) और मरकुस (मरकुस 6:17–29) विवरण करते हैं कि हेरोदेस ने, यीशु की प्रसिद्धि सुनकर, उनके सामर्थ्य के काम करने की शक्ति को यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से जोड़ा, जिनके बारे में उनका मानना था कि वह जीवन में वापस आ गए है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की कैद इतनी कठोर नहीं थी कि मित्रों की यात्रा को रोका जा सके (मत्ती 11:2–3; लूका 7:18–20)। यह इस किले से था कि हेरोदेस की अरबी पत्नी, जिसे उन्होंने हेरोदियास के लिए त्याग दिया था, अपने पिता अरितास, अरब के राजा, के पास भाग गई। इससे हेरोदेस और अरितास के बीच युद्ध छिड़ गया (जोसेफस की *एंटीक्विटिस* 18.5.1) और हेरोदेस की हार हुई।

माज्याह

1. वह लेवी जो दाऊद के शासनकाल के दौरान मन्दिर में सेवा करता था (1 इति 24:18)।

2. लेवी जिन्होंने एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाई (नहे 10:8); जिसे कभी-कभी माद्याह के साथ पहचाना जाता है, जो एक निर्वासन के बाद का याजक है (नहे 12:5)।

यह भी देखें माद्याह।

माणभ

माणभ

बिल्लौर की एक किस्म, जो आम तौर पर साफ़ या लगभग साफ़ होती है। दो इब्रानी शब्दों और दो यूनानी शब्दों का

अनुवाद “कीमती पत्थर” किया गया है। *देखें* खनिज और धातुएं; पत्थर, कीमती।

माणिक्य

माणिक्य

कैल्सेडनी की विविधता, जिसका रंग गहरे लाल से लेकर लगभग सफेद तक भिन्न हो सकता है; इसका उल्लेख नए यरूशलेम की दीवार में आधार रत्नों में से एक के रूप में किया गया है (प्रका 21:20)। *देखें* रत्न, कीमती।

माणिक्य

देखें बहुमूल्य पत्थर।

मात

मात

लूका 3:26 में उल्लिखित यीशु के एक पूर्वज।

देखें प्रभु यीशु मसीह की वंशावली।

माता-पिता

देखें परिवारिक जीवन और सम्बन्ध।

मादी, मादै, मादी

मादी, मादै, मादी*

इंडो-यूरोपीय बोलने वाले लोग प्राचीन एशियाई देश मादियों के पर्वतीय क्षेत्र में प्रकट हुए। वे फारसियों के निकट सम्बन्धी थे, जिनसे अक्सर उन्हें पहचाना या भ्रमित किया जाता था, क्योंकि लेखकों ने इस क्षेत्र के लोगों को लगभग सामान्य शब्द "मादी" से सन्दर्भित किया। वास्तव में, मादी ने ज़ाग्रोस पर्वत में एक निश्चित क्षेत्र का निवास किया, जो समुद्र तल से 3,000 से 5,000 फीट (914.4 से 1,524 मीटर) की ऊँचाई पर स्थित था, और यह एक पहाड़ी क्षेत्र था जो घाटियों द्वारा विभाजित था। इसकी राजधानी, अहमता (अब हमदान) मेसोपोटामिया से आने वाले प्रमुख व्यापार मार्ग पर थी। यह ऊँचाई एक समशीतोष्ण ग्रीष्म जलवायु प्रदान करती थी, जिससे अहमता को फारसी राजाओं के लिए ग्रीष्मकालीन विश्राम स्थल के रूप में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

चूंकि मादी भाषा में कोई पाठ मौजूद नहीं है जो मादी के इतिहास और संस्कृति को दर्ज करता हो, इसलिए जानकारी समकालीन लेखकों जैसे यूनानियों, नव-बाबेली, और अश्शूरियों के समकालीन लेखनों में उनके सन्दर्भो से प्राप्त की जानी चाहिए। चूंकि मादी और कसदियों ने अश्शूर साम्राज्य को गिराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, इसलिए यह समझ में आता है कि वे नव-बाबेली पाठों में प्रमुखता से चित्रित किया जाना चाहिए। हेरोडोटस से मूल्यवान अतिरिक्त जानकारी उपलब्ध है, सम्भवतः कीलाक्षर स्रोतों से।

अश्शूर के राजा शल्मनेसेर तृतीय ने नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में अहमता के आसपास के क्षेत्र में मादी की गतिविधियों को दर्ज किया, लेकिन इतिहासकार इस बात को लेकर अनिश्चित हैं कि वे उस तारीख से कितने समय पहले उस क्षेत्र में प्रवास कर चुके थे।

शल्मनेसेर ने सावधानी से पाले गए घोड़ों के झुण्ड को चुराने के लिए मादियों द्वारा नियंत्रित मैदानों पर एक छापेमारी का आयोजन किया, जिनकी उत्कृष्टता के लिए प्रतिष्ठा पहले से ही उचित रूप से उच्च थी। पीढ़ियों से, अश्शूर राजाओं ने इस प्रकार की छापेमारी जारी रखी, न केवल घोड़ों की ताजा आपूर्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से, बल्कि इस प्रमुख मार्ग पर व्यापारियों के मुक्त मार्ग को सुनिश्चित करने के लिए भी। आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान, अश्शूर राजा जैसे अदद-निरारी (810–781 ईसा पूर्व), तिग्लत्पिलेसेर III (743 ईसा पूर्व), और सर्गोन द्वितीय (716 ईसा पूर्व) ने सभी ने साधन को जीतने का दावा किया। पुराने नियम में दर्ज है कि इस्राएलियों को सर्गोन के आक्रमणों के समय वहाँ ले जाया गया था (2 रा 17:6; 18:11)।

जब एसर्हद्दोन अश्शूर का राजा थे (681–669 ईसा पूर्व), उन्होंने उम्मीद की थी कि मादी उनके अधिपत्य को स्वीकार करेंगे और उनकी संधि के अनुसार भेंट देंगे, लेकिन अश्शूर की घटती शक्ति का लाभ उठाते हुए, मादियों ने 631 ईसा पूर्व में स्कूतीनों और किमेरीयों के साथ मिलकर दलों का गठन किया। अश्शूरियों की घटती शक्ति को फ्राओर्टेस के अगुआई में किए गए हमलों की एक श्रृंखला ने और भी कमजोर कर दिया, जिसका परिणाम 612 ईसा पूर्व में नीनवे के पतन और 610 ईसा पूर्व में हारान के पतन के रूप में हुआ। मादियों के सायएक्सारेस के अगुआई में, जिन्होंने एक मजबूत, अनुशासित सेना का आयोजन किया, मादी दलों और उनके सहयोगियों ने प्रमुख शहरों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया और 585 ईसा पूर्व में लुदिया के साथ शान्ति वार्ता करते हुए अपने प्रभाव क्षेत्र को अश्शूर के उत्तरी भाग तक विस्तारित किया।

एलामियों, जो सदियों से इस क्षेत्र में सत्ता संघर्ष के उतार-चढ़ाव में शामिल रहे हैं, 550 ईसा पूर्व में तब प्रमुखता में आए जब अनशान के कुस्रू ने अस्तियागेस को हराया। कुस्रू आधे फारसी और आधे मादै वंश के थे। मादियों की राजधानी अहमता पर कब्जा कर लिया गया, और पूरे क्षेत्र को एलाम

द्वारा नियंत्रित किया गया। कुसू ने "मादियों का राजा" का अतिरिक्त शीर्षक धारण किया। मादियों के रीतियाँ और विरासत को फारसियों के साथ मिलाया गया (दानि 6:8, 15)। मादियों को उच्च पद सौंपा गया। मादियों और फारसियों को लगभग समानार्थी शब्दों में सन्दर्भित किया गया (एस्त 1:19; दानि 8:20)। वे बाबेल पर कब्जा करने में भी शामिल थे (यशा 13:17; यिर्म 51:11, 28; दानि 5:28)। मादी विरासत के होने के कारण (दानि 9:1), क्षयर्ष के पुत्र दारा को "मादी" कहा गया (दानि 11:1) जब उन्होंने बाबेल के शासक के रूप में पदभार सम्भाला। हालांकि, उनका प्रशासन पूरी तरह से शान्तिपूर्ण नहीं था, और बेचैनी के कारण उनके शासनकाल और दारा द्वितीय (409 ईसा पूर्व) के दौरान दोनों में ही विद्रोह हुआ।

एस्तेर की पुस्तक में भव्य दावत और दरबार के राजभवन की शानदार नियुक्तियों का वर्णन किया गया है (एस्त 1:3–7)। बाद में मादी लोग अश्शूर (सेल्यूसिड्स) और पार्थियन के नियंत्रण में आ गए। नए नियम में पारथी, मादी, और एलामियों का एक संयुक्त सन्दर्भ है (प्रेरि 2:9), लेकिन उसके बाद ऐसा प्रतीत होता है कि मादियों केवल एक भौगोलिक शब्द बन गया है, ये लोग अब इतिहास में अपने आप में एक समूह के रूप में दिखाई नहीं देते हैं।

मादै

मादै

बानी का बेटा, जिसने निर्वासन के बाद अपनी मूर्तिपूजक पत्नी को तलाक देने के लिए एज्रा के उपदेश का पालन किया (एज्रा 10:34).

मादै

मादै

येपेत के सात पुत्रों में से तीसरा (उत्प10:2; 1 इति 1:5)।

मादोन

कई कनानी नगरों में से एक, जिन्होंने यहोशू के विरुद्ध मिलकर इस्राएलियों की पलिश्तीन में प्रगति को रोकने का असफल प्रयास किया। मेरोन में हुई एक विनाशकारी लड़ाई के परिणामस्वरूप ये नगर इस्राएली नियन्त्रण में आ गए (यहो 11:1; 12:19)। मादोन सम्भवतः आधुनिक कर्न हत्तिन है, जो गलील सागर से लगभग पाँच मील (8 किलोमीटर) दूर है।

माद्याह

माद्याह

यरूशलेम लौटने वाले एक याजकीय परिवार के मुखिया, जो बँधुआई के बाद (नहे 12:5, एन.एल.टी एमजी) और योयाकीम के दिनों में जिनके अगली पीढ़ी में घर का नेतृत्व महायाजक पिलतै द्वारा किया गया था। उन्हें 17 पद में मोअद्याह कहा गया है। वे संभवतः याजक माज्याह के साथ पहचाने जा सकते हैं, जिन्होंने एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाई थी (10:8)।

मानव विज्ञान

मनुष्यों और मानव संस्कृतियों का अध्ययन। एक धर्मशास्त्रीय अर्थ में, मानवविज्ञान यह अध्ययन है कि बाइबल मनुष्यों के बारे में क्या कहती है। मानवविज्ञान इस बात पर केंद्रित है कि मनुष्य वास्तव में परमेश्वर से कैसे संबंधित हैं और उन्हें परमेश्वर से कैसे संबंधित होना चाहिए। *देखें*मानव अस्तित्व।

मानहत (व्यक्ति)

मानहत (व्यक्ति)

शोबाल के पाँच पुत्रों में से एक (उत्प 36:23; 1 इति 1:40)।

मानहत (स्थान), मानहती

यह स्थान स्पष्ट रूप से यहूदिया की पहाड़ियों में बिन्यामीन की सीमा के पास स्थित था (1 इति 8:6)। मानहती (1 इति 2:54), जो मानहत के लोग हैं, उत्तरी यहूदिया में यहूदी और कालेबवंशी गौत्र के साथ सम्बन्ध रखते थे। यह स्थल सम्भवतः मल्हा का है, जो यरूशलेम से तीन मील (4.8 किलोमीटर) दक्षिण-पश्चिम में रपाईम की तराई की उत्तरी ढलान पर स्थित है।

माना

माना

के.जे.वी में मिना का अनुवाद, यहेजकेल 45:12 में एक वजन/माप। *देखें*वजन और माप।

मानोह

सोरा का एक दानवंशी जिसकी पत्नी बाँझ थी। प्रभु के स्वर्गदूत के साथ मुलाकात के माध्यम से, दम्पत्ति ने जाना कि परमेश्वर उन्हें एक पुत्र प्रदान करने वाले हैं, जो पलिश्तियों का न्याय करेगा और इस्राएल को उनके उत्पीड़न से मुक्त करेगा। मानोह की पत्नी ने बाद में शिमशोन को जन्म दिया, जिसने इन वादों को पूरा किया (न्या 13; 16:31)।

माप

*देखें*वजन और माप।

मारा

एताम के जंगल में पानी का सोता, लाल समुद्र पार करने के बाद इस्राएलियों का पहला शिविर स्थल (निर्ग 15:23; गिन 33:8–9)। स्वीकृत पहचान 'ऐन हवाराह के साथ है, जो कड़वे पानी का एक कुण्ड है, जो स्वेज की खाड़ी के पूर्वी तटीय मैदान पर स्थित है, स्वेज से लगभग 44 मील (70.8 किलोमीटर) दक्षिण-पूर्व में, और 'ऐन घरंडेल से लगभग 5 मील (8 किलोमीटर) उत्तर-पश्चिम में, वादी अमाराह के दक्षिण में (जो प्राचीन नाम की गूंज को संरक्षित कर सकता है)।

*यह भी देखें*जंगल में भटकना I

मारा

एक नाम जिसका अर्थ है "कड़वा।" नाओमी ने खुद को यह नाम दिया जब वह एक विधवा स्त्री के रूप में मोआब से यहूदा लौटी (रूत 1:20)।

*देखिए*नाओमी।

मारा

मारा

फिलिस्तीन का वह क्षेत्र जिसे इस्राएलियों ने प्राप्त नहीं किया था (यहो 13:4)। इसका स्थान अनिश्चित है। सुझावों में सीदोन के पास गुफाओं का क्षेत्र (मारा का अर्थ "गुफा") शामिल है जिसे मुगहर जेज्ज़ीन कहा जाता है, और कस्बे खिरबेत 'आरह और मोगेइरीयेह है।

मारानाथा

"मारानाथा" एक अरामी वाक्यांश है जिसका उपयोग पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 16:22 में किया है। इसका अर्थ "हे हमारे प्रभु, आ" या "हमारा प्रभु आ गया है" हो सकता है।

यह अभिव्यक्ति संभवतः शुरुआती यहूदी मसीहियों की आराधना सेवाओं से आई थी, जो अरामी को अपनी पहली भाषा के रूप में बोलते थे। चूँकि पौलुस ने यूनानी में लिखा, उन्हें अरामी वाक्यांश को लिखाने के लिए यूनानी अक्षरों का उपयोग करना पड़ा, जिससे कभी-कभी भ्रम उत्पन्न होता था। प्राचीन ग्रंथों में, शब्दों को अक्सर बिना रिक्त स्थान के एक साथ लिखा जाता था। क्योंकि *मारानाथा* दो शब्दों से बना है, इसलिए इसे अलग-अलग तरीकों से समझा जा सकता है।

अधिकांश विद्वान इस बात से सहमत हैं कि पहला शब्द *मारान* या *माराना* है, जिसका अर्थ है "प्रभु" या "हमारे प्रभु।" दूसरा शब्द एक अरामी क्रिया है जिसका अर्थ है "आना।" इस क्रिया को या तो एक प्रार्थना (आदेश के रूप में: *था* या *एथा*, जिसका अर्थ है "आओ!") या एक कथन (भूतकाल के रूप में, *अथा*, जिसका अर्थ है "आ चुके हैं") के रूप में पढ़ा जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप पाँच संभावित व्याख्याएं सामने आती हैं:

1. एक प्रार्थना के रूप में, पौलुस संभवतः प्रभु के भोज का संदर्भ देते हुए यीशु की आत्मिक उपस्थिति के लिए प्रार्थना कर रहे हैं।
2. यह यीशु के दूसरे आगमन के लिए एक प्रार्थना भी हो सकती है।
3. यह एक कथन के रूप में देहधारण का संदर्भ हो सकता है, संभवतः प्रभु भोज के संदर्भ में, जिसका अर्थ है "हमारे प्रभु उपस्थित हैं"।
4. इसका मतलब मत्ती 18:20 में बताए गए यीशु के वादे से भी हो सकता है।
5. इसका एक अन्य व्याख्या यह भी हो सकता है कि "हमारे प्रभु आ रहे हैं," हालाँकि कुछ अरामी विद्वान तर्क करते हैं कि यह एक संभावित अर्थ नहीं है।

सीरियाई संस्करण (अरामी का एक रूप) अनुवाद को एक कथन के रूप में समर्थन करता है ("हमारे प्रभु आ चुके हैं")। यह क्रिया को एक कथन में अनुवादित करता है। प्रारंभिक कलीसिया के पिता भी अक्सर इसे इसी तरह व्याख्या करते थे। हालाँकि, अधिकांश विद्वान सोचते हैं कि यह व्याख्या पद्य के संदर्भ के साथ अच्छी तरह से मेल नहीं खाती। यदि इसे एक प्रार्थना के रूप में देखा जाए, तो यह अन्य बाइबल के अंशों से जुड़ता है (फिलि 4:5ख; 1 पत 4:7; तुलना करें प्रका 22:20ख, जो *मारानाथा* का अनुवाद हो सकता है)।

मारानाथा पौलुस द्वारा 1 कुरिन्थियों 16:22 में श्राप देने के तुरंत बाद दिखाई देता है। कुछ लोग मानते हैं कि अरामी अभिव्यक्ति स्वयं श्राप का हिस्सा है। किंग जेम्स संस्करण में इस वाक्यांश का अनुवाद "उसे एनाथेमा मारन-अथा" के रूप में किया गया है, जिससे ऐसा लगता है कि ये दोनों शब्द एक साथ हैं। हालाँकि, *एनाथेमा* एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ "श्राप" है और संभवतः वाक्य का अंत इसी से होता है। कुछ आधुनिक विद्वानों का मानना है कि *मारानाथा* श्राप से जुड़ा हुआ है। यह यीशु के न्याय के लिए आने की प्रार्थना थी। इससे पौलुस के श्राप को और अधिक बल मिलता है। सातवीं सदी में एक कलीसिया परिषद ने "अनाथेमा मारानाथा" का उपयोग उन लोगों को दोषी ठहराने के लिए किया जो कलीसिया से असहमत थे। इसका अर्थ था, "उसे प्रभु के आगमन पर दोषी ठहराया जाए।"

मारी

पूर्वी सीरिया में एक प्रभावशाली नगरीय-राज्य, जो लगभग 2000 ईसा पूर्व शक्तिशाली बन गया। इसे सेमिटिक खानाबदोशों (घूमने वाले लोग) द्वारा बसाया गया था जिन्होंने नगरीय जीवन को अपनाया और कीलाक्षर (एक प्राचीन लेखन प्रणाली) को अपनी भाषा, अक्कादियन में रूपांतरित किया।

मारी सुमेरी सभ्यता की एक चौकी थी। यह इसलिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि यह उत्तरी मेसोपोटामिया के एक बड़े भाग में फैले साम्राज्य की राजधानी थी, जो फरात नदी के साथ लगभग 22 मील (35.4 किलोमीटर) तक विस्तृत थी।

पुरातत्वविद् ने मारी में 20,000 से अधिक दस्तावेज़ खोजे हैं। ये रिकॉर्ड हमें पश्चिमी एशिया के इतिहास को पुनः लिखने में सहायता करते हैं। उन्होंने अच्छी तरह से संरक्षित एक राजभवन भी खोजा, जिसमें दीवार चित्र और रसोई तथा स्नान की व्यवस्था शामिल है। ये वस्तुएं हमें 1810 से 1760 ईसा पूर्व के जीवन के बारे में बहुत कुछ बताती हैं।

मारी एक महान रक्षात्मक दीवार से घिरी हुई थी, जो इसे आक्रमणकारी सेनाओं से बचाती थी। एक प्रमुख इमारत, एक जिग्गुराट (मंदिर का मीनार), शहर के ऊपर ऊँचा उठता था, जिसकी ऊँचाई लगभग 150 फीट (45.6 मीटर) थी। यह एक ऊँचा पिरामिड था, जिसके बाहर सीढ़ियाँ, शीर्ष पर स्थित एक तीर्थस्थान तक ले जाती थीं तथा नीचे छोटे मंदिर थे।

शाही राजभवन लगभग छह एकड़ (2.4 हेक्टेयर) भूमि पर स्थित था। राजभवन बेहद मोटी दीवारों से निर्मित था, जो मिट्टी से ढकी ईंटों से बनी थीं और 16 फीट (4.9 मीटर) ऊंचा था। एक जटिल जल निकासी प्रणाली में बारिश के पानी को 30 फीट (9.1 मीटर) भूमिगत मिट्टी के पाइपों के माध्यम से ले जाती थी। मारी के राजभवन में लगभग 300 कमरे थे। यह न केवल शाही निवास था बल्कि निम्नलिखित का केंद्र भी था:

- व्यापार
- राजनीतिक कूटनीति
- सैन्य नेतृत्व
- व्यापारियों के सामान और सैन्य उपकरणों के भंडारण के लिए स्थान

शाही कचहरी ने भोजन और पेय का आनंद लिया:

- मछली
- मांस
- चार प्रकार की रोटी
- खीरे
- मटर
- फलियाँ
- लहसुन
- खजूर
- अंगूर
- अंजीर
- मदिरा
- दाखरस
  धार्मिक प्रथाओं में बलिदान और मंदिर में वेश्यावृत्ति शामिल होती थी।
  मारी के अभिलेखागार से प्राप्त मिट्टी की पट्टिकाएं प्राचीन राज्य में दैनिक जीवन के बारे में एक झलक प्रस्तुत करती हैं। ये अभिलेख दो भाषाओं में लिखे गए हैं और जाहदुन-लिम, मारी के संस्थापक, और उनके पुत्र जिम्री-लिम के शासनकाल के दौरान समाज के विभिन्न पहलुओं का समावेश करते हैं:
    - राजा ने राज्य के मामलों को संभालने, अधिकारियों की बात सुनने और कानूनी विवादों को सुलझाने के लिए प्रतिदिन राज्यसभा सत्र आयोजित किए।
    - उनकी भूमिका धार्मिक क्षेत्र में भी विस्तारित हुई, जहाँ उन्होंने मंदिर यात्राओं में भाग लिया, अनुष्ठानों का संचालन किया, पशु बलि दी, देवताओं के साथ संवाद किया, और धार्मिक भोज में सम्मिलित हुए।
    - राजा की धर्म में भागीदारी इतनी महत्वपूर्ण थी कि उन्हें कभी-कभी ईश्वरीय माना जाता था।

- उन्होंने कैलेंडर का भी प्रबंधन किया, जिसमें मौसमी परिवर्तनों के अनुरूप हर तीन वर्ष में एक अतिरिक्त महीना जोड़ना शामिल था।

आर्थिक अभिलेख विभिन्न प्रकार के व्यवसायों को दर्शाते हैं:

- धातु शिल्पकार
- बुनकर
- धोबी
- रत्न तराशने वाले
- जौहरी
- चित्रकार
- इत्र के निर्माता
- नाविक
- बढ़ई
- चमड़े के शिल्पकार
- मछुआरे
- कुम्हार
- राजमिस्त्री।

सेवाओं के लिए भुगतान मकई, ऊन, कपड़े, दाखरस, या तेल जैसे सामानों के माध्यम से किया जाता था, और कभी-कभी सोने या चाँदी में भी किया जाता था।

यह भी देखें शिलालेख।

मारेशा (व्यक्ति)

1. कालेब का पहला पुत्र और हेब्रोन का पिता (1 इति 2:42; यूनानी पाठ के आधार पर)। उसे इब्रानी पाठ में वैकल्पिक रूप से मेशा कहा जाता है। *देखें* मेशा (व्यक्ति) #2।

2. सम्भवतः यहूदा के वंशज लादा का पुत्र (1 इति 4:21)।

मारेशा (स्थान)

एक नगर (यूनानी में मारिसा; जोसीफस के अनुसार "मारिस्सा"), जो यहूदा के तटीय मैदान से हेब्रोन और यरूशलेम की ओर जाने वाले मार्ग पर स्थित था। यहूदी मिट्टी के बर्तनों के अवशेष दर्शाते हैं कि यह कम से कम 800 ई.पू. से बसा हुआ था। यह स्थल अब तेल मारेशा के नाम से जाना जाता है।

इस्राएल के कनान पर कब्जे के समय, मारेशा को यहोशू द्वारा यहूदा को आवंटित किया गया था (यहो 15:44)। बाद में, राज्य के विभाजन के समय, रहबाम ने इसे यरूशलेम के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक सुरक्षात्मक चौकी के रूप में मजबूत किया, जिससे कई आक्रमणकारी आने वाले थे (2 इति 11:8)। जेरह कूशी, दस लाख आदमी और तीन सौ रथों के साथ, मारेशा तक पहुँचा और वहाँ आसा द्वारा पराजित हुआ (14:9)। इसके बाद के शासनकाल में, यहोशापात के समय, मारेशा में जन्मे भविष्यद्वक्ता एलीएजेर ने राजा द्वारा निर्मित अभिमानी जहाज के विनाश की भविष्यवाणी की (20:37)।

भविष्यद्वक्ता मीका ने, जो मोरेशेत-गत में जन्मे थे (कुछ मील उत्तर की ओर), उन क्षेत्रों के भाग्य पर एक भावुक शोकगीत प्रस्तुत किया जिसे उन्होंने बचपन से जाना था, जब अश्शुरी निकट आ रहे थे (चाहे सन्हेरीब के अधीन, 701 ई.पू. या सर्गोन, 711 ई.पू.)। प्रत्येक परिचित स्थान-नाम को चिन्हित करते हुए, उन्होंने मारेशा को एक आने वाले "अधिकारी" की चेतावनी दी (मीका 1:15)।

मारोत

पलिश्तीन में एक नगर, जिसका उल्लेख केवल मीका (मीका 1:12) द्वारा किया गया है। यह सम्भवतः यहोशू 15:59 में मरात के समान हो सकता है; यदि ऐसा है, तो यह एक प्राचीन कनानी नगर होगा, जो यहूदा के गोत्र की विरासत का हिस्सा था।

मार्ग

एक घिसा हुआ रास्ता या सड़क। "पथ(ओं)" और "मार्ग(ओं)" का उपयोग बाइबिल में उपयोग किए गए विभिन्न शब्दों का अनुवाद करने के लिए किया जाता है: (1) एक अच्छी तरह से चलने वाला और बहुत इस्तेमाल किया जाने वाला रास्ता (उत 49:17; भज 16:11; 139:3; नीति 2:8, 19); (2) एक राजमार्ग या मुख्य पथ (यशा 59:7; योए 2:8); (3) खेतों के पार, पहाड़ियों के ऊपर और घाटियों के माध्यम से जाने वाला एक मार्ग (अय्यू 30:13; भज 119:35; नीति 3:17); (4) एक रास्ता या पगडंडी जिसमें साथ बहने का विचार शामिल है (भज 77:19; यिर्म 18:15); (5) एक गोलाकार का मार्ग, जैसे खाई में या मुँडेर में (भज 65:11; नीति 2:9); और (6) एक सँकरा मार्ग/गली, जैसे सुराख के माध्यम से जाना (गिन 22:24)। "मार्ग" का उपयोग यूनानी शब्दों का अनुवाद करने के लिए किया जाता है जिसका अर्थ है एक घिसा हुआ

रास्ता/सड़क (मत्ती 3:3; मर 1:3; लूका 3:4) और पहिये का घिसाव (इब्रा 12:13)।

"पथ(ओं)" और "मार्ग(ओं)" शब्दों के उपयोग की सावधानीपूर्वक समीक्षा से पता चलता है कि बाइबिल इन्हें शाब्दिक रूप से उस भूमि के एक हिस्से को संदर्भित करने के लिए उपयोग करती है, जिस पर यातायात गुजरता है। यह एक टेढ़ी-मेढ़ी पहाड़ी रास्ते, एक कच्ची और बहुत उपयोग की गई सड़क, या एक अच्छी तरह से तैयार किए गए पथ के रूप में हो सकता है। बाइबिल के लेखकों ने इन शब्दों का प्रयोग रूपक के रूप में भी किया है, यह बताने के लिए कि परमेश्वर के संबंध में मानव जीवन किस तरह जिया जाता है, और परमेश्वर किस तरह से मानव जीवन को निर्देशित करते हैं, और समृद्ध या दरिद्र बना सकते हैं और बनाते हैं। लेखकों ने इन शब्दों का प्रयोग मानव जीवन के विभिन्न आयामों के बीच मानवीय आचरण और अनुभवों को संदर्भित करने के लिए आलंकारिक रूप से किया है। अंतिम दो प्रयोगों में विशेष रूप से रंगीन अभिव्यक्तियाँ हैं जैसे जीवन का रास्ता (भज 16:11), चौरस (समतल) रास्ते (27:11), भली-भली चाल (नीति 2:9), बुरे लोगों के मार्ग (4:14), न्याय का पथ (यशा 40:14), बुद्धि का मार्ग (नीति 4:11), और आनन्ददायक मार्ग (3:17)।

मार्जरम

मार्जरम

छोटा पोदीना तीन फीट (.9 मीटर) तक ऊँचा बढ़ता है। यह संभवतः पुराने नियम का "जूफा" था। *देखें*पौधे (जूफा)।

मार्था

मरियम और लाज़र की बहन और यीशु की मित्र। मार्था का परिवार जैतून पहाड़ की पूर्वी ढलान पर स्थित एक छोटे से शहर बैतनिय्याह में रहता था।

लूका उस समय के बारे में बताता है जब मार्था भोजन तैयार करने और परोसने में व्यस्त थीं, जबकि उनकी बहन मरियम यीशु की शिक्षा सुनने बैठी थीं। मार्था यीशु के पास आईं और शिकायत की कि मरियम उनकी मदद नहीं कर रही हैं। यीशु ने कोमलता से उत्तर दिया: "तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है: जो उससे छीना न जाएगा" (लूका 10:41–42)। ऐसा कहकर, यीशु ने मार्था की चिंता को चुनौती दी, उन्हें दिखाते हुए कि उनके साथ समय बिताना सबसे महत्वपूर्ण और लाभप्रद प्राथमिकता है।

यूहन्ना उस घटना का वर्णन करते हैं जब लाज़र की मृत्यु हुई। जब यीशु बैतनिय्याह पहुँचे, तो मार्था उनसे मिलने बाहर गईं, जबकि मरियम घर पर रहीं (यूह 11:20)। एक बार फिर, मार्था ने यीशु से कहा, ""हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता" (यूह 11:21)। मार्था ने सोचा कि यीशु का मतलब था कि लाज़र अंतिम पुनरुत्थान (जब सभी लोग समय के अंत में मृत्यु से जी उठेंगे) पर पुनः जीवित हो जाएंगे। लेकिन यीशु ने उनसे कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तो भी जीएगा" (यूह 11:23–26)।

तब मार्था ने कहा कि उनका मानना है कि यीशु परमेश्वर के चुने हुए व्यक्ति हैं (मसीह, यूह 11:27)। बाद में, यीशु ने लोगों से लाज़र की कब्र खोलने के लिए कहा। मार्था इस बारे में चिंतित थीं क्योंकि लाज़र चार दिन से मृत थे। यीशु ने उनसे कहा, "क्या मैंने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी" (यूह 11:40)। फिर यीशु ने लाज़र को जीवित कर दिया।

यूहन्ना 12:1–11 में एक और भोज के बारे में बताया गया है जिसमें मार्था ने यीशु और लाज़र की सेवा की थी। इस बार, मार्था सेवा में लगी रहीं जबकि मरियम ने यीशु के प्रति अपना प्रेम प्रकट किया, और मार्था ने कोई शिकायत नहीं की।

*यह भी देखें*मरियम (#4), लाज़र।

मार्स की पहाड़ी

अरियुपगुस के लिए वैकल्पिक अनुवाद, एथेंस के गढ़ के उत्तर-पश्चिम में एक छोटे पहाड़ का नाम है और यह पौलुस द्वारा एथेंस वासी को को दिए गए सम्बोधन का स्थल है (प्रेरितों के काम 17:16–34)। *देखें*अरियुपगुस।

मार्सियन का सुसमाचार

सन् 150 ईस्वी के आसपास लिखा गया एक सुसमाचार जिसे प्रारंभिक मसीही कलीसिया ने विधर्मी (झूठी शिक्षा) माना।

मार्सियन कौन थे और वे क्या विश्वास करते थे?

मार्सियन दूसरी शताब्दी ईस्वी में रहने वाले व्यक्ति थे। वे पुन्तुस से आए थे (प्राचीन रोम का एक क्षेत्र जो काला सागर के पास है)। लगभग 138 ईस्वी में, वे रोम गए और एक धार्मिक दल शुरू किया जिसे मार्सियोनियों कहा जाता था। पहले, मार्सियन रोम की कलीसिया का हिस्सा थे। बाद में, उन्होंने ऐसे विचार सिखाना शुरू किया जो पारंपरिक मसीही विश्वासों के खिलाफ थे। कलीसिया के अगुवों ने कहा कि ये शिक्षाएं गलत थीं (जिसे "विधर्म" कहा जाता है)।

मार्सियन ने सिखाया कि इनमें पूरी तरह से भिन्नता थी:

- पुराना नियम और नया नियम
- पुराने नियम में व्यवस्था और नए नियम में प्रेम और अनुग्रह
- पुराने नियम में संसार की रचना करने वाले परमेश्वर और नए नियम में यीशु के परमेश्वर का वर्णन है।

मार्सियन का मानना था कि पुराने नियम के परमेश्वर ने बुरी चीजें बनाई थीं। उसने सोचा कि बुराई भौतिक चीजों और संसार से जुड़ी हुई है। हालांकि, उन्होंने सिखाया कि नए नियम के परमेश्वर हमारे पिता हैं, जो केवल अच्छी चीजें प्रदान करते हैं।

मार्सियन का सुसमाचार क्या था?

मार्सियन ने अपनी मान्यताओं का समर्थन करने के लिए पवित्र लेखों की अपनी सूची बनाई (जिसे "कैनन" कहा जाता है)। उन्होंने केवल एक सुसमाचार को स्वीकार किया, जो लूका के सुसमाचार का परिवर्तित संस्करण था। उन्होंने लूका के सुसमाचार से कई भाग हटा दिए, जिनमें शामिल हैं:

- पुराने नियम से सम्बंधित हर बात
- यहूदी लोगों के संदर्भ
- परमेश्वर द्वारा संसार की सृष्टि की कहानियाँ
- कोई भी भाग जो यीशु को वास्तव में मानव रूप में प्रस्तुत करता है

प्रारंभिक कलीसिया ने मार्सियन पर कैसी प्रतिक्रिया दी?

एक प्रारंभिक मसीही अगुवा जिनका नाम आइरेनियस था, उन्होंने अपनी पुस्तक "विधर्म के विरुद्ध" में मार्सियन द्वारा बाइबल में किए गए परिवर्तनों के बारे में लिखा था। आइरेनियस ने कहा, “इसके अलावा, वह [मार्सियन] लूका के सुसमाचार को विकृत करते हैं, परमेश्वर की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखी गई सभी बातों को हटा देते हैं, और परमेश्वर की बहुत सी शिक्षाओं को अलग रख देते हैं, जिसमें प्रभु को स्पष्ट रूप से यह स्वीकार करते हुए दर्ज किया गया है कि इस भूमंडल के सृष्टिकर्ता उनके पिता हैं” (*विधर्म के विरुद्ध* 1.17.2)। आइरेनियस के अनुसार, मार्सियन ने लूका के सुसमाचार को कई महत्वपूर्ण भागों को हटाकर क्षति पहुंचाई।

आइरेनियस आगे कहते हैं, "उसी प्रकार, उसने पौलुस के पत्रों को भी विखंडित कर दिया, प्रेरित द्वारा परमेश्वर के बारे में कही गई उन सभी बातों को हटा दिया जिसने संसार की रचना की, इस प्रभाव के साथ कि वे हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता हैं, और उन भविश्यद्वाणी लेखों से भी उन भागों को हटा दिया जिन्हें प्रेरित उद्धृत करते हैं, हमें यह सिखाने उन्होंने प्रभु के आगमन की घोषणा पहले से कर दी थी।"

सारांश में, मार्सियन के कैनन में उनका सुसमाचार शामिल था, जो लूका की एक संपादित प्रति थी, और पौलुस के 10 पत्र शामिल थे, (लेकिन तीमुथियुस और तीतुस को लिखे गए पत्र शामिल नहीं थे।

मालेलील

मालेलील

लूका 3:37 में यीशु के पूर्वज महललेल का उल्लेख किंग जेम्स संस्करण में किया गया है।

*देखें*महललेल, महललेल #1।

मालेह-अक्रब्बीम

मालेह-अक्रब्बीम

“अक्रब्बीम की चढ़ाई” का केजेवी अनुवाद, यहोशू 15:3 में कनान की दक्षिणी सीमा पर एक स्थान। *देखें*अक्रब्बीम।

माल्किएल, माल्किएल के वंशज

*देखें*मल्कीएल, मल्कीएल के वंशज।

माल्टा

सिसिली के दक्षिण में, भूमध्य सागर में द्वीप। बाइबल में माल्टा का नाम केवल एक बार आता है (प्रेरितों के काम 28:1 "मेलिता"), पौलुस की रोम यात्रा के दौरान हुए जहाज के टूटने के सन्दर्भ में (25:11–12)। यह यात्रा सर्दियों के दौरान की गई थी, जो भूमध्य सागर में तूफानों के सबसे अधिक होने का मौसम है। जहाज सावधानीपूर्वक आगे बढ़ा, क्योंकि विपरीत हवाएँ चल रही थीं (27:4)। कठिनता से क्रेते के शुभलंगरबारी बन्दरगाह पर पहुँचे (वचन 7–8)। पौलुस की चेतावनी के बावजूद, यह निर्णय लिया गया कि क्रेती के फीनिक्स बन्दरगाह तक पहुँचने की कोशिश की जाए, जो सर्दियों के लिए अधिक उपयुक्त था (वचन 9–12)।

भयंकर तूफ़ान में फँसने और 14 दिनों तक हवा के झोंकों से असहाय होकर बहने के बाद, जहाज़ आखिरकार रात के समय भूमि के निकट पहुंचा। सुबह, जहाज़ ने समुद्र तट पर पहुँचने की कोशिश की लेकिन वह फंस गया और लहरों की वजह से टुकड़े-टुकड़े हो गया। सभी लोग सुरक्षित रूप से

किनारे पर पहुंच गए। जब लकड़ी को आग पर रखते समय, पौलुस को एक साँप ने काट लिया। द्वीप के मूल निवासियों ने सोचा कि वह एक अपराधी था जिसकी जान साँप के काटने से जा रही थी। जब वह मृत होकर नहीं गिरे, तो उन्होंने उनके बारे में अपने विचार पूरी तरह से बदल दिए और उन्हें एक देवता मानने लगे (प्रेरितों के काम 28:6)।

माल्टा द्वीप सिसिली से लगभग 60 मील (96.5 किलोमीटर) दूर है और इसका क्षेत्रफल 95 वर्ग मील (246.1 वर्ग किलोमीटर) है। सेंट पॉल की खाड़ी पारंपरिक रूप से प्रेरितों के काम के जहाज के नष्ट का स्थल माना जाता है। द्वीप मुख्य रूप से कृषि प्रधान है, लेकिन पतली चूनेदार मिट्टी के कारण उत्पादन कम है। मिट्टी का पूर्ण उपयोग करने के लिए सीढ़ीनुमा खेती की जाती है। द्वीप में कोई नदी नहीं है और यह अपने पानी के लिए वर्षा और झरनों पर निर्भर है। सामान्य रूप से जलवायु मध्यम है, लेकिन गर्मियों में द्वीप लीबिया के मरूभूमि से आने वाली गर्म, धूल भरी गरम हवाओं के अधीन होता है।

माशाल

1 इतिहास 6:74 में उल्लेखित, आशेर में एक लेवीय नगर, मिशाल की वैकल्पिक वर्तनी है। *देखें*मिशाल।

मास

यहूदा के गोत्र से राम का पुत्र (1 इति 2:27)।

मासियाई

1 इतिहास 9:12 में मासै, निर्वासन के बाद के एक याजक की केजेवी वर्तनी। *देखें*मासै।

मासेयाह

1. लेवियों द्वारा नियुक्त गायकों में से एक, जो दाऊद के साथ थे जब वे सन्दूक को ओबेदेदोम के घर से यरूशलेम तक लाए (1 इति 15:18–20)।

2. वह शतपति जिसने यहोयादा याजक की सहायता करके योआश को राजा बनाने पर सहमति व्यक्त की (2 इति 23:1)।

3. सरदार जिसने राजा उज्जियाह की सेवा की, उसने सेना के संगठन में राजा की सहायता की (2 इति 26:11)।

4. यहूदा के शाही घराने का वह पुत्र जो तब मारा गया जब इस्राएल के राजा पेकह ने यहूदा पर आक्रमण किया (2 इति 28:7)।

5. यरूशलेम का हाकिम जिसे योशिय्याह ने मन्दिर की मरम्मत में सहायता के लिए नियुक्त किया (2 इति 34:8)।

6–8. तीन याजक जिन्होंने निर्वासन के बाद के युग में एज्रा के विदेशी पत्नियों को तलाक देने के उपदेश का पालन किया (एज्रा 10:18–22)।

9. पहत्मोआब का पुत्र (एज्रा 10:30)।

10. यरूशलेम की शहरपनाह के एक मरम्मतकर्ता अजर्याह का पिता (नहे 3:23)।

11. एज्रा का सहायक जब उन्होंने लोगों को व्यवस्था पढ़कर सुनाई (नहे 8:4)।

12. वह लेवी जिसने दूसरों के साथ मिलकर, जब एज्रा द्वारा पढ़ी गई व्यवस्था को लोगों को समझने में मदद की (नहे 8:7)।

13. नहेम्याह के नेतृत्व में एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाने वाले प्रधानों में से एक (नहे 10:25)।

14. यहूदी अगुवा और बारूक का पुत्र, जो यरूशलेम में उन लोगों के साथ रहता था जिन्हें पुनर्निर्मित शहर का उत्तराधिकारी बनने के लिए चिट्ठी से चुना गया था (नहे 11:5)। कभी-कभी उसकी पहचान 1 इतिहास 9:5 में उल्लेखित असायाह के रूप में की जाती है।

15. बिन्यामीन के गोत्र से इतीएल का पुत्र, जिसे यरूशलेम में निवास करने के लिए चुना गया था (नहे 11:7)।

16. यरूशलेम की शहरपनाह के समर्पण पर याजकीय तुरही बजाने वाला (नहे 12:41)।

17. यरूशलेम की शहरपनाह के समर्पण पर याजकीय गायक (नहे 12:42)।

18. सपन्याह याजक के पिता। सपन्याह को पशहूर के साथ, राजा सिदकिय्याह द्वारा यिर्मयाह के पास भेजा था ताकि वह प्रभु से यरूशलेम पर नबूकदनेस्सर के युद्ध के भविष्य के बारे में पूछताछ करें (यिर्म 21:1–2; 29:25) और यिर्मयाह से यरूशलेम के लिए प्रार्थना करने की विनती करें (37:3)।

19. सिदकिय्याह के पिता, जो एक झूठा भविष्यद्वक्ता था और यिर्मयाह की उस भविष्यवाणी का विरोध करता था कि नबूकदनेस्सर की घेराबन्दी में यरूशलेम का पतन होगा (यिर्म 29:21)।

20. यिर्मयाह 32:12 और 51:59 में बारूक के पूर्वज, महसेयाह का वैकल्पिक नाम। देखें महसेयाह।

21. यहोयाकीम के शासनकाल के दौरान डेवढ़ी का रखवाला (यिर्म 35:4)।

मासै

एक याजक जो बंधुआई के बाद जरूब्बाबेल के साथ यरूशलेम लौटा (1 इति 9:12)।

मासोरेटिक पाठ

मासोरेटिक पाठ पुराने नियम का पारंपरिक इब्रानी पाठ है, जिसे यहूदी विद्वानों ने 6वीं से 10वीं शताब्दी ईस्वी के बीच संरक्षित किया। इन विद्वानों को मसोरी कहा जाता था। मसोरियों ने पाठ में स्वर चिह्न और उच्चारण चिह्न जोड़े ताकि इसके विशुद्ध उच्चारण और व्याख्या को सुनिश्चित किया जा सके। यह पाठ इब्रानी बाइबल का मानक संस्करण बन गया।

अधिकांश आधुनिक अनुवाद पुराने नियम के लिए इसे अपने मुख्य स्रोत के रूप में उपयोग करते हैं, और अक्सर तुलना के लिए अन्य प्राचीन ग्रंथों, जैसे सेप्टुआजिंट (पुराने नियम का यूनानी अनुवाद) और मृत सागर कुण्डलपत्रों के साथ करते हैं।

*देखें*मसोरा, मसोरियों।

मास्किल

13 भजनों के शीर्षकों में एक इब्रानी शब्द है। यह संभवतः एक संगीत संकेत हो सकता है जो यह बताता है कि संगीतकारों को इन भजनो का प्रदर्शन कैसे करना चाहिए।

देखिए संगीत।

माहोल

सुलेमान के युग (970–930 ई.पू.; 1 रा 4:31) के दौरान तीन प्रसिद्ध बुद्धिमान पुरुषों (हेमान, कलकोल और दर्दा) का पिता।

मिकनेयाह

दूसरे क्रम के लेवी, जो दाऊद के शासनकाल में द्वारपाल और संगीतकार थे (1 इति 15:18, 21).

मिकमतात

मिकमतात

यह भौगोलिक स्थान एप्रैम (यहो 16:6) और मनश्शे की जनजातियों (17:7) को सौंपे गए क्षेत्र की सीमा का हिस्सा है, जो यरदन के पश्चिम में पहाड़ों में स्थित है और मृत सागर तथा गलील की झील के बीच में है।

मिकमाश

एप्रैम पर्वत के दक्षिणी क्षेत्र में स्थित एक नगर, जो जंगल के किनारे पर था और पूर्व की ओर यरदन घाटी की ओर उतरता था। यह नगर निश्चित रूप से बिन्यामीन के क्षेत्र में एक इस्राएली बस्ती था, फिर भी यह बिन्यामीन के नगरों की सूची (यहो 18:21–28) में उल्लेखित नहीं है। इस प्राचीन नगर का नाम आधुनिक अरब गाँव मुखमास में संरक्षित है, जो वादी सुवेनीत (ज़ेबोईम घाटी) के पूर्व में एक संकरी पहाड़ी पर स्थित है। यह गहरी घाटी को देखता है, जिसके माध्यम से इसका मार्ग गुजरता था। यह गेबा (आधुनिक जबा') से लगभग दो मील (3.2 किमी) उत्तर-पूर्व में स्थित है। मिकमाश के पास से एक आड़ी सड़क यरीहो की ओर जाती थी, और एक लंबवत सड़क जल विभाजक पहाड़ी के किनारे चलती थी। यह मार्ग मुख्य राजमार्ग (जो बेतेल के पश्चिम से गुजरता था) की तुलना में कम महत्वपूर्ण था, लेकिन फिर भी यह एक वैकल्पिक मार्ग के रूप में काम कर सकता था।

शाऊल के शासनकाल के दौरान बाइबल इतिहास में इस शहर ने अपनी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब उन्होंने अपनी सेना को इकट्ठा किया, तो कुछ उनके साथ मिकमाश में थे जबकि बाकी योनातान के साथ बिन्यामीन के गिबा में थे (1 शमूएल 13:2)। जब योनातान ने गेबा में पलिश्ती आयुक्त को पराजित किया, तो पलिश्ती बड़ी संख्या में आए और मिकमाश में डेरा डाला (पद 5) क्योंकि शाऊल गिलगाल में अपनी सेना के बाकी हिस्सों को इकट्ठा करने के लिए पीछे हट गए थे। फिर वह गेबा वापस चले गए, जो तराई के विपरीत दिशा में शत्रु से था। मिकमाश में अपने आधार का उपयोग करते हुए (पद पद 11, 16), पलिश्तियों ने उत्तर में ओप्रा, पश्चिम में बेथोरोन, और दक्षिण-पूर्व में सबोईम की तराई के किनारे पर छापेमारी दल भेजे (पद पद 17–18); यह परिच्छेद एक रणनीतिक चौराहे के रूप में मिकमाश के मूल्य को स्पष्ट करता है।

मिकमाश के दक्षिण में एक पलिश्तियों की चौकी थी, जो इस्राएलियों के सामने दूसरी पहाड़ी पर स्थित थी (1 शमू13:23)। योनातान और उनके हथियार उठाने वाले ने उस घाटी में प्रवेश किए, जहाँ दो चट्टानें बोसेस (मिकमाश की ओर) और सेनेह (गेबा की ओर) एक-दूसरे के सामने थीं। उन्होंने वहाँ छिपे हुए पलिश्तियों के सिपाहियों की एक चौकी

पर अचानक हमला किए। इस हमले से घबराए हुए सिपाही मिकमाश की ओर भाग गए, जिससे फिलिस्तीनियों में भारी भ्रम फैल गया। इस स्थिति का लाभ उठाकर शाऊल और उनकी सेना ने आक्रमण कर दिया (14:1–23)। जब इब्रियों ने चारों ओर से दबाव बढ़ाया, तो पलिश्तियों के सिपाही अय्यालोन तराई के पार्श्वीय मार्ग से पीछे हटने लगे (पद 31)।

मिकमाश

*देखें*मिकमाश।

मिकमेथाथ

मिकमेथाथ

*देखें*मिकमेथाथ।

मिकायाह

1. भविष्यवक्ता मीकायाह, इम्लाह का पुत्र, जिसे अहाब ने (सीरियाई) अरामी लोगों के विरुद्ध होने वाली युद्ध की भविष्यवाणी करने के लिए बुलाया था। पहले मीकायाह ने उसे व्यंग्यपूर्ण ढंग से शुभ समाचार दिया, लेकिन फिर उसने कठोर सत्य बताया। अहाब ने उसे एक प्रकार से दंडस्वरूप कारागार में डाल दिया, लेकिन अंततः वह दुष्ट राजा युद्ध में मारा गया, ठीक वैसे ही जैसा मीकायाह ने भविष्यवाणी की थी (1 रा 22:8; 2 इति 18:7–25)।

2. अकबोर के पिता, कचहरी के अधिकारियों में से एक थे, जिन्हें राजा योशियाह ने भविष्यद्वक्तिन हुल्दा के पास भेजा था ताकि वे उस व्यवस्था की पुस्तक पर सलाह प्राप्त कर सकें जिसे हिल्किय्याह महायाजक ने मन्दिर में पाया था (2 रा 22:12; 2 इति 34:20, “मीका का पुत्र अब्दोन”)।

3. 2 इतिहास 13:2 में यहूदा के राजा अबिय्याह की माता माका का एक अन्य रूप। *देखें*माका, माकाह (व्यक्ति) #4.

4. राजा यहोशापात ने यहूदा में प्रभु की व्यवस्था को सिखाने के लिए शिक्षकों को नियुक्त किया (2 इति 17:7)।

5. नहेम्याह 12:35 में जिक्रि के पुत्र मीका की वैकल्पिक वर्तनी। *देखें*मीका #2

6. याजक जिन्होंने यरूशलेम की शहरपनाह के अर्पण पर तुरही बजाई (नहे 12:41)।

7. गमर्याह के पुत्र, जिन्होंने राजा यहोयाकीम के शासनकाल के दौरान यहूदियों के राजकुमारों को प्रभु के वचनों की सूचना दिए (यिर्म 36:11–13)।

मिक्ताम

मिक्ताम

भजन संहिता 16, 56, 57, 58, 59 और 60 के शीर्षकों में एक संगीत संकेत है। *देखें*मिक्ताम।

मिक्ताम

मिक्ताम

भजन संहिता 16 और 56–60 में शीर्षक (देखें), संभवतः हिजकिय्याह के ठीक होने का भजन, यशायाह 38:9। इस शब्द का सटीक अर्थ अनिश्चित है। अक्कादियन शब्द "ढकना, प्रायश्चित करना" के साथ इसकी समानता यह सुझाव देती है कि शीर्षक का अर्थ प्रायश्चित या पाप को ढकने वाला भजन हो सकता है। अन्य सुझावों में समस्याओं या रहस्यों का भजन शामिल है।

*यह भी देखें*भजन।

मिक्री

*देखें*मिक्री।

मिक्री

मिक्री

एक परिवार के पूर्वज जो बाबेली बंदीगृह के बाद जरूब्बाबेल के साथ यरूशलेम लौटे (1 इति 9:8)। इसे मिक्री भी कहा जाता है।

मिक्लोत

मिक्लोत

1. गिबोन के निवासी, बिन्यामीनी के वंशज यीएल के पुत्र, और शिमाम के पिता (1 इति 8:32; 9:37–38)।

2. कुछ हस्तलिपियों के अनुसार, दोदै के अधीन सेवा करने वाले दाऊद की सेना के अधिकारी (1 इति 27:4)।

मिगदलगाद

लाकीश के शेफेला जिले में स्थित यहूदा का गांव (यहो 15:37)। यह संभवतः खिरबेत एल-मेजदेलह के साथ पहचाना जा सकता है, जो टेल एल-नुवेइर के दक्षिण-पूर्व में है।

मिगदलेल

नप्ताली के गोत्र के अंतर्गत एक सुदृढ़ नगर है (यहो 19:38)।

मिग्दोल

दक्षिणी मिस्र के पूर्वी डेल्टा में एक नगर। निर्गमन की कथा में यह पीहहीरोत और बाल-सपोन नामक स्थान के बीच दिखाई देता है (निर्ग 14:2; गिन 33:7)। कुछ विद्वान जो मानते हैं कि निर्गमन मार्ग, इस्राएलियों को दक्षिण की ओर सीनै पर्वतों में ले गया होगा, वे सोचते हैं कि ये तीनों स्थान स्वेज के पास कहीं थे। अन्य जो मानते हैं कि सेरबोनीटिक झील लाल समुद्र है, वे इस मिग्दोल की पहचान यिर्मयाह द्वारा उल्लेखित छठी शताब्दी ई.पू. में निर्वासित यहूदियों के निवास स्थान के रूप में करते हैं (यिर्म 44:1; 46:14)। वह स्थान मिग्दोल के समान होना चाहिए जो मिस्र के उत्तर (पूर्वी) छोर का प्रतिनिधित्व करता है, जो सवेने के सुदूर दक्षिण में है (यहे 29:10; 30:6)। सभी विद्वान इस बात पर सहमत नहीं हैं कि मिग्दोल एकल स्थान है या दो अलग-अलग स्थान हैं। गैर-बाइबल स्रोत मिग्दोल का उल्लेख करते हैं—उदाहरण के लिए, सरकण्डा अनास्तासी 5.19, जहाँ यह भगोड़े दासों के बारे में एक संदेश में सुक्कोत के साथ जुड़ा हुआ दिखाई देता है। यह सिलो (सेले) और अन्य उत्तरी सीनै किलों के बीच एक किले के रूप में सेटी I की दीवार पर भी दिखाई देता है।। एंटोनिन यात्रा कार्यक्रम में मैगडोलो को पेलुसियम और सेले के बीच रखता है, जो तेल अल-हैर के साथ समीकरण को सबसे अधिक संभावित बनाता है, जो 12 मील (19.3 किलोमीटर) उत्तर में है।

मिग्रोन

मिग्रोन

गिबा के पास वह स्थान जहाँ शाऊल एक अनार के पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे, (1 शमू 14:2); यह भी अश्शूरीयों के जुलूस के मार्ग के हिस्से के रूप में उल्लेखित है (यशा 10:28)। पहला संदर्भ मिकमाश के दक्षिण में एक स्थान का है, जबकि दूसरा संभवतः मिकमाश के उत्तर में है। हालांकि, कुछ विद्वान दोनों को मिकमाश के दक्षिण में स्थित स्थान के साथ पहचानने की कोशिश करते हैं, लेकिन यह संदिग्ध है।

मिज़पार

मिज़पार

एज्रा 2:2 में मिस्पार की के.जे.वी वर्तनी। *देखें* मिस्पार, मिस्पेरेत।

मिज्जा

रूएल के पुत्र और एदोमी कुल के एक प्रधान (उत 36:13, 17; 1 इति 1:37)।

मिट्टी

देखें खनिज और धातुएं; मिट्टी के बर्तन।

मिट्टी की पटिया

देखिए लेख।

मिट्टी के बर्तन

पकी हुई मिट्टी से बने सामान, जैसे कि घड़े, हांड़ियाँ, कटोरे और थालियाँ। ये बर्तन बाइबल काल में घरों में आमतौर पर उपयोग में लाए जाते थे।

देखें मिट्टी के बर्तन।

मिट्टी के बर्तन

मिट्टी के पात्रों और मिट्टी के बर्तनों का निर्माण।

इतिहास और विकास

पहली मिट्टी के बर्तन हाथ से बनाए जाते थे, इच्छित आकार में ढाले जाते थे और धूप में सुखाए जाते थे। प्राचीन कुम्हार के काम और समाज में उनके स्थान का वर्णन करने वाले कोई लेख नहीं हैं, हालाँकि मिस्र में मकबरों और महलों की दीवारें कुम्हारों के काम की तस्वीरों से भरी हुई हैं और चित्रित गतिविधियों का अवलोकन करके बहुत कुछ सीखा जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि पहले कुम्हार स्त्रियाँ थीं, जिन्होंने आवश्यकता के कारण भोजन तैयार करने के लिए बर्तन बनाए, जबकि पुरुष भोजन लाने की कोशिश में बाहर रहते थे। यह स्वरूप अभी भी अफ्रीका, अनातोलिया, कुर्दिस्तान और दक्षिण-पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे

स्थानों में देखा जाता है। अंततः, मिट्टी के बर्तन बनाना एक पेशा बन गया, जिसे बड़े गाँवों में कुछ लोगों द्वारा और अक्सर घुमंतू कारीगर मांग को पूरा करने के लिए एक गांव से दूसरे गांव जाकर मिट्टी के बर्तन बनाते थे और फिर आगे बढ़ जाते थे।

वह खोज जिसने मिट्टी के बर्तन बनाने को एक गृहिणी की सामयिक गतिविधि से एक पेशे में बदल दिया, वह कुम्हार के चाक का आविष्कार था। जिस गति से बर्तन बनाए जा सकते थे, उसने इस शिल्प को औद्योगिक बना दिया, और यह अंततः मुख्य रूप से पुरुषों का व्यवसाय बन गया, हालाँकि इस बात के प्रमाण हैं कि लोग (कोई यह मान सकता है कि स्त्रियाँ) घर पर कुछ बर्तन बनाना जारी रखे रहे। कुम्हार के चाक की खोज से पहले, मिट्टी के बरतनों को एक के ऊपर एक रखकर बर्तन बनाने की तकनीक प्रमुख विधि थी, विशेष रूप से बड़े बर्तनों के लिए। बाइबल की भूमि में खुदाई में पाया गया पहला कुम्हार का चाक सुमेर के ऊर से 3500 से 3000 ई.पू. का है। यह उभरती शहरी बस्तियों में विकसित हो सकता है क्योंकि मिट्टी के बर्तनों के लिए एक बड़ा बाजार था। यिर्मयाह छठी शताब्दी ई.पू. में एक कुम्हार की कार्यशाला का उल्लेख करते हैं: "तो मैंने वैसा ही किया जैसा उन्होंने मुझे बताया और कुम्हार को उसके चाक पर काम करते हुए पाया। लेकिन जो घड़ा वह बना रहे थे, वह वैसा नहीं बना जैसा उन्होंने आशा की थी, इसलिए कुम्हार ने घड़े को मिट्टी के ढेले में बदल दिया और फिर से शुरू किया" (यिर्म 18:3–4)। यूनान में शास्त्रीय काल में 50 से अधिक श्रमिकों को रोजगार देने वाली बड़ी कार्यशालाओं के प्रमाण हैं।

मिट्टी को कम से कम 100 चक्कर प्रति मिनट घुमाना पड़ता है ताकि बर्तन को "फेंकने" के लिए आवश्यक अपकेंद्रीय बल बनाया जा सके। सबसे पुराने पहिये दो पत्थरों के बने होते थे, एक नीचे वाला जिसमें बीच में एक छेद होता था और एक ऊपर वाला जिसमें एक उभार होता था जो नीचे वाले छेद में फिट होता था, जिससे ऊपर वाला पत्थर घुमाया जा सके। ऊपर वाला पत्थर, जिसमें एक बड़ा तख्त जुड़ा होता था जिस पर बर्तन रखा जाता था, निस्संदेह एक शिष्य द्वारा घुमाया जाता था। यूनानीय काल तक, 300 ई.पू. के बाद, पैर का पहिया आविष्कार किया गया।

प्राचीन मिट्टी के बर्तन बनाने में उपयोग की जाने वाली एक और तकनीक थी साँचा। साँचे को नरम पत्थर से तराशा जाता था या मिट्टी से बनाया जाता था ताकि एक ही प्रकार के बर्तन के बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सके। दीया के साँचे मध्य पूर्व के संग्रहालयों में यूनानीय और रोमी काल से काफी आम हैं। छोटे तेल के दीपक साँचे में दो भागों में बनाए जाते थे, एक ऊपरी आधा और नीचे वाला आधा, और फिर आग में पकाने से पहले उन्हें एक साथ जोड़ा जाता था। हेरोदीय दीपों में भी चपटी टोंटियाँ होती थीं, जो अन्य दो भागों से स्वतंत्र रूप से बनाई जाती थीं।

प्राचीन मिट्टी के बर्तनों के आकार और आकार में विविधता की मात्रा अद्वितीय है। एक औसत प्राचीन घर में बड़े बर्तन (एम्फोरा और पिथोई) होते थे जिनमें दाखरस या पानी जैसे तरल पदार्थ रखे जाते थे। ये नीचे की ओर नुकीले होते थे और मूल रूप से परिवहन के दौरान जहाज के पतवार की ढलान पर लेटने के लिए बनाए गए थे। आम लोगों के घरों में इन्हें आंशिक रूप से जमीन में स्थापित किया जाता था और दीवार के सहारे झुकाया जाता था। पोम्पेई और हेरकुलेनियम के सरायों में इन्हें लकड़ी की तख़्ती में रखा जाता था। बड़े, खुले मुंह वाले मटका को आंशिक रूप से जमीन में गाड़ दिया जाता था ताकि उनमें रखे तरल को ठंडा रखा जा सके। साथ ही, विभिन्न प्रकार के अनाज इनमें रखे जा सकते थे, जिनमें से कुछ चार फीट (1.2 मीटर) ऊँचे और तीन फीट (.9 मीटर) चौड़े होते थे। एक चौथाई गेलन (.9 लीटर) या उससे अधिक रखने वाले छोटे पानी के घट आमतौर पर इस्तेमाल किए जाते थे। गोलाकार जग दाखरस परोसने के लिए उपयोग किए जाते थे, जिनमें ऐसे नल होते थे जो कीमती तरल को गिरने से रोकते थे। गोल पानी बर्तन, जिनके कंधों पर डंडे होते थे, यात्रा के दौरान पानी ले जाने के लिए उपयोग किए जाते थे। कटोरे और थालियाँ प्राचीन घरों में विभिन्न आकार और गहराई में आम थे। बड़े मुंह वाले थाल जिन्हें क्रेटर्स कहा जाता था, पीने के लिए उपयोग किए जाते थे। खाना पकाने के लिए मध्यम आकार के (लगभग एक गैलन, या 3.8 लीटर) बर्तन होते थे जिनके गोलाकार तल होते थे जो आग में या आग से निकालने के बाद फर्श में खोदी गई जगह में आसानी से बैठ जाते थे। उनके पास दो लूप वाले डंडे भी होते थे, जिनसे उन्हें आग के ऊपर लटकाया जा सकता था।

बर्तनों को शास्त्रीय यूनान में धर्म, व्यभिचार, युद्ध, और समाज जीवन के जीवंत वर्णनों के साथ चित्रित किया गया था। मिनोअन और मायसीनियन संस्कृतियों के पहले के बर्तन में पौधों, जानवरों, और समुद्री जीवन के रूप में सुंदर कलाकृति के साथ-साथ ज्यामितीय आकृतियाँ शामिल हैं। प्रारंभिक समय से ही मध्य पूर्व में, रूप में विविधताएँ गहरे और हल्के रंगों के स्लिप का उपयोग करके बनाई गईं, जो बर्तनों पर चित्रित या अनियमित रूप से डाले गए थे।

पवित्रशास्त्र में मिट्टी के बर्तन

बाइबल में कुम्हार और उनके काम के कई संदर्भ हैं। सामान्यतः निम्नलिखित हैं: "इस्राएल, क्या मैं आप लोगों के साथ वैसा नहीं कर सकता जैसा इस कुम्हार ने अपनी मिट्टी के साथ किया है? जैसे मिट्टी कुम्हार के हाथ में होती है, वैसे ही आप लोग मेरे हाथ में हैं" (यिर्म 18:6); "प्रभु, आप हमारे पिता हैं। हम मिट्टी हैं, और आप कुम्हार हैं। हम सब आपके हाथों से बने हैं" (यशा 64:8)। सृष्टि की कहानी में परमेश्वर को एक कुम्हार के रूप में दर्शाया गया है जो मिट्टी से मनुष्य बना रहे हैं (उत 2:7)। इस्राएल के चुनाव में उनकी पूर्ण संप्रभुता का पौलुस द्वारा तर्क दिया गया है (रोम 9:20–21) यशायाह द्वारा उपयोग किए गए एक उदाहरण से (यशा 45:9) जिसमें एक

बर्तन अपने कुम्हार से बहस करता है: “क्या मिट्टी का बर्तन कभी अपने बनाने वाले से बहस करता है? क्या मिट्टी अपने आकार देने वाले से यह कहते हुए विवाद करती है, ‘रुको, तुम यह गलत कर रहे हो!’ क्या बर्तन चिल्लाता है, ‘आप कितने अनाड़ी हो सकते हैं!’ ”।

यिर्मयाह ने यरूशलेम के विनाश की भविष्यद्वानी को दर्शाने के लिए एक कुम्हार के मिट्टी के बर्तन को इतने टुकड़ों में तोड़ दिया कि उसे फिर से जोड़ा नहीं जा सकता था (यिर्म 19:11)। यहूदी, विनाश के समय, परमेश्वर की दृष्टि में कीमती होते हुए भी, “मिट्टी के बर्तनों की तरह व्यवहार किए गए” (विल 4:2)—यह उनके मनुष्य की दुर्बलता का एक अभिव्यक्ति थी; वे आसानी से टूट सकते थे और नष्ट हो सकते थे।

प्राचीन संसार में टूटा हुआ मिट्टी का बर्तन इतना व्यर्थ माना जाता था कि टुकड़ों को एक तरफ झाड़ दिया जाता था या खिड़की से बाहर फेंक दिया जाता था और एक नया बना लिया जाता था। कुम्हार की कला व्यापक रूप से जानी जाती थी और बर्तन सस्ते दामों पर आसानी से उपलब्ध थे। लोग आमतौर पर जब स्थानांतरित होते थे तो अपने बर्तन नहीं ले जाते थे। उन्हें बनाना या नया खरीदना आसान था बजाय इसके कि उन्हें ले जाने की कोशिश की जाए, विशेष रूप से बड़े बर्तनों के मामले में। हालाँकि, टूटे हुए टुकड़े कुछ उपयोग के बिना नहीं थे। अय्यूब ने अपने फोड़े की स्राव को मिट्टी के ठीकरा से खुरचा (अय्यू 2:8)। बहुत बाद के समय में, मिट्टी के ठीकरों पर लिखावट लिखने के लिए उनका उपयोग किया जाता था और उन्हें ओस्ट्राका कहा जाता था। भजनकार ने अपनी शक्ति को सूखे हुए मिट्टी के ठीकरे के समान बताया (भज 22:15)—यह सूखे और पकाए हुए मिट्टी के बर्तन में नमी की कमी का संदर्भ है। बहुदेववादी और मूर्तिपूजक अन्यजाति राष्ट्रों की अंतिम हार को धर्मी के द्वारा मिट्टी के बर्तनों के जमीन पर पटक कर टुकड़े-टुकड़े कर देने के रूप में वर्णित किया गया है (भज 2:9; प्रका 2:27)।

*यह भी देखें*पुरातत्व ज्ञान और बाइबल ; ईंट, भट्ठी; शिलालेख I

मितुलेने

एशिया के उपद्वीप के उत्तर-पश्चिमी तट के पास एजियन सागर में लेस्बोस द्वीप का मुख्य शहर मितुलेने था। यह एक समुद्री बन्दरगाह था जिसमें दो बन्दरगाह थे। मूल रूप से यह लेस्बोस से अलग एक छोटे द्वीप पर बनाया गया था। नए नियम के समय में यह एक संकीर्ण जलमार्ग के पार एक ऊँची सड़क द्वारा मुख्य द्वीप से जुड़ा हुआ था। प्रेरितों के काम 20:14 मितुलेने को उन रातों के ठहरने के स्थानों में से एक के रूप में पहचानता है जहाँ पौलुस और उनके यात्रा साथी यरूशलेम की ओर जहाज से यात्रा करते समय ठहरे थे।

मित्का, मिथ्का

मित्का, मिथ्का

इस्राएलियों के जंगल में भटकने के दौरान उनके अस्थायी शिविर स्थलों में से एक का उल्लेख तेरह और हशमोना के बीच किया गया है (गिन 33:28–29)।

*यह भी देखें*जंगल की यात्रा।

मित्र

मित्र वह होता है जिसे आप भली-भांति जानते हैं और जिसकी आप परवाह करते हैं।

यीशु ने अपने सबसे करीबी अनुयायियों को अपना मित्र कहा (लूका 12:4; यूह 15:14–15)। इसलिए, यह स्वाभाविक था कि मसीही स्वयं को "मसीह के मित्र" कहें। यूनानी संसार के कुछ दार्शनिक समूह अपने सदस्यों के बीच करीबी सम्बन्धों का वर्णन करने के लिए मित्रता के शब्दों का उपयोग करते थे। हालाँकि, प्रारंभिक मसीहियों ने स्वयं का वर्णन करने के लिए अन्य शब्दों का चयन किया, जैसे "यीशु के अनुयायी" या "शिष्य।"

मिथना

योशापात का नगर, दाऊद के पराक्रमी योद्धाओं में से एक (1 इति 11:43, एनएलटी)। अन्य अनुवादों में उन्हें "मेतेनी" के रूप में वर्णित किया गया है।

मिथ्रदात

मिथ्रदात

1. फारस के राजा कुस्रू के खजांची का नाम, जिसे पवित्र बर्तनों को यहूदी प्रधान शेशबस्सर को सौंपने की जिम्मेदारी दी गई थी, जब निर्वासित लोग यरूशलेम लौटने की तैयारी कर रहे थे (एज्रा 1:8)।

2. सामरिया में नियुक्त फारसी अधिकारी जिन्होंने अन्य लोगों के साथ मिलकर फारस के राजा अर्तक्षत्र को एक पत्र लिखा, यरूशलेम के नगर और दीवारों के पुनःस्थापन का विरोध करते हुए (एज्रा 4:7)।

मिद्दीन

मिद्दीन

मृत सागर के पश्चिम में जंगल में यहूदा के गोत्र को विरासत के रूप में आवंटित किए गए छह शहरों में से एक, जो बेतराबा और सकाका के बीच स्थित है (यहो 15:61)।

मिद्यान

मिद्यान एक भौगोलिक क्षेत्र है जो उत्तर-पश्चिम अरब में स्थित था, प्रेरितों के काम 7:29 में। *देखें* मिद्यान, मिद्यानी।

मिद्यान, मिद्यानी

व्यक्ति, स्थान या लोग, जो गिलाद, मोआब और एदोम के पूर्वी किनारे पर रहते थे, दक्षिण में उत्तर-पश्चिम अरब तक। उनके पास स्थायी बस्तियाँ बहुत कम थीं, यदि कोई थीं।

मिद्यान और उनके वंशज इस्राएल के प्रारंभिक इतिहास में प्रमुखता से आते हैं, अब्राहम (उत 25:1–6), यूसुफ (37:25–36), मूसा (निर्ग 2:15–3:1), बिलाम (गिन 22:1–6; 25; 31:1–20) और गिदोन (न्या 6:1–8:28) के संबंध में।

मिद्यान इसहाक के छोटे सौतेले भाई थे, जो कतूरा से जन्मे छः पुत्रों में से चौथे थे, जिनसे अब्राहम ने वृद्धावस्था में विवाह किया था (उत 25:1–2; तुलना करें 23:1–2; 24:67; 1 इति 1:32)। मिद्यान और उनके सगे भाइयों को "कतूरा के पुत्र" कहकर (उत 25:4; 1 इति 1:32–33), बाइबल उन्हें इसहाक से सावधानीपूर्वक अलग करती है, जो सारा के पुत्र थे, जिनके माध्यम से परमेश्वर का अब्राहम से किया गया वादा पूरा होना था (उत 12:1–3; 17:15–21)। वास्तव में, अब्राहम और इस्राएलियों ने इन अन्य पुत्रों को रखैल के पुत्रों के अलावा विरासत के उत्तराधिकार नहीं माना (उत 25:5–6; 1 इति 1:31)।

इसहाक के कारण अब्राहम के परिवार से निष्कासित होकर, वे फिलिस्तीन के पूर्व और दक्षिण के जंगलों के अर्ध-घुमंतू लोग बन गए (उत 25:5–6)।

मिद्यान की भूमि

अनिश्चित स्थान के कारण, मिद्यान शायद एदोम के बहुत दक्षिण में जिसे आज अकाबा की खाड़ी कहा जाता है, पूर्वी किनारे पर था। सिकन्दरिया भूगोलवेत्ता टॉलेमी (दूसरी सदी ई.) एक नगर का उल्लेख करते हैं जिसका नाम मोडियाना था जो तट पर था और एक मडियाना जो इस क्षेत्र में 26 मील (41.8 किलोमीटर) अंतर्देशीय स्थित था (आधुनिक एल-बेद'), यह पहचान यहूदियों के इतिहासकार जोसीफस (पहली सदी ई.) और मसीही कलीसिया के इतिहासकार यूसिबियस (चौथी सदी के आरंभ) द्वारा समर्थित है।

प्रारंभिक पुराने नियम के समय में मिद्यान वह भूमि प्रतीत होती है जो गिलाद, मोआब और एदोम के सीमावर्ती रेगिस्तानों के किनारे स्थित था और दक्षिण में पूर्वी सीनै तक फैला हुआ था।

यूसुफ के समय में, कुछ मिद्यानी कबीले उत्तरी ट्रांसजॉर्डन की मरूभूमि में गिलाद या बाशान के पास रहते होंगे क्योंकि वे एक इश्माएली कारवां का हिस्सा थे जो व्यापार मार्ग पर दमिश्क से गिलाद होते हुए दोतान के पास से मिस्र जा रहा था (उत 37:17, 25–28, 36)।

जब मूसा फ़िरौन से भागे, तो वे मिद्यान में बस गए और अंततः उन्होंने सिप्पोरा से विवाह किया, जो एक मिद्यानी याजक की पुत्री थी (निर्ग 2:15–22)। मूसा ने अपने मिद्यानी संबंधी होबाब से होरेब से कादेशबर्ने तक मार्गदर्शक बनने के लिए कहा (व्य.वि. 1:19); होबाब पारान के जंगल से परिचित थे (गिन 10:11–12, 29–31), यद्यपि उनकी अपनी भूमि और संबंधी कहीं और थे (पद 30)।

बिलाम प्रकरण और इसके रक्तरंजित परिणाम (गिन 22:31) में, एक महत्वपूर्ण दल मिद्यानी लोग मोआब की पूर्वी सीमा पर बसे हुए प्रतीत होते हैं। मोआबी राजा बालाक ने, जो एमोरी राजा सीहोन के अधीन था (21:26–30; यिर्म 48:45), मिद्यान के बुजुर्गों के साथ इस्राएली खतरे पर चर्चा की और बिलाम के पास संयुक्त दूतों को भेजा गया (गिन 22:2–7)। मोआब के मैदानों में बबूल के वहाँ (गिन 22:1; 25:1), एक इस्राएली ने एक मिद्यानी राजकुमारी से मुलाकात की और विवाह किया (गिन 25:6–18; 31:8)। मिद्यानी राजाओं को राजा सीहोन के कठपुतली राजा माना जाता था (यहो 13:21)। सभी संकेत यह हैं कि मिद्यानी कबीले पास में, मोआब की सीमाओं पर रहते थे। चूंकि मोआब, एदोम के उत्तर में है, मिद्यान पर एदोमी विजय का संदर्भ (उत 36:35) मिद्यानी लोगों द्वारा एदोमी क्षेत्र पर उत्तरी अतिक्रमण का संकेत दे सकता है।

गिदोन ने जिस मिद्यानी आक्रमण विफल किया, उसमें पूर्व से आक्रमण के सभी सभी आभास थे। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है, जबकि "मिद्यान की भूमि" एक ऐसा शब्द है जो एदोम के दक्षिण में एक क्षेत्र का उल्लेख कर सकता है, मिद्यानी लोग एक बहुत व्यापक क्षेत्र में रह रहे थे—सीमांत भूमि पर—मोआब और एदोम के पूर्व में और एदोम के दक्षिण में पूर्व सीनै और उत्तर-पश्चिम अरब तक।

मिद्राश

2 इतिहास में दो बार आने वाले एक इब्री शब्द का अंग्रेजी में लिप्यंतरण। द्वितीय इतिहास 13:22 में यह यहूदा के राजा अबिय्याह (913–910 ईसा पूर्व) के शासनकाल को दर्ज

करने के लिए उपयोग किए गए साहित्यिक स्रोत को भविष्यद्वक्ता इद्दो के "मिद्राश" के रूप में संदर्भित करता है। द्वितीय इतिहास 24:27 यहूदा के राजा योआश (835–796 ईसा पूर्व) के शासनकाल के संबंध में, राजाओं की पुस्तक के "मिद्राश" का उल्लेख करता है।

हालांकि ये एकमात्र समय हैं जब मिद्राश का उल्लेख इतिहास की किताब में किया गया है, वे साहित्यिक स्रोतों की अपील के नमूना में आते हैं। उदाहरण के लिए, इतिहास अक्सर *द बुक ऑफ़ द किंग्स ऑफ़ इज़राइल एंड जूड़ाह* या इसी तरह का उल्लेख करता है (जैसे, 2 इति 16:11; 20:34; 27:7; 33:18)। यह संभव है कि 2 इतिहास 24:27 में "मिद्राश" शब्द को शामिल करने वाला शीर्षक मुख्य स्रोत का निर्दोष एक भिन्न शीर्षक है। फिर से, इतिहास अक्सर विभिन्न भविष्यवाणी स्रोतों का उल्लेख करता है; अन्यथा अज्ञात भविष्यद्वक्ता इद्दो का उल्लेख भी एक काम में होता है जिसे *धी विशंस ऑफ़ इद्दो धी सीर* कहा जाता है, जो इस्राएल के यारोबाम I के शासनकाल से संबंधित है (930–909 ईसा पूर्व; 2 इति 9:29), और *भविष्यद्वक्ता शमायाह का रिकॉर्ड* भी, यहूदा के राजा रहबाम के संदर्भ में (930–913 ईसा पूर्व; 2 इति12:15)। यहाँ भी, यह संभव है कि एक ही भविष्यवाणी काम को विभिन्न नामों से लेबल किया गया हो।

लेकिन इतिहास के लेखक के लिए "मिद्राश" शब्द का सही अर्थ क्या था? प्राचीन यूनानी संस्करण ने इसे बस "पुस्तक, लेखन" के रूप में अनुवादित किया, और संभवतः इसका अर्थ इससे अधिक कुछ नहीं था। अंतर्निहित इब्री क्रिया का अर्थ है पूछताछ करना या अध्ययन करना, और तदनुसार संज्ञा का अर्थ "अनुसंधान का परिणाम, एक अध्ययन" हो सकता है। वैकल्पिक रूप से, इसका अर्थ "टीका" हो सकता है, जो एक निश्चित दृष्टिकोण से इतिहास की प्रस्तुति के रूप में हो।

इतिहास में इन उदाहरणों के अलावा, पुराने नियम में एक और महत्वपूर्ण उपयोग बाइबल पाठ की व्याख्या की प्रक्रिया या उसके परिणाम के रूप में होता है। यही अर्थ बाद में यहूदी टीका में समाहित हो गया, जिन्हें "मिद्राशिम" कहा जाता है। कुमरान साहित्य में "मिद्राश" का प्रयोग सामान्य रूप से "व्यवस्था की व्याख्या" के अर्थ में हुआ है। लेकिन बाद के रब्बी साहित्य में यह एक तकनीकी शब्द बन गया, जो बाइबल की पुस्तकों के अध्याय और पदों के क्रम में व्यवस्थित पारंपरिक रब्बी शिक्षाओं के संग्रह को दर्शाता है। इन अध्ययनों का मुख्य उद्देश्य था प्राचीन ग्रंथों को समकालीन परिस्थितियों में लागू करना, जिसके लिए विभिन्न व्याख्यात्मक दृष्टिकोण अपनाए गए।

*यह भी देखें*तालमूद.

मिन्नाह

मिन्नाह

मिन्नाह का किंग जेम्स संस्करण रूप, जो लूका 3:31 के अनुसार यीशु का पूर्वज था।

मिन्नाह

लूका 3:31 के अनुसार, यीशु के एक पूर्वज हैं।

*देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

मिन्नी

अरारात और अश्कनज के साथ यिर्मयाह 51:27 में उल्लेखित लोग, बाबेल के विरुद्ध आक्रमणकारी के रूप में वर्णित हैं। मिन्नी पहली बार अश्शूरी शिलालेखों में शल्मनेसेर III (858–824 ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान प्रकट होते हैं, जिन्होंने इन लोगों को लूटा और अपने अधीन बनाया। वे उर्मिया झील और वान झील के बीच, बाबेल के उत्तर में रहते थे, और मन्नेयाँ लोगों के साथ पहचाने जाते थे, जो नियमित रूप से अश्शूरी पांडुलिपियों में उरातियों (अरारात) के साथ जुड़े होते हैं। मिन्नी के लोग अशांत थे। उन्होंने 716 और 715 ईसा पूर्व में अश्शूर के खिलाफ विद्रोह किया। अश्शूरबनिपाल (669–627 ईसा पूर्व) के शासनकाल में और भी अधिक आंदोलन हुआ। 612 ईसा पूर्व में बाबुलियों के हाथों नीनवे के पतन के बाद, मिन्नी अतिरिक्त बाइबल दस्तावेज से गायब हो गए।

मिन्नीत

मिन्नीत

अम्मोनियों की हार में यिप्तह द्वारा जीते गए 10 शहरों में से एक (न्या 11:33)। यह शहर गेहूं के व्यापार का केंद्र था (यहेज 27:17)।

मिन्यामीन

मिन्यामीन

1. लेवियों ने, जिन्होंने यिम्ना के पुत्र कोरे की सहायता की, यहूदा के नगरों में याजकों के बीच "यहोवा की उठाई हुई भेंटें" का वितरण किया (2 इति 31:14–15).

2. बँधुआई के बाद के युग के दौरान एक याजकीय घर के प्रमुख (नहे 12:17)। उन्हें "मिय्यामीन" भी कहा जाता था (12:5)।

3. यरूशलेम की दीवार के अर्पण में सहभागी (नहे 12:41)।

मिफ़काद का फाटक

मुआयना फाटक का के.जे.वी. अनुवाद ("निरीक्षण फाटक," एन.एल.टी.), उत्तर-पूर्व यरूशलेम में एक शहर का फाटक, जैसा कि नहेम्याह 3:31 में उल्लेख है। *देखें* मुआयना फाटक।

मिबसाम

मिबसाम

1. इश्माएल के पुत्रों में से एक और उनके नाम पर एक गोत्र के संस्थापक (उत 25:13; 1 इति 1:29)।

2. शल्लूम के पुत्र और मिश्मा के पिता (1 इति 4:25)।

मिबसार

एदोम के प्रधान (उत 36:42; 1 इति 1:53)। इस नाम का अर्थ "गढ़" है। यूसिबियस मिबसार को मिबसारा के साथ जोड़ते हैं, जो एदोम का एक बड़ा नगर है।

मिभार

मिभार

दाऊद के पराक्रमी पुरुषों में योद्धा, जिन्हें "तीस" के रूप में जाना जाता था (1 इति 11:38)।

मिय्यामीन

मिय्यामीन

1. एज्रा 10:25 में परोश के पुत्र मिजामीन का के.जे.वी. अनुवाद। *देखें*मिजामीन #2।

2. नहेम्याह 12:5 में निर्वासन-पश्चात याजक मिजामीन का के.जे.वी. अनुवाद। *देखें*मिजामीन #4।

मिय्यामीन

मिय्यामीन

1. दाऊद के समय में सेवा करने वाले याजक (1 इति 24:9).

2. परोश का पुत्र, जिसे एज्रा द्वारा बँधुआई के बाद के काल में अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देने के लिए प्रेरित किया गया था (एज्रा 10:25)।

3. उन याजकों में से एक जिन्होंने बँधुआई के बाद की अवधि के दौरान एज्रा की वाचा पर हस्ताक्षर किए थे (नहे 10:7)।

4. याजक जो जरूब्बाबेल के साथ बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटे (नहे 12:5, एन.एल.टी. "मिन्यामीन")।

मिर्गी, मिर्गी का रोगी

केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की बीमारी, और इस बीमारी की पहचान पीड़ित व्यक्ति के बेहोशी और दौरे से की जाती है। दौरे या तो छोटे दौरे (चेहरे या हाथों का झटके, संक्षिप्त लेकिन तीव्र पेट दर्द, और संभावित क्षणिक बेहोशी) या बड़े दौरे (दौरे, मुंह से झाग आना, और 5 से 20 मिनट तक बेहोशी) हो सकते हैं। हालांकि मिर्गी के कारण अभी भी ज्ञात नहीं हैं, दौरे को रोकने या नियंत्रित करने के लिए दवाएं उपलब्ध हैं।

बाइबिल के समय में, मिर्गी (जिसे "गिरने की बीमारी" के रूप में जाना जाता था) का प्रभावी ढंग से इलाज नहीं किया जा सकता था। यीशु ने एक लड़के को चंगा किया जो स्पष्ट रूप से उस बीमारी से पीड़ित था (मत्ती 17:14–18; मरकुस 9:17–27; लूका 9:37–42)। केजेवि लड़के को "पागल" के रूप में वर्णित करती है जो (लैटिन *लूना,* "चंद्रमा" से) का उपयोग गलत है। मत्ती में यूनानी शब्द (शाब्दिक रूप से "चंद्रमा से प्रभावित") प्राचीन विश्वास को दर्शाता है कि कुछ बीमारियों और चंद्र चरणों के बीच एक संबंध था। बाइबिल के अनुसार, युवक को चंगा किया गया जब यीशु ने उससे एक शैतान, या "अशुद्ध आत्मा," को बाहर निकाला। *देखें* चिकित्सा और चिकित्सा अभ्यास।

मिर्मा, मिर्माह

मिर्मा*(मिर्माह)

बिन्यामीन के गोत्र से शहरैम और होदेश के पुत्र (1 इति 8:10)।

मिर्याम

1. अम्राम और योकेबेद की पुत्री और हारून और मूसा की बहन (निर्ग 15:20; गिन 26:59; 1 इति 6:3)। मिर्याम पवित्रशास्त्र में पहली बार एक युवा लड़की के रूप में प्रकट होती है, जिन्हें अपने शिशु भाई की पालना की निगरानी करने का कार्य सौंपा गया था, जो नील नदी के सरकंडों में छिपा हुआ था (निर्ग 2:4)—यह उनके माता-पिता द्वारा सोची गई योजना का परिणाम था (इब्रा 11:23)—फ़िरौन की उस आज्ञा से बचने के लिए कि सभी इब्री पुरुषों को जन्म के समय डुबो दिया जाए (निर्ग 1:22)। मिर्याम न केवल साहस और चिंता का प्रमाण देती है, बल्कि जब उनके भाई को मिस्री राजकुमारी द्वारा खोजा जाता है, तो एक विशेष बुद्धिमत्ता भी प्रदर्शित करती है (2:5–6)। पहल करते हुए, वह बालक के लिए एक दाई लाने का प्रस्ताव देती है और जब इस योजना को स्वीकार कर लिया जाता है, तो वे अपनी माता को ले आती है (वचन 7–8)।

मिर्याम पहली बार नाम से तब प्रकट होती है जब इस्राएली लाल समुद्र पार कर चुके होते हैं (निर्ग 15:20)। उन्हें "भविष्यद्वक्तिन" की उपाधि दी गई है और वे अपने भाइयों के साथ देश में एक अगुवा नियुक्त की गई है (मीका 6:4)। मिस्री रथियों की मृत्यु के बाद, वे इस्राएल की स्त्रियों का नेतृत्व करती है और नृत्य और वाद्य संगीत के साथ स्तुति का एक गान गाती है (निर्ग 15:21)।

मिर्याम, मूसा के प्रति अपनी ईर्ष्या और विद्रोह के कारण अपमानित महसूस करती है। हारून के साथ, वे मूसा के देश में श्रेष्ठ प्रभाव और एक कूशी स्त्री से उनके विवाह के कारण उसके विरुद्ध बड़बड़ाती है (गिन 12:1–2)। परमेश्वर के चुने हुए प्रवक्ता पर इस हमले के कारण, वह कोढ़ से पीड़ित हो जाती है (वचन 10)। हालांकि मूसा उनके लिए प्रार्थना करते है (गिन 12:9–13) और उसे बहाल किया जाता है, लेकिन केवल सात शर्मनाक दिनों के बाद जो शिविर के बाहर बिताए गए थे जबकि इस्राएल अपनी यात्रा फिर से शुरू करने के लिए प्रतीक्षा करता है (गिन 12:14–15)। यह दु:खद घटना मिर्याम के सार्वजनिक जीवन की अंतिम दर्ज घटना है। वह जंगल की यात्रा के अंत के निकट कादेश में मर गई और वहीं उसको मिट्टी दी गई (20:1)।

2. मेरेद की संतान, यहूदा के गोत्र के एज्रा का वंशज (1 इति 4:17)।

मिललै

मिललै

पुनर्निर्मित यरूशलेम की दीवार के समर्पण में सहभागी (नहे 12:36)।

मिलापवाला तम्बू

तंबू के लिए पदनाम।

देखें तंबू।

मिल्का

मिल्का

1. हारान की पुत्री और नाहोर की सौतेली बहन जो नाहोर की पत्नी बनीं (उत 11:29)। उन्होंने नाहोर के आठ पुत्रों को जन्म दिया (22:20–23)। अपने पुत्र बतूएल के माध्यम से वह रिबका की दादी थीं (24:15–47)।

2. सलोफाद की पाँच बेटियों में से एक। क्योंकि सलोफाद के कोई बेटे नहीं थे, इसलिए उनकी बेटियों ने मूसा से अनुरोध किया कि वे उन्हें उनके पिता की मृत्यु के बाद पश्चिम मनश्शे में उनके पिता की विरासत प्राप्त करने की अनुमति दें (गिन 26:33; 27:1–11; 36:5–13; यहो 17:3–4)।

मिल्कोम

अम्मोनियों का राष्ट्रीय देवता, जिसे मोलेक या मोलोक के नाम से जाना जाता है। इस देवता की उपासना, जिसमें आग में बच्चों की बलि दी जाती थी, इस्राएल के लिए सख्ती से निषिद्ध थी (लैव्य 18:21; यिर्म 32:35)। सुलैमान ने मिल्कोम के लिए एक उपासना स्थल बनाया (1 रा 11:5, 33), जिसे योशिय्याह ने बाद में गिरा दिया (2 रा 23:13)। मिल्कोम को 2 शमूएल 12:30 और 1 इतिहास 20:2 में "राजा" के रूप में प्रस्तुत किया गया है (देखें यिर्म 49:1–3; सप 1:5, केजेवी "माल्काम")।

यह भी देखें अम्मोन, अम्मोनियों।

मिशाम

मिशाम

एल्पाल का पुत्र बिन्यामीन के गोत्र से था, जिन्होंने ओनो और लोद को उनके नगरों के साथ बनाने में सहायता की (1 इतिहास 8:12).

मिशाल

मिशाल

आशेर के क्षेत्र में लेवीय नगर (यहो 19:26; 21:30; 1 इति 6:74)। *देखें*लेवीय नगर।

मिशाल

मिशाल*

यहोशू 19:26 में लेवीय नगर मिशाल का के.जे.वी. में उल्लेख हैं। *देखें*मिशाल.

मिश्नाह

व्यवस्था की व्याख्याओं का एक संग्रह। रब्बी परम्परा के अनुसार, ये व्याख्याएँ मूसा को तब दी गई थीं जब उन्होंने सीनै पर्वत पर परमेश्वर से व्यवस्था प्राप्त किया था। इन्हें पीढ़ियों तक मौखिक रूप से पारित किया गया।

यह "मौखिक परम्परा" वह "व्यवस्था" है जिसका यीशु ने मत्ती 15:1–9 में उल्लेख किया था। लगभग ईस्वी 200 में, रब्बी यहूदा ने वह कार्य पूरा किया जो रब्बी अकीबा ने लगभग ईस्वी 120 में शुरू किया था। इस मौखिक परम्परा को तब लिखित रूप में प्रस्तुत किया गया और इसे मिश्नाह कहा गया। "मिश्नाह " शब्द एक क्रिया शब्द से आता है जो दर्शाता है कि यह सामग्री गुरु से शिष्य तक कई पीढ़ियों तक मौखिक रूप से दोहराई जाती थी।

मिश्ना को छह "आदेशों" में विभाजित किया गया है। प्रत्येक आदेश को "प्रकरणों" नामक अनुभागों में विभाजित किया गया है, जिन्हें आगे अध्यायों में विभाजित किया गया है। यह छह आदेश विशेष कानूनी क्षेत्रों को शामिल करते हैं:

1. **बीज**: कृषि कानून और दैनिक प्रार्थनाओं पर आधारित एक ग्रन्थ से आरम्भ होते हैं।
2. **त्योहार**: पर्व, उपवास के दिन, और सब्त के नियम।
3. **महिलाएं**: विवाह और परिवार के कानून।
4. **चोटें**: नैतिक मानकों के साथ नागरिक और आपराधिक कानून।
5. **पवित्र चीजें**: अनुष्ठानिक कानून और याजक के पद की क्रियाएँ।
6. **शुद्धिकरण**: अनुष्ठानिक पवित्रता के नियम।

मिश्नाह पुरानी वाचा की व्यवस्था पर एक टिप्पणी के रूप में कार्य करता है। यह गेमारा और तलमूद के लिए आधार बनाता है, जो मिश्नाह और व्यवस्था पर आगे की टिप्पणियाँ और चर्चाएँ प्रस्तुत करते हैं।

*यह भी देखें*गेमारा; तलमूद.

मिश्मन्ना

गाद के गोत्र के वे योद्धा जो राजा शाऊल के खिलाफ संघर्ष में दाऊद के साथ सिकलग में शामिल हुए थे (1 इति 12:10)।

मिश्मा

1. इश्माएल के पुत्र, अब्राहम के पोते और एक अरब गोत्र के पिता (उत 25:14; 1 इति 1:30).

2. मिबसाम का पुत्र शिमोन के गोत्र से (1 इति 4:25–26)। उत 25 में उनकी चुक और 1 इतिहास की वंशावली में शामिल होना यह संकेत दे सकता है कि या तो उनका जन्म याकूब के अपने परिवार को मिस्र ले जाने के बाद हुआ था या वह एक अरबी गोत्र का प्रतिनिधित्व करते थे जो शिमोन के गोत्र के दक्षिण की ओर विस्तार के समय शिमोन के साथ जुड़ गया था (1 इति 4:38–43)।

मिश्राई

मिश्राई

कालेब के वंशज और यहूदा के गोत्र से किर्यत्यारीम के कुल के एक सदस्य (1 इति 2:53)।

मिश्रित विवाह

यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच विवाह। कनान के मूल निवासियों से विवाह निषिद्ध था ताकि इस्राएल मूर्तिपूजक न बनें (व्य.वि. 7:1–5; पुष्टि करें 2 कुरि 6:14)। फिर भी, न्यायियों के समय में इस निषेध की अक्सर उपेक्षा की गई (न्या 3:6) और उसके बाद भी (2 शमू 11:3; 1 रा 11:1–8)। अन्य राष्ट्रों के साथ विवाह के खिलाफ कोई स्पष्ट निषेध नहीं दिया गया था (गिन 12:1; व्य.वि. 23:7; रूत 1:4)। बँधुआई के बाद, गैर-यहूदियों से विवाह को एज्रा और नहेम्याह द्वारा अस्वीकार किया गया (एज्रा 9:1–4; नहे 13:23–27)।

यह भी देखें विवाह, विवाह के रीति-रिवाज।

मिसगाब

मोआब में एक स्थान के लिए के.जे.वी अनुवाद (यिर्म 48:1), जिसे एन.एल.टी. में "गढ़" अनुवादित किया गया है।

मिसगार

मिसगार

यह एक छोटी पहाड़ी है जो उत्तरी पलिश्तीन में हेर्मोन के पहाड़ के पास यरदन के पठार पर स्थित है (भज 42:6)।

मिस्पा

इब्री में "पहरे की मीनार" नाम का अर्थ है (जिसे वैकल्पिक रूप से मिस्पे भी लिखा जाता है) और इसका उपयोग पुराना नियम और अप्रमाणिक में उल्लेखित विभिन्न स्थानों को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है।

1. गिलाद में वह स्थान जहाँ याकूब और लाबान ने एक वाचा की (उत 31:49) और अपने क्षेत्रों के बीच की सीमाओं को चिह्नित करने के लिए पत्थरों का ढेर स्थापित किया।

2. वह स्थान जिसे "मिस्पा की भूमि" (यहो 11:3) या "मिस्पा की तराई" (यहो 11:8) कहा जाता है, जो हेर्मोन पर्वत के पास है और हिब्बियों द्वारा बसाया गया था।

3. यहूदा में लाकीश के पास एक नगर जिसका उल्लेख यहोशू 15:38 में किया गया है।

4. बिन्यामीन के गोत्रीय क्षेत्र में स्थित स्थान (यहो 18:26)। यहीं इस्राएली बिन्यामीन के गोत्र के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एकत्र हुए थे (न्या 20:1; 21:1) जब गिबा के पुरुषों ने एक आगंतुक लेवी की रखैल के साथ दुर्व्यवहार किया और उसे मार डाला था। यहीं शमूएल ने समस्त इस्राएल को पलिश्तियों पर विजय के लिए प्रार्थना करने के लिए बुलाया था (1 शमू 7:5–8)। बाद में, शमूएल ने मिस्पा में एक सभा का आह्वान किया ताकि सार्वजनिक रूप से शाऊल को राजा नियुक्त किया जा सके और लोगों तथा राजा को राज्य के मार्गों में निर्देशित किया जा सके (1 शमू 10:17–25)। आसा के समय में, मिस्पा, इस्राएल और यहूदा के बीच सीमा पर एक किलेबंद नगर था (1 रा 15:22)। 586 ई.पू. में बाबेलियों द्वारा यरूशलेम के पतन के बाद, मिस्पा गदल्याह राज्यपाल का निवास स्थान बन गया (2 रा 25:23–24; यिर्म 40:10), जिन्हें वहाँ "राजसी बीज" के इश्माएल द्वारा हत्या कर दी गई थी (यिर्म 41:3)। दो दिन बाद इश्माएल ने तीर्थयात्रियों के एक समूह की हत्या कर दी जो अपने अर्पणों को खण्डहर मन्दिर में चढ़ाने के लिए यरूशलेम जा रहे थे और उसने उनके शवों को एक कुंड में डाल दिया जो सदियों पहले आसा द्वारा निर्मित किया गया था।

अंतरनियम काल में मिस्पा एक महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र बना रहा। यहूदा मक्काबी ने लोगों को मिस्पा में इकट्ठा किया "क्योंकि इस्राएल के पास पहले मिस्पा में प्रार्थना का स्थान था" (1 मक्का 3:46)।

5. यिप्तह का घर, जहाँ से उन्होंने अम्मोनियों के विरुद्ध युद्ध में इस्राएलियों का नेतृत्व किया और जहाँ वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए लौटा था (न्या 10–11)। यह संभवतः वही स्थान है जो यहोशू 13:26 के रामत-मिस्पे के समान है और जिसे कई लोग यब्बोक के ठीक दक्षिण में खिरबत याल'अद के साथ पहचाना मानते हैं।

6. मोआब में वह नगर जहाँ दाऊद शाऊल से भागकर गए थे (1 शमू 22:3)।

मिस्पार, मिस्पेरेत

मिस्पार, मिस्पेरेत

उन पुरुषों में से एक जो बाबेली बँधुआई के बाद जरूब्बाबेल के साथ फिलिस्तीन लौटे (एज्रा 2:2); नहेम्याह 7:7 में इसे वैकल्पिक रूप से मिस्पेरेत कहा गया है।

मिस्पे

मिस्पा के लिए वैकल्पिक वर्तनी (यहो 11:3, 8; 15:38; 18:26)। *देखें*मिस्पा।

मिस्र

मिस्र की भूमि और/या उसके लोगों के लिए इब्री शब्द है, हालांकि कुछ विद्वान सुझाव देते हैं कि मिस्र एदोमी सीमा पर या उत्तरी सीरिया में किसी स्थान को संदर्भित करता है। उत्पत्ति 10:6 में, मिस्र (मिस्र) को हाम के पुत्रों में से एक के रूप में पहचाना गया है, जिन्होंने कनान के दक्षिण में बसावट की। उत्पत्ति 10:14 और यशायाह 11:11 मिस्र को पथरुशिम से अलग करते हैं, अर्थात्, ऊपरी मिस्र (मिस्र के यूनाइटेड किंगडम का दक्षिणी आधा हिस्सा), लेकिन लगभग 700 ज्ञात संदर्भों में से अधिकांश में मिस्र के दोनों भागों के बीच कोई भेद नहीं है और यह शब्द केवल मिस्री क्षेत्र को संदर्भित करता है।

*यह भी देखें*मिस्र, मिस्री .

मिस्र का नाला

मिस्र का नाला

इस्राएल के नेगेव मरूभूमि क्षेत्र और सीनै प्रायद्वीप के बीच स्वाभाविक सीमा, गाज़ा से लगभग 50 मील (80.5 किलोमीटर) दक्षिण-पश्चिम में। मिस्र का नाला, आधुनिक वादी एल-अरीश, केवल वर्षा ऋतु में बहता है (गिन 34:5; यहो 15:4, 47; 1 रा 8:65; 2 रा 24:7; 2 इति 7:8; यशा 27:12; यहेज 47:19; 48:28)। एक अलग इब्रानी शब्द, जो एक सदैव बहने वाले नाले को दर्शाता है, उत्पत्ति 15:18 में प्रकट होता है, जहां परमेश्वर ने कुलपिता अब्राहम को प्रतिज्ञात देश की सीमाएं बताईं। वह संदर्भ नील की पूर्वतम शाखा (पेलूसियाक) की ओर हो सकता है, जो आधुनिक बन्दरगाह सैद के पास महासागर में मिलती है, और मिस्र की सीमा को चिह्नित करने वाले प्राचीन किलेबंदी की रेखा की ओर है।

मिस्र का नाला

देखें मिस्र का नाला

मिस्र के महानद

1. मिस्र की सीमा के लिए वैकल्पिक नाम (सम्भवतः नील नदी) उत्पत्ति 15:18 में।

2. मिस्र का नाला के लिए वैकल्पिक नाम। *देखें* मिस्र का नाला।

मिस्र पर विपत्तियाँ

अभूतपूर्व विपत्तियों की श्रृंखला मिस्र पर आघात कर रही थी, संभवतः वसंत या प्रारंभिक ग्रीष्म ऋतु (लगभग 1400 ई.पू.) में समाप्त हुई। उन्होंने नील डेल्टा क्षेत्र को विशेष रूप से प्रभावित किया, हालांकि ऐसा प्रतीत होता है कि गोशेन नामक क्षेत्र प्रभावित नहीं हुआ। ये विपत्तियाँ इतनी भयानक थीं कि मिस्रियों को अपने आरंभिक इतिहास से ऐसा कुछ भी याद नहीं था (निर्ग 9:24)।

पूर्वावलोकन

- विपत्तियाँ
- फ़िरौन और विपत्तियाँ
- विपत्तियों का स्वभाव

विपत्तियाँ

विपत्तियाँ निर्गमन 7–11 में वर्णित हैं। पहली नज़र में ऐसा लग सकता है कि ये विपत्तियाँ कुछ हफ्तों के भीतर एक के बाद एक हुईं, लेकिन समय के आकस्मिक संकेत (देखें 7:25; 9:31–32) और साथ ही कुछ विपत्तियों की प्रकृति, यह सुझाव देती हैं कि इसमें कई महीने लगे होंगे। पहली विपत्ति जल का लहू में बदलना था (निर्ग 7:20), जिससे मछलियाँ मर गईं और पानी बदबूदार हो गया। इसके बाद मेंढकों की विपत्ति आई (निर्ग 8:6); उनकी मृत्यु के बाद भी, भूमि उनके शरीर के ढेरों से भरी हुई थी (पद 14)। इसके बाद कुटकियों की विपत्ति आई (पद 17), या संभवतः कुटकी, बालू मक्खियाँ, या मच्छर। शब्द का सटीक अर्थ स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से कुछ छोटे परेशान करने वाले जीव से इसका मतलब है। इसके बाद "डांसों के झुण्ड" आए (पद 24)। फिर से, अर्थ पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है। बाद में यहूदी परम्परा ने इसे जंगली जानवरों के झुण्ड बना दिया, लेकिन मक्खियाँ अधिक संभावित अर्थ है। फिर कुछ प्रकार की मवेशी विपत्ति आई (9:3), जिसने घरेलू जानवरों को प्रभावित किया। इसके बाद मनुष्यों पर फोड़े निकले (पद 9), जो दर्दनाक फफोले और छाले बन गए, जो स्पष्ट रूप से परेशान करने वाले थे लेकिन घातक नहीं थे। इसके बाद ओले गिरे (पद 18), इतने गंभीर कि पहले कभी ऐसा नहीं देखा गया था—ओले गिरते थे उनके साथ आग भी मिली हुई थी (पद 24)। यह इतना भारी था कि यह घातक हो सकता था (पद 19) और स्वाभाविक रूप से मिस्र की फसलों को बहुत नुकसान पहुँचाया (पद 31)। इसके बाद विशाल संख्या में टिड्डियाँ आईं (10:13)—फिर से एक अभूतपूर्व पैमाने पर। फिर तीन दिनों का पूर्ण अंधकार आया (पद 22) जिसने मिस्री जीवन को ठहराव में ला दिया। अंत में, मिस्रियों के सभी पहिलौठों को मार डाला (निर्ग 12:29)—फ़िरौन के घराने से लेकर भूमि के सबसे निम्नतम घरों तक।

सभी विपत्तियाँ बाइबल में परमेश्वर के लगातार न्याय के रूप में देखी जाती हैं। सामान्यतः, प्रत्येक विपत्ति से पहले मूसा द्वारा चेतावनी दी जाती है, जिसे फ़िरौन द्वारा अनदेखा कर दिया जाता है और फिर प्रत्येक विपत्ति फ़िरौन के अस्थायी पश्चाताप के परिणामस्वरूप हटा ली जाती है। लेकिन यह भी स्पष्ट है कि विपत्तियाँ धीरे-धीरे गंभीरता और तीव्रता में बढ़ती जाती हैं, जब तक कि चरमोत्कर्ष पहिलौठों की मृत्यु में नहीं आ जाता—इसके साथ ही फ़िरौन भी टूट जाते हैं। पहली विपत्तियाँ मिस्रियों के लिए असुविधा का प्रतिनिधित्व करती हैं, न कि खतरे का; फिर उनके पशु और फसलें नष्ट हो जाती हैं; अंततः मृत्यु पहिलौठों को ले जाती है, जो देश का सर्वोत्तम भाग है।

विपत्तियों के विवरण में कुछ सामान्य विशेषताएँ हैं। सबसे पहले, फ़िरौन के जादूगर विपत्तियों को तुच्छ दिखाने की कोशिश करते हैं और उनसे पहले आने वाले चिन्हों को भी, खुद से समान प्रभाव उत्पन्न करके (निर्ग 7:11–12; 8:7)। यह

एक दिलचस्प चेतावनी है कि चमत्कार विभिन्न स्रोतों से उत्पन्न हो सकते हैं और इस प्रकार का चिन्ह स्वयं में महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन समय आता है जब जादूगर हार जाते हैं और प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते (8:18); यहाँ तक कि वे भी मान लेते हैं कि यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है (पद 19)। जब फोड़े की विपत्ति आती है, तो जादूगर फ़िरौन के सामने भी प्रस्तुत नहीं हो सकते, उनकी स्थिति इतनी खराब हो जाती है। इसके बाद, जादूगर कहानी से लुप्त हो जाते हैं।

जैसे-जैसे विपत्तियों का वर्णन आगे बढ़ता है, एक और विषय जो स्पष्ट होता जाता है, वह है इस बात पर बढ़ता जोर कि परमेश्वर के लोग, जो गोशेन में रहते थे, उन्हें उन विपत्तियों से कैसे बचाया गया जो मिस्रियों को प्रभावित करती थीं। यह वैसे भी माना जा सकता था, चूँकि गोशेन नील पर नहीं था, इसलिए जल जो लहू में बदल गया और मेंढकों और मच्छरों की विपत्ति उन्हें कम प्रभावित कर सकती थी। लेकिन बाद में डांसों के झुण्ड (8:22), मवेशियों की विपत्ति (9:4), ओले (पद 26), और अंधकार (10:23) के मामले में, हमें विशेष रूप से बताया गया है कि इस्राएल को बचा लिया गया था; पहिलौठा की मृत्यु के मामले में, प्रभु ने इस्राएली घरों को "छोड़ दिया"।

शुरुआत में ऐसा लगता है जैसे सभी मिस्रियों के मन फ़िरौन के मन के समान ही हठीले हैं (निर्ग 7:13)। फिर भी जैसे कहानी आगे बढ़ती है, उनके अपने लोग उन्हें परमेश्वर के सामने झुकने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। जादूगर परमेश्वर की भूमिका को कुटकी की विपत्ति में स्वीकार करते हैं (8:19)। फ़िरौन के सेवक, जिन्होंने मूसा के माध्यम से परमेश्वर की चेतावनी को सुना, अपने सेवकों और मवेशियों को बड़े ओलों के तूफ़ानों से पहले घर के अंदर ले आए और इस प्रकार हानि और मृत्यु से बच गए (9:20)। केवल अविश्वासी ही पीड़ित हुए। अंत में, फ़िरौन के अपने सेवकों ने उन्हें इस्राएल को जाने देने के लिए प्रेरित किया, उन्हें स्पष्ट रूप से बताया कि उनकी हठ के कारण भूमि नष्ट हो रही थी (10:7)।

फ़िरौन और विपत्तियाँ

फ़िरौन की परमेश्वर के वचन पर प्रतिक्रिया उल्लेखनीय है। पवित्रशास्त्र फ़िरौन के मन की कठोरता को तीन तरीकों से वर्णित करता है। निर्गमन 7:3 में परमेश्वर द्वारा फ़िरौन के मन को कठोर करने की बात कही गई है; 7:14 में यह तटस्थ कथन है कि फ़िरौन का मन कठोर था; और निर्गमन 8:15 में फ़िरौन अपने मन को स्वयं कठोर करता है। स्पष्ट रूप से, ये सभी एक ही प्रक्रिया का उल्लेख करते हैं, जिसे किसी भी व्याख्या में ध्यान में रखा जाना चाहिए। इसके अलावा, पौलुस को इस विषय पर अंतिम शब्द कहने की अनुमति दी जानी चाहिए (रोम 9:18)।

लेकिन, इस धर्मशास्त्रीय ढांचे के भीतर काफी हलचल है, न कि केवल उथले पश्चातापों का एक क्रम जो विपत्ति को हटाने के लिए उद्देश्यपूर्ण है, और फिर एक नई हठ, जो एक ताज़ा न्याय को बुलाती है। यहाँ फ़िरौन और मूसा के बीच एक विशिष्ट एशियाई सौदेबाज़ी व्यवस्था भी है। फ़िरौन की प्रतिज्ञाओं के टूटने के बाद कि वे लोगों को जाने देंगे (निर्ग 8:8), वह व्यवस्था करने की कोशिश करता है: लोग परमेश्वर को मिस्र में बलिदान दें, बिना कहीं जाए (25); केवल पुरुष जाएँ (10:11); वे सब जाएँ, लेकिन अपने झुण्ड और मवेशियों को बंधक के रूप में छोड़ दें (24), लेकिन परमेश्वर के आह्वान के जवाब में इस प्रकार की कोई शर्तें नहीं हो सकती, जैसा कि फ़िरौन को सीखना था। पहिलौठा की मृत्यु के बाद वह इस्राएलियों को जाते हुए देखकर खुश था (12:31–33)।

इस अर्थ में, विपत्तियों की पूरी कहानी एक संघर्ष है। इसे कभी-कभी मूल भविष्यद्वक्ता, मूसा (व्य.वि. 18:15) और मूल राजा, फ़िरौन के संघर्ष के रूप में देखा गया है; जबकि यह हो सकता है, यह उससे कहीं अधिक है। यह परमेश्वर के सेवक मूसा और जादूगरों के बीच का संघर्ष है। यह मूसा और पराक्रमी फ़िरौन के बीच का संघर्ष है, या बल्कि, फ़िरौन का सामना परमेश्वर द्वारा, उनके सेवक द्वारा लाए गए वचन के रूप में किया गया है। सबसे गहरे स्तर पर, यह मिस्र के झूठे देवताओं पर परमेश्वर द्वारा विजय है। यह कई कहानियों को उनकी विशेष रुचि प्रदान करता है, क्योंकि नील नदी का देवता हापी है; मेंढक हेप्ट प्रजनन और प्रसव का देवता है; सूर्य रा (अंधेरे से क्रोधित) एक देवता है; हाट-होट का रूप एक बछिया था और एपिस का बैल का; उड़ने वाले बर्रे मिस्र का प्रतीक थे और फ़िरौन स्वयं एक देवता था। फिर भी सभी इस्राएल के परमेश्वर के सामने असहाय थे।

विपत्तियों की प्रकृति

यह ज्ञात नहीं है कि परमेश्वर इन विपत्तियों को कैसे लाए और कुछ लोग यह पूछना व्यर्थ समझ सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर जो भी साधन चाहें, उसका उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं। फिर भी यह कथन कि परमेश्वर ने "लाल समुद्र" के जल को एक प्रचण्ड पुरवाई हवा से पीछे हटा दिया (निर्ग 14:21) यह इंगित करता है कि परमेश्वर अपनी इच्छा पूरी करने के लिए स्वाभाविक साधनों का उपयोग कर सकते हैं। "चमत्कार" की इब्रानी अवधारणा आधुनिक अवधारणा से भिन्न थी, जो आमतौर पर चमत्कारों को "अलौकिक" मानती है और बाकी सबको "प्राकृतिक" और गैर-चमत्कारी के रूप में देखती है। हालांकि, इब्रानियों ने प्रकृति में सब कुछ परमेश्वर का काम माना; केवल कुछ मामलों में परमेश्वर ने अधिक "अद्भुत" (शायद कोई कहे अधिक "स्पष्ट") रूप से कार्य किया। इसलिए, यह कहने में किसी भी प्रकार से तर्कसंगतता नहीं है कि इस अवसर पर परमेश्वर ने "प्राकृतिक" विपत्तियों की एक श्रृंखला भेजी (जिस प्रकार की विपत्तियों के लिए मिस्र भौगोलिक रूप से प्रवृत्त था) लेकिन उन्हें इतना बढ़ा दिया—और इतनी तेजी से भेजा—कि वे चमत्कार बन गए।

इस प्रकार के अधिकांश व्याख्यान असामान्य जलवायु परिस्थितियों का एक वर्ष मानते हैं और विशेष रूप से नील

की वार्षिक वृद्धि में एक भिन्नता को। उदाहरण के लिए, या तो नील की असाधारण रूप से कम वृद्धि (जिससे लाल और कीचड़युक्त जल होता है) या नील की असाधारण रूप से अधिक वृद्धि (जो कूशी पहाड़ियों से लाल भूमि को नीचे लाती है) को पहली विपत्ति की व्याख्या के रूप में सुझाया गया है। यदि कोई महसूस करता है कि "लहू में बदल गया" का वर्णन गाढ़े लहू-रंग के पानी से संतुष्ट होगा, तो कोई भी उपयुक्त होगा। एक और आकर्षक सुझाव है जल में लाल प्लवक (जलजीव) का बढ़ना। यह घटना संसार भर में काफी आम है, विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय (गर्म जलवायु क्षेत्र) और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में। इससे लहू की समानता और भी अधिक हो जाएगी। इन दोनों मामलों में, गंदे जल में मछली की मृत्यु और नदी से मेंढकों का पलायन समझ में आता है। यदि नील सामान्य से अधिक व्यापक रूप से बाढ़ ला रही थी, तो मेंढकों की विपत्ति और भी अधिक समझ में आती। कुछ ने मेंढकों की अचानक मृत्यु को किसी प्रकार के आंतरिक गिल्टी रोग के कारण देखा है; और, खेतों में बदबूदार मेंढकों के शवों के ढेर के साथ, विपत्ति के वाहकों (मक्खियाँ, आदि) और उसके बाद आने वालि विपत्ति के लिए रास्ता पूरी तरह से खुला था।

उदाहरण के लिए, अगली विपत्ति मच्छरों, रेत के कीड़ों, कुटकियाँ या संभवतः जूँओं में से एक था। कम से कम पहले और आखिरी, बीमारी के शक्तिशाली वाहक हैं और सभी अपने काटने से जलनकारी फोड़े उत्पन्न करते हैं। नील नदी के रुके है पानी में, बाढ़ विशेष रूप से मच्छरों के लिए उत्तम प्रजनन स्थितियाँ प्रदान करेगी।

यदि हम यह मानने में सही हैं कि जो झुण्ड आए थे, वे मक्खियों के झुण्ड थे, तो सब कुछ एक ईश्वरीय रूपरेखा में फिट हो जाएगा। मृत मेंढकों के ढेर, बाढ़ के कारण भूमि पर बिखरा कचरे का ढेर (जिसमें, कोई शंका नहीं, कच्चा मल भी शामिल है), गंदे और कीचड़ भरे नील जल—यह मक्खियों के लिए एक प्रमुख प्रजनन स्थल होगा। इसके अलावा, यहूदियों के व्याख्याकार सुझाव देते हैं कि जिन मक्खियों की बात की जा रही है वे काट रही थीं या डंक मार रही थीं (जैसे गैडफ्लाई या हॉर्सफ्लाई)। शायद ये मवेशियों की बीमारी के कारक थीं। आधुनिक व्याख्याकारों ने एक विशेष प्रकार की मक्खी का सुझाव दिया है, जो अभी भी क्षेत्र में जानी जाती है, जो सड़ते हुए वनस्पति के बीच बहुत तेजी से बढ़ती है। मक्खियाँ और धूल (निर्ग 9:9) के बीच में वह भयानक उष्णकटिबंधीय बीमारी "घमौरी" उत्पन्न हो सकती थी, जो आसानी से संक्रमित हो जाती है।

फिर से, परमेश्वर की व्यवस्था में, यदि इस्राएली डेल्टा क्षेत्र में नहीं होते और न ही वास्तव में नील के किनारे रहते, बल्कि पूर्व में घाटी तूमिलात में केंद्रित होते, तो वे इन विपत्तियों से बच जाते—यह एक तथ्य था जो फ़िरौन की दृष्टि से नहीं बचा (निर्ग 9:7)। इस प्रकार चमत्कार परमेश्वर की सर्वोच्च व्यवस्था में निहित था, जो उनके संसार और इसकी भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों का उपयोग उनके हठीले हृदय पर न्याय का काम करने के लिए करता है।

ओले, जो हिंसक आंधी-तूफान के साथ थे (निर्ग 9:24), आसानी से समझाए जा सकते हैं (हालांकि मिस्र में दुर्लभ), विशेष रूप से नील तराई की "फनल" स्थितियों में, जो दोनों ओर गर्म, शुष्क मरूभूमि से घिरी हुई है। ओलों की गंभीरता के बारे में (जो फिलिस्तीन में अधिक सामान्य है), बाइबल में समानताएं हैं (यहो 10:11)। इस विपत्ति के साथ समय का एक मूल्यवान संकेत है, जो संयोगवश दिया गया है (निर्ग 9:31–32) फसलों के संबंध में जो ओलों से नष्ट हो गईं।

टिड्डियों की विपत्ति के मामले में, परमेश्वर द्वारा प्रकृति के तत्वों का उपयोग पाठ में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है, जहाँ "पुरवाई" उन्हें लाती है और एक "पश्चिमी हवा" उन्हें ले जाती है (10:13, 19)। यहाँ "विपत्ति" टिड्डियों की विशाल संख्या है (इस विपत्ति का एक और उदाहरण देखने के लिए योए 1:1–12 देखें) और उनके आगमन का समय भी। पुराने नियम में कई अन्य स्थान हैं जहाँ परमेश्वर के समय की सटीकता दिखाई गई है और वास्तव में चमत्कारी तत्व घटना के समय में निहित है।

टिड्डियों ने अपनी गिनती से भूमि को अंधकारमय कर दिया होगा (निर्ग 10:15), लेकिन उसके बाद के तीन दिनों के अंधकार की तुलना में वह कुछ भी नहीं था। अधिकांश टिप्पणीकार इस बात से सहमत हैं कि यह भयानक *खमसिन* है, जो गर्म मरूभूमि की हवा है जो धूल भरी आंधी या रेत के तूफान लाती है जो आकाश को भर देती है और कई दिनों तक बिना रुके चल सकती है। यदि कूशी के ऊंचे इलाकों से लाल मिट्टी नील नदी के बाढ़ के पानी द्वारा नीचे लाई गई थी और भूमि पर व्यापक रूप से जमा की गई थी, तो कुछ टिप्पणीकारों ने सुझाव दिया है कि इस हवा द्वारा इसे हवा में उड़ा दिया गया था, जिससे भूमि पर और भी गहरा अंधकार छा गया।

अंतिम विपत्ति के मामले में, पहिलौठे की मृत्यु के लिए, हमें इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता कि परमेश्वर ने किस विशेष बीमारी का उपयोग किया, यदि कोई थी। पवित्रशास्त्र हमें कोई संकेत नहीं देता। जो कहा जा सकता है वह यह है कि मिस्रियों ने कष्ट सहा लेकिन इस्राएलियों ने नहीं। इस विपत्ति के बाद, वे स्वतंत्र हो गए। इसके बाद, यह उनका आनंदमय था कि "मिस्र की विपत्तियों" में से कोई भी उन्हें परमेश्वर की प्रजा के रूप में नहीं लगेगी (निर्ग 15:26)। यह उनका दृढ़ विश्वास था कि ये विपत्तियाँ परमेश्वर का न्याय, हठी फ़िरौन पर दण्ड, लेकिन उनके उद्धार का साधन थी। इसलिए, विपत्तियाँ न केवल हमारे लिए चेतावनी हैं बल्कि एक प्रोत्साहन भी हैं। *देखें*मिस्र, मिस्री ; निर्गमन की पुस्तक; मूसा; विपत्ति।

मिस्र, मिस्री

मिस्र, मिस्री

मिस्र, बाइबल के विवरण में महत्वपूर्ण मन्च के रूप में प्रकट होता है। यहाँ अब्राहम ने अकाल के समय में निवास किया। अब्राहम के परपोते, यूसुफ को मिस्र में दासत्व में बेचा गया और वह प्रधानमंत्री के समकक्ष पद पर पहुँचा। यूसुफ की मध्यस्थता के माध्यम से, याकूब और फिलिस्तीन में रहने वाले इब्रानी पितृसत्तात्मक कुल, जो कनान में रहते थे, अकाल के कारण गोशेन के पूर्वी नदीमुख-भूमि क्षेत्र में निवास करने लगे—फिर से अकाल के कारण। प्रारम्भ में उन्हें अनुकूल रूप से व्यवहार किया गया, परन्तु बाद में उन्हें दासत्व में डाल दिया गया; उन्होंने परमेश्वर को पुकारा और 10 विपत्तियों के माध्यम से उनका छुटकारा हुआ। इसके बाद, 40 वर्षों तक मिस्र के सीनै प्रदेश में भटकते रहे, जहाँ उन्होंने व्यवस्था, तम्बू निर्माण की विधियाँ, और याजकीय व बलिदान प्रणालियों के निर्देश प्राप्त किए।

586 ईसा पूर्व में यरूशलेम के विनाश के बाद, यहूदियों के दल ने यिर्मयाह को उनके साथ मिस्र जाने के लिए मजबूर किया (यिर्म 43:6–7), जहाँ वे अंतरनियम काल के दौरान वहाँ बड़ी संख्या में हो गए और धीरे-धीरे अपनी इब्रानी भाषा को भूल गए। सिकन्दरिया में, यहूदियों ने लगभग 250 से 150 ईसा पूर्व के बीच पुराने नियम का अनुवाद यूनानी में किया (सेप्टुआजिंट), जो प्रारम्भिक कलीसिया की बाइबल बन गई, विशेष रूप से उन मसीहियों की जो फिलिस्तीन के बाहर रहते थे।

जब नया नियम काल शुरू हुआ, मिस्र ने यूसुफ, मरियम, और यीशु के लिए शरणस्थल के रूप में कार्य किया जब वे हेरोदेस महान के हत्यारे प्रयासों से बचने के लिए भाग रहे थे (मत्ती 2:13–23)। अन्य कई बिन्दुओं पर, इब्री और मिस्री इतिहास का मिलन हुआ—उदाहरण के लिए, जब शीशक प्रथम ने रहबाम के दिनों में फिलिस्तीन पर आक्रमण किया (1 रा 14:25–28)।

पूर्वावलोकन

- भूगोल
- इतिहास
- सामाजिक जीवन
- धर्म
- शिक्षा और संस्कृति

भूगोल

मिस्र को नील नदी का उपहार कहा गया है, जिसके बिना उसका अस्तित्व नहीं हो सकता। प्राचीन काल से, नील नदी हर वर्ष अपनी सीमा से बाहर बहने के दौरान पतली परत में समृद्ध गाद (सिल्ट) जमा करती है। नदी के किनारे फैली यह उपजाऊ मिट्टी उस निर्जन रेत से स्पष्ट रूप से भिन्न है, जो नदी तराई के दोनों ओर दूर तक फैली हुई है जितनी दूर तक दृष्टि जाती है। फिर, इस मिट्टी को जमा करने के बाद, नील अपनी सिंचाई के लिए जल प्रदान करती है। यह अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि मिस्र के भूमध्यसागरीय क्षेत्र में वार्षिक वर्षा केवल छह से आठ इंच (15 से 20 सेंटीमीटर) होती है, काहिरा में प्रति वर्ष दो इंच (5.1 सेंटीमीटर) या उससे कम, और उससे भी कम दक्षिण में होती है।

नील घाटी एक नली है, जो दोनों ओर से चट्टानों द्वारा बन्द है और दक्षिणी छोर पर झरनों द्वारा अवरुद्ध है। ये झरने वे स्थान हैं जहाँ नदी स्पष्ट मार्ग नहीं बना पाई और जहाँ चट्टानें धारा के तल में अनियमित समूहों में जमा हैं। चट्टान से चट्टान तक नील घाटी काहिरा और असवान के बीच लगभग 10 से 31 मील (16 से 50 किलोमीटर) चौड़ी है। परन्तु इस क्षेत्र के साथ खेती योग्य भूमि लगभग छह से दस मील (10 से 16 किलोमीटर) चौड़ा है, और असवान के आसपास यह एक या दो मील (1.5 से 3 किलोमीटर) चौड़ी हो जाती है। यह उपजाऊ भूमि लगभग 5,000 वर्ग मील (8,045 वर्ग किलोमीटर) है।

परन्तु मिस्र केवल नील घाटी तक सीमित नहीं है। यह नदीमुख-भूमि भी है, जो काहिरा के उत्तर में पाई के आकार का क्षेत्र है, जिसे सहस्राब्दियों से नील ने जमा किया है। नदीमुख-भूमि लगभग 125 मील (201.1 किलोमीटर) उत्तर और दक्षिण, और 115 मील (185 किलोमीटर) पूर्व और पश्चिम में फैली हुई है। इसका अधिक जनसंख्या वाला दक्षिणी क्षेत्र है, जो प्राचीन मिस्रवासियों को लगभग 5,000 वर्ग मील (8,045 वर्ग किलोमीटर) कृषि भूमि प्रदान करता था, जिससे घाटी और नदीमुख-भूमि का कुल क्षेत्रफल लगभग 10,000 वर्ग मील (16,090 वर्ग किलोमीटर) हो जाता है, जो लगभग मैरीलैंड राज्य के क्षेत्रफल के बराबर है।

नील नदी के पश्चिम में मरुद्यान की श्रृंखला फैली हुई है, जिसमें सबसे बड़ा है फयूम, जो काहिरा से लगभग 70 मील (112.6 किलोमीटर) दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। फयूम के केन्द्र में झील कारून है, जो आज 90 वर्ग मील (144.8 वर्ग किलोमीटर) क्षेत्र में फैली हुई है और लगभग 17 फीट (5.2 मीटर) गहरी है। झील के चारों ओर लगभग आधा मिलियन (पाँच लाख) एकड़ उपजाऊ कृषि भूमि है।

प्राचीन मिस्र का विस्तार भूमध्यसागर क्षेत्र से काहिरा (नीचेवाला मिस्र) तक लगभग 125 मील (201.1 किलोमीटर) और काहिरा से असवान (ऊपरी मिस्र) तक अन्य 600 मील (965.4 किलोमीटर) तक फैला हुआ था। अपनी शक्ति के चरम पर, मिस्र ने असवान के दक्षिण में पहले झरने से लेकर चौथे झरने (नूबिया) तक की घाटी पर भी नियंत्रण किया। इस प्रकार, मिस्र का क्षेत्र भूमध्यसागर से दक्षिण की ओर कुल 1,100 मील (1,769.9 किलोमीटर) तक फैला हुआ था।

मिस्र का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन नील के किनारे की उपजाऊ मिट्टी थी। प्राचीन काल में, किसान इस पर जौ, एमर

और गेहूँ जैसे अनाज उगाते थे। प्याज, लहसुन, मसूर और मसूर की दाल जैसी आम सब्जियाँ थीं। खजूर, अंजीर और अंगूर सबसे अधिक उगाए जाने वाले फल थे। तेल अरंडी और तिल के पौधों से प्राप्त किया जाता था, न कि जैतून से, जैसा कि अन्य भूमध्यसागरीय देशों में होता था। सन कपड़ों के लिए लिनन प्रदान करता था। घरेलू पशुओं में बैल, गाय, भेड़, बकरियाँ, सूअर, गदहे और घोड़े शामिल थे।

अन्य महत्वपूर्ण संसाधन पत्थर की प्रचुर आपूर्ति थी। ग्रेनाइट पहाड़ियाँ नील नदी और लाल समुद्र के बीच उठती हैं, और संगमरमर और अन्य उत्तम पत्थरों के भण्डार उसी क्षेत्र में पाए जाते हैं। असवान के दक्षिण में नूबिया की ग्रेनाइट पहाड़ियाँ खड़ी हैं। असवान में साइने की खदानें अपने अत्यंत कठोर और टिकाऊ लाल ग्रेनाइट के लिए प्रसिद्ध हैं। नूबिया की पहाड़ियों में सोना पर्याप्त मात्रा में था, और नील नदी के पूर्वी पहाड़ियों में सोना -युक्त क्वार्ट्ज की शिराएँ पाई गईं। मिस्रियों ने अपने महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कालों के दौरान सीनै के ताम्बे और मरकत की खदानों पर नियंत्रण रखा। प्रारंभिक प्राचीनकाल में, कुछ लकड़ी नूबिया में उपलब्ध थी, जिसका उपयोग उन बड़ी नावों के निर्माण में होता था, जो पिरामिड, मन्दिर, और अन्य भव्य संरचनाओं के निर्माण के लिए विशाल पत्थरों को ढोने का काम करती थीं।

नील नदी स्वयं हर-मौसम में उपयोग राजमार्ग थी। कोई भी व्यक्ति नदी की धारा के साथ उत्तर की ओर तैर सकता था और कमजोर धारा (3 मील, या 5 किलोमीटर, प्रति घंटा) के विरुद्ध उत्तरी हवाओं का उपयोग करके दक्षिण की ओर पाल चला सकता था। वास्तव में, नील नदी प्राचीन मिस्र का मार्ग थी। स्थल मार्ग आमतौर पर केवल नदी के किनारे तक यातायात को पहुँचाते थे। विशाल उत्तर-दक्षिण व्यापार के अलावा, जहाज नियमित रूप से किनारे से किनारे तक जाते थे।

नदी के किनारे सरकण्डा की घास उगती थी, जिससे लेखन सामग्री बनाई जा सकती थी। और नील नदी के किनारे मिट्टी जमा होती थी, जिससे गरीबों के घरों के लिए मिट्टी के बर्तन और धूप में सूखे ईंट बनाए जा सकते थे।

प्राचीन मिस्रवासी अपने घाटी के घर में तुलनात्मक रूप से अलगाव और शान्ति में रहते थे। दक्षिण में झरने, पूर्व और पश्चिम में रेगिस्तान, और भूमध्यसागर का बिना बन्दरगाह वाला तट उन्हें आक्रमण से बचाता था और उन्हें समान संस्कृति विकसित करने के लिए स्वतंत्र छोड़ता था। बाहरी प्रभाव मुख्य रूप से नदीमुख-भूमि के दो उत्तरी कोनों पर ही आ सकते थे। पूर्व से सामी आक्रमण होते थे, और पश्चिम से लिबियाई (सम्भवतः यूरोपीय मूल के) आते थे। इनसे बचाव के लिए सुरक्षा व्यवस्थाएँ बनाई गईं। उनके घाटी घर की सुरक्षा और सूर्य तथा नील नदी की नियमित व्यवस्था ने मिस्रवासियों को आत्मविश्वास और कल्याण का अनुभव कराया, जो प्राचीन पश्चिमी निकट पूर्व के अन्य लोगों के हिस्से में नहीं थी।

इतिहास

यह सोचना गलत है कि मिस्र के समकालीन शासक फ़िरौन के वंशज हैं या भूमि के वर्तमान निवासी किसी भी रूप में भौगोलिक दृष्टि से मिस्री हैं। विशिष्ट सभ्यता के रूप में मिस्र का अन्त सातवीं शताब्दी ईस्वी में अरबी विजय के साथ हुआ और इससे पहले के कई शताब्दियों में ग्रीको-रोमी प्रभावों द्वारा इसकी पहचान काफी हद तक विलुप्त हो गई थी।

उत्पत्ति

हालाँकि प्राचीन मिस्रवासियों की उत्पत्ति पूरी तरह से समझी नहीं जा सकी है, परन्तु शारीरिक रूप से वे हाम के वंश, शेम के वंश और भूमध्यसागर से समानताएँ दिखाते हैं। हाम के वंश, जिनमें नीग्रोइड विशेषताएँ थीं, नूबिया से उत्तर की ओर बढ़े। एशियाई लोग सुएज़ के इस्तमुस के पार नदीमुख-भूमि में प्रवासित हुए, और छोटे, भूरे, बारीक हड्डियों वाले भूमध्यसागरीय लोग प्रारंभिक समय से नील घाटी पर प्रभुत्व रखते थे। चाहे उनकी उत्पत्ति कितनी भी विविध क्यों न हो, प्राचीन काल के मिस्रवासी स्वयं को देश और विशिष्ट जाति के रूप में पहचानते थे। पुरुषों की ऊँचाई लगभग पाँच फीट छह इंच (1.7 मीटर) और स्त्रियों की लगभग पाँच फीट (1.5 मीटर) होती थी। वे दुबले-पतले परन्तु मजबूत हड्डियों वाले, गोल सिर और अंडाकार चेहरे वाले होते थे। पुरुषों के चेहरे या देह पर बहुत कम बाल होते थे, और प्राचीन काल में वे आमतौर पर बिना दाढ़ी-मूँछ के रहते थे, जबकि सामी दाढ़ी रखते थे।

पुरातत्वविदों ने श्रृंखला में उत्तराधिकार में आने वाली पूर्ववंशीय संस्कृतियों—फयूमिक, मेरिडियन, टासियन, बादारियन, अम्राटियन, गेरज़ियन, और सेमाइनियन—की सूची बनाई है, जिन्होंने बुनियादी तकनीकों में महारत हासिल की और न्यूनतम संसाधनों के साथ सभ्यता का निर्माण करना सीखा। निश्चित रूप से, उन्होंने प्रभावी कृषि कार्यक्रम बनाए रखने के लिए सिंचाई प्रणाली विकसित की। बहुत प्रारंभिक समय में ही उन्होंने सन को लिनन में बदलने और इस प्रकार वस्त्र उत्पादन करने का तरीका खोज लिया। जहाज सरकण्डों के सरकण्डे और कुछ दक्षिण में धारा के किनारे उगने वाले पेड़ों से बनाई जाती थीं। धूप में पकी हुए ईंटें भवन निर्माण के लिए सामग्री प्रदान करती थीं, और मिट्टी बर्तन बनाने के लिए उपलब्ध थी। प्रारंभ में बर्तन हाथ से बनाए जाते थे; बर्तन बनाने का चक्र वंशीय काल तक प्रचलन में नहीं आया था।

लेखन मिस्र में पूर्ववंशीय काल के अन्त के आसपास प्रकट हुआ। उनके चित्रलिपि, या पवित्र चिन्ह, "परमेश्वर के वचन" कहलाते थे और उन्हें ईश्वरीय उत्पत्ति का प्रतिक माना जाता था। 2700 ईसा पूर्व तक, उन्होंने सरकण्डे के पौधे के गूदे से

काटी गई पट्टियों को एक-दूसरे के ऊपर रखकर "कागज़" बनाना सीख लिया था और उन्हें पन्नों में बदल दिया था। लगभग उसी समय उन्होंने खदान से पत्थर काटने की तकनीक विकसित की। आमतौर पर वे उस रेखा के साथ खाँचा काटते थे जहाँ से पत्थर को अलग किया जाना था। फिर वे वहाँ सूखी लकड़ी के कील ठोकते थे और उन्हें गीला करते थे ताकि लकड़ी फूल जाए और पत्थर अलग हो जाए। कभी-कभी वे खाँचे के साथ आग जलाते थे ताकि पत्थर को गर्म किया जा सके और फिर उस पर पानी डालते थे ताकि वह मुख्य चट्टान से अलग हो जाए।

मिस्र का एकीकरण

लगभग 3100 ईसा पूर्व से पहले के काल में, मिस्र दो अलग-अलग राज्यों में विभाजित था: उत्तरी मिस्र और दक्षिणी मिस्र। फिर दक्षिणी मिस्र के राजा ने उत्तरी मिस्र को जीतकर दोनों क्षेत्रों को अपने एकमात्र शासन के अधीन कर लिया। परन्तु यह विभाजन कभी पूरी तरह भुलाया नहीं गया, और मिस्र को उसके इतिहास में "दो भूमि" के रूप में सन्दर्भित किया जाता रहा। फ़िरौन ने दोहरा मुकुट पहना, जो उत्तरी मिस्र के निम्न लाल मुकुट और दक्षिणी मिस्र के सफेद मुकुट का संयोजन था। राजा के राजभवन को "दोहरा राजभवन" कहा जाता था, और यहाँ तक कि शाही अनाज-भण्डार भी दोहरा होता था। इब्रियों ने इस दोहरे स्वरुप को पहचाना, क्योंकि पूरे पुराने नियम में उन्होंने मिस्र को मित्रायिम कहा—ऐसा शब्द जिसका अन्त दोहरा होता है।

प्राचीन स्रोतों में जिस फ़िरौन को मिस्र के एकीकरण का श्रेय दिया गया था, उन्हें कभी-कभी नार्मर और कभी-कभी मेनेस कहा जाता था; सम्भवतः ये एक ही व्यक्ति के लिए अलग-अलग नाम थे। नार्मर-मेनेस ने एकीकृत मिस्र के पहले वंश की शुरुआत की। हालाँकि प्राचीन मिस्री लोग राजवंशों पर विचार नहीं करते थे, परन्तु आधुनिक इतिहासकार तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य के मिस्री याजक मानेथो की प्रथा का पालन करते हैं, मानेथो ने फारसी काल तक के राजाओं की सूची तैयार की और इसे 30 वंशों में विभाजित किया; बाद में अन्य लोगों ने 31वां वंश भी जोड़ा। प्राचीन लोग "पुराना राज्य" और "मध्य राज्य" जैसे शब्दों का उपयोग नहीं करते थे, परन्तु आधुनिक विद्वान मिस्री इतिहास को व्यवस्थित करने के लिए इन्हें सुविधाजनक तरीका मानते हैं।

प्रारम्भिक राजवंशीय काल (3100–2700 ईसा पूर्व)

पहले दो राजवंशों के राजा थिस या थिनिस में शासन करते थे, जो काहिरा से लगभग 300 मील (482.7 किलोमीटर) दक्षिण में स्थित था, परन्तु उन्होंने नोप को अन्य प्रशासनिक केन्द्र के रूप में स्थापित किया। उन्होंने भूमि पर अपनी पकड़ मजबूत की और यह सिद्धांत विकसित किया कि राजा ईश्वरीय थे। इस समय मिस्र का बाहरी संसार के साथ संपर्क काफी था, और इस समय मिस्र में मेसोपोटामिया से प्रभावों के कई संकेत मिलते हैं।

प्राचीन राज्य (2700–2200 ईसा पूर्व; राजवंश 3–6)

प्राचीन राज्य विशेष रूप से अपनी निर्माण गतिविधियों के लिए याद किया जाता है। उस समय पिरामिड बनाए गए थे। राजधानी मेम्फिस (बाइबल में नोप), आधुनिक काहिरा के दक्षिण-पश्चिम में स्थित थी। फीनीके के साथ सम्पर्क अनेक थे, और कुछ का मानना है कि मिस्रवासियों का वहाँ और अन्य स्थानों पर इतना गहरा सम्बन्ध था कि इसे "प्राचीन साम्राज्य" कहना उचित है। कलात्मक मानक विकसित हो रहे थे, और साहित्यिक और चिकित्सा की शुरुआत महत्वपूर्ण थी। मिस्र पूर्ण राजतंत्र था। ईश्वरीय राजा की सेवा अधिकारियों की सेना द्वारा की जाती थी; पूरी जनसंख्या को उनके जीवनकाल के दौरान उनकी समाधि तैयार करने के लिए संगठित किया जा सकता था।

तीसरे राजवंश के पहले राजा जोसर थे, जिन्होंने सक्कारा में सीढ़ीदार पिरामिड का निर्माण किया। यह संसार की सबसे प्रारंभिक महान पत्थर की संरचना है, इसमें छह परतें या सीढ़ियाँ हैं, जो 204 फीट (62.2 मीटर) की ऊँचाई तक उठती हैं। वास्तुकार उनके वज़ीर या प्रधान मंत्री इम्होटेप थे, जिन्हें बाद में देवता का दर्जा दिया गया और वास्तुकला, साहित्य और औषधि की शुरुआत का श्रेय दिया गया, और जिन्हें यूनानियों द्वारा औषधि के देवता, एस्क्लेपियस के साथ पहचाना गया।

चौथे वंश के फ़िरौन महान पिरामिड निर्माता थे। उनके द्वारा लगभग 2600 और 2500 ईसा पूर्व के बीच गीज़ा में तीन महान पिरामिडों का निर्माण किया गया। इनमें से सबसे बड़ा पिरामिड, जो खुफू को समर्पित, 13 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है, मूल रूप से 481 फीट (146.6 मीटर) की ऊँचाई तक उठा था, और इसमें लगभग 2.3 मिलियन चूना पत्थर के खण्ड शामिल हैं, जिनका औसत भार ढाई टन है। दूसरा पिरामिड 447½ फीट (136.4 मीटर) ऊँचा है और इसके साथ स्फिंक्स है, जो राजा के चेहरे वाला लेटा हुआ सिंह है। तीसरा पिरामिड 204 फीट (62.2 मीटर) ऊँचा है। ये पिरामिड अलग-अलग उदाहरण नहीं हैं। गीज़ा में कई छोटे पिरामिड भी बनाए गए थे, और कुल मिलाकर नौ पिरामिड क्षेत्र थे, जो नील नदी के दक्षिण में पश्चिमी तट के साथ बिखरे हुए थे। पाँचवे और छठे राजवंश के दौरान, पिरामिड ग्रंथ प्रकट हुए, जो नक्काशीदार और चित्रित शिलालेख, जादुई मंत्र और भजन थे, जो मृतकों को परलोक में सहायता करने के लिए माने जाते थे।

प्राचीन राज्य के दौरान मिस्र की कलात्मक मान्यताओं की स्थापना हुई। राजा और देवताओं को शैलीबद्ध रूप में दर्शाया गया था। कला अवधारणात्मक होने की प्रवृत्ति रखती थी बजाय प्रत्यक्ष होने के; अर्थात, कलाकार ने जो देखा उसे पुनः प्रस्तुत करने के बजाय, जो वह जानता था कि वहाँ है उसे

मिस्र, मिस्री

चित्रित किया। उदाहरण के लिए, मछलियों के समूह को अलग-अलग मछलियों के रूप में पूरे चित्रित किया गया, बजाय इसके कि उन्हें स्वाभाविक रूप से दिखाया जाए जहाँ एक मछली दूसरी मछली के हिस्से को छुपा रही हो। इसी प्रकार, गदह पर काठी के थैले को दिखाया गया, जिसमें दर्शक की ओर वाला थैला स्वाभाविक रूप से पुनः प्रस्तुत किया गया; दूसरा थैला, जो गदह की पीठ के पीछे होने का ज्ञान था, गदह की पीठ के ऊपर हवा में उल्टा दिखाया गया।

किसी व्यक्ति के महत्त्व ने चित्र में उसकी आकृति के आकार को निर्धारित किया। युद्ध दृश्य में फ़िरौन सबसे बड़ा चित्र होता था, उसके सेनापति अधिकारी अगले आकार में होते थे, साधारण सैनिक उनसे छोटे होते थे, और शत्रु सैनिक सबसे छोटे होते थे।

मिस्री कला का उद्देश्य कहानी बताना था: इसका अधिकांश भाग चलचित्र जैसा था, न कि स्थिर चित्र जैसा। दाखरस बनाने का दृश्य अंगूर तोड़ने, रस को पैरों से रौंदकर निकालने (जो सामान्यतः नंगे पैर किया जाता था), और रस को मटकों में संग्रहित करने को शामिल कर सकता था।

प्राचीन राज्य के दौरान मिस्री चिकित्सा ज्ञान भी विकसित हो रहा था। हालाँकि मिस्री औषधि के ज्ञान के स्रोत मध्य राज्य के महान पपीरस हैं, कुछ संकेत हैं कि चिकित्सा ज्ञान का दावा बहुत प्राचीनता का है। ग्रंथों में कई प्राचीन अभिव्यक्तियाँ दिखाई देती हैं। शायद मिस्री लोग लहू के परिसंचरण के बारे में कुछ जानते थे; वे "हृदय की आवाज़" महसूस करने की बात करते थे। मिस्री चिकित्सा अभ्यास घरेलू उपचार, ताबीज और मंत्रों, और वैज्ञानिक विशेषज्ञता का मिश्रण था। एडविन स्मिथ सर्जिकल सरकण्डा विशेष रूप से टूटी हुई हड्डियों के उपचार से सम्बन्धित उल्लेखनीय अध्ययन है।

छठे वंश के दौरान, पुराना राज्य दरिद्र शासकों, आक्रामक धनवानों, वित्तीय कठिनाइयों, दक्षिण में नूबियन आक्रमणों और उत्तर-पूर्व में एशियाई हमलों के परिणामस्वरूप प्राचीन राज्य का पतन शुरू हो गया।

प्रथम मध्यवर्ती काल (2200–2050 ईसा पूर्व; राजवंश 7–11)

प्राचीन राज्य के दौरान, राजनीतिक स्थिरता और समृद्धि थी। नील नदी की बाढ़ पूर्वानुमानित रूप से आती थी और विनाशकारी नहीं होती थी। सभी के लिए खाने के लिए पर्याप्त था। यदि कोई व्यक्ति खुद को सही तरीके से व्यवहार करता, कड़ी मेहनत करता और विद्यालय में लगन से पढ़ाई करता, तो वह जीवन में उचित पदोन्नति और सामान्य सफलता की उम्मीद कर सकता था। परिचित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, और धार्मिक संस्थान स्थिर रहतीं थीं और जीवन की लय में अपनी नियमित जगह लेने के लिए उन पर भरोसा किया जा सकता था। अब पुरानी अभिजात्य वर्ग गिर चुकी थी। केन्द्रीय शासन टूट चुका था; कई जिलों के राजाओं ने अपना अलग नियंत्रण स्थापित कर लिया था। अब यह सच नहीं था कि यदि कोई व्यक्ति कुछ निश्चित कार्य करता है तो वह सफलता की उम्मीद कर सकता है। पुराने राज्य के जीवन के पूरे तत्व-ज्ञान के पतन ने एक आत्मिक अशान्ति लाई और जीवन के पुनर्मूल्यांकन के प्रयासों को जन्म दिया। उस समय के साहित्य में से कुछ जीवन की समस्याओं को भोग-विलास में डुबो देने का सुझाव देते हैं, जबकि कुछ जीवन की कठिनाइयों के प्रति कठोर बनने और सहनशीलता अपनाने की सलाह देते हैं।

मध्य राज्य (2050–1780 ईसा पूर्व; 12वां राजवंश)

11वें राजवंश के अंत में, थेब्स के राजकुमार (नोप के दक्षिण में 440 मील, या 708 किलोमीटर) के निर्देश और शाही नियंत्रण को बहाल करने के लिए संघर्ष कर रहे थे और आंशिक रूप से सफल हुए। मध्य राज्य 12वें राजवंश का काल था, जिसमें मूल निवासी थेब्स के लोग राजधानी को फैयूम के लिश्ट में स्थानांतरित कर चुके थे। इस राजवंश के छह शासकों ने अमेनेम्हेट और सेसोस्ट्रिस के नाम लिए। इन शासकों में से प्रत्येक ने लगभग 30 वर्षों तक शासन किया, और उनमें से अधिकांश ने अपने पुत्रों को मृत्यु से पहले सह-शासक के रूप में सिंहासन पर बैठा दिया, जिससे सत्ता हथियाने वालों का खतरा समाप्त हो गया। चूँकि इन राजाओं ने रईसों को उनकी स्वतंत्र शक्ति से वंचित करने का साहस नहीं किया, इसलिए इस अवधि के अधिकांश समय में सामंती स्थिति विद्यमान रही।

पूर्ण रूप से राजा के रूप में कार्य करने में असमर्थ, इन फ़िरौन को समझाने और सद्भावना के विकास के माध्यम से शासन करना पड़ा। उनके द्वारा प्रदान किया गया म'आत (सामाजिक न्याय) की अवधारणा को लगातार महत्व दिया गया, और यदि कोई व्यक्ति रईसों के हाथों म'आत प्राप्त नहीं कर सका, तो उसे राजा के हाथों इसे प्राप्त करने का वादा किया गया। उनके प्रचार कार्यक्रम ने फिरौन को केवल अधिकार का प्रयोग करने के बजाय जिम्मेदार संचालन के बारे में चित्रित किया। फिरौन अपनी प्रजा के चरवाहा थे।

मध्य राज्य के फ़िरौन इतने बुद्धिमान थे कि उन्होंने विशाल पिरामिडों पर खजाने को समाप्त नहीं किया; इसके बजाय, उन्होंने सार्वजनिक कार्यों को प्राथमिकता दी। जैसे उन्होंने फयूम में खेती योग्य भूमि को बढ़ाने के लिए विशाल प्रयास किए, स्वेज के इस्तमुस के पार रक्षात्मक दीवार का निर्माण किया, और सीनै के तांबे की खानों का व्यवस्थित रूप से उपयोग किया। व्यापार क्रेते, लबानोन, सीरिया, और पंट के साथ व्यापक था।

मध्य राज्य वह समय था जब आमोन मिस्र के महान देवता के रूप में उभरने लगे। उसे सूर्य देवता रे के साथ जोड़ दिया गया और आमोन-रे के रूप में प्रतिष्ठित किया गया और उन्होंने थेब्स {बाइबल में "नो"} के पूर्व देवताओं को पीछे छोड़ दिया। जातीय देवता के रूप में, आमोन साम्राज्य के दौरान महान

साम्राज्यवादी देवता बन गए और उन्होंने सार्वभौमिक स्वरूप प्राप्त कर लिया। धार्मिक ग्रंथ, जो प्राचीन राज्य के दौरान पिरामिडों की दीवारों पर शोभायमान होते थे, अब ताबूतों पर अंकित किए गए और उनका उपयोग राजा के साथ-साथ कुलीनों के लिए भी उपलब्ध था।

मध्य राज्य के दौरान साहित्यिक विकास हुआ। वैज्ञानिक साहित्य का प्रतिनिधित्व ऐसे उत्कृष्ट कार्यों द्वारा किया जाता है जैसे कि रिंड गणितीय पपीरस, और स्मिथ सर्जिकल और एबर्स चिकित्सा पपीरी। "मेरिकारे के निर्देश" उस अवधि के ज्ञान साहित्य का कुछ चित्रण करते हैं, और "सिनुहे की कथा" मनोरंजन साहित्य की विधा को प्रस्तुत करती है।

यदि कोई निर्गमन की प्रारंभिक तिथि (लगभग 1446 ईसा पूर्व) को मानता है और मिस्र में इस्राएलीयों के निवास की अवधि के लिए 430 वर्ष जोड़ता है (निर्ग 12:40), तो वह निष्कर्ष निकालेगा कि इस्राएलियों ने लगभग 1876 ईसा पूर्व मिस्र में प्रवेश किया था। यह समय सेसोस्ट्रिस तृतीय (सेनवोसरेट, या सेन-उसेर्ट; का 1878–1840 ईसा पूर्व) के शासनकाल के प्रारंभिक वर्ष में होगा। सेसोस्ट्रिस ऊर्जावान राजा थे जिन्होंने मिस्री नियंत्रण को दक्षिण में दूसरे जलप्रपात तक बढ़ाया और सीरिया तक अभियान चलाया। वह प्रारंभिक समय की अवधि की सामंती स्थितियों को उलटने में भी सक्षम थे; उन्होंने रईसों की शक्ति छीन ली और उनके स्थान पर शाही अधिकारियों को नियुक्त किया। संभवतः यह उपलब्धि किसी तरह यूसुफ के दिनों में अकाल से सम्बन्धित थी और यूसुफ ने उस अकाल का उपयोग देश की सभी आबादी पर शाही नियंत्रण स्थापित करने के लिए किया था (उत्प 47:13–26)।

द्वितीय मध्यवर्ती काल (1780–1570 ईसा पूर्व; वंश 13–17)

शक्तिशाली 12वें वंश के समाप्त होने के साथ, मिस्र एक बार फिर विघटन की अवस्था में चला गया। हिक्सोस ("विदेशी भूमि के शासक"), जो सीरिया और फिलिस्तीन के सामी लोग थे, धीरे-धीरे नदीमुख-भूमि क्षेत्र में प्रवेश कर गए और लगभग 1730 ईसा पूर्व में वहाँ नियंत्रण कर लिया, उन्होंने अपनी राजधानी तानिस, या अवारिस, पूर्वी नदीमुख-भूमि में बनाए रखी। इस दौरान, दक्षिण में थेबन राजकुमार कमजोर रूप से शासन करते रहे और आमतौर पर हिक्सोस के अधीनस्थ बने रहे।

मिस्री लोगों की हिक्सोस के प्रति घृणा और उनकी स्मृति को मिटाने के कठोर प्रयासों के परिणामस्वरूप, हिक्सोस का इतिहास बहुत धुंधला है। उनके इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए बहुत कम प्रमाण उपलब्ध हैं। सम्भवतः वे नए प्रकार की कांस्य तलवारें और खंजर, शक्तिशाली मिश्रित धनुष, और सबसे महत्वपूर्ण घोड़ा और रथ लाने के लिए जिम्मेदार थे। मिस्री लोगों ने इन्हें अच्छी सफलता के साथ अपनाया और हिक्सोस की शक्ति को पराजित करने के लिए और फिर फिलिस्तीन और सीरिया में साम्राज्य बनाने के लिए इनका उपयोग किया। थेबन राजकुमारों का हिक्सोस के नियंत्रण से मुक्ति पाने का सन्घर्ष लम्बा चला और कभी-कभी अत्यधिक उग्र था। यह प्रयास 16वीं शताब्दी ईसा पूर्व के अन्त में शुरू हुआ और अहमोस प्रथम (1570–1546 ईसा पूर्व) द्वारा पूरा किया गया।

साम्राज्य काल (1570–1090 ईसा पूर्व; राजवंश 18–20)

अहमोस ने 18वें राजवंश की शुरुआत की, और उन्हें साम्राज्य या नए राज्य काल की शुरुआत करने वाला भी माना जा सकता है। मिस्र में हिक्सोस को हराने के बाद, उन्होंने नूबिया और दक्षिणी फिलिस्तीन में शारूहेन के खिलाफ सफल अभियान चलाए। इसके बाद उन्हें उन रईसों को वश में करना पड़ा जिन्होंने हिक्सोस युग के दौरान स्वतंत्रता प्राप्त कर चुके अभिजात वर्गों को भी फिर से अधीन करना पड़ा। अमेनहोटेप प्रथम (1546–1525 ईसा पूर्व) को भी दक्षिण में नूबियनों और उत्तर-पश्चिम में लिबियनों से युद्ध के लिए मजबूर होना पड़ा।

बिना उत्तराधिकारी पुत्र के मरने पर, अमेनहोटेप के बाद उनकी बहन अहमोस ने राजगद्दी सम्भाली, जिन्होंने थुतमोस (थुतमोस प्रथम, 1525–1508 ईसा पूर्व) से विवाह किया, जो सम्भवतः उनके रिश्तेदार थे। थुतमोस को अपने शासन के पहले वर्ष में विद्रोही नूबियनों को पुनः अधीन करना पड़ा और बाद के अभियानों में मिस्र की नूबियन संपत्तियों को काफी हद तक बढ़ाया। उन दो नूबियन आक्रमणों के बीच, उन्होंने सीरिया में आक्रमण किया; इस प्रकार वे साम्राज्य का दावा कर सकते थे जो फरात नदी से नील नदी के तीसरे जलप्रपात तक फैला हुआ था। ऐसा माना जाता है कि मूसा का जन्म उनके शासनकाल के आरम्भ में हुआ होगा। थुतमोस ने राजाओं की घाटी में पश्चिमी थेब्स में शाही कब्रों को तराशने की प्रथा शुरू की।

स्पष्ट रूप से थुतमोस और अहमोस के संघ से जीवित रहने वाली एकमात्र सन्तान पुत्री थी, हत्शेप्सुत, जिनका विवाह थुतमोस द्वितीय (1508–1504 ईसा पूर्व) से हुआ था, जो गौण राजकुमारी के द्वारा थुतमोस प्रथम के पुत्र थे। थुतमोस द्वितीय को विद्रोही नूबियनों को शान्त करना पड़ा, परन्तु उनके शासनकाल के बारे में बहुत कम जानकारी है। चूँकि उनका हत्शेप्सुत से विवाह होने के बाद, उन्होंने दो पुत्रियों को जन्म दिया परन्तु कोई पुत्र नहीं हुआ, उन्होंने अपनी पुत्री मैरीत्रे का विवाह गौण पत्नी के पुत्र (थुतमोस तृतीय, 1504–1450 ईसा पूर्व) से कराने का निर्णय लिया।

हत्शेप्सुत ने थुतमोस तृतीय के अल्पवयस्क होने के दौरान शासन करना जारी रखा और जब वह वयस्क हो गए, तब भी उन्होंने पद छोड़ने से इनकार कर दिया। उन्होंने 1504–1482 ईसा पूर्व तक मिस्र पर शासन किया। उनके शासनकाल के दौरान, मिस्र ने आर्थिक समृद्धि का आनन्द लिया। उनके निर्माण कार्य काफी महत्वपूर्ण थे; उनके

उपलब्धियों में से सबसे प्रमुख कारनामों में लक्सर के कर्नाक मन्दिर में दो महान ओबिलिस्क का निर्माण था। इनमें से एक शेष स्तम्भ 97½ फीट (29.7 मीटर) ऊँचा है और इसका वजन लगभग 700,000 पाउंड (317,800 किलोग्राम) है। उन्होंने पंट की भूमि के लिए व्यापारिक अभियानों का भी संचालन किया। हत्शेप्सुत को कभी-कभी फ़िरौन की बेटी के रूप में पहचाना जाता है जिन्होंने मूसा को नील नदी से बचाया (निर्ग 2:5)।

अन्ततः, 1482 ईसा पूर्व में, हत्शेप्सुत का असामयिक अन्त हुआ, सम्भवतः थुतमोस तृतीय के हाथों, जब उन्होंने अपने बंधनों को तोड़कर राज्य पर शासन करना शुरू किया। 75 दिनों के भीतर उन्होंने सेना इकट्ठी की और उसे उत्तर की ओर फिलिस्तीन-सीरिया में विद्रोही राजकुमारों को अधीन करने के लिए ले गए। मगिद्दो में महान प्रारंभिक विजय और सात महीने की घेराबंदी के बाद नगर को लूटने से उत्तरी फिलिस्तीनियों को डरा दिया, परन्तु उनकी प्रतिरोध की इच्छा को नहीं तोड़ा। थुतमोस ने खुद को अगले दो दशकों तक लगभग हर वर्ष फिलिस्तीन या नूबिया में प्रचार करते हुए पाया।

मिस्रियों की हिक्सोस को दण्ड देने की प्रारंभिक भावना धीरे-धीरे साम्राज्यवाद की भावना में बदल गई, जिसमें विजय के साथ शक्ति का आनन्द लिया गया। जैसे-जैसे सीमाएँ विस्तारित हुईं, आने वाली पीढ़ियों में लगभग हमेशा कहीं न कहीं खतरा उपस्थित होता था; कुछ वास्तविक थे और कुछ दूरस्थ। इस प्रकार, सुरक्षा की भावना जो मिस्री लोगों ने पहले के सदियों में अनुभव की थी जब वे अपनी घाटी के घर में बन्द थे, असुरक्षा की भावना में बदल गई। और जैसे ही देवता आमोन-रे मिस्री सैन्य प्रयासों पर मुस्कुराए, उन्हें भारी मात्रा में लूट और सुन्दर उपहारों से पुरस्कृत किया गया। समय के साथ मन्दिरों ने इतनी सम्पत्ति और शक्ति प्राप्त कर ली कि उन्होंने राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में बड़ा प्रभाव डालना शुरू कर दिया। विशेष रूप से आमोन के याजक का पद कर्नाक के मन्दिर में बहुत महान था।

थुतमोस तृतीय मिस्र के प्राचीन फ़िरौन में से एक महानतम शासक थे। विजेता और साम्राज्य निर्माता के रूप में, उन्हें अक्सर प्राचीन मिस्र का नेपोलियन कहा जाता है। राज्य के किसी भी आकार के नगर में शायद ही कोई ऐसा स्थान था जहाँ उन्होंने निर्माण गतिविधियों में भाग न लिया हो। उनके साथ फ़िरौन को खिलाड़ी, एथलीट, और योद्धा के रूप में महिमा करने का प्रयास शुरू हुआ, जो कई पीढ़ियों तक चला; उनके पास मनुष्यों के मामलों को संचालित करने में देवता की शक्तियाँ दी गई थीं। यदि निर्गमन की प्रारंभिक तिथि को स्वीकार किया जाए, तो थुतमोस तृतीय को अक्सर इब्रियों के महान उत्पीड़न के फ़िरौन के रूप में माना जाता है।

थुतमोस के बाद उसके पुत्र अमेनहोटेप द्वितीय (1452–1425 ईसा पूर्व) ने शासन किया, जो सम्भवतः निर्गमन का फ़िरौन था। अपने पिता के साथ संक्षिप्त रूप से सह-शासक के रूप में सेवा करते हुए, उन्होंने साम्राज्य पर एकमात्र शासन के लिए सहज संक्रमण का आनन्द लिया। यद्यपि उन्हें विद्रोही नगरों को वश में करने के लिए सीरिया और फिलिस्तीन में दो अभियानों को अंजाम देना पड़ा, परन्तु ऐसा लगता है कि उन्होंने आमतौर पर शान्तिपूर्ण शासन का आनन्द लिया। अपने पिता की तरह, उन्होंने खिलाड़ी के रूप में अपनी दक्षता और योद्धा के रूप में अपनी निर्दयता के लिए प्रसिद्ध होने की कोशिश की।

थुतमोस IV (1425–1412 ईसा पूर्व) के कम ज्ञात शासन के बाद, अमेनहोटेप तृतीय (1412–1375 ईसा पूर्व) मिस्र के सिंहासन पर बैठे। अक्सर "महान" कहे जाने वाले, वे साम्राज्य से आने वाले धन में आनंदित होते थे। एक बार, केवल 14 दिनों की संक्षिप्त अवधि में, उन्होंने अपनी पत्नी के लिए 6,400 फीट (1,950.6 मीटर) लम्बी और 1,200 फीट (365.7 मीटर) चौड़ी झील खुदाई करवाई। यहाँ थेब्स में नील नदी के पश्चिमी तट पर शाही नाव तैर सकती थी जबकि उस पर सवार संगीतकार राजा और रानी के लिए मनोरंजन प्रदान करते थे।अमेनहोटेप ने कई मन्दिरों का निर्माण कराया, जिनमें थेब्स में समाधि मन्दिर शामिल था, जिसमें प्रसिद्ध मेमन के विशालकाय मूर्तियाँ जुड़ी थीं, जो राजा की लगभग 70 फीट (21.3 मीटर) ऊँची बैठी हुई प्रतिमाएँ थीं। यद्यपि कलाकारों ने उन्हें मन्दिर की दीवारों पर महान विजेता के रूप में चित्रित किया, ऐसा लगता है कि उन्होंने केवल नूबिया में एक विद्रोह को दबाने में भाग लिया और शायद कभी फिलिस्तीन या सीरिया में कदम नहीं रखा।

जैसे अमेनहोटेप तृतीय ने साम्राज्य को बनाए रखने का कोई प्रयास नहीं किया, वैसे ही उनके पुत्र अमेनहोटेप चतुर्थ (1387–1366 ईसा पूर्व) ने भी नहीं किया। खराब स्वास्थ्य के कारण, अमेनहोटेप तृतीय ने 1387 ईसा पूर्व में अपने पुत्र को सह-शासक बनाया, परन्तु पुत्र ने राज्य के मामलों पर बहुत कम ध्यान दिया। रहस्यमय प्रवृत्ति के कारण, उन्होंने अमार्ना नामक नई राजधानी में सूर्य देवता आतोन के पंथ की स्थापना के लिए खुद को समर्पित कर दिया। आतोन की पूजा लगभग एकेश्वरवादी थी (जिसमे राजा को देवता के साथ पूजा जाता था) और इस प्रकार यह वास्तविक धार्मिक क्रांति का गठन करती थी, परन्तु यह दरबार के बाहर कुछ ही लोगों में लोकप्रिय हुई। धार्मिक परिवर्तन, राजधानी के स्थानांतरण से जुड़े राजनीतिक परिवर्तन, और कलात्मक परिवर्तन तथाकथित "अमरना क्रांति" के तीन मुख्य तत्व थे। कला में ढीला प्राकृतिकवाद, जो लगभग व्यंग्य की सीमा तक पहुँच गया था, नया नहीं था, क्योंकि इसे थुतमोस चतुर्थ के शासनकाल के दौरान ही स्वीकार कर लिया गया था। अमेनहोटेप चतुर्थ ने अपना नाम बदलकर अखनातोन ("एटोन की आत्मा") रख लिया।

अखनातोन ने फिलिस्तीन और सीरिया के शाही राजकुमारों द्वारा भेजे गए कई निवेदनों (अमरना पत्र) पर ध्यान नहीं दिया,

जो आक्रमणकारियों को खदेड़ने में सहायता की मांग कर रहे थे, और साम्राज्य बिखर गया। निर्गमन की प्रारंभिक तिथि को स्वीकार करने से इब्रियों की विजय और उसके बाद की बसावट की प्रक्रिया अमेनहोटेप तृतीय और चतुर्थ के शासनकाल के दौरान होती है, ठीक उसी समय जब मिस्र का प्रभाव फिलिस्तीन पर समाप्त हो गया। हालाँकि, हबीरु, जिन्हें इन अपीलों में कुछ स्थानों पर हमलावरों के रूप में नामित किया गया है, उन्हें इब्रियों के रूप में नहीं पहचाना जाना चाहिए। उनके बारे में कही गई बहुत सी बातें इब्रियों के लिए सत्य नहीं हो सकती थीं।

जब अमेनहोटेप चतुर्थ की मृत्यु हुई, तो तुतनखामेन (1366–1357 ईसा पूर्व) मिस्र के सिंहासन पर बैठें। आठ या नौ वर्ष का युवा बालक अखनातोन के प्रिय सहयोगी, आई के साथ सह-शासक के रूप में जोड़ा गया। जब तुतनखामेन की नौ वर्ष बाद मृत्यु हुई, तो आई ने 1353 ईसा पूर्व तक शासन करना जारी रखा। 1922 में उनके भव्य और अप्रदर्शित मकबरे की खोज के कारण, तुतनखामेन को प्राचीन काल में उनकी वास्तविक महत्ता की तुलना में अधिक प्रसिद्धि मिली। उनकी कब्र से प्राप्त हजारों वस्तुएँ प्राचीन मिस्र की संपत्ति, भव्यता और कलात्मक उपलब्धियों को दर्शाती हैं और यह दिखाने में सहायता करती हैं कि मूसा ने मिस्र के धन को त्यागने का क्या अर्थ समझा (इब्रा 11:26)।

जब आई की मृत्यु हुई, तो सेना के प्रधान सेनापति हरम्हाब ने सिंहासन सम्भाला (1353–1319 ईसा पूर्व)। उन्होंने राज्य का पुनर्गठन किया और मजबूत सरकार की स्थापना की। सन्तानहीन मरते समय, हरम्हाब ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में सेना के सेनापति और वज़ीर, या प्रधान मंत्री, रामसेस प्रथम को नामित किया। रामसेस प्रथम (1319–1318 ईसा पूर्व) और सेती प्रथम (1318–1299 ईसा पूर्व) ने अखनातोन द्वारा खोए गए एशियाई साम्राज्य को पुनः स्थापित करने के लिए साहसी प्रयास किए। उनके प्रयासों के सम्बन्ध में, राजधानी को नदीमुख-भूमि में तानिस स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ से सैन्य अभियानों को अधिक प्रभावी ढंग से चलाया जा सकता था।

रामसेस II (1299–1232 ईसा पूर्व) ने फिलिस्तीन में मिस्री नियंत्रण को पुनः स्थापित करने के प्रयास को जारी रखा। अपने शासन के पाँचवें वर्ष में, उन्होंने सीरिया में ओरोंटेस नदी पर कादेश में हित्तियों से युद्ध किया और अपनी सेनाओं के विनाश से बाल-बाल बचे। इसके बाद, उन्होंने दक्षिणी फिलिस्तीन से उत्तरी सीरिया तक युद्ध किए। यदि इब्री उस समय भूमि में थे, जैसा कि निर्गमन की प्रारंभिक तिथि से पता चलता है, तो सम्भवतः उनका मिस्रियों से कभी सम्पर्क नहीं हुआ होगा क्योंकि वे फिलिस्तीन की पहाड़ियों में चरवाहे और अंगूर की खेती करने वाले थे, और रामसेस तटीय मार्ग पर चले। अन्ततः, अपने 21वें शासन वर्ष में, रामसेस ने हित्तियों के साथ शान्ति संधि की और अपने जीवन के अन्त तक इसे बनाए रखा। उन्होंने मिस्र भर में बड़े पैमाने पर निर्माण किया, विशेष रूप से अपनी राजधानी तानिस, थेब्स, अबू सिंबल (असवान के दक्षिण में), और नोप में। जो लोग निर्गमन की बाद की तिथि को स्वीकार करते हैं, उनका विश्वास है कि रामसेस द्वितीय ही निर्गमन का फ़िरौन था।

रामसेस द्वितीय के 13वें पुत्र, मेरनेप्टाह (1232–1222 ईसा पूर्व), एकमात्र मिस्री राजा थे जिन्होंने इब्रियों को युद्ध में हराने का दावा किया था। परन्तु कुछ विद्वानों का तर्क है कि उन्होंने कभी भी आसिया पर आक्रमण नहीं किया और इस कथन को राजा के आसपास के क्षेत्रों में अपने शत्रुओं पर विजय के पारंपरिक दावे के रूप में समझा जाना चाहिए, चाहे उन्होंने वास्तव में उनसे युद्ध में सामना किया हो या नहीं।

रामसेस तृतीय (1198–1164 ईसा पूर्व) ने अपने 5वें और 11वें शासन वर्ष में नदीमुख-भूमि पर लिबियाई आक्रमण को भी विफल किया, और अपने आठवें वर्ष में उन्होंने समुद्री लोगों के आक्रमण को विफल किया, जिनमें पलिश्ती भी शामिल थे। वे साम्राज्य काल के अन्तिम शासक थे जिन्होंने फिलिस्तीन और सीरिया में चौकियाँ बनाए रखीं। उनके बाद के अन्तिम वर्षों में मिस्री अर्थव्यवस्था बिगड़ गई, और महंगाई और सरकार की सार्वजनिक वेतन देने की क्षमता के टूटने से बड़ी पीड़ा हुई। भूख के कारण विरोध मार्च निकाले गए।

रामसेस चतुर्थ से ग्यारहवें (1167–1085 ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान राज्य में लगातार गिरावट आई। भ्रष्टाचार और मुद्रास्फीति बढ़ गई। रामसेस नवम (1138–1119 ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान बिना वेतन के भाड़े के सैनिक नदीमुख-भूमि में लुटेरों के रूप में घूमते प्रतीत होते हैं, और मकबरे की चोरी महामारी की स्थिति में पहुँच गई। अन्ततः हेरिहोर, जो नूबिया के वायसराय और दक्षिण में सैन्य बलों के कमांडर हेरिहोर थे, ने ऊपरी मिस्र पर नियंत्रण कर लिया और खुद को थीब्स में आमोन का महायाजक बना लिया। इस प्रकार साम्राज्य का अन्त हो गया।

उत्तर साम्राज्य काल

उत्तर साम्राज्य काल में, मिस्र लिबियाई राजाओं (945–712 ईसा पूर्व) और कूशी राजाओं (712–670 ईसा पूर्व) के शासन में आया। संक्षिप्त अवधि के लिए अश्शूरी प्रभुत्व (670–663 ईसा पूर्व) के बाद, स्वदेशी वंश ने खुद को स्थापित किया (663–525 ईसा पूर्व)। फिर फारसियों ने इस भूमि पर विजय प्राप्त की और सिकन्दर महान के 331 ईसा पूर्व में आगमन तक इसे अपने नियंत्रण में रखा। इसके बाद, टॉलेमी वंश ने मिस्र पर शासन किया जब तक कि 30 ईसा पूर्व में क्लियोपेट्रा की मृत्यु नहीं हो गई। उस समय रोमियों ने नियंत्रण ले लिया। वे भूमि पर नियंत्रण में थे जब मरियम और यूसुफ यीशु के जन्म के बाद वहाँ भाग गए। ग्रीको-रोमी काल के दौरान, युनानिवाद संस्कृति मिस्र पर हावी रही।

साम्राज्य के बाद के प्रारंभिक काल में, जब मिस्री संस्कृति अभी भी प्रमुख थी, कई राजा बाइबल इतिहास में उल्लेखित

हुए। यहूदा के राजा रहबाम के पाँचवें वर्ष (सम्भवतः 926 ईसा पूर्व) में, मिस्र के शीशक प्रथम ने यहूदा पर आक्रमण किया और वहाँ भारी विनाश किया (1 रा 14:25–26)। उन्होंने इस्राएल के क्षेत्र में भी प्रवेश किया, जैसा कि पुरातात्विक खोजों से पता चलता है। लगभग 700 ईसा पूर्व, राजा हिजकिय्याह और भविष्यद्वक्ता यशायाह के दिनों में, कूश के तिर्हाका ने यहूदियों की सहायता के लिए फिलिस्तीन में सेना का संचालन किया, जो आक्रमणकारी अश्शूरीयों के खिलाफ थी (2 रा 19:9)। सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व के अन्त के निकट, फ़िरौन नको ने कमजोर अश्शूर की सहायता के लिए यहूदा के माध्यम से सेना का संचालन किया। जब राजा योशियाह ने उन्हें रोकने की कोशिश की, तो इब्री सम्राट ने अपना जीवन खो दिया (2 रा 23:28–30)। यहूदा के राज्य के अन्तिम दिनों में, जब नबूकदनेस्सर यरूशलेम की घेराबंदी कर रहे थे (588–586 ईसा पूर्व), फ़िरौन होप्रा ने इब्रियों की सहायता करने और बाबुलियों को हराने के लिए फिलिस्तीन पर आक्रमण किया, परन्तु यह प्रयास असफल रहा। यिर्मयाह ने मिस्रियों के विनाश की भविष्यवाणी की थी (यिर्म 44:30)।

सामाजिक जीवन

सामाजिक वर्ग

सिद्धांत और व्यवहार में, राजा मिस्र की सारी भूमि का स्वामी था। वे दिव्या थे, और देवताओं ने उन्हें सारी भूमि का अधिकार सौंपा था। निश्चित रूप से, उन्होंने मन्दिर के समर्थन के लिए देवताओं को, अपने सबसे निष्ठावान समर्थकों को, और अपनी मृत्यु के बाद अपने स्वयं के पूजा पंथ के रखरखाव के लिए उपहार दिए। इस प्रकार, राज्य के बड़े हिस्से उनके हाथों से फिसल गए, परन्तु बहुत कुछ उनके आधिकार के स्वामित्व में रहा। यद्यपि मध्य राज्य की शुरुआत तक, धनवानों के पास भूमि के बड़े हिस्से थे, परन्तु राजा ने उनकी शक्ति को किनारे कर दिया और काफी मात्रा में भूमि को पुनः प्राप्त कर लिया। साम्राज्य के दौरान, राजा ने मन्दिरों को, विशेष रूप से थेब्स में आमोन के मन्दिर को, बड़ी भूमि दी। इस उदारता ने याजक के पद की शक्ति को आधिकार की कीमत पर बढ़ाया।

जैसे-जैसे अधिक मात्रा में भूमि आधिकार के नियंत्रण से बाहर हो गई, और जैसे-जैसे सामाजिक और आर्थिक जीवन अधिक जटिल होता गया, जटिल वर्ग संरचना विकसित हुई। मिस्री समाज का मुख्य विभाजन शिक्षित अभिजात वर्ग और अशिक्षित जनसमूह के बीच था, परन्तु ऐसा अवलोकन बहुत सरल है। शीर्ष पर शाही परिवार और महान धनवान थे। उनके नीचे कम धनवानों और अधिकारियों का दल था। नीचेवाला वर्ग कारीगरों का था जो दोनों उच्च वर्गों की सेवा करते थे। फिर, कम से कम साम्राज्य के दौरान, ऐसे किसान थे जो छोटे भूखंडों के मालिक थे और जिन्हें वे स्वयं जोतते थे। सामाजिक संरचना के सबसे नीचे स्वतंत्र श्रमिक और दास थे। दासत्व साम्राज्य के तहत ही आम हुआ, जब दास युद्ध के बन्दियों के रूप में प्राप्त किए गए, मुख्य रूप से उत्तर में फिलिस्तीन और सीरिया और दक्षिण में नूबिया में। कुछ दास महलों और बड़े संपत्तियों में घरेलू सेवा में चले गए, परन्तु उनमें से अधिकांश भूमि पर काम करते थे और कुछ खदानों में सेवा करते थे। मिस्र में दासत्व अन्य निकट पूर्वी देशों की तुलना में कभी भी उतना महत्वपूर्ण नहीं था।

पारिवारिक जीवन

मिस्रवासी आमतौर पर किशोरावस्था में ही विवाह कर लेते थे। बच्चों को तीन साल की उम्र में दूध पीना छुड़ाया जाता था। लड़कों का खतना 6 से 12 वर्ष की आयु के बीच किया जाता था। हालाँकि शिक्षा उच्च वर्ग के लड़कों के लिए थी, परन्तु लड़कियों को—विशेष रूप से शाही परिवारों की—अक्सर कुछ औपचारिक शिक्षा मिलती थी। मिस्री स्त्रियाँ अन्य निकट पूर्वी देशों की स्त्रियों की तुलना में स्पष्ट रूप से अधिक स्वतंत्रता और प्रतिष्ठा का आनन्द लेती थीं। वे काफी स्वतंत्र रूप से घूमती थीं; वे अपने पतियों के साथ व्यापार के कार्यकलापों और यहाँ तक कि सामाजिक आयोजनों में भी शामिल होती थीं। परिवार भी पति और पिता के साथ तब जा सकता था जब वह मछली पकड़ने या शिकार पर जाता था, हालाँकि वे कार्रवाई में भाग नहीं लेते थे। मिस्रवासी सामान्यतः एकपत्नी तक सीमित नहीं रहते थे, परन्तु हरम का आकार आर्थिक विचारों पर निर्भर करता था। फिर भी, प्रमुख पत्नी का दर्जा सुरक्षित था, और उनका पहला पुत्र ही उनके पति का उत्तराधिकारी होता था। स्त्रियों के लिए उपलब्ध व्यवसायों में याजक का पद, दाई का काम, शोक मनाना, नृत्य करना और शायद लेखन कार्य (शास्त्री के लिए स्त्रीलिंग शब्द था) शामिल थे।

मिस्री घरों में फर्नीचर साधारण होता था। बिस्तर, कुर्सियाँ, स्टूल, पायदान, और पानी के मटकों के लिए स्टैंड मुख्य वस्तुएँ प्रतीत होती थीं। भोजन की मेजों का उपयोग नहीं होता था; वहाँ भोजन की थालियों को रखने के लिए स्टैंड होते थे। दरिद्र लोग बस फर्श पर बैठते थे, फर्श पर चटाई बिछाकर सोते थे, और फर्श पर ही अपना भोजन मेज़पोश बिछातें थे।

घरों का निर्माण आमतौर पर मिट्टी की ईंटों से होता था। धनवानों के घर बगीचों के बीच स्थित होते थे और अक्सर उनमें सजावटी तालाब होते थे। कमरों को अन्दर से रंगीन किया जा सकता था और यहाँ तक कि भित्तिचित्रों से सजाया जा सकता था। छतें सपाट होती थीं और सबसे गर्म महीनों में दूसरा शयनकक्ष उपलब्ध कराया जाता था। घरों में कभी-कभी दूसरी मन्जिल भी होती थी। हालाँकि सरकारी परियोजनाओं पर काम करने वाले मजदूरों के दो या तीन गांवों के अवशेष मिले हैं, परन्तु प्राचीन मिस्र के महत्वपूर्ण शहरों के विन्यास या आकार के बारे में लगभग कुछ भी ज्ञात नहीं है।

मिस्र, मिस्री

वस्त्र

स्त्रियाँ लम्बे लिनन के वस्त्र पहनती थीं जो बगल से टखनों तक होते थे और कन्धे पर पट्टियों से बन्धे होते थे। साम्राज्य काल के दौरान, स्कर्ट को अधिक भरा हुआ और सिलवटदार बनाया गया। पुरुष कमरबन्द से बन्धे हुए लंगोट पहनते थे जो घुटने तक होते थे। उच्च वर्ग के लोग अक्सर इसे सामने से सिलवटदार रखते थे। मध्य राज्य और साम्राज्य के अन्तिम भाग के दौरान, लंगोट को मध्य पिंडली तक बढ़ा दिया गया, और पुरुष कभी-कभी छोटी आस्तीन वाली कुरती भी पहनते थे। आसियाई प्रभाव के परिणामस्वरूप, साम्राज्य के दौरान उच्च वर्ग के मिस्रवासी अक्सर रंगीन वस्त्र पहनते थे, जबकि अन्य कालों में सफेद वस्त्र प्रचलित थे।

पुरुष स्वच्छ-मुंडित (क्लीन-शेव) किए हुए रहते थे, परन्तु राजा और कुछ शीर्ष अधिकारी औपचारिक उद्देश्यों के लिए नकली दाढ़ी पहनते थे। पुरुष और स्त्रियाँ दोनों विग पहनते थे, और दोनों औषधीय और सजावटी उद्देश्यों के लिए आंखों का रंग लगाते थे। स्त्रियाँ लिपस्टिक और गालों पर गुलाबी रंग (रूज) लगाती थीं और अपने नाखूनों, हाथों की हथेलियों और पैरों के तलवों पर मेंहदी लगाती थीं। उच्च वर्ग के पुरुष और स्त्रियाँ विभिन्न प्रकार के आभूषण पहनते थे। सभी वर्गों के लोग अपनी त्वचा पर तेल और वसा लगाते थे ताकि उन्हें गर्म, शुष्क जलवायु में सुरक्षा मिल सके। इत्र का उपयोग भी सर्वव्यापी था।

मनोरंजन

प्राचीन मिस्र में कोई संगठित खेल नहीं थे। खिलाड़ी अकेले या अपने परिवारों के साथ बाहर जाते थे। वे मरूभूमि में धनुष और तीर और कुत्तों के साथ शिकार कर सकते थे, मछली पकड़ सकते थे, दलदल में बूमरैंग से पक्षियों को गिराने की कोशिश कर सकते थे, या रथ में सवारी कर सकते थे। किसानों के बीच लड़के और युवा पुरुष विशेष रूप से कुश्ती का आनन्द लेते थे। सैनिक युद्ध नृत्यों में भाग लेते थे, जो एक प्रकार का शारीरिक व्यायाम था। चेकर्स जैसे खेल को पुरुषों और स्त्रियों दोनों का प्रमुख इनडोर खेल माना जाता था।

व्यवस्था और दण्ड

राजा को सभी व्यवस्थाओं का स्रोत माना जाता था, और ऐसा प्रतीत होता है कि कोई लिखित संहिता नहीं थी जिस पर सभी अपील कर सकें। न्यायालय पिछले मामलों में स्थापित उदाहरणों का पालन करते थे, और समय-समय पर राजा नए आदेशों द्वारा कानूनी प्रणाली में संशोधन करते थे। न्यायालय में प्रक्रिया में सत्य बोलने की शपथ दिलाना, दोष लगानेवाला और आरोपी के भाषण, न्यायालय का निर्णय, और दरबारी अभिलेखपाल द्वारा टिप्पणीयाँ लेना शामिल था। कुछ मामलों में, स्वीकारोक्ति प्राप्त करने के लिए यातना का उपयोग किया जाता था।

राजद्रोह, हत्या, और झूठी गवाही उन अपराधों में से थे जिनके लिए मृत्युदण्ड था। झूठी गवाही को इतना गम्भीर माना जाता था क्योंकि न्यायालय की शपथ "फ़िरौन के जीवन की" शपथ ली जाती थी; इस प्रकार, झूठी शपथ लेना राजा को हानि पहुँचाने के समान था। अन्य गम्भीर अपराधों के लिए दण्ड के रूप में अंग-भंग (नाक या कान काटना) या खानों और पत्थर की खदानों में कठोर श्रम (जीवित मृत्यु) की सजा दी जाती थी। चोरी के दोषी व्यक्ति को जो उन्होंने लिया था उसका दुगुना या तिगुना चुकाने की सजा दी जा सकती थी। मामूली अपराधों के लिए पिटाई सामान्य दण्ड था। साम्राज्य के दौरान, मिस्र में प्रत्येक शहर में एक दल के साथ एक प्रकार का पुलिस बल था।

धर्म

सभी मिस्री जीवन धार्मिक विचारों से जुड़ा हुआ था। नील नदी को "नील का उपहार" मानते हुए, मिस्रवासियों ने इस महान नदी को "हापी" के रूप में पूजा। सूर्य, जो सभी चीजों को जीवन देता था, को आमोन-रे और एटन जैसे नामों के तहत देवता माना जाता था। राजा को देवताओं की सन्तान और कुछ अर्थों में देवता का अवतार माना जाता था। मूसा के समय में 10 विपत्तियाँ मिस्र के देवताओं पर आक्रमण थीं। नील नदी को लहू में बदलना, भूमि पर गहन अंधकार लाना, और दिव्य फ़िरौन के पहलौठे को मारना मिस्री देवताओं को अपमानित करना था, जैसे अन्य विपत्तियाँ भी विभिन्न रूपों में यही करती थीं।

हर व्यक्ति की सबसे बड़ी चिन्ता अमरता और अगले जीवन में देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त करना थी। मिस्रवासी मृत्यु के प्रति चिंतित नहीं थे; वे इस जीवन के जितने भी सुखद पहलू हैं, उन्हें अगले जीवन में जारी रखने या प्रक्षेपित करने का प्रयास करते थे।

प्राचीन मिस्री, आधुनिक पश्चिमी लोगों के विपरीत, निर्जीव संसार की कोई अवधारणा नहीं रखते थे। सभी स्वाभाविक घटनाएं व्यक्तिगत रूप से देखी जाती थीं और जब भी वे मनुष्य की गतिविधियों को प्रभावित करती थीं, तो वे मित्रवत या शत्रुतापूर्ण प्राणी के रूप में कार्य करती थीं। देवताओं को विभिन्न गतिविधियों या कार्यों के संरक्षक के रूप में देखा जाता था। इस प्रकार, मुड़ी-तंग वाला बौना बेस संगीत और गर्भाधान का संरक्षक था, और देवी तौरत (जो दरियाई घोड़ा, सिंहनी, और मगरमच्छ का संयोजन थी) का सम्बन्ध प्रसव से था। इन दोनों के आकर्षण बहुतायत में बनाए जाते थे, और ये दोनों देवता आम लोगों के बीच मिस्र के प्रमुख देवताओं की तुलना में अधिक पूजनीय प्रतीत होते हैं।

सभी देवताओं में सबसे महत्वपूर्ण "रे", या "रा", सूर्य देवता थे। फ़िरौन उनके भौतिक पुत्र और पृथ्वी पर उनके अवतार थे। जब वह मरे, तो वह अपने दिव्या पिता के साथ आकाश में मिल गए। "रे" ने देवता "शू" को उत्पन्न किया, जो वायु के व्यक्तित्व थे, और देवी टेफनट को, जो नमी के व्यक्तित्व थी।

इनसे दो सन्तानें उत्पन्न हुईं, गेब (पृथ्वी देवता) और नट (आकाश देवी)। किंवदंतियाँ मानव जाति के उत्पत्ति की विभिन्न कहानियाँ प्रस्तुत करती हैं। एक किंवदंती के अनुसार, "रे" ने अपने आँसुओं से मनुष्यों को उत्पन्न किया; दूसरी में "खनुम" ने उन्हें अपने कुम्हार के चाक पर बनाया। साम्राज्य के दौरान, थेब्स के देवता "आमोन" को "रे" के साथ पहचाना गया, और सूर्य देवता को इसके बाद आमोन-रे के नाम से जाना जाने लगा। थेब्स की महान त्रिमूर्ति थी आमोन, उनकी पत्नी मुत, और उनका पुत्र खोंसू (चंद्रमा देवता) थे।

आमोन-रे के महत्व के समकक्ष ओसिरिस, मृतकों के देवता (राजा) थे। किंवदंती के अनुसार, परोपकारी शासक ओसिरिस को उनके भाई ने मार डाला और उनकी पत्नी, आइसिस, उन्हें विभिन्न जादुई उपकरणों के माध्यम से जीवन में वापस लाई; इसके बाद, उन्होंने पश्चिम में धन्य मृतकों के राजा के रूप में शासन किया। अन्ततः ओसिरिस का अनुभव हर मनुष्य का अनुभव बन गया। आइसिस द्वारा उपयोग किए गए जादुई सूत्रों के माध्यम से, व्यक्ति ओसिरिस के पास आ सकता था और कुछ हद तक ओसिरिस बन सकता था। ऐसे सूत्रों के ज्ञान और उच्चारण के अलावा, व्यक्ति को धार्मिकता के तराजू में निर्णय के लिए न्यायालय में उपस्थित होना पड़ता था। यदि उन्हें गलत कार्यों से निर्दोष घोषित किया जाता, तो उन्हें ओसिरिस के राज्य में प्रवेश करने और एक धन्य परलोक का आनन्द लेने की अनुमति मिलती।

इनमें से कुछ धारणाएँ अगले जीवन में प्रवेश करने के बारे में प्राचीन राज्य के पिरामिड कब्रों की दीवारों पर दिखाई देने लगीं ("पिरामिड ग्रंथ")। मध्य राज्य के दौरान, इन्हें ताबूतों पर दर्ज किया गया ("ताबूत ग्रंथ")। साम्राज्य के दौरान, इन्हें "मृतकों की पुस्तक" के रूप में संकलित किया गया। साम्राज्य काल से लेकर लगभग 300 ईस्वी तक कब्रों की दीवारों पर अंश अंकित होते रहे।

सीखना और संस्कृति

भाषा और लेखन

प्राचीन मिस्री भाषा सामी और हामी भाषाओं से सम्बन्धित थी। लगभग 311 ईसा पूर्व तक, दोनों हीरोग्लिफिक्स (शिलालेखों और अधिक औपचारिक लेखन में उपयोग किए जाने वाले चित्रात्मक अक्षर) और हायरेटिक (अधिक प्रवाहमान लेखन शैली) उपयोग में था। हीरोग्लिफ्स पत्र, अक्षर, ध्वनि, शब्द, या विचार के लिए खड़े हो सकते हैं। फ्रांस्वा शैम्पोलियन ने 1822 में मुख्य रूप से रोसेटा पत्थर की सहायता से हीरोग्लिफ्स के अर्थ को समझा। लगभग 700 ईसा पूर्व, अधिक तेज़ लिपि जिसे डेमोटिक कहा जाता था, अस्तित्व में आई और प्रारंभिक मसीही समय तक लिखी जाती रही। इसके बाद, कोप्टिक, प्राचीन मिस्री भाषा, कुछ अतिरिक्त अक्षरों के साथ यूनानी लिपि में लिखी जाने लगी।

शिक्षा

मिस्री शिक्षा, जो लगभग विशेष रूप से उच्च वर्ग के लड़कों के लिए उपलब्ध थी, याजक का पद, सरकारी कार्यालयों, या व्यवसायों के लिए प्रशिक्षित कर्मियों को प्रदान करने के लिए रूपांकित की गई थी। बहुत कम लोगों को शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिला। लड़के अपनी प्रशिक्षण प्रारंभिक आयु में शुरू करते थे, आमतौर पर लगभग चार वर्ष की आयु में। कक्षाएं सुबह जल्दी शुरू होती थीं और आमतौर पर दोपहर तक समाप्त हो जाती थीं, ताकि दिन की गर्मी से बचा जा सके। पढ़ाई, लेखन, और गणित मानक पाठ्यक्रम थे। समाज के सभी अगुएं लोगों के लिए अच्छी लिखावट और पत्र लिखने की क्षमता आवश्यक थी। वाक्पटुता (भाषण-कला) का भी महत्व था। अनुकरण द्वारा सीखना हस्तलेखन नमूनों और आदर्श पत्रों की नकल करके प्राप्त किया जाता था। पत्थर के टुकड़े और मिट्टी के बर्तन सस्ते लेखन पट्टीयाँ प्रदान करते थे, जबकि पेपिरस महत्वपूर्ण रचनाओं के अन्तिम मसौदे के लिए आरक्षित होता था। गणित का ज्ञान विशेष रूप से सरकारी कार्यालयों में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए महत्वपूर्ण था, जहाँ कर वस्तुओं के रूप में एकत्र किए जाते थे।

शिक्षा का सर्वोच्च रूप याजकीय प्रशिक्षण था, और राजकुमार याजकों के विद्यालय में दाखिला ले सकते थे। परन्तु अक्सर उन्हें राजभवन में आयोजित कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा शिक्षित किया जाता था। ऐसी कक्षाएं सामान्यतः हरम के बच्चों के लिए होती थीं; राजकुमारियाँ और गैर-राजसी बच्चे भी उनमें शामिल हो सकते थे।

प्राथमिक विद्यालय के बाद, लड़का "जीवन के घर" में जा सकता है, जो एक प्रकार का अकादमी या वरिष्ठ विद्यालय था। वहाँ उत्कृष्ट व्यक्ति विभिन्न विषयों (जिनमें औषधि भी शामिल है) पर व्याख्यान देते थे। सम्भवतः एथेंस में प्लेटो की अकादमी के समान, ऐसे "घर" में कोई निर्धारित पाठ्यक्रम या नियमित परीक्षाएं नहीं होती थीं। वे पुस्तकालयों से सुसज्जित होते थे।

विज्ञान

प्राचीन मिस्रवासी अनुप्रयुक्त गणित, खगोल विज्ञान, और औषधि में निपुण थे। नील नदी की वार्षिक बाढ़ ने जल के उतरने के बाद भूमि का पुनः सर्वेक्षण करने की क्षमता के प्रारंभिक विकास की आवश्यकता उत्पन्न की। सिंचाई प्रणाली का निर्माण करने के लिए इंजीनियरिंग कौशल आवश्यक था, जिस पर सभी मिस्री जीवन निर्भर था। इसके अलावा, उनके विशाल निर्माण परियोजनाओं के लिए गणित का ज्ञान आवश्यक था। मिस्रवासी जोड़ और घटाना कर सकते थे, परन्तु गुणा और भाग के लिए उनके पास जटिल प्रक्रियाएँ थीं। वे वर्ग, त्रिभुज, आयत, और वृत्त का क्षेत्रफल निकाल सकते थे और ज्यामिति में सरल अभ्यास कर सकते थे। ऐसा माना जाता है कि उनके अधिकांश गणितीय सफलताओं के लिए अनुभव जिम्मेदार था, न कि गणितीय तर्क क्षमता। वे समझते

थे कि कैलेंडर में 365¼ दिन होने चाहिए, और उन्होंने वर्ष को 12 महीनों में और महीनों को तीन 10-दिवसीय सप्ताहों में विभाजित किया। 2000 ईसा पूर्व तक, उन्होंने उपयुक्त जल घड़ी का आविष्कार कर लिया था।

उनके विस्तृत शव संरक्षण के अभ्यास के साथ, यह अपेक्षा की जा सकती है कि उनका शरीर रचना का ज्ञान श्रेष्ठ होगा। उन्होंने चोटों और बीमारियों के बीच अन्तर किया और कुछ अद्भुत शल्य चिकित्सा की। उपचार, हालाँकि, वैज्ञानिक और अंधविश्वासी प्रयासों का जिज्ञासु संयोजन था। मिस्री वैज्ञानिकों ने, व्यावहारिक के बजाय सैद्धांतिक प्रेरणा के साथ, खगोलशास्त्र, रसायन विज्ञान, भूगोल, औषधि, शल्य चिकित्सा, गणित, और स्वाभाविक इतिहास के बारे में तथ्यों का विशाल संग्रह एकत्र किया।

वास्तुकला

प्राचीन मिस्रवासियों ने जब अपने भव्य मन्दिरों का निर्माण किया, तो वे स्थिरता और स्थायी गुणों को लेकर सबसे अधिक चिंतित थे। वे हमेशा के लिए बने रहने के लिए बनाए गए थे। इसलिए उन्हें पत्थर (आमतौर पर चूना पत्थर या बलुआ पत्थर) से बनाया गया और विशाल स्तम्भों पर समर्थित बड़े पत्थर की पट्टियों से छत बनाई गई। स्तम्भों के शीर्ष का डिज़ाइन आमतौर पर कमल, सरकण्डा, या सोर पत्तों पर आधारित होता था। राजा की महान मूर्तियाँ इन मन्दिरों के अन्दर रखी जाती थीं; केवल वास्तुशिल्प सजावट के रूप में, ये मूर्तियाँ कठोर और औपचारिक दिखाई देती थीं। मन्दिर में प्रकाश उठे हुए केन्द्रीय हॉल के किनारे की खिड़कियों से प्रवेश करता था; किनारे की गलियारे अपेक्षाकृत नीची होती थीं। हालाँकि इन मन्दिरों की छतें सपाट थीं, मिस्रवासियों को कम से कम 2700 ईसा पूर्व तक गोल मेहराब बनाना आता था। शेष बचे मन्दिरों में सबसे महान लक्सर के कर्णक का मन्दिर है। वहाँ का हाइपोस्टाइल हॉल, जिसे रामसेस द्वितीय ने बनवाया था, जिसमें 134 बलुआ पत्थर के स्तम्भों का वन है, जिनमें से केन्द्रीय मार्ग में 12 स्तम्भ हैं जो 70 फीट (21.3 मीटर) की ऊँचाई तक पहुँचते हैं, जो प्राचीन विश्व के सबसे ऊँचे स्तम्भ हैं।

पुराने राज्य के फ़िरौन ने नोप के दक्षिण में नील नदी की पश्चिमी तट के साथ महान पिरामिडों का निर्माण किया। मध्य राज्य के फ़िरौन ने फ़यूम क्षेत्र में छोटे पिरामिडों का निर्माण किया। साम्राज्य काल के दौरान, उन्होंने थीब्स के पश्चिम में चट्टानों से कब्रों को तराशा। ईश्वरीय प्राणी के रूप में फ़िरौन ने थीब्स में अपनी कब्रों की दीवारों को धार्मिक दृश्यों से सजाया। धनवानों ने अपनी कब्रों को रोजमर्रा के जीवन के दृश्यों से सजाया—ताकि वे अपनी उस जीवन शैली को मृत्यु के बाद भी जारी रख सकें।

घर कच्ची ईंटों से बनाए जाते थे; जिनमें से कुछ आज भी अमार्ना में और कुछ छोड़े गए श्रमिक के शिविरों में बचे हुए हैं।

संगीत

मिस्री संगीत के बारे में जो कुछ भी ज्ञात है, वह कब्रों में पाए गए वाद्य यंत्रों या कब्र की दीवारों पर चित्रित वाद्य यंत्रों के चित्रण से प्राप्त किया जाना चाहिए। धार्मिक अनुष्ठानों में उपयोग किए जाने वाले तीन वाद्य यंत्र थे सिस्ट्रम, डफली, और खड़कियाँ (कास्टनेट्स)। सिस्ट्रम धातु का लूप था जो हैंडल से जुड़ा होता था। लूप के किनारों में छेद किए गए थे ताकि तीन धातु की छड़ें उसमें ढीली जुड़ी रह सकें। जब सिस्ट्रम को हिलाया जाता था, तो छड़ें खड़खड़ाती थीं। यह वही वाद्य यंत्र है जिसका उल्लेख 2 शमूएल 6:5 में किया गया है। मिर्याम ने लाल समुद्र पार करने के बाद उत्सव में मिस्री डफली का उपयोग किया (निर्ग 15:20)।

प्राचीन मिस्र में तार वाले वाद्ययंत्रों में बीन, वीणा, सारंगी और एक प्रकार की गिटार शामिल था। वायु वाद्ययंत्रों में एकल और युगल बाँसुरी और तुरही शामिल थीं, जिनका उपयोग केवल सैन्य उद्देश्यों के लिए किया जाता था। प्रारंभ में, वाद्ययंत्रों का उपयोग गायक या नर्तक के साथ अकेले किया जाता था। साम्राज्य काल के दौरान ऑर्केस्ट्रा अस्तित्व में था, जब इस्राएल मिस्री दासत्व से बच निकले थे।

*यह भी देखें*निर्गमन; फ़िरौन; मिस्र पर विपत्तियाँ।

मिस्रपोतमैम

मिस्रपोतमैम

इस्राएलियों ने उत्तरी स्थानों में से एक में भागती हुई कनानी सेनाओं का पीछा किया, जो मेरोम के जल में पराजित हुई थीं (यहो 11:8)। मिस्रपोतमैम, जिसका अर्थ है "जल का दहन," भूमि की सीमा का एक भाग परिभाषित करता है, और यह यहोशू के दिनों में इस्राएल द्वारा अभी तक अधिकार न किए गए क्षेत्र की सीमा का एक भाग था (13:6)। सभी संभावनाओं में, मिस्रपोतमैम खिरबेत एल-मुशैरिफेह के पास भूमध्य सागर के जलस्रोतों के समूह के समान है, जो सीदोन से 20 मील (32.2 किलोमीटर) दक्षिण और सोर से 6 मील (9.7 किलोमीटर) उत्तर में, रस एन-नकूरा के अड्डा पर स्थित है।

मिस्री

रोम का अज्ञात विरोधी जिसने कई बर्बर हत्यारों (सिकारी) के साथ जंगल में विद्रोह का नेतृत्व किया। यरूशलेम के मन्दिर में हाहाकार के बाद, हाकिम क्लौदियुस लूसियास ने प्रेरित पौलुस को चुनौती दी, यह पूछते हुए कि क्या वे मिस्री बलवाई थे (प्रेरि 21:38)। जोसेफस के अनुसार, मिस्री ने यहूदी बलवाई का नेतृत्व किया जिसे राज्यपाल फेलिक्स द्वारा दबा दिया गया था। हत्यारों की संख्या के बारे में विवरण भिन्न है,

लेकिन सभी एक बलवाई की ओर संकेत करते है जिसे एक ऐसे मिस्री ने नेतृत्व किया जो स्पष्ट रूप से बच निकला।

मीकल

मीकल

शाऊल की छोटी पुत्री मीकल (1 शमू 14:49) दाऊद से प्रेम करने लगी जब उसने गोलियत को पराजित किया (18:20)। शाऊल, जो दाऊद से ईर्ष्या करता था, ने पहले अपनी बड़ी पुत्री मेरब को दाऊद को देने की पेशकश की, लेकिन दाऊद ने विनम्रता से इसे अस्वीकार कर दिया। जब शाऊल को मीकल के प्रेम के बारे में पता चला, तो उसने फिर से दाऊद को विवाह का प्रस्ताव दिया, लेकिन एक शर्त रखी—दाऊद को 100 पलिश्तियों को मारने का प्रमाण देना था। शाऊल को लगा कि यह शर्त दाऊद की मृत्यु सुनिश्चित कर देगी।

दाऊद ने शाऊल की शर्त को दोगुना पूरा किया और मीकल से विवाह किया। लेकिन इससे शाऊल की ईर्ष्या और बढ़ गई, और उसने दाऊद की हत्या की योजना बनाई। जब मीकल को इस षड्यंत्र के बारे में पता चला, तो उसने अपने पति को बचने में सहायता की (1 शमू 19:8–17)। दाऊद की बँधुआई के दौरान, शाऊल ने मीकल को पलती को दे दिया (25:44)।

शाऊल की मृत्यु के बाद, अब्नेर ने दाऊद के साथ संधि की, जिसमें एक शर्त मीकल को दाऊद के घर लौटाना भी था। यह कार्य पलती के शोक के बावजूद पूरा किया गया (2 शमू 3:12–16)। लेकिन मीकल और दाऊद के बीच पहले जैसा प्रेम नहीं रहा। जब दाऊद वाचा के सन्दूक के साथ नाचते हुए यरूशलेम लौटा, तो मीकल ने उसकी कठोर आलोचना की। दाऊद ने भी उतने ही तीखे शब्दों में उत्तर दिया। इसके परिणामस्वरूप, मीकल जीवनभर बाँझ रही। , (के.जे.वी. में 2 शमूएल 21:8 में निम्नतर हस्तलिपि के आधार पर मीकल को पाँच पुत्रों की माता बताया गया है, जबकि वास्तव में अद्रिएल, मेरब का पति था—जिसे आधुनिक अनुवादों में सही किया गया है।)

दाऊद की अत्यधिक लोकप्रियता मीकल द्वारा प्रदर्शित साहस और जुनून को छिपा नहीं सकती। उन्होंने उस समय अपने प्रेम को प्रकट किया जब महिलाएं शायद ही प्रेम संबंधों में पहल करती थीं, अपने जीवन के जोखिम पर दाऊद का जीवन बचाया, पलती से जबरन विवाह और अलगाव के कारण भावनात्मक रूप से पीड़ित हुईं, और सार्वजनिक राय के विपरीत अपनी महत्वपूर्ण धारणाओं को व्यक्त किया।

मीका

मीका एक सामान्य नाम है, जो मीकायाह के साथ अदल-बदल कर उपयोग किया जाता है और संभवतः मीकायाह का संक्षिप्त रूप है।

1. मपीबोशेत का पुत्र। उन्होंने अपने पिता के लिए दाऊद की उदारता के भाग्य में और ज़ीबा के विश्वासघात में साझा किया (2 शमू 9:12)।

2. लेवियों और जिक्रि के पुत्र आसाप के कुल से (1 इति 9:15), जो मंदिर में संगीत सेवा करते थे। वे उन बँधुआई में गए याजकों में से एक प्रतीत होते हैं जिनके पुत्र मत्तन्याह बँधुआई से लौटने वालों के पहले दल में थे (जिन्हें "जब्दी का पुत्र" भी कहा जाता है, नहे 11:17, 22, और मिकायाह, जक्कूर का पुत्र, 12:35)।

3. वह जिन्होंने बँधुआई के बाद के युग में एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाई (नहे 10:11)।

मीका (व्यक्ति)

1. एप्रैमी न्यायाधीश जिन्होंने मूर्तियाँ बनवाईं और फिर एक लेवी को अपना याजक बनने के लिए नियुक्त किया (न्या 17–18).

2. शिमी के वंशज रूबेन के गोत्र से थे (1 इति 5:5).

3. मीका, मपीबोशेत के पुत्र और राजा शाऊल के परपोते की वैकल्पिक वर्तनी, 1 इतिहास 8:34–35; 9:40–41 में है। *देखें* मीका #1।

4. 1 इतिहास 9:15 में जिक्रि के पुत्र मीका की के.जे.वी. वर्तनी है। *देखें*मीका #2.

5. कहात के वंश से लेवियों और उज्जीएल के पुत्र, जिनकी मंदिर की जिम्मेदारियों में फर्नीचर और उपकरणों की देखभाल शामिल थी (1 इति 23:20; 24:24–25).

6. 2 इतिहास 34:20 में अकबोर के पिता, मिकायाह का वैकल्पिक वर्तनी है। *देखें*मिकायाह #2।

7. भविष्यवक्ता और उस पुराने नियम पुस्तक के लेखक जिनका नाम उनके नाम पर है (मी 1:1)। मोरेशेत के निवासी, जो यरूशलेम से लगभग 21 मील (33.8 किलोमीटर) दक्षिण-पश्चिम में एक शहर है, मीका ने योताम, आहाज और हिजकिय्याह (750–686 ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान उत्तरी और दक्षिणी दोनों राज्यों के लिए भविष्यवाणी की। मीका 1:9 के अनुसार, वे 701 ईसा पूर्व में अभी भी भविष्यवाणी कर रहे थे जब सन्हेरीब के अधीन अश्शूरी सेनाओं ने यरूशलेम की घेराबंदी की (तुलना करें यश 36–37)। लगभग 100 साल बाद, मीका को यरूशलेम के विनाश की भविष्यवाणी करने वाले एक प्रारंभिक भविष्यवक्ता के

उदाहरण के रूप में उपयोग किया जाता है (तुलना करें यिर्म 26:16–19)।

यह भी देखें मीका की पुस्तक; भविष्यद्वक्ता और भविष्यद्वक्तिन.

मीका की पुस्तक

12 छोटे भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के क्रम में यह छठी पुस्तक है।

समीक्षा

- लेखक
- तिथि
- दर्शक
- पृष्ठभूमि
- उद्देश्य और सन्देश
- विषय-वस्तु

लेखक

मीका 1:1 में कहा गया है कि प्रभु का वचन मोरेशेत के मीका के पास आया। मीका अपने समय के लोगों के लिए परमेश्वर के प्रवक्ता थे। मीका को अपनी पुस्तक में भविष्यद्वक्ता नहीं कहा गया है। उनके भविष्यद्वक्ता बनने के लिए परमेश्वर के बुलाहट का कोई विवरण नहीं है, परन्तु वे परमेश्वर के साक्षी होने का दावा करते हैं (पद 2)। पुस्तक में पाँच बार सन्देशवाहक रूप, "यहोवा की यह वाणी है," का उपयोग किया गया है (2:3; 3:5; 4:6; 6:1, 9), यह दर्शाते हुए कि सन्देश परमेश्वर की ओर से है। मीका, एक सच्चे भविष्यद्वक्ता की तरह, दावा करते हैं, "परन्तु मैं तो यहोवा की आत्मा से शक्ति, न्याय और पराक्रम पाकर परिपूर्ण हूँ कि मैं याकूब को उसका अपराध और इस्राएल को उसका पाप जता सकूँ" (3:8)।

प्राचीन इस्राएल में मीका नाम सामान्य था। कम से कम सात अलग-अलग व्यक्तियों को पुराना नियम में मीका या मिकायाह कहा गया है। भविष्यद्वक्ता का उल्लेख पुराने नियम में केवल मीका 1:1 और यिर्मयाह 26:18 में नाम से किया गया है।

मीका (मीक 1:1) की प्रस्तावना में उनके गृहनगर का नाम मोरेशेत दिया गया है, जिसकी पहचान आधुनिक गाँव तेल एल जुडेइदेह से की जा सकती है, जो यरूशलेम से लगभग 25 मील (40.2 किलोमीटर) दक्षिण-पश्चिम में अजेकाह से लाकीश की सड़क पर स्थित है। मीका के समय में मोरेशेत, पलिश्ती नगर गत के पास एक सीमावर्ती गाँव था। एक सीमावर्ती नगर के रूप में, मोरेशेत अक्सर दक्षिण और पश्चिम से यहूदा पर शत्रु हमलों का सामना करता था (1:15)। ऐसा एक हमला 10–16 पदों में प्रतिबिंबित हो सकता है, जहाँ दक्षिण-पश्चिम यहूदा के 12 नगरों का नाम एक आक्रमणकारी के मार्ग में होने के रूप में दिया गया है। मोरेशेत-गत उस सूची में नौवें स्थान पर है। क्योंकि मीका इस सीमा नगर में रहते थे, उन्होंने "लोगों" के साथ एक अंतरराष्ट्रीय चिन्ता व्यक्त की (1:2; 4:1–5, 11; 5:7–15; 7:16–17)। एक छोटे नगर के नागरिक के रूप में, मीका किसानों और छोटे भूमि धारकों के साथ पहचान कर सकते थे, जो अक्सर विदेशी आक्रमणकारियों और यरूशलेम के शासकों और लालची भूमि हड़पने वालों के शिकार होते थे (2:1–4)। हालाँकि मीका ने यरूशलेम में रहने और प्रचार करने के लिए मोरेशेत को छोड़ दिया था, उनके पास नगरों के लिए कठोर वचन थे (1:5–6; 3:12; 4:10; 5:11, 14; 6:9)।

तिथि

मीका की सेवकाई का समय यहूदा के तीन राजाओं के शासनकाल के दौरान था: योताम (लगभग 750–735 ई.पू.), आहाज (लगभग 735–715 ई.पू.), और हिजकिय्याह (लगभग 715–686 ई.पू.)। इन तीनों राजाओं के शासनकाल की अधिकतम अवधि 60 वर्षों से अधिक थी (750–686 ई.पू.), परन्तु यह सम्भावना नहीं है कि मीका इस पूरे समय के दौरान भविष्यद्वक्ता के रूप में सक्रिय रहे। यिर्मयाह ने हिजकिय्याह के शासनकाल में मीका की सेवकाई की तिथि बताई है (यिर्म 26:18)। मीका की कुछ भविष्यवाणियाँ सामरिया के पतन से पहले की प्रतीत होती हैं (मीक 1:2–7; 6:16), जो 722 ई.पू. में हुआ था। मीका के समय में अश्शुर इस्राएल का मुख्य शत्रु प्रतीत होता है (5:5–6), यह स्थिति ऊपर सूचीबद्ध तीन राजाओं के शासनकाल के दौरान बनी रही। मीका और यशायाह (मीक 4:1–4; यशा 2:2–4) और मीका और आमोस के बीच (मीक 6:10–11; आमो 8:5–6) के बीच कुछ उल्लेखनीय समान्तर अंशों से यह सम्भावना बनाती हैं कि मीका की सेवकाई आठवीं शताब्दी ई.पू. के अन्तिम भाग में हुई थी।

दर्शक

मीका का सन्देश सार्वभौमिक था। इसे पहले व्यापक रूप से "संसार के सभी लोगों" को सम्बोधित किया गया था (मीक 1:2), परन्तु जल्द ही इसका ध्यान यरूशलेम और सामरिया (1:1) के राजधानी नगरों पर केन्द्रित हो जाता है। यहूदा के अन्य नगर एक भविष्यद्वाणी का विषय हैं (1:10–16)। धनी भूमि हड़पने वालों (2:1), झूठे भविष्यद्वक्ताओं (2:6–11; 3:5–7), न्यायियों, भविष्यद्वक्ताओं, याजकों, और बेईमान व्यापारियों के समूह (3:1, 11; 6:10–12) अन्य सन्देशों के विषय हैं।

मीका की पुस्तक

पृष्ठभूमि

मीका की पुस्तक को सही ढंग से समझने के लिए, प्राचीन इस्राएल के इतिहास में अश्शूरी संकट का ज्ञान होना आवश्यक है। आठवीं शताब्दी ई.पू. के प्रारम्भिक भाग के दौरान, इस्राएल और यहूदा के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों ने यारोबाम द्वितीय (793–753 ई.पू.) और उज्जियाह (792–740 ई.पू.) के लम्बे और स्थिर शासन के तहत शान्ति और समृद्धि की अवधि का अनुभव किया। इस लम्बे समय के दौरान इस्राएल और यहूदा में आर्थिक संरचना में गहरे परिवर्तन हुए। नगरों का उदय हुआ और एक नया धनी वर्ग उभरा। वाणिज्य अत्यधिक बढ़ गया। अमीर और भी अमीर हो गए और उन्होंने दरिद्रों, याजकों और न्यायियों पर अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया। एक वर्ग प्रणाली उभरी जिसने पुरानी वाचा धर्म के मूल पर प्रहार किया।

यारोबाम द्वितीय और उज्जियाह के शासनकाल के दौरान, इस्राएल और यहूदा बाहरी हस्तक्षेप से अपेक्षाकृत मुक्त थे। परन्तु 745 ई.पू. में तिग्लत्पिलेसेर तृतीय अश्शूर का राजा बना और एक साम्राज्य बनाने के लिए निकल पड़ा। उसने 732 ई.पू. में दमिश्क पर कब्जा कर लिया और इस्राएल, यहूदा और पलिश्ती के छोटे राज्यों को अधीनस्थ बना लिया। 727 ई.पू. में तिग्लत्पिलेसेर तृतीय की मृत्यु हुई और शल्मनेसेर पंचम उसका उत्तराधिकारी बना। 724 ई.पू. में, इस्राएल के अन्तिम राजा होशे ने अश्शूर को कर देना बन्द कर दिया और अश्शूरियों के क्रोध को झेलना पड़ा। शल्मनेसेर पंचम ने 724 ई.पू. में सामरिया की घेराबंदी शुरू की, परन्तु लोग 722 ई.पू. तक लोगों को वश में नहीं किया गया था। उस समय सर्गोन द्वितीय अश्शूर का राजा था। सामरिया के कई धनी और प्रभावशाली लोगों को अश्शूर में बन्दी बनाकर ले जाया गया (2 रा 15:29–30; 17:1–41)। यहूदा इस संकट से नहीं बच सका। यद्यपि अश्शूरियों द्वारा यरूशलेम में यहूदी राजाओं की एक खण्डित सरकार छोड़ दी गई थी, परन्तु उनकी लगभग सभी स्वतंत्रताएं छीन ली गईं थी (2 रा 16:10)। यहूदा कभी भी अश्शूरी संकट से न तो राजनीतिक रूप से और न ही धार्मिक रूप से पूरी तरह से उबर सका।

उद्देश्य और सन्देश

मीका की पुस्तक लगभग 20 अलग-अलग खण्डों या भविष्यद्वाणियों से बनी है। पुस्तक में विभिन्न विषयों के बारे में भिन्न सामग्री है, जो सम्भवतः विभिन्न अवधियों से आती है। इस विविधता के साथ, पुस्तक के मुख्य सन्देश के बारे में बात करना कठिन है। हालांकि, कुछ विषय पुस्तक में प्रमुख हैं, जिनमें सबसे प्रमुख न्याय है। यह सामरिया (मीक 1:2–6) और यरूशलेम (3:9–12) पर आ रहा है। यह दोषी भूमि हड़पने वालों (2:3–5), झूठे भविष्यद्वक्ताओं, भ्रष्ट न्यायियों, और वेतनभोगी याजकों (3:5–12) पर आ रहा है। न्याय का दण्ड धोखेबाज, हिंसक, झूठे, और छल करने वालों पर आ रहा है (6:9–12)। न्याय का दण्ड जातियों पर आ रहा है (4:11–13; 5:5–9, 15; 7:16–17)। न्याय पाप के कारण होता है (1:5)। मीका में पाप के कई रूप बताए हैं, मूर्तिपूजा से लेकर (1:7; 5:13), जादू-टोना करने (5:12), चोरी करने (6:11), झूठ बोलने (6:12), माता-पिता के प्रति अवमानना (7:6), और हत्या तक (7:2)।

मीका के अनुसार पाप के लिए उपाय क्या है? जातियों के लिए यह परमेश्वर के मार्गों का ज्ञान और उनकी आज्ञाओं का पालन करना है (4:2)। इस्राएल के लिए यह है "कि तू न्याय से काम करे, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले" (6:8)। यह सब इसलिए सम्भव है क्योंकि परमेश्वर अधर्म को क्षमा करते हैं और हमेशा क्रोधित नहीं रहते। वह करुणा के परमेश्वर हैं, जो अधर्म को पैरों तले रौंदते हैं, पापों को समुद्र की गहराई में डालते हैं, और अब्राहम के साथ अपनी वाचा को बनाए रखते हैं (7:18–20)। मीका ने परमेश्वर के भविष्य के राज्य की एक झलक देखी जब उन्होंने देखा कि इस्राएल के भविष्य का एक शासक बैतलहम में जन्म लेगा। वह प्रभु की शक्ति में अपनी भेड़-बकरियों को चराएगा। वह सुरक्षा प्रदान करेगा क्योंकि वह पृथ्वी के छोर तक महान होगा (5:2–4)।

विषयवस्तु

कुछ विद्वान पुस्तक को दो भागों में विभाजित करते हैं। पहला भाग (अध्याय 1–5) मुख्य रूप से जातियों को सम्बोधित करता है, जबकि दूसरा भाग (अध्याय 6–7) मुख्य रूप से इस्राएल को सम्बोधित करता है। पहला भाग जातियों पर न्याय की चेतावनी के साथ समाप्त होता है (5:15) और दूसरा परमेश्वर की करुणा के लिए एक स्तुति के साथ समाप्त होता है। हालांकि, यह रूपरेखा बहुत सरल प्रतीत होती है और दोनों भागों में विविध सामग्री को शामिल नहीं करती है। अन्य विद्वान पुस्तक को तीन भागों में विभाजित करते हैं: अध्याय 1–3 (न्याय); अध्याय 4–5 (आशा); और अध्याय 6–7 (न्याय और आशा)। एक बार फिर से यह रूपरेखा भी बहुत सरल है क्योंकि सभी तीन खण्डों में न्याय और आशा दोनों शामिल हैं। शायद पुस्तक को तीन भागों में विभाजित करना बेहतर होगा, जो अध्याय 1, 3, और 6 से शुरू होते हैं। प्रत्येक खण्ड न्याय के शब्दों से शुरू होता है (1:2–2:11; 3:1–12; 6:1–7:6) और आशा के सन्देश पर समाप्त होता है (2:12–13; 4:1–5:15; 7:7–20)। पुस्तक को समग्र रूप से देखने के प्रयास में इस तरह की रूपरेखा मूल्यवान हो सकती है, परन्तु पुस्तक की सही व्याख्या करने के लिए प्रत्येक भविष्यद्वाणी या इकाई पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता है। यह चर्चा प्रत्येक 20 इकाइयों को अध्याय और पद द्वारा चिह्नित करती है, इसके साहित्यिक रूप की पहचान करती है, और इसके मूल भाग या प्रमुख विषय को निर्धारित करती है।

पहली इकाई, "प्रभु आ रहा है," 1:2–7 से बनी है। इसका स्वरूप एक मुकदमे और एक दिव्य दर्शन है। संसार के लोगों को बुलाया जाता है कि वे सुनें कि प्रभु उनके खिलाफ क्या

साक्ष्य देंगे। उन्हें अपने स्वर्गीय मन्दिर को छोड़कर पृथ्वी पर आने के लिए और पहाड़ों की चोटी पर चलने के लिए वर्णित किया गया है जो उनके नीचे पिघल जाते हैं (1:2–4)। परमेश्वर का आना लोगों के पापों के कारण है। इस्राएल के उत्तरी राज्य की राजधानी सामरिया के नष्ट किए जाने का मुख्य कारण मूर्तिपूजा है (पद 5–7)।

दूसरा अंश है "भविष्यद्वक्ता का विलाप" (1:8–16)। भविष्यद्वक्ता दक्षिण-पश्चिम से आती हुई एक शत्रु सेना को देख रहे हैं। बारह नगर इसके रास्ते में हैं। विनाश, शरणार्थी, और बन्धक इसका परिणाम हैं। गत को छोड़कर प्रत्येक नगर के नाम पर एक शब्द है, जिसे प्रत्येक नगर के भाग्य को व्यक्त करने के लिए बनाया गया है। कुछ नगर अच्छी तरह से जाने जाते हैं, जैसे लाकीश, यरूशलेम, मोरेशेत-गत, और अदुल्लाम। अन्यों की पहचान नहीं की जा सकती। यह अंश इंगित करता है कि भले ही पहली भविष्यद्वाणी जातियों को सम्बोधित की गई थी और विशेष रूप से सामरिया के पतन की घोषणा की गई थी, मीका की वास्तविक चिन्ता यहूदा था।

तीसरा अंश है "धनवान दुष्टों के लिए हाय" (2:1–5)। यह एक हाय भविष्यद्वाणी है, जिसका अर्थ है कि यह न्याय का सन्देश है। इस बार, न्याय धनी पुरुषों के विशेष समूह पर है जो रात में योजनाएँ बनाते हैं ताकि भोले-भाले किसानों से घर और जमीनें छीन सकें। मीका कहते हैं कि उनकी योजनाएँ उल्टी पड़ेंगी। उनकी अपनी जमीनें उनसे छीन ली जाएंगी।

चौथे खण्ड का विषय "मीका और दुष्ट धनी" है (2:6–11)। यह अंश मीका और उन लोगों के बीच विवाद को दर्ज करता है जिन्होंने निर्दोष पीड़ितों से घर और खेत छीन लिए। मीका के दुष्ट श्रोता उनके न्याय के सन्देश को स्वीकार नहीं कर सके। उन्हें यह आपत्तिजनक लगा और उन्होंने उन्हें ऐसी बातों का प्रचार करना बन्द करने का आदेश दिया। वे विश्वास नहीं करते थे कि दुष्ट उन्हें पछाड़ देंगे क्योंकि वे सोचते थे कि परमेश्वर ऐसी चीजें नहीं करेंगे (पद 6–7)। परन्तु मीका इन दुष्ट पुरुषों के कई अपराधों को गिनाते हैं, जैसे यात्रियों की पीठ से वस्त्र छीनना और स्त्रियों और बच्चों को उनके घरों से निकाल देना (पद 8–9)। ऐसे दुष्ट पुरुष झूठे भविष्यद्वक्ता का अनुसरण करते हैं (पद 11)।

पाँचवा अंश "एक शेष भाग को पुनर्स्थापित करना" है (2:12–13)। प्रभु अपने शेष लोगों को भेड़ों की तरह एक बाड़े में इकट्ठा करेंगे (पद 12), फिर प्रभु उनके राजा के रूप में उन्हें उनके आगे फाटक से बाहर ले जाएंगे (पद 13)। इस खण्ड की विभिन्न व्याख्याएँ की जा सकती हैं। यह अंश उस स्थान को नहीं दर्शाता जहां प्रभु शेष लोगों को इकट्ठा करेंगे। कुछ मानते हैं कि स्थान बेबीलोन है और इस अंश को बँधुआई के सन्दर्भ के रूप में लेते हैं। अन्य विश्वास करते हैं कि स्थान यरूशलेम है और इस घटना को 701 ई.पू. में सन्हेरीब के आक्रमण से पहले यरूशलेम की ओर भागने वाले शरणार्थियों से सम्बन्धित मानते हैं।

छठा अंश "दोषी शासकों" के बारे में है (3:1–4)। मीका आरोप लगाते हैं कि उनके लोगों के प्रधान और अगुवे नरभक्षी की तरह व्यवहार करते हैं। उन्हें न्याय का ज्ञान होना चाहिए, परन्तु वे अच्छे से घृणा करते हैं और दुष्ट से प्रेम करते हैं। वे प्रभु को पुकारेंगे, परन्तु वह उनकी नहीं सुनेंगे।

"शान्ति भविष्यद्वक्ता और मीका" एक और विवाद खण्ड है (3:5–8)। मीका झूठे भविष्यद्वक्ताओं पर धन के लिए प्रचार करने का आरोप लगाते हैं और यह बताते हैं कि उनके पास परमेश्वर से कोई दर्शन या सन्देश नहीं है। इसके विपरीत, मीका परमेश्वर की शक्ति और आत्मा में बोलने का दावा करते हैं।

आठवें अंश का विषय "भ्रष्ट अगुवे और सिय्योन का पतन" है (3:9–12)। यह भविष्यद्वाणी यरूशलेम के विभिन्न समूहों के अगुवों से मीका द्वारा कही गई सभी बातों का सारांश प्रतीत होती है। उनके पापों और अपराधों के कारण, यरूशलेम और मन्दिर नष्ट हो जाएंगे।

"सिय्योन की भविष्य की महिमा" नौवां खण्ड, सिय्योन के पतन और मन्दिर के विनाश की चौंकाने वाली घोषणा करता है (4:1–5)। उद्धार की यह भविष्यद्वाणी सम्भवतः जानबूझकर पिछले न्याय की भविष्यद्वाणी के बाद रखी गई थी ताकि यह संकेत दिया जा सके कि भले ही मन्दिर नष्ट हो जाए, इसे भव्य शैली में पुनर्स्थापित किया जाएगा ताकि यह सभी राष्ट्रों के लिए आराधना का केन्द्र बन सके। इस खण्ड का एक समान्तर भाग यशायाह 2:1–4 में पाया जाता है।

दसवें खण्ड का विषय "शेष भाग की पुनःस्थापना और सिय्योन" है (4:6–8)। आरम्भिक वाक्यांश, "उस आने वाले दिन में," यह संकेत करता है कि यह एक भविष्यद्वाणी है जिसमें प्रभु को उनके पुनःस्थापित भेड़-बकरियों पर सिय्योन में शासन करते हुए देखा जाता है।

अगले तीन अनुच्छेदों में (4:9–10; 4:11–13; 5:1–4) सभी "अब" शब्द (इब्रानी में) से शुरू होते हैं और यह दावा करते हुए समाप्त होते हैं कि वर्तमान दुष्ट स्थिति बेहतर के लिए बदली जाएगी। तीन में से पहला है "कष्ट से मुक्ति" (4:9–10); दूसरा है "घेराबंदी से विजय" (पद 11–13); और तीसरा है "असहाय न्यायी से आदर्श राजा तक" (5:1–4)। इस श्रृंखला का अन्तिम अनुच्छेद मीका में सबसे परिचित अनुच्छेदों में से एक है। इसमें बैतलहम में एक नए राजा के जन्म की प्रतिज्ञा है जो पृथ्वी के छोर तक महान होगा।

चौदहवां खण्ड, "शान्ति और अश्शूर का पतन" (5:5–6), के तुरन्त बाद "लोगों के बीच शेष भाग" (पद 7–9) आता है। शेष भाग को पौधों पर ओस और भेड़ों के बीच एक सिंह के रूप में चित्रित किया गया है। पौधों पर ओस को आमतौर पर एक आशीर्वाद के रूप में लिया जाता है, परन्तु 2 शमूएल 17:12 में यह भेड़ों के बीच एक सिंह के रूप में न्याय का रूपक है।

सोलहवां अंश "सेना और झूठे धर्मों का शुद्धिकरण" (5:10–15) है। "काट देना," "फेंक देना," "नष्ट कर देना," "जड़ से उखाड़ देना," और "विनाश करना" जैसी अभिव्यक्तियाँ कठोर क्रिया का सुझाव देती हैं। यह उन चीजों पर एक भविष्यवाणी है जो लोगों के मन में परमेश्वर का स्थान ले सकती हैं।

"परमेश्वर का मुकदमा" (6:1–8) सम्भवतः मीका में सबसे प्रसिद्ध अंश है। यह सच्चे धर्म का एक उत्कृष्ट सारांश है।

अगला अंश "अधिक दोष और दण्ड" (6:9–16) को प्रस्तुत करता है। आगे के आरोप बेईमान व्यापारिक प्रथाएँ, झूठ बोलना, और हिंसा के कार्य हैं। जिसका दण्ड, निरर्थकता, निराशा, तिरस्कार, और विनाश का जीवन है।

मीका में उन्नीसवीं परिच्छेद "एक पतित समाज पर विलाप" है (7:1–6)। भविष्यद्वक्ता एक हाय के साथ शुरू करते हैं क्योंकि ऐसा लगता है कि वह अकेले ही धार्मिक या धर्मपरायण पुरुष बचे हैं (पद 1–2)। वे किसी पर भरोसा नहीं कर सकते। हर कोई शायद एक-दूसरे के लिए जाल बिछा रहा है। लोग दोनों हाथों से दुष्ट कार्य करते हैं। यहां तक कि परिवार के सदस्य भी एक-दूसरे के खिलाफ उठ खड़े होते हैं। यीशु ने 7:6 के शब्दों को अपने समय पर लागू किया (मत्ती 10:21, 35–36)।

मीका का अन्तिम खण्ड (मीक 7:7–20) एक भविष्यद्वक्ता की प्रार्थना-विधि है। यह विश्वास का एक भजन है (पद 7–10); पुनःस्थापन की एक भविष्यद्वाणी का वादा (पद 11–13); इस्राएल को आशीष देने और उसके दुश्मनों का न्याय करने के लिए परमेश्वर से एक प्रार्थना (पद 14–17); और एक स्तुति या महिमा-गान जो परमेश्वर को "अनुग्रह और सत्य" में अतुलनीय घोषित करती है, याकूब के प्रति विश्वासयोग्य और अब्राहम के प्रति अटल प्रेम दिखाता है (पद 20)।

यह भी देखें इस्राएल का इतिहास; भविष्यद्वाणी; भविष्यद्वक्ता, भविष्यद्वक्तिन।

मीकाएल

नाम का अर्थ "परमेश्वर के समान कौन है?" पवित्रशास्त्र में 10 पुरुषों के लिए उपयोग किया गया है और उसके लिए भी जिसे प्रधान स्वर्गदूत के रूप में वर्णित किया गया है।

1. मूसा द्वारा कनान में भेजे गए भेदियों में से एक का पिता (गिन 13:13)।

2–3. बाशान देश में बसने वालों की सूची में गादियों का नाम (1 इति 5:13–14).

4. आसाप के पूर्वज, दाऊद के समय में एक मन्दिर गायक (1 इति 6:40).

5. मन्दिर की सूचि में इस्साकार का मुख्य पुरुष हैं (1 इति 7:3).

6. मन्दिर की सूचियों में नामित एक बिन्यामिनी (1 इति 8:16)।

7. मनश्शे का पुरुष जो दाऊद के साथ सिकलग में शामिल हुआ जब वह शाऊल से भाग रहे थे (1 इति 12:20)।

8. ओम्री का पिता, दाऊद के समय में एक प्रमुख राजनीतिक अधिकारी (1 इति 27:18)।

9. यहूदा के राजा यहोशापात का पुत्र (2 इति 21:2).

10. एज्रा के साथ यरूशलेम लौटे जबद्याह का पिता (एज्रा 8:8).

11. पुराना नियम, अन्तर वैधानिक साहित्य, और नया नियम में स्वर्गदूत। दानिय्येल 10:13 में कहा गया है कि "फारस के राज्य का प्रधान" परमेश्वर के उद्देश्य का विरोध करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन मीकाएल, "प्रधान दूतों में से एक," प्रभु के पक्ष में इस पिशाच के खिलाफ लड़ रहे थे (दानि 10:21)। इस्राएल की ओर से उनकी लड़ाई दानिय्येल 12:1 में और भी सन्दर्भित है।

हनोक की पुस्तक में, मीकाएल चार (हनोक 9:1; 40:9) या सात (20:1–7) विशेष स्वर्गदूतों या "प्रधान स्वर्गदूतों" में से एक हैं। हनोक में, युद्ध कुण्डलपत्र (मृत सागर कुण्डलपत्रों) में, और अन्य अन्तर वैधानिक साहित्य में, मीकाएल को नियमित रूप से धर्मियों के लिए विजेता या इस्राएल के संरक्षक स्वर्गदूत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

यहूदा की पुस्तक, जो सम्भवतः मूसा के स्वर्गारोहण की ओर संकेत करती है, प्रधानदूत मीकाएल का उल्लेख करती है, जिसने शैतान के साथ मूसा के शरीर के बारे में विवाद किया था (यहू 1:9; पुष्टि करें 2 पत 2:10–11; 1 थिस्स 4:16 में "प्रधान स्वर्गदूत" के सन्दर्भ को भी देखें)। नए नियम में मीकाएल का एकमात्र अन्य सन्दर्भ प्रकाशितवाक्य 12:7–8 में है, जहाँ कहा गया है, "फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाएल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले; और अजगर और उसके दूत उससे लड़े, परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिये फिर जगह न रही"।

यह भी देखें स्वर्गदूत।

मीठा बोल

एक छोटा, कठोर शाखाओं वाला पेड़, जिसका उपयोग धूप बनाने के लिए किया जाता था। इससे बोल निकाला जाता था (निर्ग 30:34)।

देखिए पौधे (बोल का पेड़)।

मीना

कीमती धातुओं के साथ-साथ अन्य पदार्थों के माप में उपयोग किया जाने वाला बीस औंस का वजन (बाट)। *देखें*वजन और माप।

मीनार (गुम्मट)

*देखें*किला, दृढ़ नगर; पहरुओं का गुम्मट।

मील

मील

दूरी का माप। एक रोमी मील अंग्रेजी मील से थोड़ा छोटा था। *देखें*वजन और माप।

मीलेतुस, मीलेतुस

महत्वपूर्ण यूनानी शहर जो मियेनडर नदी के मुहाने पर स्थित था। इसे क्रेते द्वारा 1339–1288 ई.पू. के बीच बसाया गया था। मीलेतुस का हित्ती साम्राज्य के साथ सम्पर्क था। वास्तव में, उसके राजा पर हित्ती शासक द्वारा दास होने का दावा किया गया था। खुदाई से सन्केत मिलता है कि मीलेतुस, एक बार आग से नष्ट हो जाने के बाद, बाद में एक रक्षात्मक दीवार से घिरा हुआ था (13वीं सदी ई.पू.)।

लगभग 650 ई.पू. में लुदिया के राज्य द्वारा मीलेतुस पर हमला किया गया और यह राजा गीजेस के अगुआई में एक सैन्य वंश द्वारा शासित था। इसके नागरिकों ने फिर भी डार्डेनेल्स की संकरी जगह पर अबिडोस को उपनिवेश बनाने में सफलता प्राप्त की। मीलेतुस के व्यापारियों द्वारा काले सागर के किनारे 70 से अधिक ऐसे उपनिवेश स्थापित किए गए, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण सिनोप था। इस प्रकार मीलेतुस प्राचीन विश्व में एक महत्वपूर्ण शहर बन गया। इसके व्यापारी उन वस्तुओं और ऊनी वस्त्रों को ले जाते थे जिनके लिए वह कई अन्यजाति बन्दरगाहों में जाना जाता था।

इस शहर का अपना कवि था, जैसे कई अन्य यूनानी केन्द्रों का होता था, जो अपने समय में प्रसिद्ध था लेकिन आज केवल कुछ वचनों में ही जाना जाता है। फ़ॉसायलाइड्स ने लिखा: "एक चट्टान पर एक छोटा शहर, व्यवस्था के साथ, नीनवे की पागलपन से बेहतर है।" फिर से, "सभी गुण न्याय में समाहित हैं।"

मीलेतुस दर्शनशास्त्र और वैज्ञानिक विचारों का भी जन्मस्थान था। दार्शनिक थेल्स ने 585 ई.पू. में एक ग्रहण की भविष्यद्वाणी की थी, और उनके शिष्य, अनैक्सिमेंडर ने समुद्री जीवों से विकास का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। हालाँकि, शहर की अधिकांश ताकत भीषण नागरिक सन्घर्ष में बर्बाद हो गई। दो दल, जिन्हें धनी और श्रमिक कहा जाता था, शहर को आंतरिक झगड़ों से विभाजित रखते थे। लगभग 495 ई.पू. में, शहर को फारसियों ने लूट लिया और फिर कभी विश्व महत्व नहीं प्राप्त कर सका, हालांकि इसे सिकन्दर ने फिर से अपने कब्जे में ले लिया।

नए नियम के समय में, निश्चित रूप से, मीलेतुस प्रसिद्ध था, हालांकि यह प्रारम्भिक मसीह मत के लिए एक महत्वपूर्ण केन्द्र नहीं था। प्रेरित पौलुस ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज अन्तिम मिशनरी यात्रा के दौरान वहाँ रुका था (प्रेरितों के काम 20:15–17)। वहाँ रहते हुए, उन्होंने इफिसुस के प्राचीनों को बुलाया और उन्हें उनके देखरेख में दी गई झुण्ड की देखभाल करने की प्रेरणा दी (वचन 28–35)। मीलेतुस से उन्होंने सोर के लिए जलयात्रा की। दूसरा तीमुथियुस 4:20 कहता है कि पौलुस ने त्रुफिमुस को मीलेतुस में छोड़ दिया क्योंकि वह बीमार थे।

मीशाएल

1. उज्जीएल का पुत्र (निर्ग 6:22), जिसे उसके भाई एलसाफान के साथ मूसा द्वारा बुलाया गया था ताकि वे नादाब और अबीहू के शवों को हटा सकें, जिन्हें प्रभु की वेदी को अपवित्र करने के कारण मारा गया था (लैव्य10:1–5)।

2. जब व्यवस्था पढ़ी गई, तो जो एज्रा के पास खड़े थे (नहे 8:4)।

3. इब्री नाम बाबेल में दानिय्येल के एक साथी के लिए (दानि 1:6), जो दानिय्येल और दो अन्य के साथ परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहे (वचन 11, 19) और उन्हें उस अग्नि की भट्टी से बचाया गया जिसमें उन्हें राजा के निर्देश का पालन न करने के कारण डाला गया था (अध्याय 3)। उनका बाबेली नाम मेशक था (1:7)।

*यह भी देखें*शद्रक, मेशक और अबेदनगो।

मुआयना फाटक

आर.एस.वी अनुवाद के अनुसार, नहेम्याह के दिनों में, यरूशलेम का फाटक जो मन्दिर के नौकर और व्यापारियों के घर के सामने स्थित था (नहे 3:31; के.जे.वी. "मिफ़काद का फाटक"; एन.आई.वी "निरीक्षण फाटक")। इसका सटीक स्थान अनिश्चित है। कुछ सुझाव देते हैं कि यह एक मन्दिर का फाटक था या दाऊद के पुराने शहर की दीवार में एक फाटक था। *देखें*यरूशलेम।

मुकुट

सम्मान या उच्च पद का प्रतीक सिर का आभूषण। इस शब्द का रूपक के रूप में उपयोग करने के अलावा, पुराने नियम में तीन प्रकार के मुकुटों का उल्लेख करता है।

एक प्रकार का मुकुट महायाजक और इब्रानी राजाओं द्वारा पहना जाता था। महायाजक का "पवित्र मुकुट" एक सोने की पटरी थी जिस पर "यहोवा के लिये पवित्र" शब्द खुदे हुए थे और इसे एक पगड़ी के सामने बांधा गया था (निर्ग 29:6; 39:30)। [पगड़ी एक प्रकार का सिर का आभूषण है (आमतौर पर कपड़े से बना होता है) जो सिर के चारों ओर लपेटा जाता है।] महायाजक का "पवित्र मुकुट" लोगों के प्रतिनिधि के रूप में परमेश्वर के सामने उनके अभिषेक का प्रतीक था। इब्रानी राजा एक ऐसा मुकुट पहनते थे जो युद्ध में भी पहना जा सके (2 शमू 1:10)—शायद रत्नों से जड़ा हुआ रेशम का एक संकरा पट्टा। महायाजक के मुकुट की तरह, राजा का मुकुट भी एक ईश्वरीय नियुक्त पद का संकेत था (2 रा 11:12; भज 89:39; 132:18)।

दूसरे प्रकार का मुकुट मूर्तिपूजक राजाओं और मूर्तियों द्वारा पहना जाने वाला एक विशाल सोने और रत्न जड़ित पद का प्रतीक था (2 शमू 12:30; एस्त 1:11)। भविष्यद्वक्ता जकर्याह ने महायाजक यहोशू के सिर पर ऐसा मुकुट रखा ताकि राजकीय और याजक कार्यों के मिलन का संकेत दिया जा सके (जक 6:11, 14)।

तीसरे प्रकार का मुकुट फूलों की माला थी जिसे भोज में आनंद और उत्सव का प्रतीक माना जाता था (श्रे. गी. 3:11; यशा 28:1; सोलोमन की बुद्धि 2:8)।

शब्द "मुकुट" का रूपक रूप में उपयोग शासन या राजत्व (नहू 3:17), महिमा या सम्मान (अय्यू 19:9; भज 8:5; एज्रा 16:12), आनंद (एज्रा 23:42), या गर्व (अय्यू 31:36; यशा 28:3) को इंगित करने के लिए किया जाता है।

नए नियम में "मुकुट" के लिए सबसे आम शब्द का अर्थ भोज में पहनी जाने वाली पुष्पमाला या नागरिक या सैन्य सम्मान के रूप में दिया जाने वाला पुरस्कार है। प्रेरित पौलुस ने इसका उपयोग पहलवान पुरस्कार के रूप में किया जब उन्होंने मसीहियों को एक "मुकुट" के लिए प्रयास करने के लिए अनुशासित होने का आग्रह किया जो मुरझाएगा नहीं (1 कुरि 9:25; 2 तीमुथियुस 2:5)। पौलुस ने अपने विश्वासियों को अपना "आनंद और मुकुट" माना (फिलि 4:1; 1 थिस्स 2:19)।

विजेता की माला उन मसीहियों द्वारा प्राप्त अनन्त जीवन का प्रतीक है जिन्होंने धैर्यपूर्वक सहन किया है (याकू 1:12; 1 पत 5:4; प्रका 2:10; 3:11)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, टिड्डियों की जीत (9:7), स्त्री (12:1), और मसीह (6:2; 14:14) को लॉरेल मुकुट द्वारा प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया है। एक अलग ग्रीक शब्द, जिसका अर्थ है राजमुकुट, अजगर(12:3), समुद्र से निकले पशु (13:1), और मसीह (19:12) के सिर पर रखे गए मुकुटों के लिए उपयोग किया गया है।

यीशु का कांटों का मुकुट एक कांटेदार झाड़ी से बना गोलाकार पट्टा था—विजेता की माला का एक विडंबनापूर्ण नक़ल (मर 15:17–18)। वस्त्र, राजदंड (मत्ती 27:27–29), और क्रूस पर व्यंग्यात्मक शिलालेख कि यीशु "यहूदियों का राजा" था (मर 15:26), के साथ इसका संयोजन, एक असफल मसीहा के रूप में उसका मजाक उड़ाने के लिए था।

मुक्त किये गए गुलाम

प्रेरि 6:9 में "दासत्व-मुक्त" का एनएलटी अनुवाद। *देखें* दासत्व-मुक्त।

मुख्य न्यायाधीश

मुख्य न्यायाधीश

गणतंत्र के समय रोमी के दो सर्वोच्च नागरिक और सैन्य न्यायधीश की उपाधि। मुख्य न्यायाधीश राज्य के प्रमुख के रूप में कार्य करते थे, सेना की कमान संभालते थे और मंत्री सभा के साथ शासन करते थे। उनके पास कुछ न्यायिक कार्य भी थे। आम तौर पर एक मुख्य न्यायाधीश को एक वर्ष के कार्यकाल के लिए नियुक्त किया जाता था। मिस्र के मुख्य न्यायाधीश लुसियस कैलपर्निअस पिसो (वाणिज्यदूत, 140–139 ईसा पूर्व) से टॉलेमी VII फिस्कॉन (शासनकाल 145–116 ईसा पूर्व) को लिखे गए एक पत्र का उल्लेख 1 मक्काबीज 15:16 में किया गया है।

मुण्डेर

मुण्डेर

घर की छतों के परिधि के चारों ओर सुरक्षात्मक अवरोध। व्यवस्था द्वारा मुण्डेर की आवश्यकता थी (व्य. वि. 22:8) क्योंकि सपाट छतों का व्यापक रूप से उपयोग होता था (यहो 2:6; न्यायों 16:27; 1 शमू 9:25; यशा 22:1)। मुण्डेर का निर्माण करने से निवासी को जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया जाता था यदि कोई व्यक्ति छत से गिर जाए।

*यह भी देखें*वास्तुकला; घर और निवास स्थान।

मुद्रा

*देखें*मुहर।

मुप्पीम

बिन्यामीन के 10 पुत्रों में से एक (उत 46:21)। उन्हें अन्यत्र शपूपाम (गिन 26:39) और शुप्पीम (1 इति 7:12) कहा गया है और संभवतः शपूपान (1 इति 8:5) के साथ पहचाना जा सकता है। *देखें*शपूपाम।

मुर्गा

घरेलू मुर्गी का वयस्क नर। *देखें*पक्षी (मुर्गा, घरेलू)।

मुर्गी

यह सामान्य घरेलू मुर्गी है जिसे इसके खाने योग्य अण्डों और मांस के लिए पाला जाता है। *देखें*पक्षी (मुर्गी, घरेलू)।

मुर्गी

*देखिए*पक्षी (मुर्गी, घरेलू)।

मुहर

मुहर

प्राचीन पश्चिमी एशिया में नरम मिट्टी में छवि बनाने के लिए व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली छोटी खुदी हुई वस्तु।

उत्पत्ति

मुहरों की सटीक उत्पत्ति निर्धारित नहीं की जा सकती। पहली मुहर शायद ताबीज से विकसित हुई, जिसका उद्देश्य इसे पहनने वाले को सुरक्षा प्रदान करना या दुष्ट को दूर करना था। एक समय में माना जाता था कि मुहर में कुछ प्रकार की जादुई सुरक्षात्मक शक्ति होती थी जो उस अनधिकृत व्यक्ति को श्राप या हानि पहुंचाती थी जो इसे तोड़कर इसके द्वारा संरक्षित सामग्री को प्राप्त करने का साहस करता था। आदिम मुहरें छोटे मिट्टी के स्पूल से अधिक कुछ नहीं थीं, जिन्हें साधारण बनावट या आकृतियाँ बनाने के लिए टहनियों से खरोंचा जाता था। ग्लिप्टिक या समुत्किरण कला (रत्नों पर मुहरों की नक्काशी या उत्कीर्णन के लिए तकनीकी नाम) प्राचीन पश्चिमी एशिया में चौथी सहस्राब्दी ई. पू. से फारसी काल के अन्त तक चौथी शताब्दी ई. पू. में फली-फूली।

मुहरों के प्रकार

छाप मुहरें

मुहरें कई आकारों और नापों में बनाई गई थीं, जिनमें सबसे प्रारम्भिक थी छाप मुहर, एक सपाट उकेरी गई रत्न या मोती जो नरम मिट्टी पर दबाने पर अपनी प्रतिलिपि बनाती थी। इसे लगभग 3000 ई. पू. में मेसोपोटामिया में सिलेंडर मुहर द्वारा प्रतिस्थापित किया गया और आठवीं शताब्दी ई. पू. के अन्त में फिर से उपयोग में आने लगी; युनानवाद समय तक इसने सिलेंडर मुहर को पूरी तरह से बदल दिया था।

सिलेंडर मुहरें

सिलेंडर मुहर पहली बार मेसोपोटामिया में 3000 ई. पू. से पहले दिखाई दी और पहले सहस्राब्दी ई. पू. के मध्य तक सबसे व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली मुहर बन गई। मिस्र में इसका उपयोग प्रारम्भिक मेसोपोटामियाई सांस्कृतिक प्रभाव का प्रमाण है; हालांकि, इसे वहाँ जल्द ही स्कारब (भृंग के आकार की) मुहर द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया, जो सरकण्डा दस्तावेजों के लिए बेहतर अनुकूलित थी। सिलेंडर के बाहरी भाग पर प्रतीक या बनावट उकेरे जाते थे, जो गीली मिट्टी पर मुहर को रोल करने पर अपनी छाप छोड़ते थे। प्रारम्भिक प्रतीकों में ज्यामितीय रचना या कुछ जादुई प्रतीकों का प्रतिनिधित्व शामिल था। बाद की मुहरों में पौराणिक कथाओं से लेकर (देवता एक-दूसरे से बातचीत करते हुए, उपासकों को दर्शकों में प्राप्त करते हुए, नाव या रथ में सवार होते हुए, या किसी शत्रु से लड़ते हुए) से लेकर दैनिक जीवन के दृश्य (शिकार, विवाह, भोज, जानवरों को खिलाना, जंगली जानवरों से लड़ना, देवता को भेंट बलिदान, युद्ध करना, कैदियों को ले जाना) और जानवरों, फूलों, और पक्षियों का प्रतिनिधित्व शामिल था। लेखन (जैसे, मालिक का नाम या किसी ईश्वर या राजा के प्रति निष्ठा की घोषणा) तीसरे सहस्राब्दी ई. पू. में मुहरों पर दिखाई देने लगा। क्योंकि बड़ी संख्या और विविधता की मुहरें मिली हैं, वे प्राचीन लोगों के बारे में जो कुछ प्रकट करती हैं, उसके लिए अमूल्य हैं—वे कैसे कपड़े पहनते थे, उनके केश विन्यास, असबाब, बर्तन, और धार्मिक विश्वास।

प्राचीन पश्चिमी एशिया में मुहरें इतनी व्यापक रूप से उपयोग की जाती थीं और इतनी बड़ी मात्रा में खोजी गई हैं कि उन्हें उनके उत्पत्ति के एक या दो शताब्दी के भीतर दिनांकित किया जा सकता है, हालांकि कभी-कभी उनके सटीक काल या देश का निर्धारण करना कठिन होता है। हेरोडोतस ने देखा कि हर बाबेली सज्जन "एक मुहर और एक चलने की छड़ी" रखते हैं (पुस्तक I, 195)। मुहर को गले या कलाई के चारों ओर फीते से लटकाया जाता था या मालिक के कपड़ों के किसी हिस्से से जोड़ा जाता था (पुष्टि करें उत 38:18; 41:42; श्रेष्ठ 8:6; यिर्म 22:24)। कब्रों में कंकालों की कलाई से बंधे सिलेंडर पाए गए हैं।

एक और प्रकार की मुहर घड़ा हैंडल मुहर थी। वस्त्र को बोतल की गर्दन पर रखा जाता था, मुलायम मिट्टी को बांधने वाले फीते के ऊपर लगाया जाता था, और फिर मुहर को गीली मिट्टी में दबाया जाता था। टूटी हुई मुहर यह दिखाती थी कि माल को डिलीवरी से पहले नहीं खोला गया था। यहूदिया में मुहर को घड़ा हैंडल पर स्वामित्व के प्रमाण के रूप में दबाया जाता था। कुछ घड़ा हैंडल मुहर शायद मिट्टी के बर्तन बनाने वाली फैक्ट्रियों के ट्रेडमार्क थे; कुछ भालू निजी नाम (शायद फैक्ट्री के मालिक)। तथाकथित राजकीय घड़ा हैंडल स्टैम्प में या तो चार-पंखों वाला या दो-पंखों वाला प्रतीक और दो पंक्तियों का एक छोटा शिलालेख होता है। ऊपर की पंक्ति में लिखा होता है "राजा का," और नीचेवाली पंक्ति में एक शहर का नाम होता है, शायद जहां घड़ा बनाया गया था।

उपयोग

कार्यात्मक उपयोग

उनके पहले निर्माण से ही ताबीज के रूप में, मुहरें सुरक्षा के संकेत के रूप में काम करती रहीं। एक अटूट मुहर यह साबित करती थी कि सामग्री के साथ छेड़छाड़ नहीं की गई थी, चाहे वह किसी दस्तावेज़ पर हो, एक बखरी द्वार पर, या दाखरस के मटके पर। जिस सिंहों की गुफा में दानिय्येल को डाला गया था, उसे राजा की अंगूठी और उसके रईसों की मुहरों से सील कर दिया गया था (दानि 6:17)। यीशु की कब्र को पत्थर को मुहर करके सुरक्षित किया गया था (मत्ती 66)। मुहर स्वामित्व की मरकुस के रूप में या ट्रेडमार्क के रूप में भी काम करती थी (जैसे, बर्तन पर आग में पकाने से पहले लगाई जाती थी)। इसका उपयोग दस्तावेजों को मान्य करने के लिए भी किया जाता था (पत्र, बिक्री के बिल, सरकारी दस्तावेज़, आदि)। ईजेबेल ने अपने पति के नाम में पत्र लिखे और उन्हें उसकी मुहर से सील कर दिया, इस प्रकार नाबोत की मृत्यु का कारण बनी (1 रा 21:8–13)। यिर्मयाह ने एक रिश्तेदार की भूमि खरीदते समय खरीद के विलेख को सील किया (यिर्म 32:10–14)। फारसी राजा की मुहर के साथ एक आदेश को रद्द नहीं किया जा सकता था (एस्ते 8:8)।

प्रतीकात्मक उपयोग

प्रतीकात्मक रूप से मुहर का उपयोग गैर-बाइबिल और बाइबिल साहित्य दोनों में पाया जाता है। एक बाबेली प्रार्थना कहती है, "जैसे मुहर, वैसे ही मेरे पाप फाड़ दिए जाएं।" पुराना नियम कहता है, "मेरे चेलों के बीच शिक्षा पर छाप लगा दो" (यशा 8:16, आई आर वी)। जरूब्बाबेल से कहा गया कि वे परमेश्वर की मुहर अंगूठी बन जाएंगे (हाग्गै 2:23)। पृथ्वी ने मुहर अंगूठी से दबाए गए मिट्टी की तरह आकार लिया (अय्यू 38:14)।

यह शब्द प्रतीकात्मक रूप से नए नियम में परमेश्वर की व्यक्तिगत स्वामित्व को दर्शाने के लिए उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, शास्त्र कहते हैं कि परमेश्वर की छाप यीशु, उनके पुत्र, पर है (यूहन्ना 3:33; 6:27)। इसका अर्थ है कि यीशु परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम धारण करते हैं; यीशु परमेश्वर की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति हैं। शास्त्र यह भी कहते हैं कि पवित्र आत्मा विश्वासियों को छाप करता है (2 कुरि 1:22; इफि 1:13; 4:30)। इसका अर्थ है कि आत्मा विश्वासियों पर परमेश्वर की स्वामित्व की निशानी है, और इसका अर्थ है कि आत्मा विश्वासियों की उनके जीवनभर रक्षा और संरक्षण करता है।

यह भी देखें पुरातत्व और बाइबल; शिलालेख।

मूंगा

मूंगा एक कठोर पदार्थ है जो तब बनता है जब छोटे समुद्री जानवर सुरक्षात्मक बाहरी खोल बनाते हैं (घोंघे की रक्षा करने वाले कठोर खोल के समान)। ये कवच कैल्शियम से बने होते हैं, वही खनिज जो हड्डियों और दांतों को मजबूत बनाता है। जब इनमें से कई छोटे जानवर एक ही जगह पर रहते और मरते हैं, तो उनके खोल समुद्र में बड़ी संरचनाएँ बनाते हैं।

भूमध्य सागर और लाल सागर में उगने वाला लाल मूंगा (*कोरलियम रूब्रम*) पूरे इतिहास में विशेष रूप से मूल्यवान रहा है। लोगों ने इस लाल मूंगा का उपयोग आभूषण और दवा बनाने के लिए किया है। जीवित अवस्था में, यह हरा और झाड़ी जैसा दिखाई देता है, जो पानी के नीचे के पौधे जैसा दिखता है। यह इस तरह इसलिए दिखता है क्योंकि छोटे मूंगा जानवर खुद को एक स्थान पर चिपका लेते हैं और इधर-उधर नहीं जा सकते। पानी से बाहर निकलने के बाद, यह कठोर और लाल हो जाता है।

प्राचीन समय में, मूंगा को रत्न, मोती और सोने के साथ-साथ मुद्रा के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। कुछ बाइबल विद्वानों का मानना है कि जब विलापगीत 4:7 में किसी लाल और कीमती चीज़ का ज़िक्र किया गया है, तो वह मूंगा के बजाय मोती की बात कर रहा है। हालाँकि, अय्यूब 28:18 और यहेजकेल 27:16 में संभवतः लाल मूंगा का ज़िक्र किया गया है।

देखें खनिज और धातुएं; कीमती पत्थर।

मूकता (गूंगापन)

बोलने में असमर्थता के लिए एक प्राचीन शब्द। यह स्थिति किसी व्यक्ति को अपनी आवाज़ का उपयोग करके संवाद करने से रोकती है।

देखें मौन।

मूनीम, मूनी

एज्रा 2:50 और 2 इतिहास 26:7 में उल्लेखित। *देखें*मूनीम, मूनी।

मूनीम, मूनी

एदोम (सेईर पर्वत, 1 इति 4:41–42) में रहने वाले लोग जिन्हें शिमोनियों द्वारा उनके समृद्ध चरागाहों से बेदखल कर दिया गया था। बाद में, एदोम के मूनियों ने यहूदा के राजा यहोशापात पर हमला किया (2 इति 20:1); इसके बाद, यहूदा के राजा उज्जियाह ने उन्हें पराजित किया (26:7)। उनकी मूल भूमि का स्वामित्व, अरबों और अम्मोनियों के साथ सम्बन्ध, और लम्बी शत्रुता न्यायियों 10:11–12 को याद दिलाती है, जहाँ "माओनी लोगों" को इस्राएल के उत्पीड़क के रूप में नामित किया गया है। यह शब्द, इब्रानी उच्चारण के नियमों के अनुसार, "मूनी" बन सकता है, जिससे संकेत मिलता है कि इनका मूल स्थान एदोम के दक्षिण में मृत सागर के पास स्थित माओन (माइन, मान) था।

मूनीम को मन्दिर सेवकों के परिवारों में शामिल किया गया है जो बँधुआई के बाद यरूशलेम लौट रहे थे (एज्रा 2:50; नेहे 7:52)। हालाँकि, प्राचीन शत्रुओं का मंदिर सेवक बनना असंभव प्रतीत होता है, इसलिए कुछ विद्वानों का मानना है कि ये मूनीम यहूदा के कालेब कुल के वंशज थे, जिन्हें मृत सागर के पश्चिम और हेब्रोन के दक्षिण में स्थित एक अन्य नगर माओन आवंटित किया गया था (यहो 15:20, 55)। यही माओन था जहाँ दाऊद को शरण मिली थी और उन्हें एक और पत्नी मिली थी (1 शमू 23:24–28; 25)।

यह पुनर्निर्माण, जिसमें दो समूह, दो माओन और बहुत से विदेशी नामों वाले मन्दिर सेवक शामिल हैं, अनिश्चित है। एक वैकल्पिक दृष्टिकोण यह है कि वे शत्रुतापूर्ण विदेशी, जिन्हें पहले मन्दिर के दास बनने के लिए पकड़ा गया था (पुष्टि करें यहो 9:7; यहेज 44:6–8), बँधुआई के दौरान स्वतंत्रता प्राप्त कर चुके थे और यरूशलेम लौटने पर वे मन्दिर संघ के सदस्य बन गए।

*यह भी देखें*माओन (स्थान)।

मूरा

मूरा

एशिया के उपद्वीप के दक्षिणी तट पर स्थित लूसिया प्रान्त का बन्दरगाह नगर, जिसे आधुनिक तुर्की के डेमरे के रूप में पहचाना जाता है। प्रेरितों के काम 27:5–6 के अनुसार, पौलुस और उनके सैन्य दल रोम की यात्रा के दौरान यहाँ थोड़ी देर के लिए जहाज बदलने के लिए रुके थे, जहाँ पौलुस का मुकदमा चलना था।

मूर्तियाँ, मूर्तिपूजा

मनुष्य द्वारा निर्मित स्वरुप या प्राकृतिक रूप जिन्हें देवताओं के रूप में पूजा जाता है; ऐसा कोई भी वस्तु जो एकमात्र सच्चे परमेश्वर के अलावा पूजनीय हो। मूर्तिपूजा एक मूर्ति की आत्मिक आराधना है। कई मूर्तिपूजक वास्तव में मूर्तियों की सेवा करते हैं: प्राचीन मिस्र में देवताओं की मूर्तियों को नियमित रूप से और विधिपूर्वक वस्त्र पहनाए जाते थे और भोजन दिया जाता था। एक झूठे देवता, बाल की पूजा की कुछ अवधारणा कार्मेल पहाड़ पर प्रतियोगिता के वर्णन में दी गई है: बाल के पुजारी जोर-जोर से चिल्लाए, वे वेदी के चारों ओर "उछलते" थे, उन्होंने छुरियों और बर्छियों से अपने-अपने को घायल किया (1 रा 18:26–29)। बाल की पूजा इस्राएल में राजशाही के काल के दौरान व्यापक रूप से प्रचलित थी।

पुराने नियम में

अब्राहम के पूर्वज मेसोपोटामिया में देवताओं की उपासना करते थे (यहो 24:2)। उस क्षेत्र में पुरातात्विक खुदाई ने कई देवताओं की मूर्तियों को उजागर किया है, और मेसोपोटामिया के धार्मिक साहित्य ने उस घोर बहुदेववाद को प्रकट किया है जिससे अब्राहम आए थे। मूर्तिपूजा के प्रति इस्राएलियों की प्रवृत्ति, एक प्रकार से सार्वभौमिक मानवीय लालसा की अभिव्यक्ति थी, जिसे हम अपनी शारीरिक इन्द्रियों के माध्यम से देख और जान सकते हैं।

इस्राएलियों की अधिकांश मूर्तिपूजा उनके पड़ोसियों से उधार ली गई थी। उन 400 से अधिक वर्षों के दौरान जब याकूब के वंशज मिस्र में रहे, वे बहुदेववादी मूर्तिपूजा के संपर्क में आए, जिसने उनके धार्मिक दृष्टिकोण को प्रभावित किया। सीनै पर्वत पर, जब मूसा प्रभु से दस आज्ञाएँ प्राप्त कर रहे थे, लोग हारून से उनके लिए देवता बनाने की मांग कर रहे थे (निर्ग 32:1–6)। उन्होंने मिस्र की एक आकृति का अनुसरण करते हुए एक सुनहरा बछड़ा बनाया, क्योंकि मिस्र में पूरे गोजातीय परिवार की पूजा की जाती थी—एपिस बैल, हथोर गाय और नेविस बछड़ा।

मिस्र में उनके प्रवास के बाद (1 रा 11:40), यारोबाम इस्राएल का राजा बना और उसने सोने के बछड़े स्थापित किए, एक बेतेल में और एक दान में (12:26–33), एक ऐसा कार्य जिसने उसे इस्राएल को पाप करने के लिए प्रेरित करने वाले व्यक्ति का नाम दिलाया (2 रा 3:3)।

कुलपिताओं के समय में पहले से ही तेराफिम या गृहदेवताओं का उल्लेख मिलता है। इन मूर्तियों के उदाहरण कसदियों के ऊर, नुज़ी और अन्य स्थलों पर पाए गए हैं, और कीलाकार पट्टियों में इनका उल्लेख किया गया है। राहेल ने लाबान से जो

तेराफिम चुराया था, उसे उसके ऊँट की काठी में छिपाया जा सकता था (उत 31:34)। हालांकि, ऐसा लगता है कि दाऊद के समय में ऐसी मूर्तियाँ बड़ी थीं, क्योंकि जब शाऊल के लोग दाऊद को मारने आए, तो मीकल, दाऊद की पत्नी और शाऊल की बेटी ने दाऊद को भागने में मदद की और फिर ऐसी एक मूर्ति को चारपाई पर रख दिया ताकि लोग सोचें कि दाऊद बीमार हैं (1 शमू 19:11–16)।

मूर्ति पूजा का निषेध दूसरी आज्ञा में स्पष्ट रूप से कहा गया है (निर्ग 20:4–5): "तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखनेवाला परमेश्वर हूँ" (पुष्टि करें निर्ग 34:17; लैव्य 19:4; 26:1; व्य.वि. 4:15–19; 27:1–5)। यह आज्ञा पहली आज्ञा का विस्तार या सहायक है, क्योंकि यह परमेश्वर की विशिष्टता को बनाए रखने और उनकी महिमा की रक्षा करने का प्रयास करती है। मूर्ति पूजा की परिभाषा शमूएल के समय में विस्तारित की गई थी, जिन्होंने राजा शाऊल को यह कहते हुए सामना किया कि बलवा करना मूर्ति पूजा के समान है (1 शमू 15:23)।

कनान पर विजय से पहले, प्रभु ने इस्राएल को स्थानीय जनता के सदस्यों से विवाह करने के खिलाफ बार-बार चेतावनी दी थी, जिन्हें उन्होंने इस्राएल को नष्ट करने का आदेश दिया था। यह उपाय इस्राएल में नैतिक जीवन को कमजोर होने से रोकने के लिए था (निर्ग 34:16; व्य.वि. 7:3–4)। यह सिद्धांत नए नियम में फिर से विस्तारित किया गया है (पुष्टि करें 1 कुरि 15:33; 2 कुरि 6:14)। इस्राएल का इतिहास इस प्रकार के विवाहों के खिलाफ निषेध की व्यावहारिकता को दर्शाता है, क्योंकि वे अनिवार्य रूप से धर्मत्याग की ओर ले जाते थे। शायद सबसे दुखद उदाहरण सुलैमान का है (1 रा 11:1–8)। जब सुलैमान वृद्ध हो गए, तो उनकी पत्नियों ने उनका हृदय पराए देवताओं की ओर बहका दिया, जिससे वे अपने प्रभु परमेश्वर के प्रति पूरी तरह सच्चे नहीं रहे (पद 4)।

न्यायियों के समय में मूर्ति पूजा का एक कुख्यात मामला था (न्या 17:1–18:31)। एप्रैम के एक व्यक्ति मीका की माता ने 200 चाँदी के टुकड़े लेकर एक चाँदीकार से अपने पुत्र के लिए एक खुदी हुई मूर्ति बनवाई। उसके पास एक मन्दिर, एक एपोद और तेराफिम भी थे। उसने एक घुमक्कड़ लेवी को अपना याजक नियुक्त किया, लेकिन दान के गोत्र के लोग आए और लेवी, मूर्ति और सभी उपकरणों को ले गए और इस मूर्ति को दान में स्थापित किया और इसे अपनी पूजा का विषय बनाया (18:30–31)।

शास्त्र में इस्राएल के राजाओं का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाता है कि उन्होंने "ऊँचे स्थानों" और मूर्तियों के संबंध में क्या किया। आसा ने उन सभी मूर्तियों को हटा दिया जो उनके पूर्वजों ने बनाई थीं (1 रा 15:12) और माका को रानी माता नहीं बनने दिया क्योंकि उसने अशेरा के लिए एक घृणित मूर्ति बनवाई थी। उन्होंने उस मूर्ति को काटकर जला दिया (पद 13)। इस्राएली राजा अहाब, हालांकि, एक मूर्तिपूजक था (1 रा 21:26; पुष्टि करें 16:30–33)।

हिजकिय्याह ने ऊँचे स्थानों को नष्ट कर दिया, स्तंभों को तोड़ दिया, और अशेरा को काट दिया (2 रा 18:4; 2 इति 31:1)। उन्होंने एक अजीब पंथ को भी समाप्त कर दिया जो मूर्तिपूजा की छिपी हुई प्रकृति को दर्शाता है। पीतल का सांप जिसे मूसा ने इस्राएलियों को साँप के डसे हुओं को मृत्यु से बचाने के लिए एक खम्भे पर लटकाया था (गिन 21:9; पुष्टि करें यूह 3:14) इसे हिजकिय्याह के समय तक सुरक्षित रखा गया था। इसे नहुशतान नाम दिया गया था, और लोग इसकी पूजा करते थे और इसे धूप जलाते थे। हिजकिय्याह ने इसे नष्ट कर दिया (2 रा 18:4) क्योंकि जो एक समय में भलाई का साधन था, वह बुराई की वस्तु बन गया था।

भविष्यद्वक्ता यशायाह ने मानव रूप में एक मूर्ति बनाने का वर्णन किया (यशा 40:19–20; 44:9–17)। स्वरूपों को पिघले हुए धातु का उपयोग करके एक साँचे में ढाला गया (40:19; 44:10)। मूर्तियों को लोहारों द्वारा गढ़ा गया (44:12), लकड़ी से तराशा गया (44:13–17), और कीमती धातु से मढ़ा गया (40:19)। छोटे मिट्टी के स्वरूपों और पट्टिकाएँ भी ढाली और भट्टी में पकाई जाती थीं, और मूर्तियों को पत्थर से तराशा जाता था। भजनकार ने मूर्तियों और स्वरूपों के खिलाफ आवाज उठाई (भज 96:5; 97:7; 106:34–39) और मूर्तियों की असहायता का वर्णन भजन संहिता 115:4–8 और 135:15–18 में किया गया है।

इस्राएल के उत्तरी और दक्षिणी राज्य बंदी बना लिए गए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को त्याग दिया और मूर्तियों की सेवा की। यहूदी भली-भांति जानते थे कि मूर्तिपूजा ने उन्हें बँधुआई में डाल दिया था, और बाबुल में अपने समय के दौरान, उन्होंने मूर्तियों के प्रति एक घृणा विकसित की जो आज तक यहूदी धर्म की विशेषता रही है।

नए नियम में

नए नियम में मूर्तिपूजा *(एईडोलोलाट्रेया)* और मूर्तिपूजक *(एईडोलोलैट्रेस)* पर सबसे व्यापक चर्चा पौलुस की कुरिन्थियों को लिखी गई पहली पत्री में मिलती है। एक पहले की (अब अस्तित्व में नहीं) पत्री में, पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों से कहा था कि वे उन लोगों के साथ संगति न करें जो स्वयं को विश्वासी कहते हैं लेकिन फिर भी मूर्तिपूजक हैं (1 कुरि 5:9–11)। उस पत्री के बाद कुरिन्थुस के लोगों ने संभवतः पौलुस से इस विषय पर स्पष्टीकरण मांगा होगा। इसलिए, इस पत्री में पौलुस उनके प्रश्न का उत्तर देते हैं; "मूर्तिपूजक" का उल्लेख 5:10–11, 6:9, 10:7 में किया गया है, और "मूर्तिपूजा" का उल्लेख 10:14 में किया गया है।

शब्द "मूर्ति पूजा" और "मूर्ति पूजक" दो अन्य अभिव्यक्तियों से संबंधित हैं: (1) "मूर्ति"*(*एइडॉलन*)*, जो 1 कुरिन्थियों 8:4; 10:19; 12:2 में पाया जाता है; और (2) "मूर्तियों को अर्पित भोजन" *(*एईडोलोथुटोस*)*, जो 1 कुरिन्थियों 8:1, 4, 7; 10:19 में पाया जाता है। जिस प्रकार की मूर्ति पूजा की पौलुस निंदा करते हैं, वह है जिसमें मूर्तियों को बलिदान मसीही लोग चढ़ाते थे और फिर उस भोजन का सेवन करते थे जो उन्हें अर्पित किया गया था। प्रतिभागियों को मूर्ति पूजक कहा जाता है क्योंकि उनकी मूर्तिपूजक बलिदानों में भागीदारी को दुष्टात्माओं के साथ संगति के रूप में देखा जाता था। पौलुस ने मूर्ति-दुष्टात्माओं की उपस्थिति में लोकप्रिय मन्दिरों में बलिदान के भोजन के सेवन को सख्ती से मना किया। इस प्रकार, उन्होंने मूर्तियों के बारे में अपने समय के अधिकांश यहूदियों के समान दृष्टिकोण साझा किया। यहूदियों के लिए, मूर्तियाँ और विधर्मी देवता समान थे। (देखें 1 थिस्स 1:9, जहाँ पौलुस "मूर्तियों" की तुलना "जीवित और *सच्चे* परमेश्वर" से करते हैं) पौलुस के लिए, मूर्तियाँ स्वयं में कुछ नहीं थीं (1 कुरि 8:4); हालांकि, मूर्ति के पीछे एक दुष्टात्मा थी (10:20)।

मूर्तिपूजक मन्दिरों में पंथिक भोज में बलि का भोजन खाने की पौलुस ने निंदा की थी क्योंकि यह समझा जाता था कि ऐसा करने वाले लोग दुष्टात्माओं के साथ सहभागी हो जाते हैं (देखें 1 कुरि 10:19–21)। हालांकि, पौलुस को उन लोगों से कोई समस्या नहीं थी जिन्होंने इन आयोजनों से बचा हुआ भोजन खरीदा और जिसे बाद में बाज़ार में बेचा गया। उनके निर्णय में, यदि वे इसे घर पर खाते थे, तो वे मूर्तिपूजा में भाग नहीं ले रहे थे। वे इस भोजन को अच्छे विवेक के साथ खा सकते थे—जब तक कि, निश्चित रूप से, ऐसा करने में वे किसी कमजोर विश्वासी को नष्ट करने का साधन न बनें। ऐसे विश्वासियों के लिए, किसी को परहेज करना चाहिए। यह विवेक का मामला था (10:25–29)। लेकिन मूर्तिपूजक उत्सवों में जाना और मूर्तियों को अर्पित भोजन खाना किसी भी रूप में इसकी अनुमति नहीं थी।

इससे पहले कि वे मसीही बनें कुरिन्थुस के लोग इन भोजों में नियमित रूप से भाग लेते थे, और ऐसा प्रतीत होता है कि उनके परिवर्तन के बाद भी वे ऐसा करते रहे। कुरिन्थुस में ऐसे भोज राष्ट्रीय त्योहारों और निजी उत्सवों में नियमित प्रथा थी। "देवताओं" (जिन्हें पौलुस "दुष्टात्माएँ" मानते थे) को इन आयोजनों में उपस्थित माना जाता था क्योंकि बलिदान उनके लिए किए जाते थे। इसलिए, इन आयोजनों में भाग लेना दुष्टात्माओं से जुड़ना और इस प्रकार मूर्तिपूजक बनना था। प्राचीन इस्राएली कई अवसरों पर अपने मूर्तिपूजक पड़ोसियों द्वारा बहकाए जाने पर इन मूर्तिपूजक उत्सवों में भाग लेकर मूर्तिपूजा में बहक गए थे (उदाहरण के लिए, गिन 25; पुष्टि करें निर्ग 32:6)। इन उत्सवों में सभी प्रकार की अनैतिकता शामिल थी। 1 कुरिन्थियों 10 में, पौलुस ने इस्राएलियों के इस धर्मत्याग का उल्लेख किया और इसे एक नकारात्मक उदाहरण के रूप में उपयोग किया। क्योंकि इस्राएली मूर्तिपूजक उत्सवों में शामिल हो गए थे, वे मूर्तिपूजा और व्यभिचार में बहक गए, जिससे परमेश्वर का क्रोध भड़क उठा और विनाश को लाया।

पौलुस के अन्य पत्रियों में मूर्तिपूजा का उल्लेख किया गया है, लेकिन 1 कुरिन्थियों में पाई जाने वाली परिभाषा और विस्तारित चर्चा के साथ नहीं किया है। फिर भी, पौलुस वास्तविक मूर्तिपूजा और जिसे हम रूपकात्मक मूर्तिपूजा कह सकते हैं (अर्थात, ऐसी मूर्तिपूजा जिसमें किसी वस्तु की परमेश्वर से अधिक इच्छा करना) के खिलाफ बोलते हैं।

रोमियों 1:18–32 में यौन अनैतिकता और अन्य पापों का अंतिम कारण मूर्तिपूजा बताया गया है। अन्यजातियों को यह जानना चाहिए था कि परमेश्वर का अस्तित्व है, जैसा कि सृष्टि और विवेक में प्रमाणित होता है, उन्होंने अमर, अदृश्य परमेश्वर को त्यागकर उसके बदले में नश्वर, दृश्यमान प्रतिमाओं (अर्थात् मूर्तियों) को अपना लिया। इस त्याग के कारण, परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया (रोम 1:24)। इस प्रकार, मूर्तिपूजा पौलुस की सूची में शामिल है जिसे वह "शरीर के काम" कहते हैं (देखें गला 5:19–20)। और जो मूर्ति पूजा करने वाले हैं, वे उन सभी दुष्ट लोगों की सूची में शामिल हैं जो परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे (देखें 1 कुरि 6:9)।

इफिसियों 5:5 में पौलुस फिर से मूर्तिपूजकों को उन लोगों में शामिल करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे। हालांकि, ऐसे मूर्तिपूजक केवल वे नहीं हैं जो मूर्तिपूजक मन्दिरों में जाते हैं और मूर्तियों की पूजा करते हैं; वे वो लोग हैं जो लालची या लोभी होते हैं। श्रेष्ठ पांडुलिपि प्रमाण के अनुसार, यह पद कहता है, "कोई व्यभिचारी या अशुद्ध व्यक्ति या लालची व्यक्ति, जो मूर्तिपूजक के समान है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में कोई वारिस नहीं है।" यहाँ यह प्रतीत होता है कि लालची, लोभी व्यक्ति जो अपनी इच्छाओं को अपना देवता बनाता है, वह मूर्तिपूजक के समान है। इस प्रकार, लोभ और मूर्तिपूजा को समानार्थी बना दिया गया है। समानांतर पद, कुलुस्सियों 3:5, इसे स्पष्ट करता है, जो शाब्दिक रूप से कहता है कि लोभ मूर्तिपूजा है।

यह भी देखें कनानी देवता और धर्म; देवी देवता; उपवन; उच्च स्थान।

मूल पाण्डुलिपि

मूल पाण्डुलिपि

एक पुस्तक का मूल हस्तलिखित दस्तावेज़ जो अंततः बाइबल का हिस्सा बन गया। बाइबल की मूल पाण्डुलिपियों में से कोई भी शेष नहीं है। इसके बजाय, अपोग्राफा नामक प्रतियाँ उपलब्ध हैं। अपोग्राफा उन लिपिकारों द्वारा बनाई गई थीं जिनका कार्य पाण्डुलिपियों की सावधानीपूर्वक नकल करना

था। इन प्रतियों की पर्याप्त संख्या है जो हमें यह विश्वास दिलाती है कि हमारी वर्तमान बाइबल मूल लेखों के शब्दों को सटीक रूप से संरक्षित करती है। *देखें* बाइबल की पाण्डुलिपियाँ और पाठ (दोनों लेख)।

मूशी, मूशियों

मरारी के पुत्र, लेवी के पोते और महली के भाई (निर्ग 6:19; गिन 3:20; 1 इति 6:19, 47)। वे महली, एदेर और यरेमोत के पिता थे (1 इति 23:21–23; 24:26, 30) और मुशियों के परिवार के कुल थे (गिन 3:33; 26:58)।

मूसा

उन इब्रानी के लोगों का महान अगुवा, जिन्होंने उन्हें मिस्र के दासत्व से कनान के प्रतिज्ञात देश तक पहुँचाया, और जिस ने उन्हें सीनै पहाड़ पर व्यवस्था दी, वह सदियों तक उनके धार्मिक विश्वास का आधार बना। इस एक व्यक्ति में भविष्यद्वक्ता, याजक, व्यवस्था देनेवाला, न्यायाधीश, मध्यस्थ, चरवाहा, चमत्कार करनेवाला, और एक देश के संस्थापक की सभी भूमिकाएँ केंद्रित हैं।

उसके नाम का अर्थ अनिश्चित है। इसे एक इब्री शब्द के रूप में समझाया गया है जिसका अर्थ है "निकाला" (निर्ग 2:10; पुष्टि करें 2 शमू 22:17; भज 18:16)। यदि, हालांकि, यह फिरौन की बेटी द्वारा उसे दिया गया एक मिस्री नाम है, जिसने उसे पाया था, तो यह अधिक संभावना है कि यह मिस्री शब्द 'पुत्र' से लिया गया है (जो कई प्रसिद्ध मिस्र के नामों जैसे आहमोस, थुतमोस, और रामसेस का हिस्सा भी है)। पुराने नियम में किसी और का यह नाम नहीं है।

निस्संदेह, पुराने नियम में सबसे महान व्यक्ति (जिसका नाम 767 बार उल्लेख किया गया है), उनका प्रभाव नए नियम के पृष्ठों तक भी फैला हुआ है (जहाँ उनका 79 बार उल्लेख किया गया है)। अपने जीवन के प्रथम 40 वर्ष उसने फ़िरौन के घराने में बिताए (प्रेरि 7:23), जहाँ उसे मिस्रियों का सारा ज्ञान सिखाया गया। अगले 40 वर्ष उसने मिद्यान में फिरौन के क्रोध से भागे हुए एक भगोड़े के रूप में बिताए, जब उसने एक मिस्री को मार डाला था जो एक इब्रानी के साथ दुर्व्यवहार कर रहा था। उनके अन्तिम 40 वर्ष मिस्र में दासत्व से इस्राएलियों को निकालकर उस देश तक ले जाने में समर्पित थे जिसे यहोवा ने अब्राहम और उनके वंशजों से प्रतिज्ञा की थी (उत 12:1–3)। उन्होंने 120 वर्ष की आयु में प्राण त्याग दिए, इस्राएलियों को 40 वर्षों तक जंगल में सफलतापूर्वक नेतृत्व करते हुए यरदन नदी के पूर्वी किनारे पर प्रतिज्ञात देश की सीमा तक पहुँचा दिया (व्य.वि. 34:7)। वे इतिहास के महानतम व्यक्तियों में से एक हैं, जिन्होंने गुलामों के एक समूह को अविश्वसनीय रूप से कठिन परिस्थितियों में एक ऐसे देश में ढाल दिया जिसने इतिहास की पूरी दिशा को प्रभावित और परिवर्तित किया।

पूर्वावलोकन

- पृष्ठभूमि
- मिस्र में--प्रथम 40 वर्ष
- मिद्यान में--द्वितीय 40 वर्ष
- मिस्र से कनान तक--तृतीय 40 वर्ष
- नए नियम में मूसा

पृष्ठभूमि

मूसा के जीवन के लिए जानकारी का एकमात्र स्रोत बाइबल है। पुरातत्वज्ञान मूसा से जुड़े घटनाओं की विश्वसनीयता की पुष्टि करता है, लेकिन इसने कभी भी उनके अस्तित्व या कार्य की कोई विशिष्ट पुष्टि नहीं की है। उसकी कहानी की शुरुआत मिस्र में याकूब, उसके पुत्रों और उनके घरानों के आगमन से होती है जब कनान में अकाल पड़ा था। यूसुफ द्वारा आमंत्रित और फ़िरौन द्वारा स्वागत किए गए, घराने ने पूर्वोत्तर मिस्र में गोशेन नामक क्षेत्र में बस गए, जहाँ वे 430 वर्षों तक रहे (निर्ग 12:40)। समय बीतने के साथ, उनकी संख्या तेजी से फूलने-फलने लगी, जिससे भूमि उनसे भर गई (1:7)। मिस्र पर एक नया राजा आया जो यूसुफ को नहीं जानता था। बाइबल के विवरण में इस फ़िरौन का नाम नहीं दिया गया है, और उसकी पहचान के बारे में कभी सहमति नहीं बनी है। उसे सबसे अधिक बार थुतमोस III (1504–1451 ई.पू.), सेटी I (1304–1290 ई.पू.), या रामसेस II (1290–1224 ई.पू.) के रूप में पहचाना गया है। फ़िरौन ने यह सोचकर कि उनकी बढ़ती संख्या उसके राष्ट्र की सुरक्षा के लिए खतरा बन सकती है, उनकी संख्या को कम करने के उपाय करने का निर्णय लिया। उसने उन्हें पितोम और रामसेस के भण्डार शहरों का निर्माण करने के लिए काम पर लगा दिया, लेकिन काम की कठोरता ने उन्हें कम नहीं किया। इसके बाद उसने दाइयों का सहयोग लेने की कोशिश की ताकि वे लड़कों को नष्ट कर सकें, लेकिन उन्होंने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया। फिर उसने अपने लोगों को नील नदी में लड़कों को डुबोने की आज्ञा दी। इस पहले ज्ञात यहूदी उत्पीड़न की पृष्ठभूमि में, बालक मूसा उत्पन्न हुआ।

मिस्र में—प्रथम 40 वर्ष

जन्म और प्रारम्भिक जीवन

लेवी के घराने के एक पुरुष जिसका नाम अम्राम था, जिसने अपनी फूफी योकेबेद को विवाह किया (निर्ग 6:20; पुष्टि करें 2:1)। उनका पहिलौठे, हारून, जो मूसा से तीन वर्ष बड़ा था, उस समय उत्पन्न हुआ जब इब्री शिशुओं को मारने की आज्ञा

नहीं दी गई थी, इसलिए उसके जीवन को कोई खतरा नहीं था। हालांकि, जब मूसा उत्पन्न हुआ, तब क्रूर व्यवस्था लागू थी, और तीन महीने के बाद, जब उसकी माता उसे और छिपा न सकी तब उसके लिये सरकण्डों की एक टोकरी लेकर और उस पर चिकनी मिट्टी और राल लगाकर लीप दिया। उसने बालक को टोकरी में रखा और उसे नदी के किनारे सरकण्डों के बीच रख दिया। एक बड़ी बहन, मिर्याम यह देखने के लिए नदी के पास रुकी रही कि क्या होगा। जल्दी ही फ़िरौन की बेटी (जिसे जोसीफस ने थर्मुथिस और अन्य लोगों ने हत्शेपसुत के रूप में पहचाना है, लेकिन जिसकी वास्तविक पहचान निर्धारित नहीं की जा सकती) नदी में स्नान करने आई, जैसा कि उसकी आदत थी। उसने बालक को देख लिया, उसे इब्रानी बालकों में से एक के रूप में पहचाना, और तय किया कि वह इस बालक को अपने बालक के रूप में पालेगी। मिर्याम अपने छिपने के स्थान से बाहर आई और बालक को दूध पिलाने के लिए एक इब्रानी महिला को लाने का प्रस्ताव दिया, जिसके लिए राजकुमारी मान गयी। मिर्याम बालक को उसकी अपनी माता के पास ले गई, जिसने उसे शायद दो या तीन वर्ष तक रखा (पुष्टि करें 1 शमू 1:19–24)। उन प्रारम्भिक वर्षों का कोई विवरण नहीं है। चाहे उसकी माता ने उसके बाद के बचपन और युवावस्था के दौरान उसे देखना जारी रखा या उसकी सच्ची पहचान उसे बताई या उसे इब्रानी धर्म सिखाया, ये सब अटकलों का विषय हैं। मूसा को मिस्रियों की सारी विद्या में प्रशिक्षित किया गया था, जैसा कि राज घराने के सदस्य के लिए उपयुक्त होगा, और वह अपने शब्दों और कर्मों में शक्तिशाली हो गया (प्रेरि 7:22)।

अपने लोगों के साथ पहचान

मूसा को इस बात का एहसास कब हुआ कि वह मिस्री नहीं बल्कि इब्री है यह पता लगा पाना सम्भव नहीं है, लेकिन यह स्पष्ट है कि जब वह 40 वर्ष का हुआ तब तक उसे यह पता चल गया था। एक दिन वह अपने लोगों से मिलने और उनके साथ हो रहे व्यवहार को देखने के लिए बाहर गया, क्योंकि मूसा के जन्म के समय फ़िरौन द्वारा उनके खिलाफ उठाए गए क्रूर कदमों को नहीं हटाया गया था। एक मिस्री को एक इब्री को मारते हुए देखकर, मूसा क्रोध में आकर उस मिस्री को मार डाला और उसे दफना दिया। उसे लगा कि यह काम अनदेखा रह गया था, जब तक कि अगले दिन उसने दो इब्रियों को एक-दूसरे से लड़ते हुए नहीं देखा। जब उसने उनके बिच शांति स्थापित करने की कोशिश की, तो वे दोनों उस पर पलट गए और उसे हत्या का दोषी ठहराया: "किसने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया? क्या तुम मुझे मारने का इरादा रखते हो, जैसे तुमने मिस्री को घात किया?" (निर्ग 2:14)। प्रेरितों के काम 7:25 जोड़ता है: "उसने सोचा कि उसके भाइयों ने समझ लिया कि परमेश्वर उन्हें उसके हाथ से मुक्ति दे रहा है"। फ़िरौन के घराने का सदस्य होने के बावजूद अब वह दण्ड से नहीं बच सकेगा, तो मूसा अपना जीवन बचाने के लिए मिद्यान देश की ओर भाग गया।

मिद्यान में—द्वितीय 40 वर्ष

यित्रो के कुटुम्बियों में विवाह

मिद्यान पहुँचने के तुरन्त बाद, मूसा एक कुएं के पास बैठ गया, जहाँ उसने मिद्यान के याजक की सात बेटियों को देखा जो अपने पिता के झुण्ड के लिए पानी खींचने के लिए कुएं पर आई थीं। चरवाहे आए और उन्हें भगा दिया, लेकिन मूसा ने हस्तक्षेप किया और उन्हें अपने पशुओं को पानी पिलाने में मदद की। जब यित्रो (निर्ग 3:1; जिसे रूएल भी कहा जाता है, 2:18; होबाब, गिन 10:29) जो हुआ था उसके बारे में उसे पता चला, तो उसने मूसा को अपने घराने के साथ रहने के लिए आमंत्रित किया और उसे सिप्पोरा को अपनी पत्नी के रूप में दिया। (कुछ विद्वानों के बीच गिन 10:29 में होबाब की पहचान के बारे में असहमति है; कुछ सोचते हैं कि वह मूसा के ससुर थे, जबकि अन्य मानते हैं कि होबाब मूसा के साले थे। (होबाब *यह भी देखें*)। दो बालक, गेर्शोम (निर्ग 2:22) और एलीएजेर (18:4), का उत्पन्न मिद्यान में मूसा और सिप्पोरा से हुआ था। चालीस वर्ष बीत गए, और मिस्र में अपने पूर्व जीवन के बारे में मूसा के विचार अतीत में धुंधले हो गए होंगे। वह यह नहीं देख सकता था कि परमेश्वर शीघ्र ही उसे मिस्र के दरबार के बीच में वापस भेज देंगे, जहाँ वह अब मृत फ़िरौन के पुत्र का सामना करेगा और इब्रियों को उन वर्षों की गुलामी से मुक्त करने की माँग करेगा, जिसे उन्होंने इतने समय तक सहा था। परमेश्वर ने अपने लोगों को नहीं भुलाया था और अब उन्हें छुटकारा देने के लिए तैयार था।

जलती झाड़ी में परमेश्वर के दर्शन

एक दिन, जब मूसा अपने ससुर के भेड़-बकरियों की देखभाल कर रहे थे, तो वे उन्हें होरेब पर्वत (जिसे सीनै भी कहा जाता है) ले गए, जहाँ परमेश्वर ने उन्हें एक झाड़ी के बीच से आग की लपटों में प्रकट किया जो जल रही थी लेकिन भस्म नहीं हो रही थी। मूसा ने अजीब दृश्य को और करीब से देखने के लिए पास जाकर देखा और झाड़ी से परमेश्वर को उसे पुकारते हुए सुना, “हे मूसा, हे मूसा!” मूसा ने उत्तर दिया, “मैं यहाँ हूँ।” इससे पहले कि वह झाड़ी के और पास जा सके, परमेश्वर ने कहा, “इधर पास मत आ; अपने पाँवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है” (निर्ग 3:4–5)। उन्होंने आगे अपना परिचय अब्राहम, इसहाक, और याकूब के परमेश्वर के रूप में दिया। उन्होंने मूसा को आश्वासन दिया कि वह अपनी प्रजा की कठोर पीड़ाओं से अवगत है और उनकी पुकार सुन चुके हैं। फिर उसने मिस्र भेजने की अपनी योजना के बारे में बताया ताकि मूसा को उनके लोगों को उनकी गुलामी से छुड़ा सके।

एक चुनौती का सामना करते हुए जो उसकी क्षमताओं से परे लग रही थी, वृद्ध मूसा ने कार्य को स्वीकार न करने के बहाने बनाने शुरू कर दिए। परमेश्वर ने मूसा को आश्वासन दिया कि वह निश्चय उसके संग रहेंगे (निर्ग 3:11–12)। उसके इस

बहाने पर कि अगर लोग उसे उसके परमेश्वर का नाम पूछें जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है तो वह उत्तर नहीं दे पाएगा, परमेश्वर ने अपने नाम को रहस्यमय बयान में प्रकट किया, " 'मैं जो हूँ सो हूँ' ... तू उन्हें यह कहना, 'जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है' "(पद 13–14)। नाम के लिए कई व्याख्याएँ प्रस्तावित की गई हैं। इसका और कुछ भी अर्थ हो, यह निस्संदेह परमेश्वर के आत्म-अस्तित्व और सर्व-पर्याप्तता का सुझाव देता है। फिर मूसा ने तर्क दिया कि लोग उस पर विश्वास नहीं करेंगे जब वह उन्हें बताएगा कि परमेश्वर ने उसे मिस्र से उन्हें छुड़ाने के लिए भेजा है। प्रतिउत्तर में यहोवा ने उसे तीन संकेत दिए: जब उसने अपनी चरवाहे की लाठी को भूमि पर फेंका, तो वह एक सर्प बन गई। जब उसने अपना हाथ छाती पर रखकर ढाँप लिया, तो उसके हाथ को कोढ़ हो गया। उसे यह भी बताया गया कि जब वह नील नदी का पानी भूमि पर डालेगा, तो वह लहू बन जाएगा (निर्ग 4:1–9)। इन शक्तिशाली साक्षियों के साथ भी कि परमेश्वर उसके साथ हैं, मूसा ने एक और आपत्ति उठाई, "हे मेरे प्रभु, मैं बोलने में निपुण नहीं, न तो पहले था, और न जब से तू अपने दास से बातें करने लगा; मैं तो मुँह और जीभ का भद्दा हूँ" (पद 10)। परमेश्वर ने उसे बताया कि वह उसे क्या कहना है सिखाएंगे, लेकिन एसे आश्वासन के बावजूद, मूसा ने परमेश्वर से किसी और को भेजने के लिए कहा। क्रोध और करुणा से मिश्रित होकर, परमेश्वर ने मूसा के भाई हारून को प्रवक्ता बनाया, लेकिन कहा कि उनके निर्देश सीधे मूसा को दिए जाएंगे।

मिस्र को लौटें

मूसा ने अपनी पत्नी और पुत्रों को लिया और मिस्र के लिए निकल पड़े, अपने ससुर से केवल यह कहकर कि वह वहाँ अपने कुटुंबियों से मिलने जाना चाहते हैं (निर्ग 4:18)। बाइबल के अनुसार उसने अपनी पत्नी और पुत्रों को एक ही गदहे पर बिठाकर मिस्र वापस जाने के लिए यात्रा की (पद 20)। इस तथ्य से कि तीनों ने एक ही पशु की सवारी की, यह संकेत मिलता है कि दोनों बालक काफी छोटे थे और मूसा के विवाह के शुरुआती वर्षों में उत्पन्न नहीं हुए थे। मार्ग में एक ठहरने की जगह पर एक अजीब घटना घटी। यहोवा ने मूसा से भेंट करके उसे मार डालना चाहा (पद 24), जाहिर तौर पर इसलिए क्योंकि मूसा ने मिद्यान छोड़ने से पहले बालक का खतना नहीं किया था। जब सिप्पोरा को एहसास हुआ कि मूसा का जीवन खतरे में है, तो उसने खुद ही अनुष्ठान किया और अपने पति से कहा, "निश्चय तू लहू बहानेवाला मेरा पति है!" (पद 25)। परमेश्वर के साथ इस असामान्य मुलाकात में चाहे जो भी शामिल रहा हो, यह एक गंभीर अनुस्मारक था कि जिसे वाचा के लोगों का अगुवा बनना था, उसे स्वयं वाचा के किसी भी भाग की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए (उत 17:10–14)।

परमेश्वर ने हारून से (जो अभी भी मिस्र में था) कहा कि वह उस पहाड़ पर जाए जहाँ मूसा ने जलती झाड़ी में परमेश्वर के दर्शन किये और वहाँ अपने भाई से मिले। मूसा ने हारून को सब कुछ बताया जो हुआ था, और साथ में वे मिस्र गए, प्राचीनों को इकट्ठा किया, और उन्हें इन मामलों के बारे में सूचित किया। जब मूसा और हारून ने लोगों के सामने वे चिन्ह दिखाए, तो उन्होंने विश्वास किया कि इन अगुवों को परमेश्वर ने उनकी पीड़ा से छुड़ाने के लिए भेजा है (निर्ग 4:30–31)।

मिस्र से कनान तक— तृतीय 40 वर्ष

फ़िरौन के साथ दर्शन

मिस्र लौटने के तुरन्त बाद, मूसा और हारून ने जाकर फ़िरौन से कहा, “इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, "मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, कि वे जंगल में मेरे लिये पर्व करें।" (निर्ग 5:1)। फ़िरौन ने इस आज्ञा को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि उसने कभी मूसा के इस परमेश्वर के बारे में नहीं सुना था। जब कोई यह महसूस करता है कि मिस्र के राजा खुद को देवता मानते थे, तो फ़िरौन का अपमान और भी अधिक तीव्र हो जाता है। उसने न केवल मूसा की आज्ञाओं को अस्वीकार किया, बल्कि उसने इब्रियों के भार को भी बढ़ा दिया। उनका काम तब तक उन्हें उपलब्ध कराए गए फूस का उपयोग करके ईंट बनाने की आवश्यकता थी, लेकिन अब फ़िरौन ने कहा कि उन्हें अपना पुआल खुद इकट्ठा करना होगा और फिर भी उतनी ही संख्या में ईंटें बनानी होंगी। इब्रियों ने मूसा की ओर पीड़ा और क्रोध में देखा और उसे दोषी ठहराया कि उसने उन्हें फ़िरौन के सामने अप्रिय कर दिया। मूसा भी घटनाओं की दिशा को समझ नहीं सका और परमेश्वर से कटुता से शिकायत की। परमेश्वर ने मूसा को आश्वस्त किया कि वह इब्रियों को उनकी गुलामी से छुटकार दिलाएगा, और इसके अतिरिक्त, उन्हें उस भूमि में ले जाएगा जिसे उसने अब्राहम, इसहाक, और याकूब को वचन दिया था। फिर उसने मूसा को आज्ञा दी कि वह फ़िरौन के पास लौटे और इब्रियों को छूटने की आज्ञा को दोहराए, यह चेतावनी देते हुए कि यदि यह आज्ञा नहीं मानी गई तो कठोर दण्ड का सामना करना पड़ेगा।

फ़िरौन की उपस्थिति में फिर से लाए गए, मूसा ने इस्राएलियों को छुड़ाने के लिए अपनी आज्ञा को दोहराया। उसने अपनी लाठी को सर्प में बदलकर फ़िरौन को प्रभावित करने की कोशिश की, लेकिन मिस्र के जादूगरों ने अपनी गुप्त कलाओं के माध्यम से इस चमत्कार की नकल कर ली, जिससे फ़िरौन का हृदय कठोर बना रहा और उसने मूसा की बात नहीं मानी। मूसा ने शीघ्रता से मिस्र देश पर नौ विपत्तियाँ लाईं ताकि परमेश्वर जो सर्वशक्तिमान है उसे प्रदर्शित किया जा सके, जिससे फिरौन को आज्ञाकारी होने के लिए विवश किया जा सके। इनमें नील नदी का पानी लहू में बदल जाना, मेंढकों की विपत्ति, कुटकियों की विपत्ति, फिर डांसों की विपत्ति, पशुओं पर विपत्ति, लोगों पर फोड़े, ओले, टिड्डियों की विपत्ति, और पूरी तरह से अंधकार शामिल थे। मेंढकों, डांसों, ओलों, टिड्डियों और अंधकार की विपत्तियों के दौरान, फ़िरौन परेशान था और अस्थायी रूप से मान जाता था और मूसा की आज्ञाओं से सहमत हो जाता था, परन्तु जैसे ही विपत्ति टल

जाती, उसका हृदय कठोर हो जाता और वह अपनी प्रतिज्ञा से फिर जाता। पहली नौ विपत्तियों का परिणाम मिस्र की भूमि का भयानक विनाश था, लेकिन इस्राएली अभी तक नहीं छूटे थे। अब भी एक और विपत्ति बाकी थी, जो सबसे भयानक थी।

पहला फसह

परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मिस्रियों के लिए एक और विपत्ति बाकी है: "मिस्र के हर घराने में सभी पहलौठे मर जाएंगे, सिंहासन पर बैठे फ़िरौन के सबसे बड़े बेटे से लेकर उसके सबसे नीच दास के सबसे बड़े पुत्र तक। यहाँ तक कि जानवरों के पहलौठे भी मर जाएंगे" (निर्ग 11:5)। इसके अलावा, उसने मूसा को आश्वासन दिया कि महामारी इब्रियों के एक भी घराने को नहीं छुएगी, "तब तुम जानोगे कि यहोवा मिस्रियों और इस्राएलियों के बीच अन्तर करता है" (पद 7)।

परमेश्वर ने मूसा और हारून के माध्यम से लोगों को जल्दी से देश छोड़ने की तैयारी करने की आज्ञा दी। उन्हें मिस्रियों के पास जाकर उनसे उनके चांदी और सोने के गहनों के लिए पूछना था (निर्ग 11:2–3), एक विनती जिसे मिस्रियों ने स्वीकार कर लिया, शायद इब्रियों के डर से और इस विश्वास में कि भेंट उन विपत्तियों का अंत कर देंगे जो देश पर आए थे। इब्रियों को यह भी निर्देश दिया गया था कि वे प्रत्येक परिवार के लिए एक मेमना तैयार करें—छोटे परिवार आपस में बाँट सकते थे—जो मिस्र देश में खाए जाने वाले अन्तिम भोजन के लिए होगा (यह रीति कई सदियों तक यहूदियों के फसह पर्व के पालन का आदर्श बनी)। उस रात जिस घर में फसह का भोजन खाया जा रहा था, उसके दरवाजों और चौखटों पर मेमने का लहू लगाया जाना था। यहूदियों से प्रतिज्ञा की गई थी कि जहाँ भी दरवाजे पर लहू होगा, उस घर को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा। उन्हें बिना खमीर की रोटी तैयार करने के लिए भी निर्देशित किया गया था। आधी रात को यहोवा के मृत्यु दूत ने मिस्र देश में सभी पहलौठों को मार डाला, स्वयं फ़िरौन के पहलौठे से लेकर कालकोठरी में सबसे निचले बंदी तक; मिस्रियों के एक भी घर विपत्ति से नहीं बच सका। जब फ़िरौन ने देखा कि क्या हुआ है, उसने मूसा और लोगों को तुरन्त देश छोड़ने का आदेश दिया (12:31–32)। बाइबल के लेख के अनुसार लगभग 600,000 इब्रानी पुरुष मिस्र छोड़ गए। महिलाओं और बच्चों को मिलाकर, कुल संख्या 20 लाख से अधिक होगी।

मिस्र से निर्गमन

निर्गमन पुराने नियम की केंद्रीय घटना है और यह इस्राएल के एक देश के रूप में जन्म को चिह्नित करता है। यहूदी आज भी उस घटना को इतिहास में अपने लोगों की ओर से परमेश्वर के महान उद्धारक कार्य के रूप में देखते हैं, जैसे कि मसीही अपने विश्वास के महान उद्धारक कार्य के रूप में क्रूस को देखते हैं।

मिस्र से इब्रियों द्वारा लिया गया सटीक मार्ग आज निर्धारित नहीं किया जा सकता है, हालांकि कई संभावनाएँ प्रस्तुत की गई हैं। उन्होंने कनान के लिए सबसे छोटा और सीधा मार्ग नहीं लिया (जो भूमध्य सागर के तट के साथ लगभग 10 दिनों की यात्रा होती), बल्कि सीनै पहाड़ की दिशा में निकल पड़े, जहाँ मूसा ने पहले जलती हुई झाड़ी में परमेश्वर का दर्शन किया था। एक संकेत के रूप में कि मूसा को लोगों को छुड़ाने के लिए भेजा गया था, परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह उन्हें उसी स्थान पर लाएगा, जहाँ वे परमेश्वर की उपासना करेंगे (निर्ग 3:12)। इब्रियों ने यूसुफ के इस विनती को नहीं भुलाया कि जब वे अपनी भूमि में लौटें तो उसकी हड्डियों को अपने साथ ले जाएं (उत 50:25; निर्ग 13:19)।

जब लोग यात्रा कर रहे थे, तो दिन में एक बादल का खम्भा और रात में आग का खम्भा उनके आगे-आगे चलता था। बादल परमेश्वर की उपस्थिति को उनके लोगों के साथ दर्शाता था और उन्हें उस मार्ग पर मार्गदर्शन करता था जिस पर उन्हें यात्रा करनी चाहिए।

यहाँ मिस्र में, फ़िरौन इब्रियों के देश छोड़ देने के बारे में पुनर्विचार कर रहा था और अपनी सेना के साथ उनका पीछा करने और उन्हें वापस लाने का निर्णय लिया। जब इब्रियों ने धूल का बादल को निकट आते देखा और महसूस किया कि मिस्र की सेना उनका पीछा कर रही है, तो वे डर गए। सामने समुद्र था और पीछे मिस्री थे; बचने का कोई मार्ग नहीं दिख रहा था। लोग मूसा पर पलट गए, उन्हें मिस्र से बाहर लाने के लिए दोषी ठहराया। परमेश्वर ने फिर से उन्हें वचन दिया कि उन्हें डरने या अपनी रक्षा के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। उसने उनके लिए लड़ाई लड़ने और उन्हें विजय दिलाने का वचन दिया (निर्ग 14:14)।

प्रभु ने एक प्रचण्ड पूर्वी हवा द्वारा सरकण्डों के सागर (जिसे परम्परागत रूप से, लेकिन गलती से लाल समुद्र कहा जाता है) के जल को विभाजित किया और इस्राएलियों को सूखी भूमि पर से होकर दूसरी ओर पार करने दिया। मिस्रियों ने इस्राएलियों का पीछा किया, उन्हें समुद्र के सूखे तल में प्रवेश करते हुए। लेकिन इससे पहले कि वे दूसरी तरफ पहुँचते, पानी फिर से इकट्ठा हो गया, जिससे समुद्र के बीच में मिस्र की सेना नष्ट हो गई और इस्राएली दूसरी तरफ सुरक्षित रह गए। लोगों ने अपने महान उद्धार का गीत गाकर स्तुति की (निर्ग 15) और फिर अपनी यात्रा जारी रखी। निम्नलिखित कथा मरूभूमि में जीवित रहने के लिए इस्राएलियों के संघर्ष का वर्णन करती है—भोजन और पानी की समस्याएं, आंतरिक मतभेद, मूसा के खिलाफ कुड़कुड़ाना, और शत्रुओं के साथ संघर्ष। अपने सभी अनुभवों के दौरान, मूसा एक एकीकृत शक्ति और महान आत्मिक अगुवा के रूप में उभरते हैं।

हाल ही में परमेश्वर के महान उद्धार कार्य को देखने के बावजूद, इस्राएलियों का विश्वास मजबूत नहीं था। तीन दिन बाद वे एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ का पानी पीने योग्य नहीं था,

और वे मूसा के खिलाफ शिकायत करने लगे। यहोवा ने मूसा को पानी को मीठा करने का तरीका दिखाया, और लोगों की आवश्यकताएं पूरी हो गईं (निर्ग 15:22–25)। जब वे सीन के जंगल में पहुंचे, तो उन्होंने फिर से कुड़कुड़ाने लगे, इस बार खाने की कमी के कारण। परमेश्वर ने उनके भोजन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए मन्ना, एक रोटी जैसी भोजनवस्तु प्रदान की जो तब तक उनका भोजन बना जब तक वे कनान नहीं पहुंच गए (16:1–21)। बाद में, रपीदीम में डेरा डाले हुए, लोगों ने फिर से कुड़कुड़ाने लगे, इस बार पानी की कमी के लिए। एक बार फिर परमेश्वर ने होरेब में चट्टान से पानी उपलब्ध कराकर उनकी जरूरतों को पूरा किया (17:1–7)। अमालेकियों ने उन पर तब हमला किया जब वे अभी भी रपीदीम में डेरा डाले हुए थे, लेकिन परमेश्वर ने इस्राएलियों को एक बड़ी जीत दी (पद 8–13)।

मूसा और लोग सीनै पहाड़ पर पहुँचे और वहाँ डेरा डाला। यित्रो मूसा की पत्नी और बेटों को लेकर उससे मिलने आया। सिप्पोरा ने स्पष्ट रूप से अपने बच्चों के साथ अपने पिता के पास लौटने का निर्णय लिया था, बजाय इसके कि वह मूसा के साथ मिस्र जाए। यह एक आनन्दमय पुनर्मिलन था, और यित्रो ने परमेश्वर को एक होमबलि और बलिदान चढ़ाया (एक ऐसा कार्य जिसने यह सुझाव दिया है कि यित्रो परमेश्वर का सच्चा आराधक था, हालांकि उसके इब्रानी विश्वास से सम्बन्धों के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है)। जब यित्रो ने देखा कि मूसा सभी विवादों और समस्याओं को अकेले सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं, तो उन्होंने प्रस्ताव दिया कि मूसा कुछ छोटे मामलों की जिम्मेदारी लोगों में से चुने गए सक्षम पुरुषों को सौंप दें। मूसा ने सुझाव स्वीकार कर लिया, और कुछ समय बाद यित्रो अपने देश लौट गए। वह वाचा की पुष्टि में भाग लेने के लिए सीनै पहाड़ पर नहीं रुका (निर्ग 18:13–27)।

सीनै पर व्यवस्था का दिया जाना

परमेश्वर ने मूसा से किए गए अपने वचनों को पूरा किया। उन्होंने इब्रियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया और उन्हें उसी स्थान पर लाया जहाँ उसने मूसा को उनका अगुवा बनने का निर्देश दिया था। अब वह इस्राएल के साथ वाचा के सम्बन्ध में प्रवेश करने के लिए तैयार थे। प्रकाश, गर्जन, घने बादल, आग, धुआँ, और भूकंप के एक भयंकर और डरावने दृश्य के बीच, परमेश्वर सीनै पहाड़ की चोटी पर उतरा और मूसा को पहाड़ पर आने के लिए बुलाया, जहाँ वह 40 दिनों तक रहा ताकि वह व्यवस्था प्राप्त कर सके जो वाचा का आधार बनेगी।

सिनै पर, परमेश्वर उस रूप में प्रकट हुए जो जीवन के सभी क्षेत्रों में पूर्ण निष्ठा की मांग करता है, और साथ ही वह परमेश्वर भी हैं जो अपने लोगों के साथ व्यक्तिगत संगति की इच्छा रखते हैं।

लोगों का विश्वासत्याग

जब मूसा सीनै पहाड़ पर रुके हुए थे, तो नीचे के लोग अधीर और संदेहपूर्ण हो गए और उनकी वापसी के बारे में संदेह करने लगे, इसलिए वे हारून के पास गए और उनसे मूरतों को बनाने के लिए कहा ताकि वे उनकी उपासना कर सकें। उन्होंने सोने की बालियाँ दीं जो वे पहने हुए थे। "फिर हारून ने सोने को लिया, उसे पिघलाया, और उसे बछड़े का आकार दिया। लोगों ने कहा, 'हे इस्राएल तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र देश से छुड़ा लाया है वह यही है!' " (निर्ग 32:4)। अगले दिन उन्होंने बलिदान और आनन्द के साथ मूरत की उपासना में भाग लिया। परमेश्वर ने मूसा को बताया कि नीचे क्या हो रहा था और क्रोधित होकर घोषणा की कि वह लोगों को नष्ट कर देगा परन्तु मूसा और उसके वंशजों से एक महान देश बनाएगा। मूसा ने तुरन्त लोगों की ओर से प्रार्थना की, और परमेश्वर का क्रोध शांत हो गया। मूसा पहाड़ से नीचे उतरे, हाथों में दो पत्थर की तख्तियों को लिए हुए, जिन पर व्यवस्था लिखा हुआ था, लेकिन जब उन्होंने शिविर में प्रवेश किया और देखा कि क्या हो रहा है, तब मूसा का कोप भड़क उठा। उसने पत्थर की तख्तियों को जमीन पर फेंक दिया, और सुनहरे बछड़े को पीसकर चूर-चूर कर डाला, उसे जल में मिलाया, और लोगों को पीने के लिए मजबूर किया। वह क्रोध में हारून की ओर मुड़ा और किए गए महान पाप के लिए स्पष्टीकरण की मांग की। हारून ने बड़ी लापरवाही से अपनी भूमिका को कम करके दोष मढ़ने की कोशिश की: "मैंने उन्हें आग में डाल दिया, तब यह बछड़ा निकल पड़ा!" (पद 24)। मूसा ने लोगों के महान पाप के लिए परमेश्वर के न्याय को पूरा करने के लिए स्वयंसेवकों को बुलाया। लेवी गोत्र के पुरुषों ने उत्तर दिया और लगभग 3,000 पुरुषों को उन्होंने मार डाला। बाद में उनकी प्रशंसा की गई और उन्हें पुरस्कृत किया गया (व्य.वि. 33:9–10)। मूसा ने फिर से लोगों के लिए प्रार्थना की, यह विनती करते हुए कि यदि परमेश्वर उन्हें क्षमा नहीं कर सकते तो उसे बाकी लोगों के साथ नष्ट कर दिया जाए। परमेश्वर ने दया करके मूसा को वचन दिया कि यहोवा का दूत अब भी उनके साथ चलेगा (निर्ग 32:34)।

फिर मूसा ने एक विशेष विनती की कि उसे यहोवा की महिमा देखने की अनुमति दी जाए। परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया कि वह पत्थर की दो और तख्तियों को तराशें जिसे उसने नष्ट कर दिया था और अगले दिन पहाड़ की चोटी पर फिर लौट आए। और वहाँ यहोवा उसके सामने से गुजरे और अपना नाम प्रचार किया: "यहोवा, यहोवा, परमेश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य" (निर्ग 34:6)। मूसा पर्वत पर 40 दिन और रहे, जहाँ उन्हें मूर्तिपूजा के विरुद्ध नए सिरे से चेतावनियाँ और यहोवा से आगे के निर्देश प्राप्त हुए, साथ ही पत्थर की तख्तियों पर दस आज्ञाओं की एक और प्रति मिली। जब मूसा पहाड़ से नीचे आया, तो उसे पता नहीं था कि यहोवा के साथ बातें करने के कारण उसके चेहरे से किरणें निकल रही थीं। पहले लोग

उसके पास आने से डरते थे, लेकिन उसने उन्हें बुलाया और पहाड़ पर यहोवा ने उससे जो कुछ कहा था, उसे दोहराया। बाद में, उसने अपने चेहरे पर ओढ़ना डाल लिया, जिसे उसने केवल तब हटाया जब वह यहोवा के सामने जाता। पौलुस ने कहा कि परदे का उद्देश्य लोगों को मूसा के चेहरे से स्वर्गीय तेज़ को धीरे-धीरे लुप्त होते देखने से रोकना था (2 कुरि 3:13)।

मिलापवाला तम्बू और याजकीय पद की स्थापना

जब मूसा पहली बार परमेश्वर से व्यवस्था प्राप्त करने के लिए पहाड़ पर गए, तो उन्हें तम्बू या मण्डप के निर्माण में उपयोग की जाने वाली सामग्री एकत्र करने का निर्देश दिया गया था। सोना, चांदी, पीतल, नीला और बैंगनी और लाल धागा, सूक्ष्म सनी का कपड़ा, बकरियों के बाल, रंगे हुए मेढ़ों की खालें, बकरी की खालें, और बबूल की लकड़ी की आवश्यकता होगी, साथ ही उजियाले के लिए तेल, अभिषेक के तेल सुगन्धित धूप के लिये सुगन्ध-द्रव्य, सुलैमानी पत्थर, और जड़ने के लिए पत्थर (निर्ग 25:3–7)। निर्माण के लिए ढाँचा भी उसे दिया गया था, साथ ही याजकों के अभिषेक के लिए उपयोग की जाने वाली विधि भी। एक पुरुष जिसका नाम बसलेल था, उसको तम्बू के निर्माण का प्रभारी बनाया गया, जिसकी सहायता ओहोलीआब ने की (31:1–6)। तम्बू एक मण्डप की तरह था जिसे इब्रियों के कनान की यात्रा के दौरान स्थान-स्थान पर ले जाने के लिए आसानी से खोला और ले जाया जा सकता था।

तम्बू के लिए मूसा को निर्देश देने के अलावा, परमेश्वर ने उसे उन बलिदानों के बारे में भी निर्देशित किया जो लाए जाने थे: होमबलि, अन्नबलि, मेलबलि, पापबलि, और दोषबलि (लैव्य 1–7)। हारून और उसके पुत्रों को याजक नियुक्त करने और उपासना विधियों का उद्घाटन करने के लिए पवित्र अनुष्ठान मूसा द्वारा किया जाना था (अध्याय 8–9)।

इस धार्मिक विधि के पवित्र शुरुवात के कुछ समय बाद, हारून के चार पुत्रों में से दो, नादाब और अबीहू ने यहोवा के सम्मुख आग को अर्पित किया। यहोवा के सम्मुख से आग निकली और उन दोनों को भस्म कर दिया। मूसा ने हारून और उसके पुत्रों एलीआजर और ईतामार को इस कार्य की पापपूर्णता के कारण शोक प्रकट करने से मना किया (लैव्य 10:1–7)। उनके पाप की प्रकृति को समझना कठिन है, लेकिन इसमें निश्चित रूप से परमेश्वर की पवित्रता का उल्लंघन शामिल था। इसलिए, यह उचित है कि लैव्यव्यवस्था के शेष भाग का एक बड़ा हिस्सा उन नियमों को प्रस्तुत करता है, जो परमेश्वर के लोगों से अपेक्षित पवित्र जीवन पर जोर देता है।

सीनै से कादेश तक

मिस्र छोड़ने के समय से लेकर जनगणना होने तक एक वर्ष बीत चुका था (गिन 9:1)। परमेश्वर ने लोगों को याद दिलाया कि यह फसह मनाने का समय था, जिसे उन्होंने मनाया, और एक महीने बाद वे सीनै से निकलकर पारान के जंगल में पहुंचे। रास्ते में उन्होंने मन्ना के एक समान आहार के बारे में कुड़कुड़ाने लगे की और वे मिस्र में खाई गई मछली, खीरे, खरबूजे, गन्दने, प्याज, और लहसुन के लिए तरस गए (11:4–6)। क्रोध में आकर परमेश्वर ने बहुतायत में बटेर भेजे, लेकिन जब लोग माँस खा रहे थे, परमेश्वर ने एक बड़ी विपत्ति भेजी जिसने कई इस्राएलियों को मार डाला। लोगों की कुड़कुड़ाने वाली प्रवृत्ति मिर्याम और हारून द्वारा भी साझा की गई थी। उन्होंने उस कूशी स्त्री के विरुद्ध बोलना शुरू किया जिससे मूसा ने विवाह किया था (12:1–2)। यह निश्चित नहीं है कि कूशी एक इथियोपियाई थी या यह सिप्पोरा का उल्लेख करने का एक और तरीका था। यदि मूसा ने दूसरी बार विवाह किया था, तो इसका उल्लेख कहीं और पुराने नियम में नहीं किया गया है। मूसा ने अपने भाई और बहन के दोषारोपण का कोई जवाब नहीं दिया। यह आवश्यक नहीं था, क्योंकि परमेश्वर ने अपने सेवक की रक्षा में हस्तक्षेप किया। उसने मिर्याम को कोढ़ रोग से मारा क्योंकि उसने मूसा के विरुद्ध बोलने में हिस्सा लिया था, और जब हारून ने देखा कि मिर्याम के साथ क्या हुआ है, तो उसने स्वीकार किया कि उन दोनों ने पाप किया था। मिर्याम का कोढ़ रोग मूसा की प्रबल प्रार्थना के उत्तर में हटा दिया गया था।

जब लोग पारान के जंगल में कादेश (जिसे कादेशबर्ने भी कहा जाता है—गिन 32:8) में डेरा डाले हुए थे, तब मूसा ने इस्राएलियों के प्रवेश की तैयारी के लिए कनान में 12 पुरुषों को भेजा, प्रत्येक गोत्र से एक, ताकि वे उस भूमि की भेद कर सकें। 40 दिनों के बाद वे भेद लेकर लौट आए और, हालांकि उन्होंने स्वीकार किया कि भूमि उपजाऊ और आमंत्रित करने वाली थी, उनमें से 10 जन कनानी निवासियों से डरते थे और उस देश में जाने के विरुद्ध सलाह दी। केवल यहोशू और कालेब आगे बढ़ने और देश पर कब्जा करने के लिए तैयार थे। पूरी मण्डली ने अन्दर जाने के विरुद्ध में विरोध प्रदर्शन में भाग लिया और तलवार से कनान में मरने के बजाय एक नए अगुवे को चुनने और मिस्र लौटने का निर्णय लिया। उन्होंने मूसा और हारून को पत्थरों से मार डालने की चेतावनी दी। उसी क्षण परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया, और यदि मूसा ने मध्यस्थता न की होती, तो वह वहीं पर सभी लोगों को नष्ट कर देता (13:1–14:19)। उन्होंने घोषणा की कि यदि परमेश्वर लोगों को कनान में नहीं लाते हैं, तो आस-पास की जातियाँ यह निष्कर्ष निकालेंगी कि इस्राएलियों के परमेश्वर उन्हें उस भूमि में लाने में असमर्थ थे। एक बार फिर परमेश्वर ने मूसा की विनती पर लोगों को क्षमा करने के लिए सहमति दी लेकिन कहा कि 20 वर्ष और उससे अधिक उम्र के उन सभी लोगों को जिन्होंने उनके खिलाफ असंतोष प्रकट किया था, उस देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। सभी लोग 40 वर्षों तक जंगल में भटकते रहेंगे जब तक कि वह पीढ़ी मर नहीं जाती, और फिर उनके बच्चों को कनान में प्रवेश करने की अनुमति दी जाएगी (14:29–33)। जब उन्होंने यहोवा का

निर्णय उनके प्रति सुना, तो लोगों ने जल्दी से निर्णय लिया कि वे तुरन्त देश में प्रवेश करके न्याय के निर्णय को उठाएँगे, परन्तु परमेश्वर उनके साथ नहीं थे, और उन्हें अमालेकियों और कनानियों के हाथों एक विनाशकारी हार का सामना करना पड़ा।

मरुभूमि में चालीस वर्ष

मरुभूमि में भटकने के 40 वर्षों के दौरान घटनाओं के बारे में बहुत कम जानकारी है। फैसला पहले ही आ जाने के बावजूद, लोग अपने तरीकों को बदलते नहीं दिखे। एक पुरुष जिसका नाम कोरह था, उसने मूसा और हारून के अधिकार के विरुद्ध एक और विद्रोह का नेतृत्व किया। मूसा और हारून ने परमेश्वर से विनती की कि वह विद्रोह के लिए पूरे मण्डली को दण्ड न दें (गिन 16:22–24)। परमेश्वर ने इस्राएलियों को विद्रोहियों से अलग किया। जब लोग देख रहे थे, तो धरती फट गई और विद्रोही गुटों को उनके घरानों और उनकी सभी सम्पतियों के साथ निगल लिया। हालांकि बाकी इस्राएलियों ने विद्रोहियों की किस्मत देखी, फिर भी इससे उन्हें मूसा और हारून के विरुद्ध जाने से नहीं रोक पाया। इस पर, परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह कुड़कुड़ाते हुए समुदाय से दूर हो जाए ताकि वह बदला ले सके। हालाँकि मूसा ने लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित की पेशकश की, दण्ड समाप्त होने से पहले 14,700 लोग विपत्ति से मर गए। लोगों को और दिखाने के लिए कि मूसा उनके चुने हुए अगुवे थे, यहोवा ने मूसा को निर्देश दिया कि वह प्रत्येक गोत्र के लिए एक लाठी ले और उन्हें मिलापवाले तम्बू में रख दे। परमेश्वर उस पुरुष की लाठी को अंकुरित करेंगे जिसे उन्होंने चुना है, और इस प्रकार लोगों की कुड़कुड़ाहट को शांत करेंगे। हारून की लाठी अंकुरित हुई, कलियाँ निकलीं और फूल खिल गए, लेकिन लोगों ने और अधिक शिकायत की।

जब लोग मरुभूमि में भटकने के वर्षों के अंत के करीब पहुंचे, तो मिर्याम कादेश में मर गई और वहीं उसको मिट्टी दी गई (गिन 20:1)। थोड़ी देर बाद, लोग फिर से पानी की कमी के लिए कुड़कुड़ाने लगे। परमेश्वर ने मूसा को एक चट्टान से बात करने का निर्देश दिया जो लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पानी लाएगी। चट्टान से बात करने के बजाय, मूसा ने अपनी लाठी से उसे दो बार मारा। पानी निकल आया, परन्तु मूसा और हारून से यहोवा ने कहा: "तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया, और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिए तुम इस मण्डली को उस देश में पहुँचाने न पाओगे जिसे मैंने उन्हें दिया है!" (पद 12)। पाप की प्रकृति स्पष्ट नहीं है, लेकिन मूसा और हारून स्पष्ट रूप से उस सम्मान को स्वयं ले रहे थे जो केवल परमेश्वर का था। पाप के कारण, उन्हें इस्राएलियों को प्रतिज्ञात देश में ले जाने का विशेषाधिकार नहीं मिला। पाप के लिए सजा बहुत कठोर लग सकती है, लेकिन यह दिखाता है कि मूसा और हारून को दी गई नेतृत्व की विशेष भूमिका के साथ एक असामान्य स्तर की जिम्मेदारी भी आई थी।

फिर लोग कादेश से एदोम की सीमा पर स्थित होर पहाड़ की ओर चले गए, जहाँ हारून की मृत्यु हो गई। मूसा ने उसके याजक वस्त्र उससे लेकर उसके पुत्र एलीआजर को दे दिए, इस प्रकार याजक पद का भार स्थानांतरित कर दिया (गिन 20:28)।

जैसे-जैसे लोग अपने गंतव्य के करीब पहुँचे, स्थानीय आबादी का प्रतिरोध बढ़ गया। होर्मा में अराद के राजा और उसकी सेनाओं के साथ लड़ाई हुई, जिसमें इस्राएल की जीत हुई (गिन 21:1–3)। जैसे ही वे एदोम के चारों ओर यात्रा कर रहे थे, कुछ इस्राएली परमेश्वर और मूसा के विरुद्ध बोलने लगे क्योंकि वहाँ भोजन या पानी नहीं था और वे मन्ना खाने से थक गए थे। इस बार यहोवा ने लोगों के बीच जहरीले साँप भेजे, और उनमें से कई जहरीले सांप के काटने से मर गए। जिन्हें अभी तक नहीं काटा गया था, वे मूसा के पास आए, अपने पाप को स्वीकार किया, और साँपों को उनके बीच से हटाने की प्रार्थना की। परमेश्वर ने मूसा को पीतल का एक साँप बनाने और उसे एक खंभे पर लगाने का निर्देश दिया। यदि किसी पुरुष को साँप ने काट लिया और वह पीतल साँप की ओर देखता, तो वह जीवित रहता।

जब इस्राएली एमोरियों के राजा सीहोन के क्षेत्र के पास पहुँचे, तो उन्होंने उसके देश से शांति से गुजरने की अनुमति मांगने के लिए दूत भेजे। इसके बजाय विनती को स्वीकार करने के, सीहोन ने अपनी सेना को इकट्ठा करके इस्राएल का सामना करने निकल आया। वह लड़ाई में मारा गया, और उसकी भूमि और शहरों पर इब्री लोगों ने कब्जा कर लिया (गिन 21:21–25)।

यरदन नदी पर आगमन

सीहोन पर विजय के बाद, इस्राएली फिर से चल पड़े और यरीहो के सामने यरदन नदी के पूर्वी किनारे पर मोआब के मैदानों में डेरा डाला, जहाँ से प्रतिज्ञा की हुई भूमि स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। मोआबियों को इन लोगों की उपस्थिति से डर लग रहा था क्योंकि उन्होंने सुना था कि एमोरियों के साथ क्या हुआ था। उनके राजा, बालाक, ने इस्राएलियों को श्राप देने के लिए बिलाम नामक एक जादूगर को काम पर रखा। तीन बार बिलाम ने उन्हें श्राप देने का प्रयास किया, लेकिन हर बार परमेश्वर ने उसके शब्दों को आशीष में बदल दिया (गिन 22–24)। हालाँकि इस्राएलियों को श्राप देने में असमर्थ, बिलाम एक और भी बड़ी आपदा के लिए जिम्मेदार था। उसने मोआबियों को परामर्श दी कि वे इस्राएलियों को उनके देवताओं के लिए बलिदान करने और उनके सामने दण्डवत् के लिए प्रलोभित करें (गिन 25:1–3; 31:16; 2 पत 2:15; प्रका 2:14)। जब लोग मोआबी देवता, बालपोर की उपासना कर रहे थे, तब परमेश्वर का कोप उनके विरुद्ध भड़क उठा, और उन्होंने एक विपत्ति भेजी जिसने उनमें से 24,000 को मार डाला (गिनती 25:9)। यह इस्राएल का अनैतिक मूर्तिपूजा के प्रलोभन से पहला सामना था और यह

एक अशुभ संकेत था कि कनान में बसने के बाद क्या होगा। उनके मूर्तिपूजा के प्रति निरन्तर आकर्षण उनके विनाश का कारण बनेगा।

विपत्तियों के बाद, परमेश्वर ने मूसा और एलीआजर को लगभग 40 वर्ष पहले की तरह लोगों की एक और जनगणना करने का निर्देश दिया। इस्राएलियों की एक पूरी पीढ़ी जंगल में मर गई थी, लेकिन उनकी जगह लगभग उतनी ही संख्या में लोग आ गए थे, जिससे अब 20 वर्ष और उससे अधिक आयु के 601,730 पुरुष युद्ध के लिए सक्षम थे (गिन 26:51)। उनमें से कोई भी पुरुष नहीं बचा जो पहली जनगणना में गिने गए थे, सिवाय कालेब और यहोशू के।

यहोवा ने मूसा को निर्देश दिया कि वे यहोशू पर हाथ रखें और उसे एलीआजर याजक और सारी मण्डली के सामने नया अगुवा नियुक्त करें (गिन 27:12–23)। इसके अलावा, यहोवा ने मूसा को पर्वों, भेंटों और प्रतिज्ञाओं के बारे में निर्देश दिए (अध्याय 28–30)। परमेश्वर ने मूसा को आदेश दिया कि अपने अगुवे के रूप में अन्तिम कार्य के रूप में, मिद्यानियों से इस्राएलियों का बदला लें। उस युद्ध में इस्राएल की सेनाओं ने मिद्यानियों पर बड़ी विजय प्राप्त की, उनके राजाओं, उनके लोगों और साथ ही बिलाम को मार डाला।

यहोवा ने मूसा को उस भूमि की सीमाओं के बारे में निर्देश दिए जो प्रतिज्ञात देश को चिह्नित करेगी और उन लोगों के नाम बताए जो गोत्रों के बीच भूमि का विभाजन करेंगे (गिनती 34)। उन्होंने यह भी आज्ञा दी कि 48 नगर लेवियों, याजक गोत्र, को उनके हिस्से के रूप में दिए जाएं। इनमें से छः को शरण नगर के रूप में नामित किया गया था जहाँ हत्यारे भाग सकते थे ताकि उन्हें बदला लेने वालों द्वारा मारे जाने का मौका न मिले और वे सभा के सामने न्याय के लिए खड़े हो सकें (अध्याय 35)।

मूसा की मृत्यु

व्यवस्थाविवरण की पुस्तक को अक्सर मूसा का विदाई भाषण कहा गया है, क्योंकि इसमें मूसा केवल मुख्य वक्ता ही नहीं बल्कि एकमात्र वक्ता हैं। अपनी प्रजा की सभा को अपने सामने इकट्ठा करके, उसने उन्हें बताया कि सीनै छोड़ने के बाद से परमेश्वर ने उनके लिए क्या-क्या किया था, और उन्हें 38 वर्ष पहले प्रतिज्ञात भूमि में प्रवेश करने में उनकी असफलता की याद दिलाई (व्य.वि. 2:14)। उसे याद आया कि उसने परमेश्वर से प्रार्थना की थी कि वे उसे यरदन पार करने दें और उस देश को देखने दें जो लोगों के लिए घर बनने वाली थी, लेकिन परमेश्वर ने उत्तर दिया कि मूसा को केवल पिसगा की चोटी से देश देखने की अनुमति दी जाएगी। इसके बाद मूसा ने लोगों को उन विधियों और नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित किया जो उन्हें देश में परमेश्वर की आशीषों का अनुभव करने के लिए दिए गए थे।

जैसे-जैसे मूसा की मृत्यु का दिन निकट आया, यहोवा ने मूसा और यहोशू को मिलाप वाले तम्बू में उपस्थित होने की आज्ञा दी ताकि यहोशू को नए अगुवे के रूप में नियुक्त किया जा सके (व्य.वि. 31:14–23)। उनकी मृत्यु से पहले, मूसा ने सभी इस्राएलियों पर एक आशीष दिया (अध्याय 33)। इन कार्यों को पूरा करने के बाद, मूसा मोआब के मैदानों से नबो पहाड़ और पिसगा की चोटी पर गए। वहाँ से परमेश्वर ने उसे वह देश दिखाई जो बहुत पहले अब्राहम, इसहाक और याकूब से प्रतिज्ञा की गई थी—वह देश जो जल्द ही भटकते हुए इस्राएली गोत्रों का घर बनने वाली थी। फिर परमेश्वर ने उसे बताया कि उसे यरदन पार करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। मूसा वहीं मरे और परमेश्वर ने उन्हें मोआब देश की घाटी में कहीं बेतपोर के सामने दफनाया (34:6)। मूसा की मृत्यु के समय उनकी आयु 120 वर्ष थी, और इस्राएलियों ने उनकी मृत्यु पर 30 दिनों तक शोक मनाया। मूसा को सबसे उत्तम श्रद्धांजलि व्यवस्थाविवरण पुस्तक के अन्तिम शब्दों में पाई जाती है, "मूसा जैसा कोई और नबी नहीं उठा, जिससे यहोवा ने आमने-सामने बातें की" (पद 10)।

नए नियम में मूसा

प्रेरितीय समय में सभी यहूदी और मसीही मूसा को पंचग्रन्थ का लेखक मानते थे। ऐसे अभिव्यक्तियाँ जैसे "मूसा की व्यवस्था" (लूका 2:22), "मूसा ने निर्देश दिया" (मत्ती 19:7), "मूसा ने कहा" (मर 7:10) "और मूसा ने लिखा" (12:19) दिखाता है कि उनका नाम उनके द्वारा माने गए पुराने नियम की पुस्तकों का पर्याय था। उन्हें नए नियम में किसी भी अन्य पुराने नियम पुरुष से अधिक बार उल्लेख किया गया है, कुल 79 बार। उनकी भूमिका को व्यवस्था निर्माता के रूप में उनके जीवन के किसी भी अन्य पहलू की तुलना में अधिक महत्व दिया गया है (मत्ती 8:4; मर 7:10; यूह 1:17; प्रेरि 15:1)। वह यीशु के रूपांतरण में पुराने नियम व्यवस्था के प्रतिनिधि के रूप में प्रकट होते हैं, एलिय्याह के साथ पुराने नियम नबियों के प्रतिनिधि के रूप में (मत्ती 17:1–3)।

मूसा की नबी के रूप में भूमिका का उल्लेख नए नियम में भी है। एक नबी के रूप में, उन्होंने आने वाले मसीह और उनके कष्टों के बारे में बताया (लूका 24:25–27; प्रेरि 3:22)। नए नियम भी नए वाचा के तहत जीवन के ढाँचे को दिखाने के लिए मूसा के जीवन और अनुभवों से प्रेरणा लेता है। यीशु की जन्मकथा मूसा की कहानी के समानांतर है, जहाँ शिशु उद्धारकर्ता को एक सांसारिक अत्याचारी की बुरी योजनाओं से बचाया जाता है (मत्ती 2:13–18)। यीशु का अपने पहाड़ी उपदेश में नए व्यवस्था की घोषणा सीनै पहाड़ पर व्यवस्था देने के समानांतर है (मत्ती 5–7) और यीशु को परमेश्वर की इच्छा का अधिकारिक व्याख्याता प्रस्तुत करता है। पुराने व्यवस्था और परमेश्वर के साथ नए सम्बन्ध के बीच का अन्तर विशेष रूप से गलातियों की पुस्तक में स्पष्ट है। मूसा की तुलना मसीह से करना इब्रानियों की पुस्तक का एक महत्वपूर्ण जोर है (इब्रा 3:5–6; 9:11–22)। यूहन्ना ने मूसा के

माध्यम से दिए गए व्यवस्था की तुलना यीशु मसीह के माध्यम से आई कृपा और सत्य से की (यूह 1:17)। उन्होंने जंगल में मन्ना की तुलना यीशु से की, जो "जीवन की रोटी" है (6:30–35)।

मूसा या उनसे सम्बंधित घटनाओं के अन्य संदर्भों में उनका जन्म (प्रेरि 7:20; इब्रा 11:23), जलती हुई झाड़ी (लूका 20:37), मिस्र के जादूगर (2 तीमु 3:8), फसह (इब्रा 11:28), निर्गमन (3:16), समुद्र का पार करना (1 कुरि 10:2), सीनै पर वाचा बलिदान (मत्ती 26:28), मन्ना (1 कुरि 10:3), मूसा के चेहरे पर महिमा (2 कुरि 3:7–18), चट्टान से पानी (1 कुरि 10:4), पीतल साँप (यूह 3:14), और मूसा का गीत (प्रका 15:3) शामिल हैं।

*यह भी देखें*मिस्र, मिस्री; निर्गमन; इतिहास, इस्राएल का; मिस्र पर विपत्तियाँ; याजक और लेवीय; तम्बू; मन्दिर; आज्ञाएँ, दस; मरुभूमि में भटकना।

मूसा का गीत

दो प्राचीन कविताओं में से एक: मूसा की आशीष (व्य.वि. 33) और मूसा का गीत (अध्याय 32)। समुद्र का गीत (निर्ग 15) मूसा के जीवन के बहुत पहले के समय में स्थित है, जबकि ये दो कविताएँ वस्तुतः उसकी "अंतिम इच्छा और वसीयतनामा" हैं।

मूसा ने पहले ही इस्राएल के विरुद्ध साक्षी के रूप में व्यवस्था की पुस्तकें लिखी थीं, यदि वे परमेश्वर से दूर हो जाते। लेकिन स्वयं व्यवस्था के लिए किसी भी दोष को स्थापित करने के लिए कम से कम दो साक्षियों की आवश्यकता थी (व्य.वि. 17:6)। फिर मूसा को इस्राएल के विरुद्ध एक और साक्षी के रूप में गीत लिखने का निर्देश दिया गया (31:19)।

यह गीत परमेश्वर की महानता और भलाई का साक्षी है और विशेष रूप से, इस्राएल के प्रति उनकी भलाई का (व्य.वि. 32:10–14)। यह अनुग्रह इस्राएल की प्रतिक्रिया की पापपूर्णता को और भी अधिक रेखांकित करता है, जो केवल परमेश्वर के क्रोध और परिणामस्वरूप दण्ड को आमंत्रित कर सकता है। परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए "स्वाभाविक विपत्तियों," जंगली पशुओं और युद्धों का उपयोग करेंगे। फिर भी यह अंत नहीं है। परमेश्वर, अपने अनुग्रह से, इस्राएल के शत्रुओं के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाएंगे और अपनी प्रजा को बचाएँगे (वचन 36)।

यह गीत पुराने नियम के हर महान भविष्यद्वक्ता का सुसंगत संदेश लेकर आता है, एक संदेश जिसे भजन संहिता 78, इस्राएल की ऐतिहासिक परिस्थितियों के संदर्भ में व्यक्त करता है। यह गीत परमेश्वर के स्वभाव को स्पष्ट करता है, इसलिए यह अजीब नहीं है कि स्वर्ग का गीत "मूसा का गीत, परमेश्वर के सेवक का और मेम्ना का गीत" है (प्रका 15:3)।

*यह भी देखें*मूसा I

मूसा की गद्दी

एक वाक्यांश जो केवल मत्ती 23:2 में प्रकट होता है। वहां, यीशु मूसा की गद्दी पर बैठे शास्त्रीयों और फरीसीयों के बारे में बात करते हैं।

बाइबल के समय में, कोई व्यक्ति कहाँ बैठता था, यह अक्सर दिखाता था कि वह कितने महत्वपूर्ण थे (मत्ती 23:6)। "मूसा की गद्दी" पर बैठने का अर्थ एक सम्मानित पद और मूसा के नियमों को समझाने का अधिकार होना था।

शास्त्रीयों को मूसा के अधिकार को बनाए रखने वाला माना जाता था। लोग उनसे यह समझने के लिए जाते थे कि मूसा ने क्या शिक्षा दी।

मत्ती 23:2 में, यीशु उनके अधिकार पर सवाल नहीं उठाते। वे लोगों से कहते हैं कि जब शास्त्री और फरीसी मूसा की विधियों को सही ढंग से सिखाते हैं, तो उनका अनुसरण करें। लेकिन यीशु लोगों को चेतावनी देते हैं कि इन शिक्षकों के कार्यों की नकल न करें क्योंकि शास्त्री और फरीसी जो उपदेश देते हैं, उसका पालन नहीं करते।

अन्य समयों में, यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों की उन परम्पराओं के खिलाफ बोला जो मूसा की विधियों से मेल नहीं खाती थीं (मत्ती 15:3–6; 23:4, 16–22)।

मूसा की पुस्तकें

*देखें*व्यवस्थाविवरण की पुस्तक; निर्गमन की पुस्तक; उत्पत्ति की पुस्तक; लैव्यव्यवस्था की पुस्तक; मूसा; गिनती की पुस्तक; पंचग्रन्थ।

मूसा की व्यवस्था

व्यवस्था उन धार्मिक, नैतिक, और सामाजिक नियमों को संदर्भित करती है जो परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से इस्राएली लोगों को दिए थे। ये व्यवस्था पुराने नियम की कई पुस्तकों में पाए जाते हैं: निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, और व्यवस्थाविवरण।

प्राचीन इस्राएलियों के लिए व्यवस्था ने जीवन के कई पहलुओं को समाहित किया। इसमें शामिल थे:

1. दस आज्ञाएँ, जीवन जीने और परमेश्वर की आराधना करने के लिए दस आज्ञाओं की सूची है (निर्ग 20:1–17)।

2. धार्मिक समारोहों और बलिदानों के बारे में निर्देश, जिसमें परमेश्वर की आराधना कैसे करें और पापों के लिए क्षमा कैसे मांगें सम्मिलित है (लैव्य 1–7)।
3. दैनिक जीवन के लिए नियम, जिनमें भोजन, स्वच्छता, संबंधों और व्यापारिक लेन-देन के बारे में दिशानिर्देश शामिल हैं (लैव्य 11–15; 19)।
4. दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करें और ईमानदारी से कैसे जीवन जीए के विषय में नैतिक दिशानिर्देश (लैव्य 19)।
5. समाज के अगुवों के लिए कानून, जिनमें याजकों, न्यायियों और अन्य अगुवों के लिए निर्देश शामिल हैं (व्य.वि. 16–18)।

व्यवस्था ने इस्राएलियों को यह समझने में मदद की कि परमेश्वर के लोगों के रूप में कैसे जीना चाहिए। इसने उन्हें दिखाया कि क्या सही है और क्या गलत, और जब वे असफल होते हैं तो चीजों को सही कैसे करना है। यीशु ने बाद में कहा कि वे व्यवस्था को समाप्त करने नहीं बल्कि उसे पूरा करने आए हैं (मत्ती 5:17)।

*देखें*वाचा; व्यवस्थाविवरण की पुस्तक; निर्गमन की पुस्तक; लैव्यव्यवस्था की पुस्तक; मूसा।

मूसिया

मूसिया

उत्तर-पश्चिम एशिया के उपद्वीप (आधुनिक तुर्की) में स्थित क्षेत्र। इसका लम्बा इतिहास था, जो 133 ईसा पूर्व में एशिया प्रान्त के रूप में रोमी साम्राज्य में मिलाया गया था। इसके लगभग 150 वर्ष पहले यह पिरगमुन के राज्य का हिस्सा था। प्रेरितों के काम 16:7–8 में यात्रा विवरण यह दर्शाता है कि प्रेरित पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर इस क्षेत्र से होकर यात्रा की, परन्तु वहाँ प्रचार नहीं किया था।

*यह भी देखें*पिरगमोस, पिरगमुम।

मृग

एक तेज दौड़ने वाला पशु जो हिरण के समान दिखता है।

शास्त्रों में मृग जैसे कई जीवों का उल्लेख किया गया है। एक को सफेद हिरण *(ओरिक्स ल्युकोरिक्स)* कहा जाता है, जिसे व्यवस्थाविवरण 14:5 और यशायाह 51:20 में "मृग" कहा गया है। हिरण संभवतः मृग था। इसके लंबे सींग के कारण इसे आसानी से पकड़ सकते थे। इसलिए यह एक सामान्य भोजन स्रोत था।

बाइबल में उल्लेखित एक अन्य मृग एडैक्स नासोमेकुलेटस *(*सफेद सींग वाला एंटीलोप*)* है। यह संभवतः व्यवस्थाविवरण 14:5 का "मृग" है ("पाइगार्ग")। यह उत्तरी अफ्रीका में पाया जाता है। इसके पिछले हिस्से धूसर-सफेद होते हैं, माथे पर सफेद पैबंद होता है और मुड़े हुए छल्लेदार सींग होते हैं। "पाइगार्ग" शब्द यूनानी शब्द से आया है जिसका अर्थ है "सफेद पिछला हिस्सा"। एडैक्स (सफेद ओरिक्स) का आकार गधे के बराबर होता है। इसका शरीर छोटे बालों से ढका होता है। इसकी गर्दन के नीचे एक छोटी अयाल (गर्दन पर घने बाल) होती है जो सिर को कुछ हद तक बकरी जैसा दिखाती है। खुर चौड़े और चपटे होते हैं और पूंछ गधे जैसी होती है। यह अफ्रीका और अरब में आम है, जहाँ अरब इसका बाज और कुत्तों के साथ शिकार करते हैं।

मृग बहुत ही सुंदर होते हैं और अपने सिर को ऊँचा रखकर दौड़ते हैं। दोनों लिंगों के लंबे, स्थायी, खोखले सींग होते हैं। हिरण के सींग सीधे पीछे जाते हैं जबकि एडैक्स (सफेद ओरिक्स) के सींग छल्लों में मुड़े होते हैं। मृग सतर्क, चंचल और संवेदनशील होते हैं। वे आमतौर पर दो से लेकर दर्जन तक के झुंड में पाए जाते हैं। यदि घायल हो जाएं या घिर जाएं, तो मृग सिर झुकाकर हमला करते हैं। उनके तेज सींग आगे की ओर होते हैं। मृग घास और झाड़ियों का भोजन करते हैं, नदियों और जल स्रोतों से पानी पीते हैं। जब पानी की कमी होती है, तो वे खरबूजे और रसीले कंद खाते हैं। एडैक्स (सफेद ओरिक्स) और हिरण दोनों यहूदियों की व्यवस्था में शुद्ध माने जाते थे।

मृगशिरा

मृगशिरा

सेप्टुआजिंट नाम एक नक्षत्रमण्डल के लिए है जिसे व्यापक रूप से एक विशाल शिकारी के समान माना जाता है, जो बंधा या जकड़ा हुआ है। इस शिकारी के बारे में विभिन्न किंवदंतियाँ प्रचलित हैं—यूनान में, कि उसे मूर्खतापूर्ण डींग मारने के लिए आकाश में निर्वासित कर दिया गया था; यहूदी भूमि में, परमेश्वर के खिलाफ अपनी ताकत मूर्खतापूर्ण ढंग से साबित करने के लिए (इब्री का अर्थ है "मजबूत" और "मूर्ख" दोनों)। अय्यूब 9:9 में उन महान, अन्वेषणीय चीजों में मृगशिरा के "निर्माण" का उल्लेख है जो परमेश्वर प्रकृति में करते हैं (तुलना करें आमो 5:8)। परमेश्वर ने अय्यूब को चुनौती दी कि वह प्रयास करें जो केवल परमेश्वर कर सकते हैं—मृगशिरा की जंजीरों को ढीला करना (अय्यू 38:31–32)। प्रश्न का वास्तविक महत्व इस तथ्य में निहित है कि प्लीएडेस का प्रकट होना वसंत का आगमन कराता है और मृगशिरा का प्रकट

मृत सागर

होना सर्दी का आगमन कराता है, दोनों परमेश्वर के निर्देशन में होते हैं।

*यह भी देखें*प्लीएडेस।

मृत सागर

एक बड़ा खारे पानी की झील जिसमें नदी यरदन गिरती है। यूनानी युग से, पश्चिमी सभ्यता ने इस रहस्यमय जल के निकाय को "मृत सागर" कहा है। हालाँकि, इस समुद्र के लिए अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला पुराने नियम का शब्द "खारा ताल" है (उत्पत्ति 14:3; गिनती 34:3, 12; व्यवस्थाविवरण 3:17; यहोशू 3:16; 12:3; 15:2, 5; 18:19), यह नाम प्राचीन काल में व्यापार की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण और मूल्यवान वस्तु से लिया गया है। इसे अराबा के ताल (व्यवस्थाविवरण 3:17; 4:49; यहोशू 3:16; 12:3; 2 राजाओं 14:25) और पूरब के ताल (यहेजकेल 47:18; योएल 2:20; जकर्याह 14:8) भी कहा जाता है। अपोक्रिफल, शास्त्रीय, और तालमुदिक लेखक सदोम का ताल, डामर का ताल, और लूत का ताल के रूप में संदर्भ करते हैं। नये नियम में इस ताल का कोई संदर्भ नहीं पाया जाता है।

यह समुद्र यरदन घाटी के विशाल गर्त में स्थित है, जिसे दरार वाली घाटी के नाम से भी जाना जाता है। यह घाटी पृथ्वी की परत में सबसे लंबी और गहरी दरार का हिस्सा है, जो दक्षिणी तुर्की में टॉरस पर्वत से लेकर सीरिया, लबानोन, पलिश्तीन, अकाबा की खाड़ी, लाल सागर और पूर्वी अफ्रीका से होते हुए मोजाम्बिक तक फैली हुई है (जिसे वहां महान अफ्रीकी दरार घाटी कहा जाता है)। यह खाई 2 से 15 मील (3.2 से 24.1 किलोमीटर) चौड़ी है और मृत सागर के तटरेखा के साथ अपने सबसे गहरे स्थान पर यह समुद्र तल से लगभग 1,300 फीट (396 मीटर) नीचे गिरती है, जिससे यह पृथ्वी पर पानी से ढका न होने वाला सबसे निचला क्षेत्र बन जाता है। समुद्र का आकार आयताकार है, जो उत्तर में यरदन नदी के मुहाने से लेकर दक्षिण में सेबका क्षेत्र तक लगभग 53 मील (85 किलोमीटर) और चौड़ाई में लगभग 10 मील (16 किलोमीटर) है, जो दोनों तरफ खड़ी, चट्टानी चट्टानों से घिरा हुआ है। यह आठ और आधे मील (13.7 किलोमीटर) लिसान प्रायद्वीप द्वारा दो घाटियों में विभाजित है, जो पूर्वी तट से बाहर निकलता है। उत्तरी बेसिन बड़ा है, और इसके सबसे गहरे बिंदु (उत्तर-पूर्व क्षेत्र में) पर पानी की गहराई लगभग 1,300 फीट (396 मीटर) है। दक्षिणी बेसिन समतल है, और इसकी पानी की गहराई 3 से 30 फीट (1 से 9 मीटर) के बीच है।

ऐसा लगता है कि प्रकृति की शक्तियों ने मृत सागर के खिलाफ़ साजिश रची है। यरदन नदी, चार या पाँच बारहमासी नदियाँ और कई घाटियाँ (औसतन प्रतिदिन लगभग 70 लाख टन या 64 लाख मीट्रिक टन पानी का प्रवाह) से पोषित इस समुद्र में वाष्पीकरण के अलावा इसके पानी के लिए कोई निकास नहीं है। यह स्थिति, शुष्कता (औसत वार्षिक वर्षा 2 से 5 इंच या 5 से 13 सेंटीमीटर) और अत्यधिक गर्मी (कभी-कभी गर्मियों में पारा 125 डिग्री फारेनहाइट या 52 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाता है) के साथ मिलकर, अक्सर वाष्पीकरण की अत्यधिक उच्च दर और घना धुंध पैदा करती है जो मानव दृष्टि के लिए लगभग एक अँधेरा के सामान हो जाता है। मृत सागर को पानी उपलब्ध कराने वाली अधिकांश धाराएं असामान्य रूप से खारी हैं, जो नाइट्रस मिट्टी और गंधकयुक्त झरनों से होकर बहती हैं। साथ ही, समुद्र के पानी के नीचे मौजूद झरने रसायनों (खास तौर पर ब्रोमीन, मैग्नीशियम और कैल्शियम) को समुद्र में पंप करते हैं। और इसके किनारों पर बड़े पैमाने पर सल्फर के भंडार और पेट्रोलियम के झरने हैं। दक्षिण-पूर्वी कोने में 300-फुट-मोटी (91.4-मीटर-मोटी) रॉक-सॉल्ट रिज है, जो लगभग 5 मील (8 किलोमीटर) तक फैले अनुमानित 4,500-फुट (1,371-मीटर) नमक प्लग का सिर्फ़ सिरा है। अंत में, समुद्र के तल में नमक के क्रिस्टल होते हैं। ये सभी कारक मिलकर कुल लवणता को लगभग 26 प्रतिशत बनाते हैं, जबकि औसत समुद्री लवणता 3.5 प्रतिशत है। यह मृत सागर को पृथ्वी का सबसे खारा जल निकाय बनाता है, जो समुद्री जीवन से पूरी तरह रहित है, और इसकी ठोसता लगातार बढ़ती जा रही है।

प्राचीन समय में मृत सागर को उसके नमक और बिटुमेन (जलरोधी गुणों के कारण मूल्यवान वस्तु, जिसमें वाष्पीकरण और ऑक्सीकरण द्वारा कठोर किया गया पेट्रोलियम शामिल होता है) के लिए महत्व दिया जाता था। नये नियम के समय दौरान, मृत सागर के डामर व्यापार पर संभवतः नबातियों का नियंत्रण था, जो इस उत्पाद को मिस्र में निर्यात करते थे ताकि उसे शवों के संरक्षण में उपयोग किया जा सके। यह सुझाव दिया गया है कि क्लियोपेट्रा की मृत सागर क्षेत्र पर शासन करने की लालसा उनके डामर व्यापार को नियंत्रित करने की लालसा से प्रेरित थी।

आधुनिक दर्शक की दृष्टि में मृत सागर की भयावह वीरानी और बंजरता इतिहास के पन्नों में भी प्रतिबिंबित होती है। उत्पत्ति 19 की घटनाएँ, सदोम और अमोरा का विनाश, इसी क्षेत्र में घटित हुई थीं। सदोम के पहाड़, समुद्र के दक्षिण-पूर्वी कोने पर स्थित नमक का ढेर, स्पष्ट रूप से सदोम नाम को दर्शाता है। पुरातत्वविद नेल्सन ग्लूक ने पुष्टि की है कि सदोम के आसपास का क्षेत्र लगभग 3000 ईसा पूर्व तक 70 शहरों द्वारा बसा हुआ था। सदोम और अमोरा पर बरसे विनाश की वास्तविक प्रकृति की विभिन्न रूप से, जैसे की ज्वालामुखी विस्फोट के रूप में या बिटुमिनस मिट्टी के भूमिगत हिस्सों में स्वतःस्फूर्त विस्फोट के रूप में व्याख्या की जाती है। इस क्षेत्र में करस्टिक नमक के स्तंभ, जिन्हें "लूत की पत्नी" के रूप में जाना जाता है, एक सामान्य घटना हैं।

समुद्र के चारों ओर का भयंकर जंगल भागते हुए दाउद (1 शमूएल 23:29–24:1), कुमरान एस्सेन्स का चिंतनशील समूह, तथा द्वितीय यहूदी विद्रोह के वंचित यहूदी यहूदी

विद्रोहियों के लिए उपयुक्त शरण प्रदान करता था। दूसरी ओर, यहेजकेल ने एक ऐसे समय की कल्पना की (यहेजकेल 47:1–12; तुलना करें जकर्याह 14:8) जब मृत सागर के खारे जल को भी नए सिरे से पुनः सृजित किया जाएगा और समुद्र का निर्जीव स्वरूप जीवन में बदल जाएगा।

मृत सागर

*देखें*मृत सागर।

मृत सागर कुण्डलपत्र

देखें बाइबल (पुराना नियम) की हस्तलिपियाँ और पाठ; कुमरान।

मृत सागर कुण्डलपत्र

मृत सागर कुण्डलपत्र

*देखें*बाइबल की पांडुलिपियाँ और पाठ (पुराना नियम)।

मृतकों का स्थान

यह शब्द उन लोगों के ठिकाने के बारे में बाइबल में वर्णित कई छवियों को शामिल करता है जो मर चुके हैं। उन छवियों में पुराने नियम में शिओल (अधोलोक) और "गड्ढा" शामिल हैं, साथ ही नए नियम में हैडिस (अधोलोक), नरक (गेहेन्ना), स्वर्गलोक, और "अब्राहम की गोद" शामिल हैं। जैसे-जैसे उनकी समझ बढ़ी, मृत्यु के बारे में इब्रानी धारणा अस्पष्ट शुरुआत से बदलकर नए नियम में पाई जाने वाले एक विकसित अवधारणा में बदल गई।

पुराने नियम में

पुराने नियम में मृतकों के बारे में बहुत कम जानकारी है। कुछ पुराने नियम के वाक्यांशों के अनुसार, मृत्यु के बाद व्यक्ति अधोलोक (शिओल) (अक्सर "कब्र", "नरक", "गड्ढा" या केवल "मृतक" के रूप में अनुवादित) में उतरता है, जिसका अर्थ कभी-कभी केवल यह होता है कि व्यक्ति को कब्र में रखा गया है (गिन 16:30, 33), लेकिन अधिक बार यह अधोलोक को इंगित करता है। मृतकों के निवास को धरती के नीचे एक स्थान के रूप में चित्रित किया गया है, जहाँ व्यक्ति "नीचे जाता है" (उत्त 42:38; नीति 15:24; यहेज 26:20) और एक ऐसी जगह के रूप में जो अंधकारमय है (अय्यू 10:21–22), मौन (भज 94:17; 115:17), और विस्मरण (भज 88:12) की जगह है। वहां परमेश्वर को याद नहीं किया जाता और उनकी स्तुति कभी नहीं कि जाती (भज 6:5; 30:9; 115:17)। यह माना जाता था कि स्वयं परमेश्वर भी उन लोगों को याद नहीं करते जो वहां हैं (भज 88:5, 11; यशा 38:18)। मृतकों को हमेशा के लिए प्रभु के संपर्क से और इतिहास में उनकी गतिविधियों में भाग लेने से अलग कर दिया गया था। हालाँकि जीवन और मृत्यु के बीच की सीमा को अस्थिर माना जाता था (जैसा कि 2 रा 4:32–37 में पुनरुत्थान और 1 शमू 28:7–25 में शमूएल की आत्मा द्वारा दिखाया गया है), मृतकों के साथ संवाद यहूदियों के लिए निषिद्ध था (व्य. वि. 18:11)। (मृतकों की उपासना करना इस्राएल के आसपास की जातियों में एक सामान्य प्रथा थी।)

हालांकि अधोलोक में किसी की नियति को सही मायने में जीवन नहीं कहा जा सकता था, यह एक प्रकार का अस्तित्व था, शायद अपने देशवासियों और पूर्वजों के साथ में भी (उत्त 25:8; यहेज 32:17–30)। मृतकों का क्षेत्र परमेश्वर की शक्ति की पहुंच से बाहर नहीं था (भज 139:8; आमो 9:2; योना 2:2)। हालाँकि अधोलोक (शिओल) को जीवितों को खाने वाले भूखे दानव के रूप में चित्रित किया गया था जो जीवित प्राणियों को मार रहा था (नीति 27:20; 30:16), परमेश्वर की सामर्थ ही किसी को उसकी पकड़ से बचा सकती थी (भज 49:15; 86:13)। पुराने नियम अवधि के अंत तक, यह आशा भी थी कि व्यक्ति को अंततः अधोलोक (शिओल) से छुटकारा मिलेगा (अय्यू 14:13–22; 19:25–27; भजन 49:15; 73:23–28), हालांकि केवल दानिय्येल ने उस आशा को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया (दानि 12:1–2)। यद्यपि प्राचीन इब्रानियों ने कभी भी मृत्यु को उस तरह नहीं देखा था जैसे कि प्रेरित पौलुस नए नियम में देखते है (2 कुरि 5:1–8; फिल 1:21–23), फिर भी उन्होंने यह समझ लिया था कि मृत्यु एक निराशाजनक स्थिति नहीं थी।

अंतर-नियम लेखन में

बँधुआई और नए नियम काल की शुरुआत के बीच (586 ई. पू. – ईस्वी 30, पुराने नियम के अंत के साथ परस्परव्याप्त), फारस और यूनानी मत के संपर्क ने यहूदियों को मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में अपने विचार स्पष्ट करने के लिए प्रेरित किया। जब पुराना नियम यूनानी में अनुवादित हुआ, तो अधोलोक के यूनानी नाम "हैडिस" का उपयोग इब्रानी "शिओल" का अनुवाद करने के लिए किया गया। नए नियम में, हैडिस को मृतकों के निवास के लिए सामान्य नाम बताने के लिए इस्तेमाल किया गया।

नए नामों के साथ नई अवधारणाएँ भी आईं। मृतकों के स्थान के बारे में कई अलग-अलग धारणाएँ प्रचलित थीं। एक सामान्य उदाहरण छद्मग्रंथ 1 हनोक 22 में प्रकट होता है, जहां मृतकों को अंतिम न्याय की प्रतीक्षा में एक बड़े पर्वत में खोखले स्थानों पर रखा जाता है। एक अपेक्षाकृत सुखद जगह धर्मियों के लिए अलग थी और एक यातनाओं से भरी हुई दुष्टों

के लिए। अन्य लेखकों ने पुराने नियम की अवधारणा को हैडिस या शिओल के रूप में जारी रखा, जो परमेश्वर और आनंद से अलगाव का स्थान है (इक्लुस 14:12, 16; 17:27–28)।

उस अवधि के दौरान, यहूदियों ने एक नया शब्द, "गेहेन्ना" (इब्रानी "हिन्नोम"), का उपयोग करना शुरू किया, जो यरूशलेम के दक्षिण में एक घाटी का नाम है। यह घाटी पुराने नियम काल में बेटे या बेटी की बलि की घृणित प्रथा के लिए (2 रा 23:10; 2 इत 28:3; 33:6) और नए नियम काल में यह इसके धुएं वाले कचरे के लिए जानी जाती थी। गेहेन्ना दुष्ट मृतकों के अंतिम स्थान, उग्र पीड़ा का स्थान बन गया (1 हनोक 90:20–27; 2 एज़ड 7:70)। सज़ा के उस स्थान के सामने "स्वर्गलोक" (आनंद के बगीचे के लिए फ़ारसी नाम) खड़ा था, एक ऐसा स्थान जहाँ धर्मी लोग आनंद का अनुभव करेंगे।

उन सभी अवधारणाओं - हैडिस, गेहेन्ना, स्वर्गलोक- को नए नियम लेखकों द्वारा मसीह के प्रकटीकरण के लिए सबसे उपयुक्त रूपों में ढाला गया था।

नए नियम में

हालांकि नया नियम मृतकों के निवास के लिए विभिन्न शब्दों का उपयोग करता है, लेकिन इसमें आश्चर्यजनक रूप से इसके कुछ संदर्भ शामिल हैं - कुल मिलाकर लगभग 35 वचन हैं। वे वचन सुसमाचारों और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में केंद्रित हैं। प्रेरित पौलुस ने स्वर्ग के बारे में बहुत कुछ कहा, लेकिन केवल यीशु और यूहन्ना ने नरक के बारे में अधिक कहा।

शब्द "हैडिस" का उल्लेख यीशु ने केवल एक बार किया है, धनी व्यक्ति और लाज़र के दृष्टांत में (लूका 16:23)। उस दृष्टांत में, हैडिस एक यातना का स्थान है जहाँ मृत्यु के बाद दुष्ट लोग जाते हैं। यातना को एक "अग्नि" के रूप में वर्णित किया गया है जो शारीरिक मृत्यु के बावजूद व्यक्ति को शारीरिक रूप से पीड़ित करती है। पीड़ा में पड़े लोगों को कोई आराम नहीं मिलता।

हालांकि दुष्ट लोग मरते ही हैडिस (अधोलोक) में चले जाते हैं, उनका अंतिम गंतव्य नरक (गेहेन्ना) है, जो आग और कीड़ों का स्थान है, दोनों ही सड़न का संकेत देते हैं (मत्ती 5:22, 29–30; 18:9; मर 9:48, यशा 66:24 से उद्धृत)। यीशु ने नरक (गेहेन्ना) को "बाहरी अंधकार" के रूप में भी संदर्भित किया जहां "रोना और दांत पीसना" होगा (मत्ती 8:12; 22:13; 25:30)। स्पष्ट रूप से, अंतिम न्याय के बाद, दुष्टों को मसीह के आदेश पर वहां डाला जाता है (यूह 5:22, 27; प्रेरि 10:42; 17:31; 2 तीमु 4:1)। यातना का वह स्थान परमेश्वर से अलगाव के स्थान के रूप में शिओल की पुराने नियम कि अवधारणा के नकारात्मक पक्ष को उठाता है।

मृतकों का स्थान

पश्चाताप के उपदेशक के रूप में, यीशु ने नरक (गेहेन्ना) के खतरे पर जोर दिया। जब धर्मी मरते हैं तो उनके स्थान के बारे में कहने के लिए उनके पास बहुत कम था। हालांकि, धर्मी अंतिम न्याय के बाद नरक (गेहेन्ना) के बजाय "राज्य" में प्रवेश करेंगे (मत्ती 25:34)। यीशु ने दो बार संकेत दिया कि धर्मी मृत्यु के तुरंत बाद एक धन्य अवस्था में प्रवेश करते हैं। लूका 16:22 मृत लाज़र को "अब्राहम की गोद" में होने के रूप में संदर्भित करता है, जो आराम और शांति का स्थान है।लूका 23:43 उसी स्थान को स्वर्गलोक कहता हैं, जिसमें वादा किया गया है कि मरने वाला चोर मृत्यु के बाद यीशु के साथ वहाँ होगा। स्वर्गलोक के बारे में पौलुस के शब्द इसे स्वर्ग के साथ संरेखित करते हैं (2 कुरि 12:2–3), और युहन्ना स्वर्गलोक को नये आकाश और नई पृथ्वी के साथ जोड़ते हैं (प्रका 2:7; 21:1–2; 22:1–2)।

पौलुस और नए नियम पत्रियों के अन्य लेखकों ने दुष्ट मृतकों के निवास के बारे में बहुत कम कहा। पौलुस ने केवल "अथाह कुंड" के बारे में बात की - जो कि शिओल (अधोलोक) के गड्ढे के लिए उसका शब्द है (रोम 10:7)। उनका मसीह के "पृथ्वी की निचली जगहों" (इफि 4:9) में उतरने का संदर्भ शायद केवल यह कहने का उनका तरीका है कि मसीह, मरने के बाद, मृतकों के स्थान पर गए। ("सबसे निचली धरती" यहूदी रब्बियों द्वारा शिओल/हैडिस/गेहेन्ना के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक शब्द था।) पतरस ने मसीह के अपनी मृत्यु के बाद "आत्मा" में किसी "कैद" में जाने की बात कही जहाँ उन्होंने "आत्माओं को प्रचार किया" (1 पत 3:18–20)।उस व्याक्यांश की व्याख्याएं भिन्न हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि मसीह ने हैडिस (अधोलोक) में प्रवेश किया और नूह के समय के गिरे हुए स्वर्गदूतों को प्रचार किया ("परमेश्वर के पुत्र," उत्त 6:1–4), न कि उन्होंने कैदी मानव आत्माओं को प्रचार किया। 2 पत 2:4 में आत्माओं के लिए कैद (आमतौर पर "नरक" के रूप में अनुवादित) "टार्टरस" से आता है, जो अधोलोक के लिए एक और यूनानी नाम है।

पौलुस ने धर्मी मृतकों के निवास के बारे में बहुत कुछ कहा। अपने शुरुआती पत्रों में उन्होंने कभी उनके स्थान का उल्लेख नहीं किया, केवल यह कहा कि वे फिर जी उठेंगे (1 कुरि 15; 1 थिस्स 4:13–17)। खुद लगभग निश्चित मृत्यु का सामना करने के बाद (2 कुरि 1:8–11), उन्होंने चर्चा करना शुरू किया कि मृतक "कहाँ गए।" पौलुस ने कहा कि मरने का मतलब मसीह के साथ होना है, और इस तरह यह जीवन से बेहतर है (फिलि 1:23)। "देह से अलग" होना "प्रभु के साथ रहना" है (2 कुरि 5:8)। पौलुस का शायद मतलब था कि धर्मी मृतक सीधे स्वर्गलोक चले गए ताकि यीशु के साथ रह सकें (पुष्टि करें 2 कुरि 12:2–4, जहाँ पौलुस ने स्वर्गलोक को "तीसरा स्वर्ग" कहा)। मृत्यु के पास मसीहियों को मसीह से अलग करने की बिल्कुल भी शक्ति नहीं है (रोम 8:38–39)। इसके बजाय, यह उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में लाती है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मृतकों के निवास स्थान के बारे में बहुत कुछ है, विशेष रूप से दुष्ट मृतकों के बारे में। यह उस स्थान के लिए दो नामों का उपयोग करता है: "अथाह कुण्ड," सभी बुरी आत्माओं का घर या कैद; और "हैडिस," मानव मृतकों के स्थान का नाम। अथाह कुण्ड (या अथाह गड्ढे) से दुष्ट आत्माएं निकलती हैं जो मनुष्यों को पीड़ा देती हैं (प्रका 9:1–11) और शैतानी "पशु," जो दो गवाहों को मारता है और "बड़ी वेश्या" को अपनी पीठ पर ले जाता है (11:7; 17)। वहां शैतान खुद कैद होगा (20:2–3)। यीशु ने इसे शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई जगह के रूप में वर्णित किया (पुष्टि करें मत्ती 25:41)। मसीहियों के लिए अच्छी खबर यह है कि अथाह कुण्ड, या हैडिस (अधोलोक), एक स्वशासी क्षेत्र नहीं है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यीशु की इस घोषणा के साथ शुरू होती है कि उनके पास अधोलोक (हैडिस) की कुँजियाँ हैं (प्रका 1:18), और अंत में वह इसे अपने मृतकों को छोड़ने के लिए मजबूर करेंगे (20:13)। तब तक, अथाह कुण्ड की कुंजी शैतान के हाथ में नहीं है, बल्कि स्वर्गीय चाबी के छल्ले पर लटकी हुई है जो केवल परमेश्वर के दूतों को वितरित की जाती है (9:1; 20:1)। अंत में, अधोलोक (हैडिस), मृत्यु, और दुष्टों को आग की झील (गेहेन्ना) में डाला जाएगा, जहाँ वे अनंत यातना सहेंगे (19:20; 20:10, 14–15; 21:8)।

प्रकाशितवाक्य के लेखक युहन्ना, पौलुस से सहमत थे कि धर्मी मृत्यु के समय दुष्टों के अंत को साझा नहीं करेंगे। अधोलोक (हैडिस) में जाने के बजाय, वे स्वर्ग जाते हैं। वध किए गए वेदी के नीचे प्रकट होते हैं, परमेश्वर से उनका बदला लेने के लिए पुकारते हैं (प्रका 6:9–11)। एक अन्य चित्र में अनगिनत मसीही परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होते हैं, उनकी स्तुति करते हुए (7:9–17)। स्वयं मसीह द्वारा चरवाही किए गए उन विश्वासियों को भूख, प्यास, परेशानी या दुःख नहीं सहना पड़ेगा।

निष्कर्ष

सारांश में, मृतकों का स्थान पुराने नियम में जीवन और परमेश्वर से अलगाव के स्थान के रूप में एक अस्पष्ट, धुंधली धारणा के रूप में शुरू हुआ। बाद के लेखकों ने देखा कि सभी के लिए एक स्थान (शिओल) के बजाय, दो स्थान होने चाहिए। मसीही शिक्षाओं के अनुसार, दुष्ट लोग अधोलोक, हैडिस, एक यातना की जगह में प्रवेश करते हैं, जहां वे न्याय के समय तक पीड़ित रहते हैं; अंततः उन्हें नरक (गेहेन्ना), आग की झील में डाल दिया जाएगा। अधोलोक पर मसीह का नियंत्रण है शैतान का नहीं, जैसे बाकी सृष्टि पर है। धर्मी अधोलोक में नहीं जाते, बल्कि सीधे स्वर्गलोक ("अब्राहम की गोद" या स्वर्ग) जाते हैं। वहाँ वे मसीह के साथ हैं; विश्वास दृष्टि बन गया है, पीड़ा आशीष बन गई है, और प्रार्थना स्तुति बन गई है। मसीही मानते हैं कि मृत्यु, यद्यपि "अंतिम शत्रु" के रूप में भयावह है, लेकिन उनके लिए कोई पीड़ा नहीं है। इसमें उन्हें उनके प्रभु से अलग करने की कोई शक्ति नहीं है। बल्कि, यह उन्हें उनके आमने-सामने लाता है जिससे वे प्रेम करते हैं।

यह मुलाकात किसी के मरने के तुरंत बाद या किसी के जी उठने के तुरंत बाद हो सकती है - बीच का समय कोई मायने नहीं रखता, क्योंकि यह सिर्फ़ नींद के समय से ज़्यादा कुछ नहीं है।दूसरे शब्दों में, विश्वासी के लिए मृत्यु के बाद अगला अनुभव मसीह से मिलने का होगा।

पुराना और नया नियम दोनों ही मृत्यु को नींद के रूप में वर्णित करते हैं। अक्सर पुराने नियम में, जब कोई व्यक्ति मरता है, तो कहा जाता है कि वह अपने पूर्वजों के साथ सोने चला गया (जैसे, व्य. वि. 31:16; 2 शमू 7:12)। यीशु ने स्वयं मृत्यु को नींद के रूप में वर्णित किया (मत्ती 9:24; यूह 11:11)। प्रेरित पौलुस ने भी (1 कुरिं 11:30; 15:20, 51; 1 थिस्स 4:14)। कम से कम इनमें से कुछ संदर्भों में ऐसा लगता है कि यह मृत्यु की अस्थायी प्रकृति है जिसके कारण इसे नींद के रूप में कहा जाता है। यहां तक कि पुराने नियम के गद्यांश दानि 12:2 में भी कहा गया है कि मृत्यु एक नींद है, जब तक कि मृतक नहीं उठ खड़े होते—कुछ लोग अनन्त जीवन के लिए और कुछ लोग लज्जा और अनन्त घृणा के लिए।

यह भी देखें गेहेन्ना ; हैडिस: स्वर्ग; नरक; मध्यवर्ती अवस्था; स्वर्गलोक; शिओल।

मृतकों की पुस्तक

"मृतकों की पुस्तक" शब्द प्राचीन मिस्र के अंत्येष्टि ग्रंथों का आधुनिक नाम है। यह किसी भी पाठ का संग्रह है, चाहे वह पिरामिड की दीवारों, ताबूतों या पपीरी पर पाया गया हो, जो किसी व्यक्ति की इस जीवन से अगले जीवन तक की यात्रा का वर्णन करता है। कभी-कभी, यह पपीरी (कागज़ का एक पौधा-आधारित रूप) पर लिखे गए ग्रंथों के एक छोटे संग्रह को संदर्भित करता है।

इन ग्रंथों के लिए प्राचीन मिस्र का नाम "दिन के समय आने वाले अध्याय" था। ये किसी भी महत्वपूर्ण मृत व्यक्ति के लिए लिखे गए थे। लेकिन, बाद के समय में, इनका बड़े पैमाने पर उत्पादन किया गया और व्यक्ति के नाम के लिए जगह छोड़ी गई। प्रभावशाली लोगों के लिए, ये पपीरी 100 फीट (30.5 मीटर) तक लंबी हो सकती थीं और अक्सर मृत्यु के बाद उनके अनुभवों को दर्शाने वाले दृश्यों के साथ भव्य रूप से चित्रित की जाती थीं।

मृतक का अंतिम लक्ष्य दूसरी दुनिया, ओसिरिस के राज्य में पहुँचना और भगवान बनना था। वहाँ पहुँचने के लिए, आत्मा को विभिन्न द्वारों से गुज़रना पड़ता था, और प्रवेश पाने वाले द्वारपालों के नाम जानना पड़ता था। ग्रंथों ने यह महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। एक महत्वपूर्ण चरण सत्य के बड़े कमरे में निर्णय था, जहाँ व्यक्ति के दिल को सत्य और न्याय के पंख

के खिलाफ तौला जाता था। आत्मा किसी भी अपराध से इनकार करते हुए, खासकर चोरी और सामाजिक संबंधों के संबंध में "नकारात्मक स्वीकारोक्ति" करेगी। अगर हृदय पंख जितना हल्का था, तो उसे सच्चा घोषित किया जाता था। अगर वह पंख जितना हल्का नहीं था, तो उसे नष्ट कर दिया जाता था। ग्रंथों में आत्मा की यात्रा में सहायता करने के लिए भजन और प्रार्थनाएँ भी शामिल थीं, जो नैतिक चरित्र से ज़्यादा जादू और अनुष्ठान पर ज़ोर देती थीं।

मृतकों के लिए बपतिस्मा

अनिश्चित अर्थ की प्रथा जिसका एक बार नए नियम में उल्लेख किया गया है (1 कुरि 15:29)। उस विवादास्पद पद के लिए कई व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं। महत्वपूर्ण प्रश्न हैं कि मृतकों के लिए बपतिस्मा की प्रथा की प्रकृति क्या है और क्या प्रेरित पौलुस ने इसे स्वीकृत किया था या नहीं।

"मृतकों के लिए बपतिस्मा" वाक्यांश की अधिकांश व्याख्याएँ तीन श्रेणियों में से एक में आती हैं: रूपक बपतिस्मा, सामान्य बपतिस्मा, या प्रतिनिधि द्वारा बपतिस्मा। मरकुस 10:38 और लूका 12:50 में बपतिस्मा का उपयोग पीड़ा या शहादत के रूपक में किया गया है। कुछ विद्वान, "मृतकों के लिए बपतिस्मा" को शहादत के रूपक में व्याख्या करते हुए, इसे "मृत्यु की दृष्टि से बपतिस्मा लेना" के रूप में अनुवाद करते है।

कई लोग इस वाक्यांश को अपने स्वयं के पक्ष में बपतिस्मा लेने के सामान्य अर्थ में पढ़ना पसन्द करते हैं। मार्टिन लूथर ने सोचा कि यह मृतकों की कब्रों पर बपतिस्मा लेने की प्रथा को संदर्भित करता है। जॉन केल्विन का मानना था कि इसका सम्बन्ध उन मसीहियों से था जिन्होंने मरने के खतरे में होने के कारण बपतिस्मा की मांग की थी। अन्य लोग सोचते हैं कि इसका सम्बन्ध उन परिवर्तित लोगों से था जिन्होंने मसीही शहीदों या स्वर्गीय प्रियजनों की गवाही के कारण बपतिस्मा लिया था।

शब्दों का सबसे स्वाभाविक अर्थ प्रतिनिधि द्वारा बपतिस्मा की प्रथा की ओर इशारा करता है। ऐसा लगता है कि इस वाक्यांश से संकेत मिलता है कि कुरिन्थियों में कुछ लोग मृत लोगों के लिए प्रतिनिधि के रूप में बपतिस्मा लेते थे। कुरिन्थियों के पास बपतिस्मा का एक जादुई दृष्टिकोण हो सकता है। यह शायद यह बताता है कि पौलुस ने उनके लिए अपने बपतिस्मा देने वाले सेवकाई को क्यों छोटा बताया (1 कुरिन्थियों 1:14–17)। इस्राएल के जंगल में अनुभव की तुलना करते हुए (10:1–13), पौलुस ने लाल सागर को पार करने और मन्ना इकट्ठा करने का वर्णन स्पष्ट रूप से बपतिस्मा और प्रभु भोज का सुझाव देते हुए किया। पौलुस ने अपने पाठकों को याद दिलाया कि इन नाटकीय अनुभवों में से कोई भी इस्राएलियों को पाप में गिरने से नहीं रोक सका। शायद कुरिन्थियों ने मसीही संस्कारों को ऐसे अनुष्ठान माना जो उनकी मुक्ति की गारंटी देते थे। यदि ऐसा है, तो प्रतिनिधि द्वारा बपतिस्मा के अभ्यासकर्ता शायद मानते थे कि इस अनुष्ठान का मृतकों के लिए कुछ लाभ था।

क्या पौलुस ने मृतकों के लिए बपतिस्मा की प्रथा को स्वीकृत किया? शायद नहीं। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि 1 कुरिन्थियों 15:29–34 में मृतकों के पुनरुत्थान के लिए विशेष तर्कों में, पौलुस ने स्वयं को ऐसे बपतिस्मा के अभ्यासकर्ताओं से अलग कर लिया। इस प्रथा की स्वीकृति का संकेत दिए बिना, पौलुस ने प्रतिनिधि द्वारा बपतिस्मा का उपयोग केवल एक उदाहरणात्मक तर्क के रूप में किया: यदि *कुछ* कोरिन्थियों ने मृतकों के असली पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं किया, तो मृतकों के लिए बपतिस्मा देने की उनकी प्रथा स्पष्ट रूप से निरर्थक होगी।

मृत्यु

जीवन का अंत (शारीरिक मृत्यु) या परमेश्वर से अलगाव (आत्मिक मृत्यु)।

पुराने नियम का दृष्टिकोण

पुराने नियम में मृत्यु को जीवन का स्वाभाविक अंत माना गया था। एक इस्राएली का लक्ष्य एक लंबा और पूर्ण जीवन जीना, कई वंशज उत्पन्न करना, और सन्तानो और नाती-पोतों के साथ शांति से मरना था। पुराने नियम में समय से पहले मृत्यु के खिलाफ कई विरोध हैं (जैसे, हिजकिय्याह का, 2 रा 20:1–11)। समय से पहले मृत्यु परमेश्वर के न्याय का परिणाम प्रतीत हो सकती है; इसलिए, अय्यूब ने मृत्यु से पहले अपने चरित्र की पुष्टि की आवश्यकता देखी (अय्यू 19:25–26)। केवल सभो 3:19–20 में मृत्यु के सामने स्पष्ट निराशावाद व्यक्त किया गया है—और वह पुस्तक संभवतः काफी गैर-इब्रानी प्रभाव दिखाती है।

मृत्यु, हालांकि जीवन का एक प्राकृतिक अंत है, लेकिन इसे कभी भी सुखद अन्त नहीं माना गया। मृत्यु व्यक्ति को मानव समुदाय से और साथ ही परमेश्वर की उपस्थिति और सेवा से भी अलग कर देती है। परमेश्वर मृत्यु के समय सांत्वना प्रदान कर सकते हैं (भज 73:23–28), लेकिन उन्हें शायद ही कभी मृतकों के साथ उपस्थित के रूप में चित्रित किया गया है, और वह भी केवल बाद के बाइबल साहित्य में (भज 139:8)। इस कारण, मृत्यु को कभी भी एक बेहतर जीवन के द्वार के रूप में नहीं देखा गया।

पाप और मृत्यु का संबंध मूसा की व्यवस्था में मृत्युदंड में देखा जाता है। एक गंभीर अपराधी को मौत की सजा दी जाती थी। दंडात्मक वाक्यांश "उसे काट दिया जाएगा" का मतलब था कि यद्यपि राष्ट्र बना रहेगा, अपराधी को मृत्यु द्वारा उससे

अलग कर दिया गया। इस्राएलियों को चेतावनी दी गई थी कि परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करने से परमेश्वर के साथ संगति टूटने के परिणामस्वरूप समय से पहले मृत्यु हो सकती है (व्य. वि. 30:15–20; यिर्म 21:8; यहेज 18:21–32)।

अंतर-नियम काल में, जैसे-जैसे यहूदी विचारधारा में बाद का जीवन और पुनरुत्थान के बारे में अधिक स्पष्टता आई, वैसे-वैसे मृत्यु के बारे में यहूदी सोच भी विकसित हुई। मृत्यु को, केवल समय से पहले मृत्यु ही नहीं, पाप के बुरे परिणाम के रूप में देखा जाने लगा (2 एज़्ड 3:7; इक्लस 25:24)। कभी-कभी सभी मृत्यु को "पहले पाप" (आदम और हव्वा की अनाज्ञाकारिता) का परिणाम माना जाता है। अन्य संदर्भों में, हर कोई अपने स्वयं के पाप के परिणामस्वरूप मर जाता है। पवित्रशास्त्र में मृतकों के पुनरुत्थान और अंतिम न्याय या दंड का पहला स्पष्ट संकेत दानिय्येल की पुस्तक (दानि 12:2) में मिलता है, जो लिखी जाने वाली पुराने नियम की अंतिम पुस्तकों में से एक है। उस शिक्षा की गूंज पुरे अंतर-नियम काल में सुनाई देती है (2 एज़्ड 7:31–44)। उस समय, यह माना जाता था कि आत्मा मृत्यु के बाद या तो किसी अमर रूप में जीवित रहती है (सुले 3:4; 4:1; 4 मक्का 16:13; 17:12) या पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करती है (1 हनोक 102)। उन अतिरिक्त बाइबल लेखों में से कुछ में यूनानी विचार शामिल थे कि शरीर एक बोझ था जिससे छुटकारा पाना था- यह धारणा इब्रानी सोच से परे थी।

हालांकि, पुनरुत्थान और मृत्यु से मुक्त जीवन की अवधारणा ने मसीह के पुनरुत्थान और मृत्यु पर उनकी विजय पर ध्यान केन्द्रित करते हुए नए नियम के प्रकाशन लिए मंच तैयार किया।

नए नियम का दृष्टिकोण

नए नियम में, मृत्यु को व्यक्तिगत घटना के बजाय एक धार्मिक समस्या के रूप में देखा जाता है। मृत्यु शारीरिक जीवन के साधारण अंत से परे जाती है, जिसे लेखक लगभग बिना किसी कठिनाई के स्वीकार करते हैं।मृत्यु को व्यक्ति के जीवन के हर हिस्से को प्रभावित करने वाला माना जाता है। केवल परमेश्वर अमर हैं, जो दुनिया में सभी जीवन के स्रोत हैं (रोम 4:17; 1 तिमु 6:16)। मनुष्य केवल परमेश्वर के जीवन से उचित रूप से संबंधित होकर ही जी सकता है। लेकिन जब से पाप दुनिया में आया है, तब से लोगों के लिए जीवन के ईश्वरीय स्रोत के साथ व्यक्तिगत संपर्क में रहना मुश्किल हो गया है (रोम 5:12, 17–18; 1 कुरि 15:22)।जब आदम ने खुद को परमेश्वर से अलग कर लिया, तो उस अलगाव ने मृत्यु ला दी। प्रत्येक मानव ने आदम के पदचिह्नों का अनुसरण किया है (रोम 3:23; 5:12), जिससे सभी के लिए मृत्यु अनिवार्य परिणाम के रूप में आई (रोम 6:23; इब्रा 9:27)। तो फिर मृत्यु, केवल कुछ ऐसी चीज़ नहीं है जो लोगों को उनके जीवन के अंत में घटित होती है; यह परमेश्वर के साथ संगति से अलग होकर अपना जीवन जीना भी है।

मृत्यु के प्रभुत्व की सीमा विशाल है। यह संस्कृति के हर पहलू को प्रभावित करता है। संपूर्ण मानव जीवन मृत्यु के भय की छाया में व्यतीत होता है (रोम 8:15; इब्रा 2:15)। मृत्यु उन सभी पर राज्य करती है जो "शरीर के" हैं (रोम 8:6)। जो कोई मसीह के साथ संबंध में नहीं रहता, वह मृत्यु की अवस्था में रहता है (यूह 3:16–18; 1 यूह 5:12)। शैतान, जो दुनिया पर राज्य करता है, मृत्यु का स्वामी है (इब्रा 2:14)। मृत्यु को कभी-कभी दुनिया में एक दुष्ट शक्ति के रूप में व्यक्त किया जाता है, लेकिन अंत में इसे स्वयं मसीह द्वारा नियंत्रण में लाया गया, जो इसे जीतने वाले एकमात्र थे (1 कुरि 15:26–27; प्रका 6:8; 20:13–14)।

मसीह मरे, दफनाए गए, और तीसरे दिन फिर से जी उठे (रोम 4:25; 1 कुरि 15:3–4; 1 थिस्स 4:14)। उस ऐतिहासिक घटना के माध्यम से, मृत्यु की शक्ति टूट गई थी। नया नियम विभिन्न तरीकों से पाप के भुगतान के लिए मसीह की मृत्यु की अधीनता को व्यक्त करता है। वह मृत्यु तक आज्ञाकारी रहे (फिलि 2:8); वह सभी के पापों के लिए बलिदान के रूप में मरे (1 कुरि 5:7; 2 कुरि 5:15); और वह मृतकों के स्थान, अधोलोक में उतरे (1 पत 3:18–19)। ऐसे सभी गद्यांशों का मुख्य बिंदु यह है कि वह मरे नहीं रहे, बल्कि उन्होंने शैतान को हरा दिया, मृत्यु की शक्ति (चाबियाँ) ले ली, और विजय प्राप्त कर ली (इब्रा 2:14–15; प्रका 1:17–18)। यीशु मसीह ने अपने लाभ के लिए नहीं बल्कि उनके लिए काम किया जो खुद को उनके प्रति समर्पित करते हैं (मर 10:45; रोम 5:6–8; 1 थिस्स 5:9–10)। मसीह ने एक ऐसी मृत्यु को स्वीकार करके, जिसके वह हकदार नहीं थे, अपने अनुयायियों के लिए मृत्यु की सामर्थ को तोड़ दिया है।

इस प्रकार मसीह की सामर्थ द्वारा मसीह लोगों को "मृत्यु कि देह" (रोम 7:24) से छुटकारा मिलता है। उद्धार मसीह की मृत्यु में बपतिस्मा लेने (6:3–4), और दुनिया और व्यवस्था के लिए "मसीह के साथ मरने" के माध्यम से आता है (रोम 7:6; गला 6:14; कुल 2:20)। अर्थात, मसीह की मृत्यु को परमेश्वर द्वारा विश्वासी की मृत्यु के रूप में गिना जाता है।विद्रोही दुनिया का पाप (रोम 6:6) और आत्म-पूजा (स्वयं के लिए जीना, 2 कुरि 5:14–15) अतीत की बातें बन जाती हैं।अपने लोगों के लिए यीशु की मृत्यु वह माध्यम है जिसके द्वारा उनका जीवन उन्हें दिया जाता है (4:10)। इसका परिणाम यह है कि विश्वासी दुनिया से वैसे ही अलग हो जाते हैं जैसे वे कभी परमेश्वर से अलग हुए थे। संसार के दृष्टिकोण से, वे मरे हुए हैं; मसीह ही उनका एकमात्र जीवन है (कुल 3:3)।

प्रेरित यूहन्ना ने इसे कुछ अलग तरीके से व्यक्त किया। यीशु मृतकों को जीवन देने के लिए दुनिया में आए (यूह 5:24)। वह जीवन-दान पुनरुत्थान के समय नहीं होगा; यह पहले से ही हो रहा है। वे सभी जो खुद को यीशु के प्रति समर्पित करते हैं, वे तुरंत मृत्यु से जीवन में चले जाते हैं। या, इसे दूसरे तरीके से कहें तो, जो लोग उसके वचनों का पालन करते हैं (आज्ञा मानते हैं) वे कभी मृत्यु नहीं देखेंगे (8:51–52)। मुद्दा यह है

कि जो मसीह के बाहर हैं वे पहले से ही मृत हैं, और जो मसीह पर विश्वास करते हैं वे पहले से ही जीवन का आनंद ले रहे हैं। मसीही और गैर-मसीही के बीच का मौलिक अंतर जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर है।

स्वाभाविक रूप से, नए नियम लेखकों को पता था कि मसीही मरते हैं; उनकी समस्या गैर-मसीही मृत्यु से अंतर को समझाने के लिए शब्द खोजने की थी। जो विश्वासी शारीरिक रूप से मर जाते हैं, उन्हें "मसीह में मरे" कहा जाता है (1 थिस्स 4:16)। या वे बिल्कुल भी मृत नहीं हैं, बल्कि केवल "सो गए हैं" (1 कुरि 15:6, 18, 20, 51; 1 थिस्स 4:13–15; पुष्टि करें यीशु के शब्द, यूह 11:11–14)। हालांकि उनके शरीर मृत हैं, मृतक विश्वासियों को मसीह से अलग नहीं किया गया है; अर्थात, वे वास्तव में मृत नहीं हैं। मृत्यु और नर्क की सभी शक्तियाँ विश्वासियों को मसीह से अलग नहीं कर सकतीं (रोम 8:38–39)। उनके लिए, मृत्यु हानि नहीं बल्कि लाभ है; यह उन्हें मसीह के करीब लाता है (2 कुरि 5:1–10; फिलि 1:20–21)। इसके अलावा, विश्वासी शारीरिक मृत्यु पर भी मसीह की जीत में भागीदार होंगे। क्योंकि वह मृतकों में से जी उठने वालों का "पहला फल" है (1 कुरि 15:20; कुल 1:18), जो "मसीह में" हैं वे "अंतिम दिन" पर उसके साथ, पुरे और संपूर्ण रूप से जी उठेंगे।

दूसरी ओर, जो मसीह के नहीं हैं, उनके लिए परमेश्वर से अंतिम, पूर्ण अलगाव है। अंतिम न्याय में, जिनके नाम "जीवन की पुस्तक" में नहीं लिखे हैं, उन्हें मृत्यु और अधोलोक के साथ आग की झील में भेजा जाता है। परमेश्वर से वह अंतिम अलगाव "दूसरी मृत्यु" है (प्रका 20:14)।हालांकि, मसीहियों को मृत्यु से बचा लिया गया है (याकू 5:20; 1 यूह 3:14)। जो मसीह के प्रति विश्वासयोग्य हैं दूसरी मृत्यु का उन लोगों पर कोई अधिकार नहीं है (प्रका 2:11; 20:6)। इसके बजाय, वे परमेश्वर के साथ रहेंगे, जिनकी उपस्थिति में मृत्यु नहीं हो सकती, क्योंकि वह स्वयं जीवन हैं (21:4)।

*यह भी देखें*मृत, का स्थान; मध्यवर्ती राज्य; परमेश्वर का क्रोध।

मृत्यु दंड

कुछ अपराधों के लिए कानूनी दंड के रूप में किसी को मृत्युदंड देने की प्रथा।

*देखें*आपराधिक कानून और दंड।

मृत्युदण्ड (फांसी)

*देखें*आपराधिक कानून और दण्ड; बेधना।

मृदंग

मृदंग*

उत्पत्ति 31:27 में मृदंग और 1 शमूएल 18:6, में तिकोने और 1 शमूएल 10:5, अय्यूब 17:6, यशायाह 5:12, 24:8, 30:32, और यिर्मयाह 31:4 में डफ अनुवाद किया गया है, *देखें*वाद्य यंत्र (तोफ)।

मेंढ़क

जल में रहने वाला, बिना पूंछ का, चिकनी त्वचा वाला उभयचर। इसका सम्बन्ध मिस्र की दूसरी मरी से जोड़ा गया था। (निर्ग 8; भज 78:45; 105:30; प्रका 16:13)।

*देखें*पशुओं।

मेंहदी

मेंहदी

किंग जेम्स वर्शन में मेहंदी का नाम दिया गया है। मेहंदी एक सुगंधित झाड़ी है जिसके पत्ते हल्के हरे रंग के होते हैं और सफेद, गुलाबी या पीले फूल होते हैं (श्रेष्ठ 1:14; 4:13)।

*देखिए*पौधे (मेहंदी)।

मेंहदी

मेंहदी

श्रेष्ठगीत 1:14 और 4:13 में वर्णित एक मीठी महक वाली, फूलदार झाड़ी। किंग जेम्स संस्करण जैसे पुराने बाइबिल अनुवादों में, इब्रानी शब्द *कोफर* का अनुवाद "कैम्फायर" के रूप में किया गया था। लेकिन आज विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि यह मेंहदी के पौधे (*लॉसनिया इनर्मिस*) को संदर्भित करता है।

मेंहदी उत्तरी भारत की मूल रूप से पाई जाती है और सूडान, मिस्र, अरब, सीरिया, लबानोन, इस्राएल और आसपास के क्षेत्रों में जंगली रूप से उगती है। यह 1.2 से 3.7 मीटर (4 से 12 फीट) ऊँची होती है। इसकी सुगंध गुलाब जैसी होती है।

लोग प्राचीन काल से सौंदर्य के लिए मेहंदी का उपयोग करते आ रहे हैं। इसे तैयार करने के लिए, पत्तियों को सुखाया जाता है और चूर्ण बनाया जाता है, फिर पानी के साथ मिलाकर लसदार मिश्रण बनाया जाता है। इस लसदार मिश्रण से एक चमकीला पीला, नारंगी या लाल रंग बनता है जिसका उपयोग नाखूनों, पैर के नाखूनों, उंगलियों, हाथों की हथेलियों और पैरों

के तलवों को रंगने के लिए किया जाता था। मेंहदी का उपयोग विशेष रूप से युवा लड़कियों द्वारा किया जाता था। पुरुष भी अपनी दाढ़ी को रंगने के लिए मेंहदी का उपयोग करते थे, और इसका उपयोग घोड़ों के अयाल और पूंछ पर किया जाता था। रंग दो या तीन सप्ताह तक रहता था, उसके बाद इसे फिर से लगाने की आवश्यकता होती थी।

पुरातत्वविदों ने मेंहदी से सजी मिस्र की ममियों की खोज की है। मिस्र में सौंदर्य प्रसाधन के रूप में मेंहदी का उपयोग उस समय आम था जब इस्राएली वहाँ गुलाम थे, इसलिए वे इससे परिचित रहे होंगे।

मेंहदी

छोटे पत्तों और सुगंधित फूलों वाला एक सदाबहार झाड़ी (यशा 41:19)। मेंहदी का पेड़ (मायर्टस कम्युनिस) इस्राएल और आसपास के क्षेत्रों में सामान्य है, विशेष रूप से बैतलहम, लबानोन, हेब्रोन के आसपास, साथ ही कर्मेल पर्वत और ताबोर पर्वत की ढलानों पर। यह पश्चिमी एशिया में पाया जाता है और बढ़ने की अच्छी परिस्थितियों में यह 6.2 से 9.1 मीटर (20 से 30 फीट) ऊँचा एक छोटा सदाबहार पेड़ बन सकता है। हालांकि, अधिकतर यह 0.5 से 1.2 मीटर (डेढ़ से चार फीट) ऊँचा एक छोटी झाड़ी के रूप में बढ़ता है।

बाइबल में, मेंहदी मुख्य रूप से परमेश्वर की उदारता के प्रतीक के रूप में उल्लिखित है। नहेम्याह ने लोगों को झोपड़ियों के पर्व के लिए अन्य डालियों के अलावा मेंहदी के वृक्षों की डालियाँ इकट्ठा करने का आदेश दिया (नहे 8:15)। मेंहदी शांति के साथ-साथ न्याय का भी प्रतीक था।

मेकेरा, मकेराई

मेकेरा, मकेराई

*देखें*मकेराई

मेगिलोथ

कुण्डलपत्रों के लिए इब्रानी शब्द का बहुवचन रूप। यह शब्द यिर्मयाह 36 में कई बार आता है, जहाँ राजा यहोयाकीम, परमेश्वर के वचन को अस्वीकार करते हुए, उस कुण्डलपत्र को जला देते हैं जो भविष्यद्वक्ता ने उन्हें भेजा था।

मेगिलोथ का उपयोग सामूहिक रूप से पुराने नियम की पुस्तकों के लिए किया जाता है: श्रेष्ठगीत, रूत, विलापगीत, सभोपदेशक, और एस्तेर। ये "पाँच कुण्डलपत्र" हैं, जिन्हें यहूदी वर्ष के प्रमुख त्योहारों के दौरान यहूदियों द्वारा पढ़ा जाता है: फसह पर श्रेष्ठगीत, पिन्तेकुस्त (पहली फसल) पर रूत, बाबुलियों द्वारा यरूशलेम के विनाश की वर्षगांठ पर विलापगीत, झोपड़ियों के पर्व पर सभोपदेशक, और पुरिम पर एस्तेर।

मेघधनुष

जल-प्रलय के बाद नूह के साथ परमेश्वर के वाचा का चिन्ह (उत्प 9:8–17)। यहाँ पर "युद्ध धनुष" के लिए सामान्य इब्रानी शब्द का उपयोग किया गया है। यहूदी परम्परा ने इसे एक प्रतीक के रूप में समझा कि परमेश्वर का क्रोध शान्त हो गया था, क्योंकि मेघधनुष नीचे की ओर था, ठीक वैसे ही जैसे एक विरोधी अपने धनुष को शान्ति घोषित करने के लिए नीचे करता है। नए नियम में, मेघधनुष स्वर्गीय दर्शन का हिस्सा बनता है (प्रका 4:3; 10:1)।

*यह भी देखें*जलप्रलय, वह।

मेज़

देखें फर्नीचर।

मेज़ाहाब

मेज़ाहाब

मत्रेद के पिता और महेतबेल के दादा, जो एदोमी राजा हदर (या हदद) की पत्नी थीं (उत्प 36:39; 1 इति 1:50)।

मेज़ुज़ा

एक इब्रानी शब्द, जो पुराने नियम में लगभग 20 बार उपयोग किया गया है, जिसका अर्थ है द्वार या चौखट का सीधा ढांचा। फसह के मेम्ने का लहू घरों के "मेज़ूज़ा" पर लगाया गया था (निर्ग 12:7, 22–23)।

व्यवस्थाविवरण 6:9 और 11:20 में, इब्रानियों को घरों की चौखटों और शहर के फाटकों पर आज्ञाएँ लिखने का निर्देश दिया गया था। यह प्रथा यहूदी समाज में आज भी प्रचलित है। हर यहूदी घर के दरवाजे की चौखट पर कंधे की ऊँचाई पर एक छोटा धातु या लकड़ी का बरतन लगा होता है। यह बरतन, जिसे स्वयं मेज़ुज़ा के रूप में जाना जाता है, के अंदर एक छोटा चर्मपत्र होता है, जिस पर एक तरफ व्यवस्थाविवरण 6:4–9 और 11:13–21 के शब्द अंकित होते हैं, और दूसरी तरफ शद्दाई शब्द होता है, जो परमेश्वर सर्वशक्तिमान का इब्री नाम है। मेज़ुज़ा के बाहर इब्री शब्द

शिन उभरा होता है, जो शद्दाई नाम का पहला शब्द है। हर बार जब कोई धर्मनिष्ठ यहूदी घर में प्रवेश करता है या बाहर जाता है, तो वह मेज़ुज़ा को छूता है और फिर अपनी उंगलियों को चूमता है, जबकि वह अपने आप से भजन संहिता 121:8 के शब्द दोहराता है: "यहोवा तेरे आने-जाने में तेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक करता रहेगा"।

मेढ़ा

मेढ़ा

*देखें*जानवर (भेड़ें)।

मेथेग-अम्माह

स्थान (जिसके नाम का अर्थ "मातृ नगर की लगाम" है), दाऊद द्वारा जीता गया था (2 शमू 8:1)। सबसे अधिक सम्भावना है कि यह पलिश्ती राजधानी, गत को सन्दर्भित करता है (1 इति 18:1)। राजधानी नगर को अक्सर "मातृ" नगर कहा जाता था और आसपास के नगरों को "बेटियाँ" कहा जाता था; "लगाम" नियन्त्रण या अधिकार का प्रतिनिधित्व करती थी।

मेदबा

मृत सागर के उत्तर-पूर्व में उपजाऊ मैदान में मोआबी शहर, फिलदिलफिया (आधुनिक अम्मान) के दक्षिण में लगभग 25 मील (40.2 किलोमीटर) की दूरी पर है। यह केराक के लिए रोमी सड़क पर हेशबोन से 6 मील (9.7 किलोमीटर) दक्षिण में स्थित था।

यहां एमोरियों ने मोआब को पराजित किया (गिन 21:30)। बाद में, इस्राएल ने एमोरियों के राजा सीहोन को मेदबा में पराजित किया और इसे रूबेन के गोत्र को सौंप दिया (यहो 13:9, 16)। इसी स्थान पर दाऊद ने अरामी सेना को पराजित किया, जिसे अम्मोनियों ने उनकी सेना पर हमला करने के लिए किराए पर लिया था (1 इति 19:7)।

मोआबी पत्थर के अनुसार, यह शहर कभी इस्राएल के ओम्री और अहाब के नियंत्रण में था; हालांकि, जब मेशा ने आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में मोआबी प्रभुत्व को पुनः स्थापित किया, तब उन्होंने मेदबा और अन्य मोआबी शहरों का पुनर्निर्माण किया। मेदबा का नाम यशायाह की मोआब के खिलाफ भविष्यद्वानियों में आता है (यश 15:2)। बाद के समय में योराम और यहोशापात ने इस शहर को कब्जा करने के असफल प्रयास किए।

मेदाद

इस्राएल के एक बुजुर्ग जिन्होंने इस्राएलियों की जंगल में यात्रा के दौरान भविष्यद्वानी की। परमेश्वर ने उसे और एक अन्य अगुवा जिसका नाम एलदाद था, लोगों को बताने के लिए विशेष संदेश दिए। यहोशू को चिंता हुई जब उसने उन्हें परमेश्वर के संदेश बोलते हुए देखा, लेकिन मूसा ने यहोशू से कहा कि यह अच्छा है और उन्हें परमेश्वर ने जो बताया है उसे साझा करने का अधिकार है (गिन 11:26–27).

मेनिलाउस

यह माना जाता है कि यह विवेकहीन, चालाक महायाजक आन्तिओकस IV एपिफानेस के शासनकाल के दौरान सेलयूसिद राजाओं के यहूदी समर्थकों का अगुवा था। 2 मक्काबी 4:23–50 यह कहानी बताती है कि कैसे मेनिलाउस ने जेसन को मात देकर याजक का पद पाने के लिए 300 चाँदी के किक्कार आन्तिओकस को कीमत से अधिक देकर जेसन को पछाड़ दिया।

यह भी देखें 1 और 2 मक्काबी।

मेनी

भाग्य या किस्मत के अन्यजाति देवता की उपासना, धर्मत्यागी यहूदियों द्वारा की जाती थी (यशा 65:11)। इस नाम को एन.ए. एस.बी, एन.आई.वी, एन.एल.टी में "भाग्य" के रूप में अनुवादित किया गया है; एन.ई.बी में "सौभाग्य" के रूप में; और के.जे.वी में "उस संख्या तक" के रूप में, जो इब्री शब्द का अर्थ "गिनना, बांटना," जैसा कि भाग्य द्वारा है, को दर्शाता है। मेनी की पहचान अरबी देवता मनिय्यत, बाबेली मनु, और एदोमी मनत के साथ किया गया है। यशायाह में संदर्भ अन्यजाति देवताओं के लिए भोजन वस्तुएँ तैयार करने से सम्बंधित है।

मेनोरा

मिलापवाले तम्बू में दीपक या दीवट। यह सात-डालियों वाले दीपक (दीपस्तंभ) को संदर्भित करता है जो तम्बू को रोशन करने के लिए था: ये सात दीपक दीवट के सामने रोशनी देते थे (गिन 8:2)। सुलैमान के मंदिर में ऐसे दस दीवट थे, भीतरी निवासस्थान के सामने प्रत्येक तरफ पांच (1 रा 7:49)। मूल दीवट की बनावट बसलेल द्वारा बनाई गई थी, जो ऊरी का पुत्र और हूर का पोता था, यहूदा के गोत्र का एक पुरुष जो परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण और एक उत्कृष्ट कारीगर था (निर्ग 31:1–4)। बसलेल तम्बू के अन्य बर्तनों के बनावट के लिए भी उत्तरदायी था।

निर्गमन 25:31–40 और 37:17–24 हमें दीपक और उसकी सजावट के बारे में विस्तृत जानकारी देते हैं। शुद्ध सोने के एक टुकड़े से बना और बादाम के फूलों और सेब के आकार की घुंडी से सजा हुआ, इसमें एक केंद्रीय कड़ी थी जो दोनों तरफ तीन भुजाओं में फैला हुआ था। प्रत्येक डाली के ऊपर एक पात्र था जो एक होंठ के आकार में संकरा था ताकि बाती और विशेष जैतून तेल को रखा जा सके।

पुरातत्वविदों ने सात शाखायों वाले मिट्टी के कटोरे खोजे हैं, जो मध्य कांस्य युग के हैं। जोसेफस के अनुसार, केंद्रीय कड़ी को एक आधार पर लगाया गया था, और इससे पतली त्रिशीर्षक डालियाँ फैली हुई थीं—जिनमें से प्रत्येक का अंत एक दीपक में ढाला गया था। मंदिर के दीपक के बारे में जोसेफस का विवरण बँधुआई के बाद बहाल मंदिर के बारे में जकर्याह के दर्शन से अच्छी तरह मेल खाता है (जक 4:2–3)। पुरातत्व खोजों से कई प्रतिकृतियाँ मिली हैं साथ ही रोम में तीतुस के मेहराब पर मंदिर के कुछ अन्य बर्तनों के साथ प्रसिद्ध मेनोरा की मूर्ति भी। रोम में पैनल पर मेनोरा जोसेफस के वर्णन से भिन्न है, यह एक विशाल वस्तु है जिसके मोटे हाथ हैं, जिसे दोनों ओर से पाँच पुरुष उठाए हुए हैं।

निर्गमन 37:24 के अनुसार, मेनोरा का वजन शुद्ध सोने में एक किक्कार था। यह एक बाबेली किक्कार के बराबर है, जिसका वजन 34 किलोग्राम (या 75 पाउंड) होता है। लेकिन निर्गमन 25:39 से यह प्रतीत होता है कि इस वजन में सहायक वस्तुएं, जैसे कि कैंचियाँ, कटोरे, धूपदान आदि शामिल थीं। (पुष्टि करें 2 इति 4:22)। दीपक के आधार के बारे में भी एक और असंगति है। तीतुस मेहराब के पट्टिका पर, कुर्सी दो स्तरों वाली है और आयताकार है, जबकि पुरातत्वविदों ने दीपक के प्राचीन संरचनाओं को खोजा है जो एक तिपाई में समाप्त होते हैं। विद्वान इस बात पर अनिश्चित हैं कि कौन सा अधिक मूल है, और अंतर को समझाने के लिए कई सिद्धांत हैं। यहूदियों की रहस्यमय परम्परा में मेनोरा जीवन के पेड़, सात ग्रहों और सृष्टि के सात दिनों का प्रतीक है।

नए नियम में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दिया गया दीवट मंदिर की परम्परा का ही एक हिस्सा है, जिसमें जकर्याह 4:2, 11 का विशेष संदर्भ दिया गया है। विचारों के संयोजन से यह सात कलीसियाओं की गवाही, मसीह को संदर्भित करता है जो जगत की ज्योति है, और परमेश्वर को, जो सारे ज्योति का स्रोत है (प्रका 1:12–13, 20; 2:1; 11:4)।

मेपात

रूबेन के गोत्र के नगरों में से एक, जो हेशबोन के पास के मैदान पर स्थित था और लेवियों के मरारी परिवार को दिया गया था (यहो 13:18; 21:37; 1 इति 6:79)। बाद में, यह यिर्मयाह की सेवकाई के दौरान मोआबी नगरों में गिना गया था (यिर्म 48:21)। इसे आधुनिक जवाह के साथ पहचाना गया है, जो अम्मोन के दक्षिण में छः मील (9.7 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित है।

यह भी देखें लेवियों के नगर।

मेम्ना

देखिए पशु (भेड़)।

मेयर्कोन

दान के भाग की भौगोलिक पहचान के रूप में उल्लेखित (यहो 19:46)। यह सम्भवतः कोई नगर नहीं था; बल्कि मेयर्कोन उस नदी का नाम प्रतीत होता है (एल-अव्जाह), जो अपेक के झरनों से निकलकर तटीय मैदान को पार करते हुए याफा के चार मील (6.4 किलोमीटर) उत्तर में समुद्र की ओर बहती थी। यह उत्तर-दक्षिण यात्रा के लिए एक कठिन बाधा थी, लेकिन इसके तटों पर स्थित अनेक प्राचीन स्थलों से यह स्पष्ट होता है कि यह समुद्र से देश के भीतरी भाग में प्रवेश के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग था।

मेरब

शाऊल की दो बेटियों में सबसे बड़ी (1 शमू 14:49), जिसे दाऊद को पत्नी के रूप में देने का वादा किया गया था (18:17–18)। शाऊल ने बिना किसी स्पष्ट कारण के इस वादे को पूरा नहीं किया और इसके बजाय मीकल को दाऊद को दे दिया।

मेरी प्रजा नहीं हो

मेरी प्रजा नहीं हो

भविष्यद्वक्ता होशे द्वारा उनके तीसरे पुत्र को दिया गया एक प्रतीकात्मक नाम (होश 1:9)। यह इस्राएल पर परमेश्वर के आने वाले न्याय की चेतावनी थी।

देखें अम्मी।

मेरेद

यहूदा के गोत्र से एज्रा का पुत्र, जिनकी दो पत्नियाँ थीं। एक पत्नी, बित्या, फ़िरौन की बेटी थी और दूसरी यहूदी थी (1 इति 4:17–18)।

मेरेस

मेरेस

फारस और मादियों के सात राजकुमारों में से एक, जिन्होंने राजा क्षयर्ष के व्यक्तिगत सलाहकार के रूप में सेवा की (एस्त 1:14)।

मेरोज

उत्तरी फिलिस्तीन का एक नगर जिसके निवासियों को दबोरा और बाराक द्वारा सीसरा और कनानी लोगों के खिलाफ युद्ध में सहायता न करने के लिए श्राप दिया गया था (न्या 5:23)।

मेरोदाक

मेरोदाक

मरदुक का इब्रानी उच्चारण, प्रमुख बाबेली देवता। *देखें* मरदुक।

मेरोनोत

येहदयाह (1 इति 27:30) और यादोन (नहे 3:7) का गृह नगर।

मेरोम का ताल

मेरोम का ताल

यहोशू की हासोर के राजा याबीन और उनके सहयोगियों पर विजय का स्थल, जो बाइबल में केवल दो बार उल्लेखित है (यहो 11:5–7)। याबीन के सहयोगियों में मादोन का राजा योबाब और शिम्रोन, अक्षाप और उत्तरी पहाड़ी देश के राजा शामिल थे, साथ ही गलील सागर के दक्षिणी निचले क्षेत्र के राजा भी थे। युद्ध का स्थल स्पष्ट नहीं है, लेकिन "मेरोम का ताल" के लिए एक सम्भावित स्थान हार मेरोम के तल के पास हो सकता है (आधुनिक इस्राएल मानचित्रों पर) या पुराने मानचित्रों पर, जाबेल मारुन—इस्राएल का सबसे ऊँचा (3,962 फीट या 1,207.1 मीटर) पर्वत है। पर्वत के तल के पास मेरोम का नगर है, जहाँ कई मार्ग उत्तरी गलील में मिलते हैं। यह तट पर हासोर और अक्को के बीच के मार्ग पर है; इसलिए, यह यहोशू के दुश्मनों के लिए मिलने का एक सुविधाजनक स्थान था। मेरोम हासोर से लगभग आठ मील (12.9 किलोमीटर) दक्षिण-पश्चिम में है। इसलिए, "मेरोम का ताल" वे सोते होंगे जो पर्वत से निकलकर वादी लेइमुन के माध्यम से गलील सागर में बहते हैं। मेरोम का उल्लेख मिस्री ग्रंथों में दूसरी सहस्राब्दी ई.पू. के थुतमोस तृतीय के अभियानों से सम्बन्धित है। अश्शूरी सम्राट तिग्लत्पिलेसेर तृतीय ने भी 733–732 ई.पू. में इस क्षेत्र में अपने अभियान की जानकारी दी, जब उसने दमिश्क पर विजय प्राप्त की। जब यहोशू ने हमला किया, तो शत्रु सेना उत्तर-पश्चिम की ओर सीदोन की ओर भाग गई, जिससे यह संकेत मिलता है कि यहोशू ने दक्षिण-पूर्व से, गलील सागर के पश्चिम क्षेत्र से, दक्षिण से प्राकृतिक दृष्टिकोण से हमला किया होगा।

मेरोम नामक ताल

मेरोम नामक ताल

देखें मेरोम नामक ताल।

मेल का कवच

छोटे आपस में जुड़े धातु की प्लेटों से बना शरीर कवच, जिसे एक चमड़े की आवरण पर सिल दिया जाता है। *देखें* कवच और हथियार।

मेल-मिलाप

मेल-मिलाप शत्रुता के बाद भाईचारे संबंधों और शांति को बहाल करना है। आमतौर पर, इसमें उस संघर्ष के कारण को हटाना भी शामिल होता है जो शांति और सद्भाव को बाधित करता है। यह विशेष सत्य परमेश्वर और मानव जाति के बीच संबंध में है। मसीह ने अपने बलिदान के माध्यम से परमेश्वर और लोगों के बीच की शत्रुता को हटा दिया। बाइबल पहले कहती है कि मसीह की मृत्यु ने परमेश्वर और पापियों को मेल-मिलाप किया है। फिर यह बताती है कि पापी इस उपहार को विश्वास के द्वारा कैसे स्वीकार कर सकते हैं। यह परमेश्वर की अनुग्रह के माध्यम से क्षमा और उद्धार की ओर ले जाता है। अंत में, यह चर्चा करता है कि लोग परमेश्वर के साथ कैसे मेल-मिलाप होते हैं (रोम 5:10; 2 कुरि 5:19; इफि 2:16).

शब्द *कातालास्सिन* (जो रोम 5:10; 2 कुरि 5:19 में उपयोग किया गया है) मुख्य रूप से परमेश्वर के साथ संसार के मेल-मिलाप को दर्शाता है। यह व्यक्त करता है कि मसीह के बलिदान के कारण पापियों के प्रति परमेश्वर का दृष्टिकोण कैसे परिवर्तित हो गया। यह इस बारे में नहीं है कि क्या परमेश्वर, जो कभी नहीं बदलते , ना ही कभी अपना मन बदलते हैं। बल्कि, यह इस बारे में है कि मसीह के बलिदान ने परमेश्वर और पापियों के बीच संबंध को कैसे परिवर्तित कर दिया। मसीह के कारण, परमेश्वर अब पापियों के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे उन्होंने कभी उन्हें नाराज नहीं किया।

यह मेल-मिलाप पूर्ण और सिद्ध है, जो सभी लोगों और समस्त पापों को आच्छादित करता है। परमेश्वर और पापियों के बीच की बाधा समाप्त हो गई है, भले ही मनुष्यों की भावनाएं कुछ भी हों। जब पापी अभी भी परमेश्वर के क्रोध के अधीन थे, मसीह ने हस्तक्षेप किया और अपने पिता की इच्छा के साथ सहमति जताई। उन्होंने सामंजस्य बहाल करने का प्रयास किया।

यह सत्य इतना महत्वपूर्ण है कि, बिना मेल-मिलाप के, उद्धार संभव नहीं है। मसीह में कोई नया जीवन नहीं है, कोई विश्वास नहीं है, और कोई मसीही जीवन नहीं है। केवल परमेश्वर ही इस मेल-मिलाप को प्रेरित कर सकते हैं। अपने वचन और सुसमाचार के माध्यम से, परमेश्वर पापियों को प्रकट करते हैं कि वे मसीह के कारण उनके साथ पूरी तरह से मेल-मिलाप कर चुके हैं।

मसीह का बलिदान, जिसे प्रतिनिधिक प्रायश्चित कहा जाता है, परमेश्वर के कार्य का आधार है जो हमें मेल-मिलाप प्रदान करता है। हमें मेल-मिलाप कराने के परमेश्वर के कार्य का आधार है। मेल-मिलाप इसलिए नहीं हुआ क्योंकि परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य से ऐसा कहा। इसके बजाय, यह इसलिए हुआ क्योंकि मसीह ने मानवजाति की जगह ली। उन्होंने वह दण्ड सहा जो हमें व्यवस्था के द्वारा मिलना चाहिए था। यह प्रतिनिधिक बलिदान बाइबल के मेल-मिलाप को समझने के लिए आवश्यक है। मसीह "हमारे लिए पाप बन गए।" इसका अर्थ है कि उन्होंने व्यवस्था की पूरी जिम्मेदारियों को लिया। उन्होंने इसे पूरी तरह से पालन किया और पूरी तरह से दोष और दण्ड सहा। हमारे पाप और दोष उन पर डाले गए, और व्यवस्था के द्वारा उनकी धार्मिकता हमें दी गई।

मनुष्य परमेश्वर के साथ टूटे और शत्रुतापूर्ण संबंध को सुधारने में पूरी तरह से असमर्थ थे। मसीह इस संबंध को सुधारने के लिए पुल बने। उनके देहधारण (मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आना) का कारण प्रतिस्थापन के कार्यों को पूर्ण करना था। उनके कष्ट और बलिदानी मृत्यु, जो उनके पुनरुत्थान द्वारा पुष्टि की गई, ने मानवजाति का उद्धार किया (रोम 4:25)। मसीह ने मृत्यु को सभी लोगों द्वारा साझा की जाने वाली सामान्य नियति के रूप में नहीं सहा, बल्कि उन्होंने मृत्यु को पाप के दंड के रूप में सहा।

सभी पापों के लिए उनका प्रतिस्थापित प्रायश्चित पवित्रशास्त्र का केंद्रीय बिंदु है। सब कुछ इस तथ्य पर निर्भर करता है कि मानवजाति के लिए मोड़ परमेश्वर से आया, जिन्होंने मसीह के माध्यम से संसार को अपने साथ मिलाया। यह एक आशावादी विचार नहीं है बल्कि एक वास्तविक घटना है (यशा 53:6; 2 कुरि 5:21; इब्रा 9:12–14; 1 पत1:19)। यह एक धार्मिक, क्रोधित परमेश्वर और पापी, अपराधी लोगों के बीच भयानक संघर्ष का परमेश्वर का समाधान था।

पवित्रशास्त्र लगातार मसीह के कार्य की व्यापक प्रकृति पर जोर देता है, जिन्होंने सभी लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित किया (यूह 3:16; 1 यूह 2:2)। मसीह पापियों को परमेश्वर के न्यायपूर्ण क्रोध से बचाने वाली ढाल हैं। मसीह का प्रायश्चित सिर्फ इसलिए पर्याप्त नहीं था क्योंकि परमेश्वर ने उसे स्वीकार कर लिया था। यह, वास्तव में, पाप के लिए पूरी कीमत थी (मत्ती 20:28; रोम 3:25; इब्रा 7:26–28; 1 तीमु 2:6; 1 यूह 2:2)।

सुसमाचार वह संदेश है जो पापियों को परमेश्वर के साथ उनके मेल-मिलाप के बारे में मसीह के माध्यम से बताता है। यह शक्तिशाली रूप से पापियों को इस सत्य को विश्वास में स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है। जैसा कि प्रेरित पौलुस कहते हैं: “अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उसने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। इसलिए हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है: हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो !” (2 कुरिन्थियों 5:19–20).

मेलबलि

*देखें*भेंट और बलिदान।

मेलिकु

नहेम्याह 12:14 में याजक मल्लूकी का के.जे.वी. रूप। *देखें* मल्लूकी।

मेलिता

प्रेरितों के काम 28:1 में माल्टा का केजेवी अनुवाद में का रूप, सिसिली के दक्षिण में एक द्वीप। *देखें*माल्टा।

मेलेक

बिन्यामीन के गोत्र से मीका का पुत्र (1 इति 8:35; 9:41)।

मेल्की

*देखें*मेल्की।

मेल्कोन

वह नाम जो परंपरागत रूप से उन बुद्धिमान मनुष्यों में से एक को दिया गया है (जिसे मेल्खियोर भी कहा जाता है) जो यीशु के पास उपहार लाए थे (मत्ती 2:1–2)।

देखें ज्योतिषी।

मेल्ज़ार

दानिय्येल को दिया गया भोजन के लिए जिम्मेदार भण्डारी (दानि 1:11, 16)। बेरेअन स्टैंडर्ड बाइबल इस शब्द का अनुवाद एक उपाधि के रूप में करती है, लेकिन के.जे. वी. इस शब्द का अनुवाद एक व्यक्तिवाचक संज्ञा (नाम) के रूप में करती है। सबसे अधिक संभावना है कि मेल्ज़ार बाबेली शीर्षक का एक इब्रानी अनुवाद है।

मेशक

मेशक

भविष्यद्वक्ता दानिय्येल के तीन दोस्तों में से एक, मेशक को शद्रक और अबेदनगो के साथ आग की भट्टी में फेंक दिया गया था (दानि 1:7; 2:49; 3:12–30)। *देखें* शद्रक, मेशक, और अबेदनगो।

मेशा (व्यक्ति)

1. नौवीं शताब्दी ई.पू. में मोआब का एक राजा का नाम जिसका नाम एक ऐसे शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है "बचाना" या "उद्धार करना"। 2 राजाओं 3:4–5 के अनुसार, मेशा एक भेड़ पालक था जिसने अहाब के समय इस्राएल को भारी कर चुकाया, लेकिन अहाब की मृत्यु के बाद विद्रोह कर दिया (2 रा 1:1)। बाद में, अहाब के पुत्र यहोराम ने यहूदा के यहोशापात और एदोम के राजा के साथ मिलकर मोआब पर पुनः प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया। यह युद्ध मोआबियों के लिए प्रतिकूल होने लगा, तो मेशा ने अपने सबसे बड़े पुत्र को लिया और उसे मोआबी ईश्वर कमोश के लिए नगर की दीवार पर एक नर बलि के रूप में चढ़ा दिया (3:27)।

2. कालेब का पुत्र और जीप का पिता (1 इति 2:42)। यूनानी पाठ में इस पद का अन्तिम भाग यह कहता प्रतीत होता है कि मेशा हेब्रोन का पिता था, हालांकि इब्रानी पाठ यहाँ मेशा के स्थान पर मारेशा नाम का उपयोग करता है। आरएसवी (सेप्टुआजेंट का अनुसरण करते हुए) दोनों स्थानों पर मारेशा बताता है। *देखें* मारेशा (व्यक्ति) #1।

3. बिन्यामीन के गोत्र का एक पुरुष जो शहरैम और होदेश का पुत्र था। उसका जन्म मोआब देश में हुआ था (1 इति 8:9)।

मेशा (स्थान)

दक्षिणी अरब में एक स्थान जो उस क्षेत्र की पश्चिमी सीमा को परिभाषित करता है जहाँ योक्तान के वंशज बसे थे (उत्प 10:30)। इसका स्थान अज्ञात है। कुछ लोग सुझाव देते हैं कि मेशा एक बन्दरगाह नगर था जो आधुनिक यमन के निकट लाल समुद्र के पूर्वी तटों के साथ स्थित था; अन्य इसे फारसी खाड़ी के उत्तर-पश्चिमी तटों के पास मेसेन क्षेत्र में रखते हैं।

मेशेक

मेशेक

भजन संहिता 120:5 में मेशेक का उल्लेख मिलता है, जो नूह का परपोता था। *देखें* मेशेक #1।

मेशेक

1. येपेत के पुत्र और नूह के पोते (उत्प 10:2)। उनके वंशजों का उल्लेख आमतौर पर तूबल, गोग, या मागोग के साथ किया जाता है (भज 120:5; यहेज 27:13; 32:26; 38:2–3; 39:1)। अश्शूरी अभिलेखों में उन्हें मस्की कहा जाता है और वे तिग्लथ-पिलेसर प्रथम (1115–1102 ईसा पूर्व), शाल्मनेसर तृतीय (859–824 ईसा पूर्व) और सरगोन (722–705 ईसा पूर्व) के शासनकाल के दौरान अश्शूर के उत्तर में पहाड़ों पर रहते थे। मेशेक के लोग आक्रामक और मूर्तिपूजक थे, जो सोर के साथ पीतल और गुलामों के व्यापारी के रूप में जाने जाते हैं।

2. 1 इति 1:17 के अनुसार शेम का पुत्र, लेकिन उत्प 10:23 में समानांतर सन्दर्भ में मश के रूप में प्रस्तुत किया गया है। बाद वाला आम तौर पर स्वीकार किया जाता है।

मेसोपोटामिया

यूनानी में, हिद्देकेल और फरात नदियों के बीच की भूमि को मेसोपोटामिया कहा जाता था। आज, इस क्षेत्र को अरबों द्वारा अल-जज़ीरा ("द्वीप") कहा जाता है।

मेसोपोटामिया, जिसका अर्थ है "नदियों के बीच," को हिद्देकेल और फरात नदियों के पास की भूमि पर लागू किया जाता है जो फारसी की खाड़ी तक फैली है। इसका अधिकांश हिस्सा इराक में है, लेकिन कुछ हिस्से सीरिया और तुर्की में भी हैं।

मेसोपोटामिया पुराने नियम के इतिहास के लिए महत्वपूर्ण था। उत्पत्ति 1–11 में कई कहानियाँ यहीं पर आधारित हैं। अदन की वाटिका मेसोपोटामिया में थी क्योंकि उत्पत्ति 2:10–14 में अदन के पास दो नदियों के नाम लिए गए हैं: फरात और हिद्देकेल।

मेसोपोटामिया में कौन रहते थे?

हम मेसोपोटामिया की प्रागैतिहासिक संस्कृतियों के बारे में अधिक नहीं जानते हैं। ऐतिहासिक काल को सबसे महत्वपूर्ण शहरों (जैसे ऊर और इसिन-लारसा) या शासक वंशों (जैसे ऊर III) के नाम पर जाना जाता है।

मेसोपोटामिया के दक्षिणी भाग को सुमेर के नाम से जाना जाता है। सुमेरियों की संस्कृति अनूठी थी और वे मेसोपोटामिया के बाकी लोगों से बहुत अलग भाषा बोलते थे। सुमेरी भाषा को मेसोपोटामिया की अन्य भाषाओं की तरह ही पच्चर के आकार के चिह्नों (जिन्हें कीलाकार कहा जाता है) की श्रृंखला में लिखा जाता था।

उत्तर की ओर अक्कद नामक जिला था (जिसे अगादे के नाम से भी जाना जाता था)। अक्कादिय भी यहूदी थे। और उत्तर में हिद्देकेल के साथ अश्शूर की भूमि थी। पश्चिम में बहुत दूर सीरिया (जिसे एराम के नाम से भी जाना जाता था)। अश्शूर और सीरिया के बीच मितानी था।

मेसोपोटामिया के अलग-अलग हिस्सों ने अलग-अलग समय पर सत्ता हासिल की। मेसोपोटामिया अलग-अलग साम्राज्यों का हिस्सा बन गया, जैसे:

- हित्ती
- अश्शूर
- बाबेली
- फारसी
- यूनानी (जिसे यूनान साम्राज्य भी कहा जाता है)
- रोमी

बाइबल में मेसोपोटामिया

पुराने नियम में मेसोपोटामिया को "अरम्नहरैम" कहा गया है, जिसका अर्थ है “दो नदियों का अराम।” अब्राहम ने इसहाक के लिए पत्नी खोजने के लिए अपने सेवक को अरम्नहरैम भेजा (उत्पत्ति 24:10)। कुछ लोग सुझाव देते हैं कि "दो नदियाँ" फरात नदी और फरात नदी की एक शाखा थी जिसे ख़बूर कहा जाता था। याकूब के बारे में कहानियों में अरम्नहरैम शब्द का उपयोग नहीं किया गया है, लेकिन इस क्षेत्र को "पद्दनराम" कहा गया है, “अराम का खेत [या बगीचा]” (उत्पत्ति 28:2)।

बिलाम, बोर का पुत्र, मेसोपोटामिया के पेतोर से था (व्यवस्थाविवरण 23:4)। न्यायियों के समय में, मेसोपोटामिया के राजा कूशन-रिश्आतइम ने आठ वर्षों तक इस्राएल पर अत्याचार किया जब तक कि परमेश्वर ने उन्हें ओत्नीएल के माध्यम से बचाया (न्यायियों 3:8–10)।

जब अम्मोनियों ने सोचा कि दाऊद उनके देश पर आक्रमण करेंगे क्योंकि उन्होंने उनके राजदूतों का अपमान किया था, तो उन्होंने अपनी सेना को मजबूत करने के लिए मेसोपोटामिया से रथ किराये पर लिए (1 इतिहास 19:6)।

नए नियम में, मेसोपोटामिया का केवल दो बार उल्लेख किया गया है। पिन्तेकुस्त के दिन मेसोपोटामिया के लोग उपस्थित थे (प्रेरि 2:9)। स्तिफनुस, ने महासभा के समक्ष अपने बचाव में कहा कि अब्राहम हारान जाने से पहले मेसोपोटामिया में रहते थे (प्रेरि 7:2; देखें उत्पत्ति 11:31)।

मेहराब (आर्च)

एक घुमावदार संरचना जो आमतौर पर पत्थर या ईंट से बनी होती है। मेहराबें किसी द्वार या अन्य खुले स्थान के ऊपर भार को सहारा देने का कार्य करती हैं। मेहराब का सबसे महत्वपूर्ण भाग शीर्ष-पत्थर (कैपस्टोन या कीस्टोन) होता है, जो अंत में रखा जाने वाला पत्थर होता है। यह पत्थर दोनों घुमावदार ओरों को एक साथ जोड़ता है और भार को बराबर विभाजित करके संतुलित रूप से नीचे नींव तक वितरित करता है।

प्राचीन इस्राएल में मेहराबों का उपयोग नहीं होता था और बाइबल में वे केवल अनुवाद-त्रुटि के कारण दिखाई देता है। एक इब्रानी शब्द का अनुवाद यहेजकेल द्वारा मन्दिर के दर्शन में "मेहराब" के रूप में किया गया है (यहे 40), लेकिन यह शब्द मेहराबों के बजाय ओसारे को संदर्भित करता है।

*यह भी देखें*वास्तुकला।

मेहराबदार छत से युक्त क़ब्र

एक छोटा पत्थर का ताबूत (लातीनी, *ओसुआरियम*), फूलदान, या ताबूत होता है जो मृतकों के जले हुए अवशेषों को रखने के लिए उपयोग किया जाता है, या एक कब्रगृह, जहाँ मृतकों की हड्डियाँ रखी जाती थीं। *सर्कोफैगस* नाम यूनानियों और रोमियों द्वारा एक बड़े पत्थर के ताबूत को दिया गया था। कुछ धार्मिक विचार एक ताबूत को "शरीर खाने वाला" (यूनानी, सार्क्स, "माँस," और फागेन, "खाना") कहने में शामिल थे। कई मामलों में, दफन तब तक पूरा नहीं माना जाता था जब तक कि हड्डियों को पृथ्वी से या पत्थर की बनी हुई कब्र से नहीं निकाला जाता था। हड्डियों को साफ किया जाता था और उनके अन्तिम स्थान पर रखा जाता था, यानी

एक मेहराबदार छत से युक्त क़ब्र में, जो आमतौर पर पत्थर का एक छोटा ताबूत होता था। अन्तिम दफन को स्थगित करने की प्रवृत्ति, जहाँ यह हड्डियों को निकालने या इकट्ठा करने में शामिल होती है, एक सामान्य मेहराबदार छत से युक्त क़ब्र बनाने से बढ़ जाती है जो कई मृतकों के लिए होती है। यह हड्डियों को निकालना और इकट्ठा करना अपने पूर्वजों के साथ अन्तिम पुनर्मिलन के विचार से जुड़ा होता है।

मैदान के नगर

यर्दन नदी के मैदान या घाटी में स्थित पाँच शहरों के समूह को "घाटी के नगर" के रूप में भी जाना जाता था। यह क्षेत्र बहुत उपजाऊ था, जिसने अब्राहम के भतीजे लूत को आकर्षित किया जब उनके बड़े झुंडों और पशुओं को अलग करने की आवश्यकता उत्पन्न हुई (उत 13:10–12) । इन नगरों के नाम हैं:

- सदोम
- गमोरा
- अदमा
- सबोयीम
- बेला (बाद में जिसे सोअर के नाम से जाना गया)

इनमें से प्रत्येक नगर संभवतः एक नगर-राज्य था, जिसका अर्थ है कि उनके अपने राजा थे।

ये नगर बाइबल में चार मुख्य तरीकों से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं:

1. इस क्षेत्र ने एक स्थान प्रदान किया जहाँ लूत बस सकता था, और अंततः उसने सदोम में रहने का चयन किया।
2. इन नगरों के पाँच राजाओं ने पूर्व के दूरस्थ देशों से आए चार राजाओं के नेतृत्व में एक मजबूत सेना के खिलाफ युद्ध किया। वे पराजित हुए, और उनके नगरों को लूट लिया गया। आक्रमणकारियों ने बहुत सा सामान और बन्दी, जिनमें महिलाएँ और बच्चे शामिल थे, ले लिए (उत 14)। लूत भी उन बन्दियों में शामिल था, जिसके कारण अब्राहम ने एक सफल बचाव अभियान चलाया। उन्होंने लूत, अन्य बन्दियों और लूटे गए सामान को वापस प्राप्त किया।
3. बाद में उन नगरों ने परमेश्वर का न्याय प्राप्त किया। उनका पाप इतना गंभीर था कि अब्राहम की प्रार्थना भी उन्हें बचा नहीं सकी (उत 18:22–33)। उनके पाप का चरम सोदोम में भीड़ की कहानी से उजागर होता है, जो लूत के अतिथियों को नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर रही थी (उत 19)। इसके तुरन्त बाद, लूत और उसके परिवार को चेतावनी दी गई कि वे नगरों के नष्ट होने से पहले भाग जाएं। गंधक और आग बरसी, नगरों को नष्ट कर दिया और परिदृश्य को नाटकीय रूप से बदल दिया।
4. इन नगरों का विनाश पाप के लिए ईश्वरीय दण्ड के चेतावनी के रूप में पुराने और नए नियम के कई अन्य भागों में उल्लेखित है (यशा 3:9; यिर्म 50:40; यहेज 16:46–56; मत्ती 10:15; रोम 9:29)।

मैस्टिक

भूमध्यसागरीय क्षेत्र का एक छोटा पौधा जो एक गोंद छोड़ता है जिसका उपयोग कई उत्पादों के निर्माण में किया जाता है। *देखें*पौधे (मरहम)।

मोअद्याह

मोअद्याह

निर्वासान के बाद याजकों के एक परिवार के मुखिया, जिनका घर महायाजक योयाकीम के दिनों में पिलतै द्वारा संचालित था (नहे 12:17); वैकल्पिक रूप से पद 5 में माद्याह कहा गया है। *देखें*माद्याह।

मोआब, मोआबियों

मध्य यरदन के पूर्व में स्थित एक छोटे राज्य और इसके निवासियों का नाम। मोआब की भूमि मृत सागर के ठीक पूर्व में उच्च पठार पर स्थित थी; यरदन दरार की ढलान ने मोआब और यहूदा के बीच एक प्रभावी सीमा बनाई। मोआब की उत्तरी सीमा राज्य की सैन्य शक्ति के अनुसार बदलती रहती थी, हेशबोन क्षेत्र मोआब की उत्तरी सीमा बनता था जब राज्य शक्तिशाली होता था और अर्नोन नदी (आधुनिक वादी एल-मोजिब) कमजोर समय में उत्तरी सीमा के रूप में कार्य करती थी। राज्य की पूर्वी सीमा सीरियाई मरूभूमि के किनारे से बनी

थी, क्योंकि यह मोआब के कृषि क्षेत्र को चिह्नित करती थी। दक्षिण में, मोआब को एदोम से जेरेद नदी (आधुनिक वादी एल-हेसा) द्वारा अलग किया गया था। इस प्रकार, अपने चरम पर भी, प्राचीन मोआब ने अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र को घेर लिया था, जो लगभग 60 मील (96.5 किलोमीटर) उत्तर-दक्षिण और लगभग 20 मील (32.2 किलोमीटर) पूर्व-पश्चिम तक फैला था।

मोआब का अधिकांश भाग धीरे-धीरे लहराता हुआ पठार है, जो कई घाटियों द्वारा विभाजित है। मोआब के मध्य से होकर राजा का राजमार्ग गुजरता है, जो संभवतः इस क्षेत्र के इतिहास में सैन्य और वाणिज्यिक महत्व रखता था (गिन 21:21–22; न्या 11:17)। यह पठार हमेशा से अपनी प्रचुर चरागाह के लिए प्रसिद्ध रहा है (2 रा 3:4), और मोआब की मिट्टी और जलवायु, गेहूं और जौ उगाने के लिए काफी उपयुक्त हैं।

उत्पत्ति और इतिहास

उत्पत्ति 19:37 के अनुसार, मोआबी, लूत और उनकी बड़ी बेटी के पुत्र मोआब के वंशज हैं। व्यवस्थाविवरण 2:10–11, एक संदर्भ जिसका संबंध इब्रानी आक्रमण के समय मोआबी लोगों से है, कहता है कि इस क्षेत्र के पूर्व-मोआबी निवासी एमी थे, लेकिन लूत के वंशजों, एमी और इब्रानी आक्रमण के समय मोआब के निवासियों के बीच संबंध की पहचान नहीं की गई है। अब तक मोआबी राज्य की स्थापना के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं है, जो लगभग 1300 ई.पू. से 600 ई.पू. तक अस्तित्व में था। इस मोआबी इतिहास और संस्कृति की जानकारी पुरातात्विक और पाठ्य स्रोतों से प्राप्त होती है, जिसमें मिस्री, अश्शूरी और पुराना नियम ग्रंथ शामिल हैं।

इस्राएलियों के यरदन के पूर्व से गुजरने से पहले, मोआबियों ने अर्नोन के उत्तर की भूमि पर नियंत्रण खो दिया था और वे हेशबोन में शासन करने वाले एमोरी राजा सीहोन के अधीन हो गए थे (गिन 21:13, 26)। एदोम और मोआब के राजा के राजमार्ग से यात्रा करने की अनुमति न मिलने पर, इब्रानियों ने अपने सबसे प्रसिद्ध सैन्य अभियानों में से एक में सीहोन को पराजित किया। इस्राएल के उनकी भूमि पर विजय प्राप्त करने के डर से, मोआब के राजा बालाक ने इब्रियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया (गिन 22:6; यहो 24:9) और मेसोपोटामिया के ज्योतिषी बिलाम को अपने शत्रुओं पर श्राप देने के लिए नियुक्त किया (गिन 22–24)। रूबेन और गाद के गोत्र सीहोन के क्षेत्र में बस गए और अर्नोन इस्राएल और मोआब के बीच की सीमा बन गया (अध्याय 32)। शित्तीम में इस्राएलियों के पतन के समय से (अध्याय 25), अर्नोन के उत्तर में मोआबी पठार मोआब और इस्राएल के बीच विवाद का स्रोत बन गया।

एहूद द्वारा उनकी हत्या तक, मोआबी राजा एग्लोन ने यरदन के दोनों ओर के इब्र गोत्रों पर अत्याचार किया था (न्या 3:12–30)। यिप्तह के समय तक, उत्तरी मोआब फिर से इस्राएली नियंत्रण में था (न्या 11:26)। स्पष्ट रूप से, जैसा कि रूत की पुस्तक इंगित करती है, ऐसे समयकाल भी थे जब मोआब और इस्राएल शान्ति में रहते थे।

शाऊल और दाऊद के शासनकाल के दौरान, 11वीं शताब्दी के अंत से लेकर 10वीं शताब्दी के मध्य तक, मोआब और इस्राएल के बीच युद्ध हुआ, जिसमें आमतौर पर इस्राएल का पलड़ा भारी रहा (1 शमू 14:47; 2 शमू 8:2)। सुलैमान के हरम में मोआबी महिलाएँ शामिल थीं और उन्होंने मोआबियों के प्रधान परमेश्वर कमोश के लिए एक ऊँचा स्थान भी बनाया (1 रा 11:1, 7)। 930 ई.पू. में इस्राएली राजशाही के विभाजन के बाद, मोआब ने स्वतंत्रता का एक संक्षिप्त काल अनुभव किया, लेकिन यह समाप्त हो गया जब ओम्री और अहाब ने नौवीं शताब्दी ई.पू. में मोआबियों और उनके राजा मेशा पर प्रभुत्व स्थापित किया। (प्रसिद्ध मोआबी पत्थर, जो मेशा के ओम्री वंश के साथ संघर्ष का वर्णन करता है और कई छोटे पाठ यह दर्शाते हैं कि मोआब की भाषा पुराने नियम की इब्रानी भाषा से निकटता से संबंधित थी।) मोआब और उसके पड़ोसियों (जैसे, इस्राएल, यहूदा, एदोम और सबसे महत्वपूर्ण, अश्शूर) के बीच संघर्ष तब तक जारी रहा जब तक बाबेली राजा नबूकदनेस्सर ने छठी शताब्दी ई.पू. की शुरुआत में मोआबी राज्य को नष्ट नहीं कर दिया (यहेज 25:8–11)। यह संघर्ष अश्शूरी साहित्य में प्रलेखित है, जो दर्शाता है कि मोआब आठवीं शताब्दी ई.पू. के अंत में अश्शूरी अधीनस्थ बन गया और पुराने नियम में भी (2 रा 3; 10:32–33; 13:20; 24:2)। वास्तव में, मोआब, इस्राएल और यहूदा के बीच शत्रुता विशेष रूप से मोआबियों के विरुद्ध की गई भविष्यद्वाणी के कथनों की श्रृंखला में स्पष्ट है (यशा 15–16; यिर्म 9:25–26; 48; आमो 2:1–3; सप 2:8–11)। ये खंड प्राचीन मोआब के कुछ प्रमुख नगरों (नबो, मेदबा, हेशबोन, दीबोन, आर, कीर और होरोनैम) पर ध्यान आकर्षित करते हैं।

बाबेली विजय के बाद, मोआब का क्षेत्र फारसी नियंत्रण में आ गया और विभिन्न अरबी लोगों द्वारा अधिगृहीत किया गया, विशेष रूप से नबातियों द्वारा। यद्यपि मोआबी राज्य को कभी पुनः स्थापित नहीं किया गया, लेकिन मोआबी वंश के लोगों को पुराने नियम के अंतिम समयों में पहचाना गया (एज्रा 9:1; नहे 13:1, 23), क्योंकि निर्वासन के बाद यहूदियों का समाज व्यवस्थाविवरण 23:3–6 में दर्ज कानून का पालन करने के बारे में चिंतित था। ई. 106 में मोआब का क्षेत्र रोमी प्रांत अरब का हिस्सा बन गया। पुरातात्विक अनुसंधान ने प्रागैतिहासिक से लेकर ओटोमन काल तक मोआबी इतिहास और संस्कृति से संबंधित जानकारी के भण्डार में बहुत कुछ जोड़ा है।

धर्म

तीसरी और दूसरी सहस्राब्दी ई.पू. के दौरान, मोआबी धर्म शायद कनानी धर्म के समान था, हालांकि मोआब का धर्म अंततः एक अपेक्षाकृत विशिष्ट प्रणाली में विकसित हो गया। यद्यपि मोआबियों द्वारा अन्य देवताओं की पूजा की जाती थी,

कमोश उनका राष्ट्रीय परमेश्वर था। पुराना नियम मोआबियों को "कमोश की प्रजा" के रूप में संदर्भित करता है (गिन 21:29; यिर्म 48:46), और मोआबी व्यक्तिगत नामों में "कमोश" का बार-बार आना इस देवता की उच्च स्थिति की ओर इशारा करता है। सेनापति में, मोआबी पत्थर में कमोश के दर्जन भर संदर्भ उन्हें युद्ध के देवता के रूप में चित्रित करते हैं, जो अपने लोगों का उनके शत्रुओं के विरुद्ध नेतृत्व करते हैं।

ईश्वरीय मार्गदर्शन और कृपा की खोज की गई और ज्योतिषियों और भविष्यवक्ताओं का सम्मान किया गया (गिन 22–24)। याजकीय (यिर्म 48:7) और बलिदान प्रणाली (गिन 22:40–23:30; 25:1–5; 2 रा 3:27; यिर्म 48:35) मोआबी धर्म के महत्वपूर्ण पहलू थे। कोई मोआबी निवासस्थान नहीं खोजा गया है, लेकिन उनके अस्तित्व का उल्लेख मोआबी पत्थर और पुराने नियम में किया गया है (1 रा 11:7; 2 रा 23:13)। विस्तृत रूप से सुसज्जित कब्रें, जैसे दीबोन में पाई गईं, मोआबियों के मरणोपरांत जीवन में विश्वास की ओर संकेत करती हैं।

यह भी देखें कनानी देवता और धर्म; मोआबी पत्थर।

मोआबी पत्थर

पुराने नियम के बाहर का सबसे लंबा साहित्यिक स्रोत, जो 1300–600 ईसा पूर्व के दौरान फिलिस्तीन और यरदन पार के क्षेत्र के इतिहास से संबंधित है।

यह मोआबियों के इतिहास को समझने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो मृत सागर के पूर्व में निवास करते थे।

यह पत्थर 1860 के दशक में खोजा गया था और इसमें मोआब के राजा मेशा, जो नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य में शासन करते थे, का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह एक कठोर शिला है जिसका ऊपरी भाग गोलाकार है। इसकी ऊँचाई तीन फुट दस इंच (1.2 मीटर), चौड़ाई दो फुट (0.6 मीटर) और मोटाई दो और आधा इंच (6.4 सेंटीमीटर)। इसमें इब्रानी भाषा के समान 39 पंक्तियाँ हैं।

19 अगस्त 1868 को, एफ. क्लेन, जो चर्च मिशनरी सोसाइटी के तहत कार्यरत एक जर्मन थे, ने इस पत्थर के अस्तित्व की सूचना दी। इस खोज में जर्मन और फ्रेंच वाणिज्य दूतावासों की रुचि बढ़ी, जिससे इसे खोजने वाले अरबों के बीच विवाद उत्पन्न हो गया, क्योंकि वे इसकी सर्वोत्तम कीमत पाने का प्रयास कर रहे थे। इस संघर्ष में, पत्थर को गरम किया गया और टुकड़ों में तोड़ दिया गया। इसके टुकड़े विभिन्न अनाज भंडारों में अच्छे फसल की आशीष के रूप में बाँट दिए गए। सौभाग्यवश, फ्रेंच वाणिज्य दूतावास के एक संदेशवाहक ने इसके लेख का छाप प्राप्त कर लिया, हालाँकि घुड़सवारी के दौरान यह टूटने लगा। बाद में, इसके बड़े भाग एकत्रित किए गए और छोटे टुकड़े ढूँढे गए, जिससे इस पत्थर को फिर से जोड़ा जा सका। कुछ भाग लुप्त होने के बावजूद, यह शिला मोआबियों के इतिहास का स्पष्ट वर्णन प्रदान करती है।

यह पाठ मोआबियों के देवता कमोश को समर्पण से शुरू होता है। राजा मेशा, जिन्होंने मोआब पर 30 वर्षों तक शासन किया, कमोश के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं क्योंकि उन्होंने उन्हें शत्रुओं से मुक्त किया और उनकी इच्छाओं की पूर्ति होने दी। मेशा ने कमोश के लिए एक उच्च वेदी का निर्माण कराया, संभवतः उसी स्थान पर जहाँ यह पत्थर मिला।

पाठ में मोआबियों का एक संक्षिप्त इतिहास शामिल है जो पुराने नियम के साथ मेल खाता है। इसमें उल्लेख किया गया है कि "इस्राएल के राजा, ओम्री" ने मोआब पर कई दिनों तक अत्याचार किया क्योंकि कमोश मोआब से नाराज थे। ओम्री का पुत्र "उसका उत्तराधिकारी बना और उसने भी कहा, 'मैं मोआब पर अत्याचार करूंगा।' मेरे [मेशा के] समय में उसने [यह] कहा लेकिन मैंने उस पर और उसके घर पर विजय प्राप्त की, जबकि इस्राएल हमेशा के लिए नष्ट हो गया।" इस्राएल का यह 40 साल का प्रभुत्व संभवतः ओम्री, अहाब, अहज्याह, और यहोराम के शासनकाल का हिस्सा शामिल करता है।

- ओम्री 885 से 874 ईसा पूर्व तक राजा रहे (1 राजा 16)।
- ओम्री के पुत्र, अहाब, 874 से 853 ईसा पूर्व तक राजा थे।
- अहज्याह 853 से 852 ईसा पूर्व तक राजा रहे।
- यहोराम 852 से 841 ईसा पूर्व तक राजा रहे।

मोआबी पत्थर पर उल्लेखित पुत्र ओम्री का पोता है, जो पवित्रशास्त्र के अनुसार यह है कि यहोराम (जिसे योराम भी कहा जाता है) ने मोआबी विद्रोहियों को दबाने का प्रयास किया था (2 राजा 3:4–27)।

शेष पाठ में मेशा की इस्राएलियों पर विजय, उनके सार्वजनिक कार्यों, और कमोश द्वारा मेशा को हौरानियों से युद्ध करने के लिए बुलाने का विवरण दिया गया है।

यह भी देखें शिलालेख; मोआब, मोआबी.

मोडियस

मोडियस

सूखी माप जो लगभग एक सीया के समकक्ष होती है।

मोती

मोती

कुछ सीप के खोल के भीतर बनने वाला एक रत्न।

पुराने नियम में यह शब्द केवल एक बार प्रकट होता है (अय्यू 28:18)। कुछ लोग सोचते हैं कि विलापगीत 4:7 में "लाल वर्ण" पत्थर लाल समुद्र से एक गुलाबी मोती का उल्लेख करता है। नए नियम के समय तक, मोती था:

- बहुमूल्य आभूषण (1 तीमु 2:9)
- व्यापार की एक वस्तु (मत्ती 13:45–46; प्रका 18:12–16)
- उच्च मूल्य की एक वस्तु

परिचित वस्तुओं के रूप में, यीशु ने अक्सर अपने उदाहरणों में मोतियों का उपयोग किया। एक उत्तम मोती इतनी बहुमूल्य वस्तु थी कि एक व्यक्ति इसे खरीदने के लिए अपनी सारी संचित संपत्ति बेच सकता था (मत्ती 13:45–46)। एक मोती (प्रभु के वचन के लिए एक उपमा) उन लोगों को नहीं दिया जाएगा, जैसे सूअर, जो इसका मूल्य नहीं समझते (मत्ती 7:6)।

*यह भी देखें*बहुमूल्य पत्थर।

मोननीम का बांज वृक्ष

शेकेम के पास का वृक्ष (न्या 9:37)। *देखें*मोननीम का बांज वृक्ष।

मोननीम का बांज वृक्ष

शेकेम के निकट वृक्ष (न्या 9:37)। *देखें*मोननीम नामक बांज वृक्ष।

मोननीम बांज वृक्ष

मोननीम बांज वृक्ष

यह जगह जाहिर तौर पर शेकेम के पास है (न्या 9:37); गलती से इसे “मोननीम बांज वृक्ष” कहा गया है। मोननीम बांज वृक्ष शायद उन लोगों से जुड़ा हुआ था जो भविष्य बताने का अभ्यास करते थे, इसलिए यह नाम पड़ा।

मोनोतै

यहूदा के गोत्र से ओत्नीएल का पुत्र (1 इति 4:13–14)।

मोर

*देखिए*पक्षी।

मोरिय्याह

पुराने नियम में यह नाम दो बार उपयोग हुआ है। अब्राहम को उनके पुत्र इसहाक का बलिदान करने के लिए “मोरिय्याह देश” में भेजा गया था (उत 22:2)। क्योंकि इस कथा में कहा गया है कि इसहाक के स्थान पर राम “प्रदान” किया गया था जब परमेश्वर अब्राहम के सामने “प्रकट” हुए थे, यह सुझाव दिया गया है कि नाम “मोरिय्याह” का रूप इससे जुड़ा हो सकता है। (इब्री क्रिया ra’ah के अर्थ “देखना,” “प्रदान करना,” और “प्रकट होना” हो सकते हैं, और अंत -iah प्रभु के नाम का संक्षिप्त रूप है जो कई इब्री नामों में पाया जाता है।)

2 इतिहास 3:1 में, मोरिय्याह नामक पहाड़ सुलैमान के मंदिर का स्थान है, जिसे विशेष रूप से यबूसी ओर्नान के खलिहान के साथ पहचाना गया है (तुलना करें 2 शमू 24; 1 इति 21), लेकिन अब्राहम के बलिदान के स्थान के साथ स्पष्ट रूप से नहीं। हालाँकि, कुछ लोग प्रभु के दाऊद को प्रकट होने के वर्णन में वहाँ अब्राहम को प्रकट होने की याद दिलाते हैं। यहूदियों के इतिहासकार जोसीफस (*एन्टीक्विटिज़* 1.13.2; 7.13.4) स्पष्ट रूप से मंदिर के स्थान को उस स्थान के साथ जोड़ते हैं जहाँ इसहाक को चढ़ाया गया था, जैसा कि दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की पुस्तक Jubilees (Jubilees 18:13) करती है। सामरी परंपरा मोरिय्याह को गिरिज्जीम पर्वत के साथ जोड़ती है। मुस्लिम परंपरा यरूशलेम मंदिर के स्थल पर बने डॉम ऑफ़ रॉक को अब्राहम के इसहाक के बलिदान के साथ जोड़ती है, जो मस्जिद के गुंबद के नीचे की महान चट्टान पर है।

मोरे का बांज वृक्ष

मोरे का बांज वृक्ष

अब्राहम का पहला दर्ज किया गया ठहराव स्थान जब उन्होंने मेसोपोटामिया छोड़ने के बाद फिलिस्तीन में प्रवेश किया। यहाँ उन्होंने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई (उत 12:6)। बाद में, मूसा ने इस स्थान का उल्लेख एक भौगोलिक पहचान के रूप में किया ताकि गिरिज्जीम पर्वत और एबाल पर्वत की स्थिति को पहचाना जा सके (व्य. वि. 11:30)। केजेवी ने गलत तरीके से मोरे का "मैदान" पढ़ा है। मोरे का बांझ वृक्ष शेकेम के पास स्थित था।

मोरे की पहाड़ी

मोरे की पहाड़ी

यिज्रेल की तराई के पास एक पहाड़ी है, जहां मिद्यानियों ने डेरा डाला था जब गिदोन ने उन पर हमला किया (न्यायियों 7:1)। इसे संभवतः इस नाम से इसलिए पुकारा जाता था क्योंकि यह एक निवास स्थान था जहाँ भविष्यवाणी की जाती थी। इसका नाम शिक्षा या भविष्यवाणी का संकेत दे सकता है। इसे आमतौर पर जेबेल नबी दाही के साथ पहचाना जाता है, जो गिलबोआ पर्वत से तराई के पार स्थित है।

मोरेशेत

मीका का गृहनगर (यिर्म 26:18; मीक 1:1)। *देखें* मीका (व्यक्ति) #7।

मोरेशेतवासी

मोरेशेतवासी

भविष्यद्वक्ता मीका का के.जे.वी. में उपाधि मोरेशेत शहर के नाम पर आधारित है (यिर्म 26:18; मीक 1:1)। *देखें* मीका (व्यक्ति) #7।

मोर्दकै

मोर्दकै

1. बँधुआई के दौरान एक यहूदी अगुवा, और हम उनके बारे में मुख्य रूप से एस्तेर की पुस्तक से जानते हैं। कुछ रब्बी स्रोतों के अनुसार, मोर्दकै ने स्वयं एस्तेर की पुस्तक लिखी थी। वे फारस के राजा क्षयर्ष के शासनकाल के दौरान रहते थे (जिसे अहसूएरुस भी कहा जाता है)। उस समय, फारस एक बड़ा साम्राज्य था जिसमें 127 प्रांत शामिल थे।
मोर्दकै बिन्यामीन के गोत्र से थे और कीश (जो राजा शाऊल के पिता थे) के वंशज थे। उनके रिश्तेदार उन यहूदियों में से थे जिन्हें राजा नबूकदनेस्सर ने फिलिस्तीन छोड़कर बाबेल में बसने के लिए मजबूर किया था। भले ही मोर्दकै का बाबेली नाम था, लेकिन वे अपने साथी यहूदियों की गहराई से परवाह करते थे। भले ही राजा कुस्रू ने 538 ईसा पूर्व में उन्हें अपनी मातृभूमि लौटने की अनुमति दी थी, उन्होंने फिलिस्तीन के पुनर्निर्माण की कठिनाइयों का सामना करने के बजाय अन्य देशों में रहने का चयन किया।
मोर्दकै का जीवन उनकी चचेरी बहन हदास्सा से जुड़ा हुआ है, जिन्हें एस्तेर भी कहा जाता था। उन्होंने उसके माता-पिता की मृत्यु के बाद उसे गोद लिया। जब राजा ने रानी वशती को पद से हटा दिया, तो एस्तेर नई रानी बन गईं। यह स्थिति बाद में उनके लोगों को बचाने में सहायक सिद्ध हुई। मोर्दकै का एस्तेर पर मजबूत मार्गदर्शन और प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण था। हालांकि, यह परमेश्वर की सुरक्षा थी जिसने उनके कार्यों को सफल बनाया। इसने यहूदियों को हामान, राजा के प्रधान सलाहकार की दुष्ट योजनाओं से बचाया।
हामान यहूदियों से घृणा करता था और उन्हें नष्ट करने की योजना बनाई। मोर्दकै ने उसे प्रणाम करने से इनकार कर दिया था अतः वह क्रोधित था। (झुकना सम्मान का एक चिन्ह था।) जब मोर्दकै को हामान की योजनाओं के बारे में पता चला, तो उन्होंने हताक नामक एक शाही सेवक के माध्यम से एस्तेर को एक संदेश भेजा।
शुरुआत में, एस्तेर कार्रवाई करने से डर रही थीं। लेकिन मोर्दकै ने उन्हें यह सोचने के लिए

प्रेरित किया कि क्या जाने परमेश्वर ने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये रानी बनाया था (अपने लोगों को बचाने के लिए)। उन्होंने उन्हें इन प्रसिद्ध शब्दों के साथ चेतावनी दी: "यह विचार न कर, कि मैं राजा के राजभवन में रहने के कारण और सब यहूदियों में से बची रहूँगी।।क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नाश होगी। क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो?" (एस्त 4:13–14)। इन शब्दों के माध्यम से, मोर्दकै एस्तेर को बता रहे थे कि परमेश्वर ने संभवतः उन्हें रानी बनाया विशेष रूप से अपने लोगों को बचाने में सहायता करने के लिए।

जब हामान मोर्दकै के खिलाफ षड्यंत्र रच रहे थे, उन्होंने उसे फांसी देने के लिए एक ऊंचा लकड़ी का ढांचा (जिसे फांसी का तख्ता कहा जाता है) बनाया। जिस रात यह पूरा हुआ, राजा क्षयर्ष सो नहीं सके। उन्होंने किसी से उनके शासनकाल के इतिहास की पुस्तक ला पढ़ने के लिए कहा। इससे राजा को पता चला कि मोर्दकै ने एक बार हत्या के प्रयास को रोककर उनका जीवन बचाया था। राजा ने पूछा कि क्या मोर्दकै को इस अच्छे काम के लिए कभी पुरस्कृत किया गया था। जब उन्हें पता चला कि मोर्दकै को कभी सम्मानित नहीं किया गया, तो राजा ने हामान को बुलाया। राजा ने हामान से पूछा कि उस व्यक्ति के लिए क्या किया जाना चाहिए जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहे। हामान ने सोचा कि राजा उसके बारे में बात कर रहे हैं, इसलिए उसने तीन भव्य इशारों का सुझाव दिया (एस्त 6:7–9)। लेकिन हामान के लिए यह आश्चर्यजनक था कि राजा ने उसे ये सभी चीजें मोर्दकै के लिए करने का आदेश दिया! बाद में, अप्रत्याशित घटनाक्रम में, हामान को उसी फांसी पर लटका दिया गया जिसे उसने मोर्दकै को मारने के लिए बनाया था।

हामान की मृत्यु के बाद, मोर्दकै और एस्तेर को शीघ्रता से कार्य करना पड़ा। यहूदियों को मारने का पहला आदेश, जो पहले से ही कानून बन चुका था, बदला नहीं जा सकता

था। लेकिन राजा क्षयर्ष, जो अब यहूदियों की सुरक्षा के प्रति चिंतित थे, उन्होंने एक नया कानून बनाया। इस नए कानून ने यहूदियों को अपनी रक्षा करने और उन पर हमला करने का प्रयास करने वालों के खिलाफ लड़ने की अनुमति दी। मोर्दकै ने इस नए निर्देश को सभी फारसी अधिकारियों को भेजा। उन्होंने यहूदियों की सुरक्षा के लिए उनके साथ काम किया, और उनके कई दुश्मन मारे गए। इस विजय के बाद, मोर्दकै ने यहूदियों से कहा कि वे हर साल अद्दार (लगभग मार्च) के 14वें और 15वें दिन अपनी मुक्ति का जश्न मनाएं। उन्होंने इस उत्सव को "पुरिम" कहा। यह नाम "पुर" शब्द से आता है, जिसका अर्थ है "चिट्ठी।" यह उस चिट्ठी को संदर्भित करता है जिसका उपयोग करके हामान ने यहूदियों को नष्ट करने की योजना बनाने के लिए दिन चुना था।
यह भी देखें एस्तेर की पुस्तक।

2. दस यहूदियों में से एक नेता जो बाबेल में बँधुआई के बाद जरूब्बाबेल के साथ लौटे थे (एज्रा 2:2; नहे 7:7)।

मोलादा

मोलादा

मोलादा यहूदा के गोत्र के नगरों में से एक था (यहो 15:26), जिसे बाद में शिमोन को दिया गया (यहो 19:2; 1 इति 4:28)। बँधवाई के बाद यहूदा के लोगों ने इस क्षेत्र में फिर से बसावट की (नहे 11:26)।

कुछ विद्वान मोलादा को मलाथा के समान मानते हैं, जो बाद में एदोमियों द्वारा अधिग्रहित एक इदूमियाई किला बन गया (जोसेफस की एंटिक्विटीज 18.6.2)। अन्य इसे जत्ली के पास, आधुनिक खुरैबेत एल-वाटन में स्थित मानते हैं, जैसा कि जेरोम और यूसिबियस ने भी उल्लेख किया है। हालाँकि, प्रमाण इतने अस्पष्ट हैं कि इसकी सही पहचान सुनिश्चित नहीं की जा सकती।

मोलीद

मोलीद

यहूदा के गोत्र से अबीशूर और अबीहैल के पुत्र (1 इति 2:29)।

मोलेक

अम्मोनी देवता की उपासना मानव बलिदान के साथ की जाती थी (लैव्य 18:21; यिर्म 32:35)। *देखें* मिल्कोम।

मोलेक

मोलेक*

मोलोक, मोलेक की वैकल्पिक वर्तनी है; वह अम्मोनियों के देवता थे (प्रेरि 7:43)। देखें मिल्कोम।

मोसा

मोसा

बिन्यामीन के गोत्र को दिए गए क्षेत्र का एक नगर (यहो 18:26)। इसे संभावित रूप से गाँव कलुनिया से जोड़ा जाता है। यह भी सुझाव दिया गया है कि इसका नाम आधुनिक खिरबेत बेइत मिज्ज़ा में संरक्षित है, जो यरूशलेम के उत्तर-पश्चिम में लगभग चार मील (6.4 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित एक छोटा गाँव है।

मोसा

मोसा

1. कालेब का पुत्र, जो उसकी रखैल एपा से उत्पन्न हुआ (1 इति 2:46)।

2. जिम्री का पुत्र, बिना का पिता और शाऊल तथा योनातान के वंशज (1 इति 8:36–37; 9:42–43)।

मोसेरा, मोसेरोत

इस्राएलियों का अस्थायी शिविर स्थल उनके जंगल में भटकने के दौरान था। यह हशमोना और याकानियों के कुओं के बीच

स्थित था (गिन 33:30–31)। बाद में, हारून का निधन हुआ और उन्हें वहीं दफनाया गया (व्य.वि. 10:6)। मोसेरोत, मोसेरा का बहुवचन रूप है।

मौखिक परम्परा

कहानियाँ, विश्वास, और रीति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक लिखकर नहीं बल्कि जोर से बोलकर सुनाने के माध्यम से स्थानांतरित किए जाते हैं। इसी प्रक्रिया को मौखिक परम्परा कहा जाता है। मौखिक परम्परा लिखित परम्परा से भिन्न होती है, लेकिन दोनों का आपस में गहरा सम्बंध होता है। कई लिखित कहानियाँ मौखिक परम्पराओं से ही निकली हैं। यह अध्ययन करना महत्वपूर्ण है कि लोग कहानियों को सुनाने से लिखने की ओर कैसे परिवर्तित हुए।

प्राचीन पश्चिमी एशिया में, शास्त्रियों ने सभी महत्वपूर्ण घटनाओं को दर्ज किया। उसी समय, लोग इन कहानियों को जोर से सुनाते थे, जिससे उनके समाज में और आनेवाली पीढ़ियों में जानकारी फैलाने में सहायता मिलती थी। यह समझना महत्वपूर्ण है कि एक ही कहानियों के लिखित और मौखिक संस्करण प्रायः एक साथ मौजूद रहते थे और एक-दूसरे की व्याख्या करने में सहायक होते थे।

यहूदी मत में मौखिक रूप से ज्ञान को आगे बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण था। रब्बियों के धर्मशास्त्र (यहूदी धार्मिक शिक्षकों के विश्वास (मान्यताएँ)) में एक प्रमुख विचार यह है कि मौखिक व्यवस्था लिखित व्यवस्था के समान ही महत्वपूर्ण है। मौखिक व्यवस्था में पारम्परिक व्याख्याएँ शामिल थीं, जो शिक्षकों से छात्रों तक पहुँचाई जाती थीं। जब लोग इन परम्पराओं को आगे बढ़ाते थे, तो वे मूल विचारों की और अधिक व्याख्याएँ जोड़ते थे।

रब्बी के साहित्य यह दर्शाता है कि विद्यालय ने व्यवस्था का अध्ययन करने के लिये सावधानीपूर्वक तरीकों का उपयोग किया। शिक्षकों का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि छात्र शिक्षाओं को सटीक रूप से याद रखें। रब्बी के यहूदी मत में, मौखिक परम्परा को आगे बढ़ाना एक अत्यधिक संगठित प्रक्रिया बन गई।

यह सावधानी इसलिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि मौखिक व्यवस्था को लिखित व्यवस्था के समान ही महत्वपूर्ण माना जाता था। यह अनिवार्य था कि ये परम्पराएँ लापरवाही से न सौंपी जाएँ। अधिकृत मौखिक परम्परा यहूदी जीवन का एक प्रमुख हिस्सा थी।

प्रारम्भिक काल में, यीशु के शब्द और कार्य सम्भवतः मौखिक रूप से ही आगे बढ़ाए गए थे। हमें यह निश्चित नहीं है कि यीशु ने रब्बियों के समान ही शिक्षण विधियाँ अपनाईं थीं या नहीं। फिर भी, लोगों ने उनकी शिक्षाओं को संरक्षित करने में उतनी ही सावधानी दिखाई जितनी कि रब्बियों ने अपने मौखिक व्यवस्था के साथ किया।

यह भी देखें यहूदी मत; फरीसी; तलमूद; परम्परा।